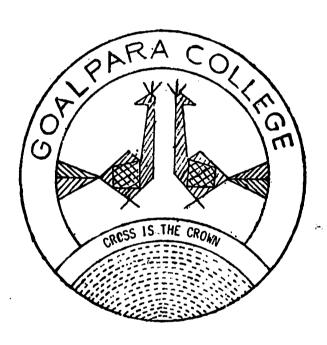
जियानाथा भरायकाला

Commence

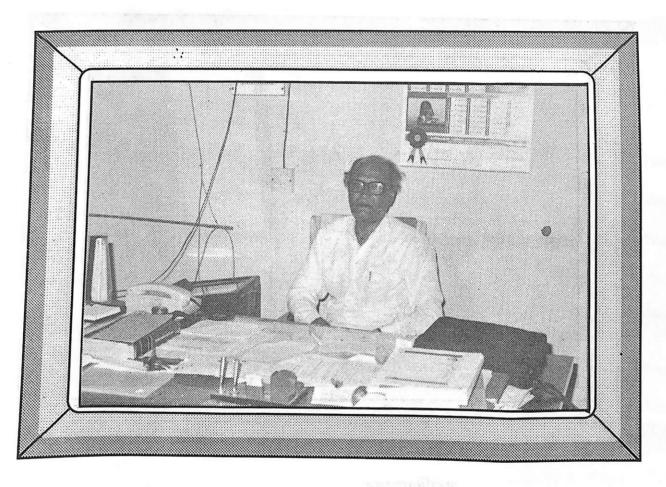
प्रमुख्य /प्र

शाबानभाबा मराविष्ठानम् वालाएनी

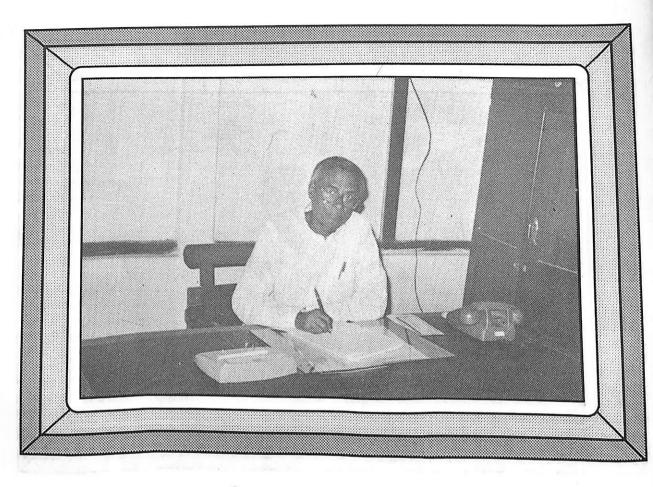
(গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ বাৰ্ষিক মুখপত্ৰ) ২৮ তম সংখ্যা ১৯৯৫-৯৬



সম্পাদক ঃ ত্ৰিদীপ কুমাৰ ৰয়



মহাবিদ্যালয়ৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত অধ্যক্ষ এক ব্যস্ত মুহূৰ্ত্তত



মহাবিদ্যালয়ৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত উপাধ্যক্ষ এক ব্যস্ত মুহূৰ্ত্তত

এই সংখ্যাত —

| এই সংখ্যাত — | | | মুকলি চ'ৰা | |
|--|----------------|------------|--|---|
| | | <> | মোৰ কৰিতাৰ দিনবোৰ — অতনু ভট্টাচাৰ্য্য | পৃঃ/৫১ |
| 🔲 সম্পাদকীয় | | <> | মতামত | পৃঃ/৫৩ |
| চিন্তা তবঙ্গ | | <> | সামাজিক অৱক্ষয় ৰোধ কৰাত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ ভূমিকা | পৃঃ/৫৯ |
| (VSI C17) | | | Photo Feature — Snaps and Faces | |
| ⊏> ধম্ম পদ | | | Title page for English Section | |
| — খर्राश्चव नाग्नक | পৃঃ/৩ | | Thanks to | |
| শ্ৰীস্থ্য পাহাৰৰ স্থ্য মূৰ্ত্তি — এটি আপোচনা — ৬° মনোজ কুমাৰ চক্ৰৱৰ্ত্তী | পৃঃ/৬ | | ARTICLE (English) | |
| — ৬° মনোজ পুমাৰ চন্দ্ৰশ্বতা ক্ৰেইগৰাকীমান বৰেণ্য কবিৰ কবিতাৰ সুৰ ঃ এটি সৰ্ | • • | ٠ | Gandhi's Ideal Society | *************************************** |
| — मिश्रक गर्या (यथि | পৃঃ/৯ | -/ | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | Page /63 |
| ্ৰ> সৃষ্টিশীল এজন শিল্পী ঃ কলাণ্ডৰু বিষ্ণুৰাভা | (·) | <> | Education & the Creation of Human Capi | |
| — শ্রীপ্রবীণ নাথ | পৃঃ/১২ | | | Page /65 |
| ্ৰ> ডুাগছৰ উৎস ঃ এইডচ্ ঃ সঙ্গতি নিৰাময়তা, আৰু কি | ज् | <>> | Modern Poetry and Tradition — Mrs. L. Baruah | Page /68 |
| — তৰুণ নাথ | গৃঃ/১ ৭ | <> | William Shakespeare his life and works | |
| 🖒 সিন্দু উপত্যকাৰ সভ্যতা | | | — Sri Manashi Dihidar | Page/69 |
| — সোণমা চক্রৱন্তী | পৃঃ/১৯ | <> | Delinquency, a disease of society | D /70 |
| আণৱিক বোমাৰ জন্ম ৰহস্য ২য় মহাযুদ্ধৰ এটা গোপ | ন আৰু | ~ | Mauchumi Ray A visit to the Pristine Islands | Page /70 |
| মাৰাত্মক পৰিকল্পনা | | - / | — Prof. D. J. Abedin | Page /72 |
| — ভাৰ্গৱ কলিতা | পৃঃ/২৩ | <> | Fact or Fiction | |
| কবিতাৰে এবেলা | | | — Amit Kumar Das | Rage /77 |
| 41,1410,14111 | | <> | Ozone Layer Depletion — A catastrophiconcern | С |
| | পৃঃ/২৭ | | — Vinay Kumar Barua | Page /80 |
| | পৃঃ/২৮ | <> | Earthquakes in India | D /00 |
| 🖒 মোৰ প্ৰেমৰ স'তে - ছিদ্দিকী তৌফিকুল আলম আহমেদ | | | — Suken Ahmed | Page /82 |
| ⊏্> প্রতিবাদ — সীমান্ত কলিতা | পৃঃ/২৯ | | POETRY | |
| े रिममंडव সाधु — मृन काक्षन कूछना मूरथाशायाः | পঃ/৩০ | 300000 | Chahnawa Ahmad | Dago /0/ |
| — अनुवाम ३ (कानांनी बग्न | পঃ/৩০ পঃ/৩০ | □ | The Hnagman — Shahnawaz Ahmed If you don't know me by now — Ranit Ro | Page /84 |
| ्रि जाना गणारमः <i>जामण</i> रूमार । । | পৃঃ/৩১ | | Silent Emotion — Jahanuddin Ahmed | Page /85 |
| The state of the s | পৃঃ/৩১ | → | Your Helping Hand — Bastab Kumar | Page /85 |
| | શુંક/૭২ | < | The useful plough — Arindam Singha | Page /85 |
| | পৃঃ/৩২ | □> | The Elegant Autumn — Shyamal Das | Page /86 |
| | পৃঃ/৩৩ | <> | Oh! Life — Mofizuddin Ahmed | Page /86 |
| क कि पदि शास काला वारश्वाणा गांश | পৃঃ/৩৪ | □ | A Bird — M.S. Dilip | Page /87 |
| | | <> | Love — Sultana Zesmina Rahaman | Page /87 |
| গল্পৰ মজলিচ্ | | <> | Woman — Bijay Sankar Rabha | Page /88 |
| ্ৰ) প্ৰাতঃভ্ৰমণ — শ্ৰীকৌশিক চৌধুৰী | পঃ/৩৭ | □ | Life and Death - Anamika Bhattacharyo | Page /88 |
| ে 👉 — ক্লা ফ্লালে শ্বেম চিঠি — জপিতা দাস | જુઃ/ 80 | | Short Story — Akbar Hussain | Page /89 |
| - क्रिक्ट <i>वतीता</i> बाग | જુઃ/ 8২ | | Award on Literature (1996) | Page /90 |
| क्र कर्म जनकार्य | পৃঃ/৪৫ | | From the Secretariat : G.C.S.U. | age /92-103 |
| ्र कार्याच्या कार्याचिका जुँगावार्य | જુઃ /8૧ | | Editor of Goalpara College Magazine | Page /104 |
| वार्ष्ठ वाववकाव (प्रथम — जनाम मा वर्गाम मा | • | | | |

শ্ৰদাৰে সোঁৱৰণ কৰিছোঁ ঃ

মহাবিদ্যালয়ৰ কৃতী শিক্ষকদ্বয় ৺ পৰিমল ভূঞা আৰু বিজেতা পুৰকায়স্থ চাৰৰ পবিত্ৰ স্মৃতিক

— সম্পাদনা সমিতি

आधुनिक भाषिकार श्रवह बुनिया जाव मधुद्ध, इननमीन, यूकिनिर्छ, नालिक्षद्ध भग्न रफ्नाक बुक्तावा ५५ । इसार विश्ववह गरीन । भाषावनारू हे राभाष्मक १५ आर्क प्रोग मास विश्वव श्वनानीयद्ध आरू यथामस्त विश्वय आन्तामना इसारू कवा १५ । रङ्गनिर्छ, भठनवीतिर मूमश्यद्व ठा आरू जाय विश्वाव मूमस्यस् ऐसार अमारुम विश्वोग ।

'দাহিতা আৰু সংজ্ঞা'



সম্পাদকীয়

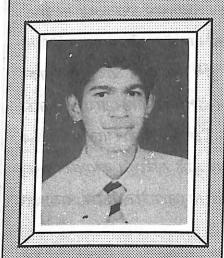


विद्धान आरू श्रपूष्ठिविद्धाव हैं प्रशिष्ट पि अपस्छ अपन्न शृथिवीर यलकिन छूलि आर्छ, अर्थेअपस्छ आपि छूलनापूलकछार किछूपान कुछ छिछा आरू काप्रछ निपिह्सू हें थरकापृष्टि एकवार्थे हुँ। हैं प्रख एत्या छूलाछ वर्धेविलाक छिछा आरू काप्र छूछ एत लाभिएल हैं एस्ट आिंह काछिष्ठांव कीवन प्रवन्त अपभावाल एत्या पिएछ। पिकारना काछि पर्धेव अपस्य अपस्य वाकार्थे अपभार्थे काकार्विन पिसार्था अद्राष्ट्रविक मथ्यः, किछू जाव अपस्य वाकार्थे अपभार्थे काछिष्ठांव क्यू हैं नायाय। अभ्यव विश्वक आहि हैं छोव भिष्ठ भिष्ठेव भिष्ठ हों प्रविद्ध कार्ये हैं नायाय। अभ्यव विश्वक वाव हैं मध्य धर्मेश कार्ये हैं प्रविद्ध अपभार्थे कार्यिक अर्थे हैं प्रविद्ध कार्ये मध्य हों हैं नायाय। अभ्यव विश्वक वाव हैं मध्य धर्मेश कार्ये हैं प्रविद्ध अर्थे हैं नायाय अर्थे हों के प्रविद्ध कार्ये हैं मध्य धर्मेश कार्ये कार्ये कार्ये कार्ये प्रविद्ध कार्ये हों के प्रविद्ध कार्ये हों के प्रविद्ध कार्ये विश्वक कार्ये हें प्रविद्ध कार्ये हों के प्रविद्ध कार्ये विश्वक विश्वक

अप्रभाअपृश् काक हैं सब अपाधान अन्त्रीकाला काकाल-त्रवाहें वा अलाअप्रितिहास पाथारे विक्कपूनक आत्माहना-वित्ताहना शिस थाकि, किंद्रू कार्पाक्रवाल
अश्मित्रेह त्रक्षव निर्शा, अवला काक एक्स्लाव कामा दूनि श्वप्तानिक शिष्ट्र । पीिक्या
काक आफ्नीव प्रथम स्वर्तिस अश्मि हिंद्र अश्मि हिंद्रात्त आपितात त्र्वेद्रली पूनव
नामक लानीपनाहें वाध्य आगवाहित त्यावादित्या । श्वम्य ह्य आपाव हिंद्रा आक
पूनात्वाद्य पूनाहिक त्रविद्र्य नह 'न त्यिक ? (नकानक है व पूक्तिकों द्यावाद्यव
स्वृहेंव पाव स्वर्तिक होनि है ही आवित्रक श्वाद्यत हिंद्रात्वा आपि पायाहे अधिक्रका
नास कवित्राह्य ।) आपाव निक्रा-रावस्त्राहें निक्षिक स्वर्तीय पात्रक लान पक हिंद्रा
आक पूनात्वाद्य नहिंद्र त्याव त्राह्य विवार त्याव हिंद्राकारी श्विक्रव
प्रानुत्रहें आहि प्रपात्व विस्ति हवल नाना द्यनव श्वम्न है न्यात्रन कवित त्यात ।

अर्थानिक पूरवस्थि (४ विधिम प्रथमार है एव शावार देशन धामार प्रशा अनदीकार्थ। अर्थानिक है मसन बाद कर्याष्ट्र अववस्थ वाकृष्ठिक प्रम्मपत रावश्य, है एगान सामन आर्क है मसन प्रम्मिकीय नाना हिसा-हित विशासन क्रिया केरा देश थका नाहै। किसू कार्याभ्यस्थ वहारासर भ्रीश स्मासन आणा करा नापास किस ?

সম্পাদকীয়



विद्धान आरू श्रपृष्ठिविদाव हैंप्रिशिश पि अपराल अपन् श्रीयवीत्ति चलकि कृष्णि आर्छ, अहैंअपराल आपि कूषनापूषकछार किछूपान कृष्ट्य हिंडा आरू कापल निप्रक्किल हैं धरकाष्ट्रीर एकवाहैएएँ। हैंपल

एमन छूलनार विद्वित्ताक विश्व आक काम छूछ एम लाभिएल है हारे आहि कािर्तित कीवन प्रमा मामान्ताल एथा पिछा। पिकारना कािर्त विभक्त भगाः। भगाः। वाकािर्वाह भगां हे काकाविन पिगारित अद्वाहािवक मह्यः; किश्च छान भगाधानन लथ छथा हेम्यन गिर्तित कह्य है नायाः। अभग्न विल्का आहि हैरित लिएर भिरित भगां है कािरितिक आहिताल मान्य पान विल्वा विव्याल कािर्व हैरित्त धिर्मेश । छुभाद्व आग्नाव भाहत्व विभाव विद्या विद्याल ना वाहन काल्य धूमूश आनिर्वेत्त क्वा आग्नाव माहत्व भीमावद्व हैर आछा । विद्याव किमान पिन ? भग्न कािरितित काल्य दुक्ष लीन श्वावा आगार्थ भीद्य किमा वित्र क्वारित अरि थायान्तन । आमाक त्वाह्य पिन लगाँक कािरितिव नात्व कल्यानकामी यान्यान गिष्ठित अहाव त्विक ?

अप्रभामपृष्ट आक हैं सार अपाधान अन्त्रीकाला काकाल-त्रसहें वा अला-अप्रितिस पाथि विर्क्तकृत्वक आत्माहना-वित्त्याहना रिश्स थाकि, किंदू कार्याभ्रस्यल अश्मित्रे त्रभ्रम्न निर्शा, अल्ला आक एभ्रन्जार अला दूनि श्वपानिल रिश्क्ष् । प्रेलिश आक आपनीत प्रशान सार्वीस अश्मित्रित अश्मि हिहात्त्र आप्रितात त्र्वेदली पृत्तर नाल जानपित्याहें वाधि आत्रवाहित त्याद्यादित्या । श्वन्त हम आप्रार हिंद्रा आक पृत्याद्याद्य पृत्याहिल त्रविदर्शन नहं न त्यित ? (मकान्यल हं रेव पृष्टिलिक धानाध्यव कुर्हेंद पृत्य स्पानिक त्रविदर्शन महं न त्याद्य श्वाद्य आप्रियाद्य आप्रियाव्ये अस्तिल्ला नास कवित्रह्याँ ।) आप्रार निष्मा-रावस्त्राहें निष्मिल स्थानीय प्रात्मल लिल्ला आक पृत्याद्याद्य त्राहि कृत्यित त्रवा नाहें त्यित ? क्रालिकोव हिलिहाकारी शिलिल्ला प्रानुश्वेह आस्ति भ्रपाल्य विस्ति इन्ह नाना ध्यन्य श्वन्त हैन्यात्रम कवित त्याद ।

अर्थानिक पूरवश्रेष्ट (४ विडिम अपभाव हैस्त्र शावाल देस्त थानास भिरा अनदीकार्थ। अर्थानिक हैमसन बाद नर्थाष्ट्र अरावश्र्क वाकृष्टिक अण्मप्त रावश्रव, हैएएएन झानन आक हैमसन अण्मेकीस नाना हिसा-हिस पिराशाला नेजून कथा है। यका नार्ष्टे। किसू कार्याभ्रसल पहेरावाव भ्रमेश इनासन आणा कवा नापास किस ? अभप्तर दिनका विश्वित औष्टिन भपूर थाँरेलव धाढाल आवश्च है। थका एना था। आको किसीश एक्सीश हिनार विश्वित एक्सील अभप अभप्तर वादि आपाश पिशा हेका कापल मथोूबाव वादि भूनव धृवि धावाहो। वि भूषाश ? अर्थानिक पूरवङ्गव वादि भलाल किसीश हिनावर शिल विश्विशाव श्वकाण कि थकालोंक अर्थानिक हैंग्नश्नव गिल थवलकीश कवाव वादि निल्हें आगवािं अशाहित्र वाह्यभागल काप रंदे। नकाल रंदे श्वष्टिल 'जलार भश्चिति'क कर्प भश्चिति देन इन्नाह्य नकवित्त हािलोंग हैंग्नश्नव गिल व्याद्विल कवाव कथा छािववर साबािव।

आिक एसाव अप्रभारे राक्षाथनव आपित्रक भविद्धि किए किव (भणारेष्कि । अञ्चानवाप रूथा असाद्ध अश्चाप, त्याभक श्वर हणा पूर्नीिं, कनावाशीअपूर हिन हिन अप्रभा, निवनूबा अप्रभा, विप्न्षी नामिक्क ऑवस श्वरक रेक्षापि रेक्षापि नामा अप्रभारे राक्षाथन अदिव किव कृणिकि । 'विश्वव रावरे विद्यव णाव ' दूणि हरा विद्याप अविवरक एणाक कार्यकणात्म अप्रश्च कार्वितिक हिन किव कृणिकि । हरकारी भभरें अप्रमन-हें ९भीकन मीिंक श्वाप अप्रभाति आपित्रकार वाभ प्रमातिक हार्या किव अपूर्वपर्मिकार भविद्य पिछा रिमाराशितीय वक्षम हें क्ष्मभाद्ध विप्याव पाठ अर्थमिकिक पूरवद्दा, निवनूबा अप्रभा, आप्राणाकिक बाअन रावद्दार शक्कार विर्माण क्षि किवाकि । कथायावर शक्कार अल्लेक अल्लेक अल्लेक आप्रमात्रकार नामि अविवर्ष । कथायावर शक्कार अल्लेक अल्लेक अल्लेक आप्रमार नाहें। अप्रशाक हैं मान पूर्वोण नेंविश्व आल्लाहनार पाद्याप किवा विद्या प्रीपार्श्मा श्वापित कार्विति , राक्षाथनय रावरें प्रश्नण।

आिक श्रमामन पश्राणे कथना कारवानक भिनिक शिष्ट्र, आहेंन-आमणाला आिक किष्ट्राभ्याक अहल पूजानमान शि भिना । श्रक्काक माथानन (थिक्सिन, क्रमानी-प्रश्नीनभवा आनम्द किन एक्षणम् विद्या, विसामाप जिला मकालावि निक्स हैंपिकास (एमसा प्रान्तिसस एउँक) प्रमान हैंपिक दूलि भना किन पूजन लगक काल प्रिलाशिष्ट्र । श्विकाभ्याक अनिसम, पूनीिक वानमान मिलाशिष्ट्र प्र विश्वास आिक्सालि नेकून 'निस्स' ता 'नीिक' शिकालिक शिक्ष । अवास्त्र श्वामिल हिलाम्बान मकाक महालामाना किन क्रमल श्वाकिसील दूलि लगदल प्रसान ताशिस किना लाह आएक, प्रमा हता हुल । गावि काकक लिशिल दूलिलिंग कामानाशे पूनीिक-अनिस्स निम्न किनामा ? आनशाक किष्ट्रमान नीिक निस्स, आहेंन-कानून कोकिशियों के तिक्ष भिल्ल कार्याभ्याक पूक्ल पिन दूलि हानिय जाविन । अवास्त्र ताक्षण ताक्षणनक प्र कािकान हैंपिकिन कथा विश्वा कना भिल्ला विश्वान प्रानूष्ट वाक्नाविन नाहि कािन निम्नस नेश्व, किन्नु वह भून्त अल्मालाव 'विनाकलन'

आहलाल आत्राल दिन अश्व पान आपान हिंहा आरू पूलाराधन भिन्नांन आव्यान देश । युष्टिभून हिंहा आरू कापाद आपान प्रमाद भावित । विश्वास्त प्रमाद विश्वास कथा आहि भाव, त्वाह कर लाहित त्य विविद्यान प्रप्त हान आरू आप्ता प्रमाद कापाद का



গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় আলোচনীখন সম্পৰ্কত দুআষাৰ

লোচনী সম্পৰ্কত কথাবিলাক তেনেই গতানুগতিক, নতুনত্ব নথকা বিধৰ। তথাপিও সম্পাদক হিচাপে ব্যক্তিগত তিতা-কেঁহা স্বাদৰ বিষয়ে আৰু আনুষঙ্গিক আষার চেৰেক কোৱা যুক্তিসংগত বুলিয়ে ভাবিলো। নকলেও হ'ব মহাবিদ্যালয়ৰ আলোচনী এখনে সেই সময়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা সামগ্ৰিকভাৱে মহাবিদ্যালয়ৰে মোটামুটি ছৱি এখন দাঙি ধৰে। গতিকে আলোচনীখনৰ ক্ষেত্ৰত ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা কৰ্ত্তপক্ষৰ উদাসীনতা শোভা নাপায়। অৱশ্যে দুই এজনৰ ইতিবাচক সঁহাৰিয়ে আমাক আনন্দিত তথা উৎসাহিত কৰিছিল। আনহাতে নিজকে সকলো ক্ষেত্ৰতে সদা-সচেতন বুলি জাহিৰ কৰি ফুৰা এচামৰ মনোবৃত্তিয়ে আমাক বিব্ৰত কৰাইছিল। লেখা-মেলাৰ ক্ষেত্ৰত কওঁ সৰহ সংখ্যকৰে অপৈনত কলমে তেওঁলোকৰ অধ্যয়নপুষ্ট মনৰ অভাৱৰ ইংগিত দিয়ে। শেষত এষাৰ কথা, বহুক্ষেত্ৰত দেখা যায় যে আলোচনীখনৰ পাণ্ডুলিপিটোৰ প্ৰায়ভাগ কাম শেষ হোৱাৰ পিছত গঠন হোৱা সম্পাদনা সমিতিৰ নিয়ম-কানুন, হকা-বাধাৰ ফলস্বৰূপে সম্পাদকে নতুৰ্নকৈ কিবা কৰিব বিচাৰিলেও বহুক্ষেত্ৰত সেয়া সম্ভৱ নহয়। আচলতে মই ভাবো প্রত্যোক বছৰে নতুর্নকৈ অনর্থক (?) সম্পাদনা সমিতি একোখন গঠন কৰাতকৈ স্থায়ী প্ৰকাশক গোট (যিটো গোটৰ সদস্য সাল-সলনি হ'ব পাৰে) এটা স্থাপন কৰিব পাৰি। সেই অভিজ্ঞ গোটে আলোচনীখন সৰ্বাঙ্গ সুন্দৰ কৰি উলিয়াবলৈ সম্পাদকক দিহা-পৰামৰ্শ সহায়-সহযোগ আগবঢ়োৱাৰ লগতে পুঁজি সমস্যাটোৰ সমাধানৰ ক্ষেত্ৰতো প্ৰয়োজনীয় পদক্ষেপ লব । আলোচনীখন প্ৰকাশত অনিচ্ছাকৃত পলম হোৱাৰ বাবে সম্পাদক হিচাপে ক্ষমা বিচাৰিছোঁ। পুনশ্চঃ বন্ধু-বান্ধৱী, শুভাকাংক্ষী সকললৈ অনুৰোধ — আলোচনীখন প্ৰকাশৰ প্ৰথম পৰ্য্যায়ত 'বিশেষ কিছুমানৰ' অবাঞ্ছিত হস্তক্ষেপৰ কথাও যেন সহৃদয়তাৰে বিৱেচনা কৰে।

ত্ৰিদীপ কুমাৰ ৰয়

এটি ঘোষণা ঃ

(১৯৯৪-৯৫ বৰ্ষৰ আলোচনী সম্পাদক বিজু কলিতাই জনোৱমতে লেখা- মেলাৰ অভাৱত সেই বৰ্ষৰ আলোচনীখনৰ প্ৰকাশেই সম্ভৱ হৈ নুঠিল। অৱশ্যে কেইটামান প্ৰবন্ধ পাতি এই সংখ্যা আলোচনীত প্ৰকাশ পাইছে)

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় আলোচনীখন সম্পৰ্কত দুআষাৰ

আ লোচনী সম্প্ৰকত কথাবিলাক তেনেই গতানুগতিক, নতুনত্ব নথকা বিধৰ। তথাপিও সম্পাদক হিচাপে ব্যক্তিগত তিতা-কেঁহা স্বাদৰ বিষয়ে আৰু আনুষঙ্গিক আষার চেৰেক কোৱা যুক্তিসংগত বুলিয়ে ভাবিলো। নকলেও হ'ব মহাবিদ্যালয়ৰ আলোচনী এখনে সেই সময়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা সামগ্ৰিকভাৱে মহাবিদ্যালয়ৰে মোটামুটি ছৱি এখন দাঙি ধৰে। গতিকে আলোচনীখনৰ ক্ষেত্ৰত ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা কৰ্ত্তপক্ষৰ উদাসীনতা শোভা নাপায়। অৱশ্যে দুই এজনৰ ইতিবাচক সঁহাৰিয়ে আমাক আনন্দিত তথা উৎসাহিত কৰিছিল। আনহাতে নিজকে সকলো ক্ষেত্ৰতে সদা-সচেতন বুলি জাহিৰ কৰি ফুৰা এচামৰ মনোবৃত্তিয়ে আমাক বিব্ৰত কৰাইছিল। লেখা-মেলাৰ ক্ষেত্ৰত কওঁ সৰহ সংখ্যকৰে অপৈনত কলমে তেওঁলোকৰ অধ্যয়নপুষ্ট মনৰ অভাৱৰ ইংগিত দিয়ে। শেষত এষাৰ কথা, বহুক্ষেত্ৰত দেখা যায় যে আলোচনীখনৰ পাণ্ডুলিপিটোৰ প্ৰায়ভাগ কাম শেষ হোৱাৰ পিছত গঠন হোৱা সম্পাদনা সমিতিৰ নিয়ম-কানুন, হকা-বাধাৰ ফলস্বৰূপে সম্পাদকে নতুনকৈ কিবা কৰিব বিচাৰিলেও বহুক্ষেত্ৰত সেয়া সম্ভৱ নহয়। আচলতে মই ভাবো প্ৰত্যোক বছৰে নতুনকৈ অনৰ্থক (?) সম্পাদনা সমিতি একোখন গঠন কৰাতকৈ স্থায়ী প্ৰকাশক গোট (যিটো গোটৰ সদস্য সাল-সলনি হ'ব পাৰে) এটা স্থাপন কৰিব পাৰি। সেই অভিজ্ঞ গোটে আলোচনীখন সৰ্বাঙ্গ সুন্দৃৰ কৰি উলিয়াবলৈ সম্পাদকক দিহা-পৰামৰ্শ সহায়-সহযোগ আগবঢ়োৱাৰ লগতে পুঁজি সমস্যাটোৰ সমাধানৰ ক্ষেত্ৰতো প্ৰয়োজনীয় পদক্ষেপ লব । আলোচনীখন প্ৰকাশত অনিচ্ছাকৃত পলম হোৱাৰ বাবে সম্পাদক হিচাপে ক্ষমা বিচাৰিছোঁ। পুনশ্চঃ বন্ধু-বান্ধৱী, শুভাকাংক্ষী সকললৈ অনুৰোধ — আলোচনীখন প্ৰকাশৰ প্ৰথম পৰ্য্যায়ত 'বিশেষ কিছুমানৰ' অবাঞ্জিত হস্তক্ষেপৰ কথাও যেন সহৃদয়তাৰে বিৱেচনা কৰে।

ত্ৰিদীপ কুমাৰ ৰয়

এটি ঘোষণা ঃ

(১৯৯৪-৯৫ বৰ্ষৰ আলোচনী সম্পাদক বিজু কলিতাই জনোৱমতে লেখা- মেলাৰ অভাৱত সেই বৰ্ষৰ আলোচনীখনৰ প্ৰকাশেই সম্ভৱ হৈ নৃঠিল। অৱশ্যে কেইটামান প্ৰবন্ধ পাতি এই সংখ্যা আলোচনীত প্ৰকাশ পাইছে)

ধম্ম পদ

খৰ্গেশ্বৰ নায়ক, অখ্যাপক

'ধম্ম পদ' (ধর্ম পদ) ত্রিপিটকৰ অর্প্তগত সুত্তপিটকৰ খুদ্দক
নিকায়ৰ দ্বিতীয় গ্রন্থ। ই অকল বৌদ্ধ সাহিত্যৰে অতুলনীয় সম্পদ
নহয়; সমগ্র ভাৰতৰ ধর্ম সাহিত্যৰো এক অবিস্মাৰণীয় কীর্ত্তি স্বৰূপ।
হিন্দু সমাজত শ্রীকৃষ্ণ মুখ নিসৃত গীতাৰ যি মর্যদা, যি স্থান, বৌদ্ধ
সমাজত বুদ্ধ মুখ নিসৃত 'ধন্মপদৰ' সেই একে মর্যদা, সেই একে
স্থান। গীতাত যি দৰে হিন্দু আধ্যাত্মদার্শনিক তথ্যসর্বস্থৰ প্রতিফলন
ঘটিছে তদৰূপ 'ধন্মপদ'ত বৌদ্ধ আধ্যাত্ম দর্শন সর্বস্থৰ প্রতিফলন
ঘটিছে। কবিগুৰু ৰবীন্দ্র নাথ ঠাকুৰে 'প্রাচীন সাহিত্য'ত কৈছে —
"ভগবদ্গীতায় ভাৰতবর্ষ যেমন আপনাকে প্রকাশ কৰিয়াছে, গীতাৰ
উপদেষ্টা ভাৰতেৰ চিন্তাকে যেমন এক স্থানে একটি সংহত মূর্ত্তি দান
কৰিয়াছেন, ধন্ম পদ গ্রন্থেও ভাৰতবর্ষেৰ চিত্তেৰ একটি পৰিচয় তেমনি
বাক্ত হইয়াছে।"

'ধন্মপদ' বৌদ্ধ ধর্মৰ এখন অতি সুখ্যাত গ্রন্থ। এই সুখ্যাতি, এক সার্বজনীন কল্যাণকৰ আদর্শৰ দ্বাৰা মানবধর্মবাধ উদ্দীপ্ত কৰিব পৰা গুণৰ বাবেহে। ইয়াৰ বিভিন্ন গাথাৰ মাজেদি এনে এক উচ্চ নৈতিকতাৰ আদর্শ প্রতিফলিত হৈছে — যি সর্বমানবৰ কল্যাণকামী গুণেৰে সমৃদ্ধ; ইয়াৰ মাজেৰে প্রতিফলিত হৈছে কোনো দেশকালে সীমাবদ্ধ কৰিব নোৱাৰা কল্যাণ মৈত্রীৰ আদর্শ প্রণোদিত বিশ্বমানৱৰ প্রাণৰ আকৃতি, ইয়াৰ মর্মবানী হিচাবে অভিব্যক্ত হৈছে সং, শুদ্ধ পৰিশীলিত জীৱন যাপনেৰে, মানব ধর্মবোধেৰে উদ্দীপ্ত হৈ সর্বমানবৰ কল্যাণত আত্মাহুতি দিয়া আৰু তাৰ মাজেদি এক প্রশান্তময় অবস্থা লাভ কৰা। ৪২৩টা শ্লোকৰ দ্বাৰা সমৃদ্ধ এই গ্রন্থখনিৰ মাজেদি বৌদ্ধ ধর্মৰ মূলনীতি আৰু আদর্শৰ এটি চমৎকাৰ চিত্র চিত্রিত হৈছে। সমালোচক সকলোৰ মতে ধর্মনিৰপেক্ষতা আৰু বিচক্ষনতামূলক সদুক্তি ইয়াৰ বিশেষত্ব।

'ধন্মপদ' শব্দটি গঠিত হৈছে। 'ধন্ম' আৰু 'পদ' এই দুটা শব্দৰ সমন্বয়ত । 'ধন্মপদ'ৰ অৰ্থ যথেষ্ট ব্যাপক। সাধাৰণ ভাবে 'ধন্মপদ' অৰ্থাৎ ধৰ্ম আচৰণৰ বিশেষ উদ্দেশ্য আগত ৰাখি ৰচিত হোৱা পদ। বৃদ্ধ ঘোষে মঙ্গলময় ধৰ্ম বা নিৰ্বান উপলব্ধিৰ পথ বুলি ব্যাখ্যা কৰিছে। মেক্সমূলাৰ, স্পেন, হাৰ্ডি আদি পণ্ডিত সকলে ইয়াক ধৰ্ম মার্গ, ধর্মৰ সোপান, ধর্মৰ পথ বুলি ব্যাখ্যা কৰিছে। ফৌজবলে ইয়াক 'ধর্ম গাথা সংগ্রহ' বুলি ব্যাখ্যা কৰিছে। চীন দেশত ইয়াক 'শাস্ত্র বাক্য' বুলি কোৱা হয়। সম্রাট আশোকে বুদ্ধৰ কল্যাণ মৈট্রীৰ আদর্শ প্রচাৰ কৰি সেই বোৰক 'ধর্মলিপি' বুলি অভিহিত কৰিছিল। 'ধন্ম' মানে ধর্ম, যি ধর্ম মহাত্মা বুদ্ধৰ শ্রীমুখ নিসৃত বাণীৰ মাজত বিৰাজমান। ব্যাখ্যা প্রসঙ্গত 'ধর্ম' — প্রকৃতি, গুণ, পদার্থ, মতবাদ, প্রাকৃতিক নিয়ম, ধর্মমত আদি নানা ৰূপে চিহ্নিত কৰা হৈছে। 'পদ' শব্দৰো একাধিক অর্থৰ ব্যাখ্যা দিয়াতো মন কৰিব লগীয়া। 'অভিধন্ম পিটক'ত 'পদ'ৰ অর্থ কৰা হৈছে — স্থান, ৰক্ষা, নির্ব্বাণ, কাৰণ, অংশ, পদ, পদ-বিক্ষেপ। সেই পিনৰ পৰা চালে 'ধন্ম পদৰ' তাৎপর্য্য হয় গৈ ধর্মৰ পথ, ধর্মৰ সোপান, সত্যৰ মার্গ অর্থাৎ নির্ব্বাণ উপলব্ধিৰ পত্মা বা সংসাৰ দুখ- মোচনৰ অবলম্বন।

বুদ্ধদেৱৰ মুখনিস্ত বাণী বুলি বিশ্বাস কৰা এই গ্ৰন্থৰ বিভিন্ন গাথা সমূহত প্ৰধানত ঃ সুউচ্চ জীৱন যাপনৰ নীতি আৰু নৈতিকতাৰ আদৰ্শ প্ৰতিবিশ্বিত হৈছে। তাৰোপৰি ইয়াৰ গাথা সমূহ এনে সুমধুৰ আৰু অৰ্থবহ যে ইয়াৰ সমকক্ষ অন্য কোনো প্ৰাচীন ধৰ্ম গ্ৰন্থ নাই বুলিব পাৰি। সৰ্বোপৰি ইয়াৰ কাব্যমূল্যই ইয়াক অনুপম সাহিত্য সম্পদ ৰূপে পৰিগণিত কৰিছে। এই প্ৰসঙ্গত মেকডোনেলে মন্তব্য কৰিছে যে— "It is a collection of aphorisms representing the most beautiful, profound and poetical thoughts in Buddhist literature."

বিভিন্ন উপমা, দৃষ্টান্ত, ৰূপক আদি প্ৰয়োগ কৰি প্ৰকাশ কৰা এই গাথা সমূহৰ মাজেদি এফালে যিদৰে বুদ্ধ প্ৰচাৰিত ধৰ্মৰ আদৰ্শ ফুটি উঠিছে আন ফালে ইয়াৰ মাজেৰে প্ৰকাশিত হৈছে সং, শুদ্ধ জীৱন যাপনৰ আদৰ্শও।

এনেদৰে বিশ্লেষণ কৰিলে দেখা যায় যে 'ধন্ম' শব্দ উচ্চ নৈতিকতাৰ আদৰ্শৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত আৰু সৰ্বমান কল্যাণকামী গুণেৰে সমৃদ্ধ । এই প্ৰসঙ্গ ড° নলিনাক্ষ দত্তৰ এষাৰ কথা একান্ত ভাবেই গ্ৰহণীয় — "ধন্ম পদৰ মুখ্য উদ্দেশ্য গৃহস্থসকলক নৈতিক শিক্ষা দান"। গ্ৰন্থখনিৰ বিষয়বস্তুলৈ আলোকপাত কৰিলেও এই কথাই অবগত হয় যে 'ধন্ম' শব্দ সৰ্বমানবিক কল্যাণবোধৰ আদৰ্শৰে বিধৃত।

বিভিন্ন ধম্ম পদঃ

নীতি মূলক বিষয়বস্তু, সহজ্ব-সৰল ৰচনাভঙ্গী আৰু বক্তব্য বিষয়ক দৃশ্যমান জগতখনৰ পৰা লোৱা উপমা, ৰূপক আদিৰে সৰস কৰিব পৰা গুণৰ বাবেই 'ধমম পদৰ' পালি, প্ৰাকৃত, সংস্কৃত, মিশ্ৰ সংস্কৃত আদিত ৰচিত হৈছিল। ইয়াৰোপৰি চীনীয়, তিব্বতী ভাষাতো ই অনুদিত হৈছিল।

পালি থমম পদ ঃ

পালি 'ধম্ম পদ' সর্বাধিক জনপ্রিয় 'ধম্ম পদ'। বৌদ্ধ সম্প্রদায়ৰ বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য দহোটা শাখাৰ ভিতৰত থেৰবাদী সকলে পালি ধন্ম পদ ৰচনা কৰে। পালি ধম্ম পদৰ আনুমানিক সময় সীমা খৃঃ পৃঃ তৃতীয় শতিকা। সম্রাট অশোকৰ ওচৰত ইয়াৰ অপ্পমাদ বগ্গো আবৃতি কৰা হৈছিল বুলি জনা যায়। পালি ধম্ম পদত ৪২৩ টা গাথা আছে আৰু এই বিলাক ২৬ টা বগ্গত ভাগ কৰা হৈছে। নৈতিক আৰু আধ্যান্থিক উপদেশৰে সমৃদ্ধ বিভিন্ন গাথাৰ মাজেদি চতুৰাৰ্য সত্য উপলব্ধিৰ অস্টাঙ্গিক মাৰ্গ অনুশীলন কৰি কেনেদৰে নিৰ্ব্বাণ লাভ কৰিব পাৰি তাৰ সহজ সৰল বৰ্ণনা কৰা হৈছে।

প্রাকৃত ধন্মপদ ঃ

মধ্য এচিয়াৰ খোটানৰ ওচৰৰ গোশৃঙ্গ বিহাৰৰ ধংসাবেশৰ
মাজত খণ্ডিত ৰূপত পোৱা ধন্ম পদ খনেই প্ৰাকৃত ধন্ম পদ।ই খৰোষ্ঠী
লিপিত উৎকীণ। উত্তৰ পশ্চিম ভাৰতত প্ৰচলিত কথ্য প্ৰাকৃতৰ ওপৰত
ভিত্তি কৰি প্ৰাচীন বৌদ্ধ সংঘৰ অন্যতম শাখা ধন্ম গুপ্ত সম্প্ৰদায়ে এই
ধন্মপদ ৰচনা কৰিছিল বুলি অনুমান কৰা হৈছে। ইয়াৰ সময়সীমা
আনুমানিক খৃঃ পৃঃ ১০০। অশোকৰ অনুশাসনৰ ভাষাৰ বিশেষকৈ
মানসেহ্ৰা ভাষাৰ লগত ইয়াৰ ভাষাৰ সাদৃশ্য মন কৰিব লগীয়া।
খোটানত পোৱা বাবে ইয়াক খোটানী ধন্মপদ বোলে। H.W. Bailey
য়ে ইয়াৰ ভাষাক 'গান্ধাৰী প্ৰাকৃত' নাম দিছে। ইয়াৰ বিশেষ তাৎপৰ্য
হল এয়ে যে প্ৰাকৃত ধন্মপদৰ পালি ধন্মপদৰ লগত পাৰ্থক্য আছে।
এই পাৰ্থক্য লক্ষ্য কৰা যায় বৰ্গ বিভাজনত।

সংস্কৃত ধর্মাপদ ঃ

সংস্কৃত ভাষাত ৰচিত ধন্মপদ আবিষ্কাৰ হয় মধ্য এচিয়াৰ তুৰফান অঞ্চলৰ বৌদ্ধ প্ৰতিষ্ঠান সমূহৰ ধ্বংসাবশৰ মাজত। সংস্কৃত ধন্মপদক 'উদান বৰ্গ' বুলি নামকৰণ কৰা হৈছে। ইয়াৰ জনপ্ৰিয়তাও পালি 'ধন্মপদ'ৰ দৰেই। সুত্ত পিটকৰ খুদ্দক নিকায়ৰ তৃতীয় গ্ৰন্থ 'উদান'ৰ কথা আগত ৰাখিয়েই বুদ্ধৰ ভাব গন্তীৰ নীতি নৈতিকতামূলক বাণী সন্নিবিষ্ট কাৰণেই ইয়াক 'উদান বৰ্গ' নামেৰে নামকৰণ কৰা হৈছে।

'চ-ইয়-কিঙ্গ' নামেৰে ৩৩টা বৰ্গত বিভক্ত যি এক সুবৃহৎ চৈনিক ধন্মপদ পোৱা যায় সেইখন মূলতে সংস্কৃত আছিল বুলি অনুমান কৰা হৈছে।

মিশ্র সংস্কৃত ধন্মপদ ঃ

'তফ-খিউ-কিঙ্গ' নামেৰে ৩৯ টা বৰ্গত বিভক্ত আৰু ৫৭ টা গাথা থকা যি এক বৃহদাকাৰৰ ধন্মপদ চীনীয় ভাষাত পোৱা যায় সেইখনৰ মূল বৌদ্ধ বা মিশ্ৰ সংস্কৃতত ৰচিত ধন্মপদ বুলি অনুমান কৰা হৈছে। মূল মিশ্ৰ-সংস্কৃতত লেখা গ্ৰন্থখন 'ওয়াই-চি-লান' নামন এগৰাকী ভাৰতীয় বৌদ্ধই ভাৰতৰ পৰা চীন দেশলৈ নিয়ে আৰু ডাৰ পৰাই পাছত চীনা ভাষালৈ অনুদিত হয়।

ধন্মপদৰ ৰচনা কাল ঃ

'ধন্মপদ' কেতিয়া ৰচিত হৈছিল তাৰ বিষয়ে নিৰ্ভৰযোগ্য ভাৱে বিশেষ একো জানিব পৰা নেযায়। সাধাৰণ ভাবে বিশ্বাস কৰা হয় যে ধন্মপদৰ গাথা সমূহ বুদ্ধদেৱৰ মুখানিঃসৃত বাণী আৰু এই বিলাক বিভিন্ন সময়ত বিভিন্ন উপলক্ষ্যত ব্যক্ত কৰা হৈছিল। পৰবৰ্ত্তী কালত এনেদেৰে ব্যক্ত কৰা গাথাসমূহেই সংগৃহীত হৈ 'ধন্মপদ' গ্ৰন্থ গঢ়ি উঠে আৰু ই অশোকৰ ৰাজত্ব কাল অৰ্থাৎ খৃঃ পৃঃ তৃতীয় শতিকামানত সম্পূৰ্ণ হৈ উঠে। দাৰ্শনিক পণ্ডিত ড° ৰাধাকৃষ্ণনে তেওঁৰ 'ধন্মপদ' গ্ৰন্থত ধন্মপদৰ গাথাৰ অনুৰূপ শ্লোকাদি মহাভাৰত, গীতা, উপনিষ্দ্ৰ আদিতো পোৱা যায় বুলি উল্লেখ কৰিছে। প্ৰাচ্যবিদ্যাবিদ মনীৰী উইন্টাৰনিজে মন্তব্য কৰিছে—

"More than half of all the verses of the Dhamamapada have also been traced in other texts of the Pali canon, and there is scarcely any doubt that, generally speaking, the compiler of the authology took them from the settings where we still find them to-day. However, the collection has came to include some sayings which were originally not Buddhist at all, but were drawn from that inexhaustible source of Indian, gnomic wisdom, from which they also found their way into Manu's law-books, into the Mahabharata, the texts of the Jains, and into narrative works such as the Pancatantra, etc. It is in general, impossible to decide where such sayings first appered."

বৌদ্ধ শাস্ত্ৰৰ নানা দিশ সামৰি তুলনামূলক আলোচনা কৰি সিদ্ধাৰ্য কৰা হৈছে যে অশোকৰ পূৰ্বতে ৰচনা হোৱা বৌদ্ধ শাস্ত্ৰৰ সংখ্যা খুব কম। অশোকৰ অনুশাসনতো কতো ধন্মপদৰ উল্লেখ পোৱা নেজায়। মাত্ৰ অপপমাদবগ্গ সম্ৰাট অশোকৰ ওচৰত আবৃতি কৰা হৈছিল বুলি কাহিনী এটা প্ৰচলিত আছে। গতিকে এইটো অনুমান্ত সাপেক্ষ যে অশোকৰ পৰবৰ্ত্তী কালতহে ই পূৰ্ণ ৰূপ পাইছিল। পাৰ্লি সাহিত্যৰ 'মিলিন্দ পঞ্জহো' নামৰ গ্ৰন্থত 'ধন্মপদৰ' প্ৰথম উল্লেখ পোৱা যায়। সেই কাৰণে পালি 'ধন্মপদৰ' ৰচনা কাল খৃঃ পৃঃ তৃতীয় শতাব্দী বা তাৰো কিছু পৰবৰ্ত্তী কালত সম্পূৰ্ণ হয় বুলি অনুমান কৰিব পাৰি।

ধন্মপদৰ বিষয় বস্তু ঃ

বৌদ্ধ ধৰ্মৰ মূল নীতি, আদৰ্শ আৰু পালনীয় কৰ্তব্য ধন্মপদৰ্শ বিভিন্ন বৰ্গৰ বিভিন্ন গাথাৰ মাজেদি সৰ্বসাধাৰণে বুজি পোৱাকৈ প্ৰকা^শ কৰা হৈছে। ইয়াত কোনো জটিল তত্ত্ব নাই, দাৰ্শনিক চিন্তাৰ ব্যাখা নাই, আছে সাধাৰণ জনসাধাৰণে কি উপায়েৰে নৈতিক উন্নতি সাধ্^শ কৰি বুদ্ধ প্ৰচাৰিত ধৰ্ম আৰু নীতিৰ মূল মৰ্ম উপলব্ধি কৰিব পাৰে তাকেই সহজ সৰল ভাষাত প্ৰকাশ কৰা হৈছে। সেয়ে ত্ৰিশৰণত শ্ৰদ্ধা, চতুৰাৰ্যসত্য উপলব্ধি, শীলাদি পালন, ইন্দ্ৰিয় সংসম, তৃষ্ণা ক্ষয়, ক্ৰোধ দ্বেষ, ত্যাগ আদি কথাত গুৰুত্ব দি সং, শুদ্ধ পৰিশীলিত জীৱন যাপনৰ পথ প্ৰশন্ত কৰিবলৈ বিচৰা হৈছে।

বৌদ্ধ সাধন মাৰ্গত আগবঢ়াৰ প্ৰথম আৰু অন্যতম সোপন হৈছে
শীল পালনৰ দ্বাৰা ব্ৰহ্মচৰ্য অবলম্বন কৰা, ইয়াৰ পিছতে উপদেশ দিয়া
হৈছে চিন্ত সংসমৰ। চিন্ত সংযমৰ একমাত্ৰ উপায় হ'ল — ধ্যান,
ধাৰণ আৰু অষ্টাঙ্গিক মাৰ্গৰ সাধনা। চিন্তৰ সংযম, চিন্তৰ একাগ্ৰতা,
অকুশল চিন্তা ত্যাগ, কুশল চিন্তাৰ প্ৰয়াস আদিৰ বাবে লাগে গভীৰ
ধ্যান। বৌদ্ধ ধৰ্ম শাস্ত্ৰৰ বিভিন্ন ঠাইত ইয়াৰ তাত্বিক বিশ্লেষণেৰে
আলোচনা কৰা হৈছে।

দুখৰ পৰা নিবৃতিয়ে বৌদ্ধ ধৰ্মৰ প্ৰধান আৰু অন্যতম লক্ষ্য। জৰা, ব্যাধি, মৃত্যুৰ বিভীষিকাৰ পৰা হাত সৰাৰ উপায় বিচাৰিয়েই গৌতমৰ অবশেষত বুদ্ধত্ব প্ৰাপ্ত হৈছিল। কঠোৰ সাধনাৰে তেওঁ যি জ্ঞান লাভ কৰিছিল, তাৰ দ্বাৰা তেওঁ আবিষ্কাৰ কৰিছিল জগত দুখ-ময়। দুখ আছে, দুখৰ উৎপত্তি হয়, দুখৰ নিৰোধ আছে আৰু দুখ নিৰোধৰ উপায় আছে। সেই কাৰণে তেওঁ দুখবাদ প্ৰচাৰ কৰিছিল। এই দুখবাদকে 'চাৰি আৰ্য সত্য' বোলা হয়। এই চাৰি সত্যই বৌদ্ধ ধৰ্মৰ মূল সূত্ৰ আৰু এই কেইটা স্থিৰ কৰাই বৌদ্ধ ধৰ্মৰ মূল উদ্দেশ্য।

চতুৰাৰ্য সত্য উপলব্ধি নোহোৱাৰ বাবেই জীৱই সংসাৰ মোহৰ কবলত পৰি, সংসাৰ বন্ধনত আৱদ্ধ হৈ বাবে বাবে সংসাৰত জন্ম গ্ৰহণ কৰি দুখ ভোগ কৰিব লগা হয়। দুখ আঠ প্ৰকাৰ — জন্ম, ব্যাধি, জৰা, মৃত্যু প্ৰিয়-বিপ্ৰয়োগ, অপ্ৰিয়-সম্প্ৰয়োগ, ইপ্সিত বন্ধুৰ অলাভ, আৰু পঞ্চেন্দ্ৰিয়ৰ গ্ৰাহ্যবন্ধু।

দুখ উৎপত্তিৰ মূল কাৰণ বাৰটা — অবিদ্যা, সংস্কাৰ, বিজ্ঞান, নামৰূপ, ষড়ায়তন, স্পৰ্শ, বেদনা, তৃষ্ণা, উপাদান, ভৱ, জাতি, জৰামৰণ।

যাৰ উৎপত্তি আছে তাৰ বিনাশো আছে। কাৰ্যকাৰণ সূত্ৰে উৎপত্তি হোৱা দুখৰ নিৰোধ আছে। এই নিৰোধৰ পথ আৰ্য অষ্টাঙ্গিক মার্গ। এই অষ্টাঙ্গিক মার্গ হৈছে — সম্যক দৃষ্টি, সম্যক সংকল্প, সম্যক বাক্য, সম্যক কর্মান্ত, সম্যক জীবিকা, সম্যক ব্যায়াম, সম্যক স্মৃতি আৰু সম্যক সমাধি।

সংসাৰৰ দৈনন্দিন ঘাট-প্ৰতিঘাটত জৰ্জৰিত হৈ জীৱই সাময়িক ভাবে দুখৰ কথা উপলব্ধি কৰিব পাৰিলেও পিছ মুহূৰ্ততে সংসাৰৰ মোহৰ কবলত পাৰ সিয়েই সুখ হৈ দেখা দিয়ে। গতিকে দুখানুভূতিত সত্য উপলব্ধি নহয়। দুখৰ প্ৰকৃত স্বৰূপ উপলব্ধি কৰিব পাৰিলেহে দুখৰ পৰা মুক্তিলাভৰ আকাঙ্খা ওপজে। মনৰ উৎকৰ্ম সাধন নহলে কেতিয়াও দুখৰ কাৰণ উপলব্ধি কৰিব নোৱাৰি। সেয়েহে চিত্তৰ সংযমৰ ওপৰত গুৰুত্ব দিয়া হৈছে। বুদ্ধই দুখ নিৰোধৰ বাবেই আৰ্য অষ্টাঙ্গিক মাৰ্গ প্ৰচাৰ কৰিছে। এই অষ্টাঙ্গিক মাৰ্গৰ অনুশীলনতেই দুখৰ প্ৰকৃত অনুভূতি আহে আৰু চতুৰাৰ্য সত্য উপলব্ধি কৰি নিৰ্বাণ প্ৰত্যক্ষ কৰে।

'ধন্মপদৰ' ভাব ধাৰত ত্ৰিশৰণ, চতুৰাৰ্য সত্য, অষ্টাঙ্গিক মাৰ্গ -এই তিনিটাৰ ওপৰতে অধিক গুৰুত্ব প্ৰদান কৰা হৈছে। দুখ নিৰোধৰ উপায় হৈছে নিৰ্বাণ প্ৰাপ্তি।

ধশ্মপদৰ ভাষা ঃ

একে আমাৰতে কবলৈ হ'লে 'ধন্মপদ'ৰ ভাষা পালি ভাষা। পালি বৈদিকৰ কথ্য ৰূপৰ পৰিবৰ্তিত ৰূপ; প্ৰাচীন প্ৰাকৃতৰ ওপৰত ভিত্তি কৰি সাহিত্যিক ভাষা হিচাবে গঢ় লৈ উঠিছিল। প্ৰকৃততে ইয়াৰ সাহিত্যিক ৰূপৰ শব্দ সম্ভাৰ আৰু বৈয়াকৰণিক আদৰ্শ আছিল সংস্কৃত। সেয়ে সংস্কৃতৰ লগত তুলনামূলক আলোচনাৰ দ্বাৰাহে ইয়াৰ ভাষাৰ বৈশিষ্ট বিচাৰ কৰিব লগীয়া হয়।

সহায় শোৱা গ্ৰন্থ ঃ -

- ১। ধন্মপদ ঃ— ড° সত্যেন্দ্ৰ নায়াৰণ গোস্বামী
- ২। প্ৰাকৃত সাহিত্যৰ অধ্যয়ন ড° নগেন ঠাকুৰ
- ৩। পালি প্ৰকাশ বিধুশেখৰ শাস্ত্ৰী
- 8। ধন্মপদ পৰিচয় প্ৰবোধ চন্দ্ৰ সেন
- Œ١
- ৬। পালি, প্ৰাকৃত, অপপ্ৰংশ ভাষা সাহিত্য ড° নগেন ঠাকুৰ

শ্ৰীসূৰ্য্য পাহাৰৰ সূৰ্য্য মূৰ্ত্তি — এটি আলোচনা

(যত্র দেব আদিত্য ঃ সততম্ স্থিতঃ)

ড° মনোজ কুমাৰ চক্ৰৱৰ্ত্তী

বি পাহাৰৰ নাম সাতালি পাহাৰ— সেয়েই শ্রীস্থ্য পাহাৰ। একলগে থুপ খাই থকা সৰু বৰ সাতখন পাহাৰৰ সমষ্টিটোই শ্রীস্থ্য পাহাৰ নামেৰে জনাজাত। ই গোৱালপাৰা চহৰৰ ১২ কিলোমিটাৰ পূবে অৱস্থিত। কালৰ কৰাল প্ৰাসক নেওচি আৰু হাজাৰ-বিজাৰ বছৰৰ প্রাকৃতিক আৰু নৈসৰ্গিক দুৰ্যোগ অতিক্রম কৰি অসমৰ বিভিন্ন প্রান্তত সিঁচৰতি হৈ থকা বিভিন্ন তীর্থস্থান বোৰৰ ভিতৰত শ্রীস্থ্য পাহাৰ এক দৃঢ় আৰু বলিষ্ঠ ভঙ্গিৰে থিয় দি আছে। ইয়াত থকা অসংখা দেৱ-দেৱীৰ মূর্ত্তিবোৰে উত্তৰ-পূব ভাৰতৰ প্রসিদ্ধ তীর্থস্থান হিচাবে এই অঞ্চলৰ অতীজৰ গৌৰৱময় দিনবোৰৰ কথা আমাক সোঁৱাৰাই দিয়ে। হিন্দু, বৌদ্ধ আৰু জৈন — প্রাচীন কালৰে পৰা ভাৰতত প্রচলিত তিনিটা প্রধান ধর্ম্মৰ বহুতো আৰু ভিন্ ভিন্ ধৰণৰ অসংখ্য মূর্ত্তি ইয়াত একলগে থুপ খাই আছে। সেয়েহে ইয়াক যথার্থ ভারেই "a picture gallery of archaeological remains" বুলি অভিহিত কৰা হৈছে।

শ্ৰীস্থ্য পাহাৰৰ প্ৰত্নতাত্ত্বিক সামগ্ৰীবোৰৰ উৎপত্তিৰ বিষয়টো এতিয়াও ৰহস্যাবৃত হৈ আছে। কেতিয়া আৰু কেনেকৈ তিনিটা বিভিন্ন ধৰ্ম্মৰ লোকে ইয়ালৈ আহি এই মূৰ্ত্তিবোৰ শিলত খোদিত কৰিছিল তাক সঠিককৈ জনা নাযায়। ইয়াত অৱস্থিত সূৰ্য্য দেৱতাৰ মূৰ্ত্তি বুলি বিশ্বাস কৰা বৰ্গাকৃতিৰ পাথৰ এছটাৰ পৰাই এই পাহাৰখনৰ নাম শ্ৰীস্থ্য পাহাৰ হোৱা বুলি অনুমান কৰে। এই পাহাৰৰ সূৰ্য্য উপাসনাৰ এক প্ৰধান কেন্দ্ৰ বুলি কালিকা পুৰাণে উল্লেখ কৰিছে। অতীতত ই জ্যোতিবিদ্যাৰো ঘাই কেন্দ্ৰ আছিল।

শ্ৰীস্থ্য পাহাৰৰ সূৰ্য্য দেৱতাৰ মূৰ্ত্তি থকাটো তেনেই স্বাভাবিক। এতিয়ালৈ এছটা বৰ্গাকৃতিৰ পাথৰত খোদিত কৰা দ্বাদশ আদিত্যক জনসাধাৰণে সূৰ্য্য দেৱতা বুলি গণ্য কৰি ভক্তি জনাই আহিছে আৰু সেই কাৰণেই এই পাহাৰৰ নাম শ্ৰীসূৰ্য্য পাহাৰ হোৱা বুলি অনুমান কৰিছে। বঙালী ভাষাত লিখা চৌধুৰী খান চাহাৰৰ "কুচবিহাৰে। ইতিহাস" গ্ৰন্থত উল্লেখ কৰা মতে কোচ ৰজা নৰনাৰায়নৰ ৰাজ্য কালত চিলাৰায়ে অসম আক্ৰমন কৰাৰ সময়ত এই পাথৰত খোটি মূৰ্ত্তিটো পাই এই পাহাৰত প্ৰতিষ্ঠা কৰে। চিলাৰায়ে এই মূৰ্ত্তি প্ৰতিষ্ঠা কৰাৰ সময়ৰ পৰাই এই পাহাৰৰ শ্ৰীসূৰ্য্য পাহাৰ নাম কৰণ কৰা ক্ষৰ্ বুলি ধৰিলে ইয়াক ষষ্ঠদশ শতিকাৰ ঘটনা বুলি ধৰি ল'ব লাগিব; ক্ষিত্ৰামি জনা মতে আনুমানিক দশম শতিকাত ৰচিত কালিকা পুৰাণ্ডে শ্ৰীসূৰ্য্য পাহাৰৰ উল্লেখ আছে। তেতিয়া হলে সেই সময়তো এই পাহাৰত সূৰ্য্যদেৱতাৰ মূৰ্ত্তি থকা অসম্ভৱ নহয়। যদিও মূৰ্ত্তিবোৰ সময় খাটাংকৈ নিৰ্ধাৰণ কৰা সম্ভৱ হোৱা নাই তথাপি এই পাহাৰ্য্য থকা সূৰ্য্য দেৱতাৰ মূৰ্ত্তিবোৰৰ বিষয়ে এই প্ৰৱন্ধত থূলমূল্যে আলোচনা কৰা হ'ল।

ওপৰত উল্লেখ কৰা হৈছে যে বৰ্গাকৃতি ৰ পাথৰ এছটাৰ্ন জনসাধাৰণে সূৰ্য্য দেৱতা বুলি পূজা কৰে। এই বৰ্গাকৃতিৰ পাৰ্ম ছটাত এটা ডাঙৰ বৃত্ত আৰু সেই বৃত্তটোৰ ভিতৰত আৰু একেবাৰ্টে মাজত এটা সৰু বৃত্ত খোদিত কৰা আছে। ভিতৰৰ সেই সৰু বৃত্তটোৰ মাজত চাৰিখন হাত আৰু চাৰিট মূৰেৰে এক দেৱ-মূৰ্ত্তি খোদিত কৰা হৈছে। এই দেৱতাক সূৰ্য্যৰ পিতৃ কাশ্যপ বুলি চিনাক্ত কৰা হৈছে। মাজৰ আৰু এটা মূৰ্বেশ্ব বাৰটা একেধৰণৰ মূৰ্ত্তি খোদিত আছে। কাশ্যপ আৰু তেওঁৰ পত্নী আদিতীৰ পুত্ৰ — এই দ্বাদশ আদিতাই তেওঁলোকৰ পিতৃ কাশ্যপৰ্ক চাৰিওপিনে আগুৰি আছে। এই পাহাৰৰ মুখ্য দেৱতাই হৈছে সূৰ্য্য — আৰু এই সূৰ্য্যৰ পৰাই এই পাহাৰৰ নাম শ্ৰীসূৰ্য্য পাহাৰ হৈছে বুলি লোক বিশ্বাস আছে।

যদিও এই পাহাৰত শিলত কটা অসংখ্য দেৱ-দেৱীৰ মূৰ্ত্তি আৰ্টি তথাপিও ইয়াত এক দ্বাদশ ভূজা দেৱী মূৰ্ত্তিয়ে প্ৰধান আৰু বিশিষ্ট খুৰ্টি অধিকাৰ কৰি আছে যাক আজিও স্থানীয় লোকে দশভূজা দূৰ্গা বৃদ্দি পূজা পৰে। বিভিন্ন অলঙ্কাৰেৰে সুশোভিতা এই দেৱীমূৰ্ত্তি এটি পদুমফুলৰ ওপৰত দণ্ডায়মান অৱস্থাত আছে। বাৰখন হাতেৰে ধৰি ৰখা বিভিন্ন অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ বোৰ চিনাক্ত কৰিব পৰা নাযায়। এক প্ৰকাণ সৰ্পৰ সপ্ত ফনাক দেৱীমূৰ্ত্তিৰ মূৰৰ ওপৰত চন্দ্ৰতাপ হিচাবে খোলি কৰা আছে। কিছুমান পণ্ডিতে এই মূৰ্ত্তিক দেৱী দূৰ্গাৰ মূৰ্ত্তি বুলি চিনাৰ্ট্টি কৰছে যদিও ড° বিৰিঞ্চি কুমাৰ বৰুৱা আৰু ড° শ্ৰীনিবাস মূৰ্ত্তিটিয়াক মনসাৰ মূৰ্ত্তি বুলি চিনাক্ত কৰিছে। সেয়ে হলে এতিয়ালৈটি অসমত আৱিস্কৃত হোৱা এইটোকে সম্ভৱতঃ একমাত্ৰ দ্বাদশপূৰ্ট্টি মনসাৰ মূৰ্ত্তি বুলি ঠাৱৰ কৰিব পাৰি।

এই দেৱী মূৰ্ত্তিৰ চিনাক্তকৰণ সম্পৰ্কত এতিয়াও মতভেদ চলি আছে; কিন্তু এই ক্ষেত্ৰত ভাৰতৰ পুৰাতত্ব বিভাগে এক নতুন তথ্য দাঙি ধৰিছে। তেওঁলোকৰ ৰিপৰ্ট মতে — এই মূৰ্ত্তি প্ৰকৃততে এক দেৱমূৰ্ত্তিহে আছিল — পৰৱৰ্ত্তী কালত ডাঠ প্লাষ্টাৰেৰে ইয়াক দেৱীমূৰ্ত্তিলৈ ৰূপান্তৰিত কৰা হৈছে। পুৰাতত্ব বিভাগৰ এই মন্তব্যই এক নতুন দিশ উশ্মোচন কৰিছে। এই মন্তব্য সঠিক বুলি ধৰি ল'লে এই দেৱমূৰ্ত্তিক (যিটোক দেৱী মূৰ্ত্তিলৈ ৰূপান্তৰিত কৰা হৈছে) চিনাক্ত কৰা প্ৰয়োজন হৈ পৰে। এই ক্ষেত্ৰত পুৰাতত্ব বিভাগে সম্পূৰ্ণৰূপে নিবৱ ভূমিকা লৈ আহিছে। বৰং এই বিষয়ত এক বিশিষ্ট আৰ্ম্তজাতিক কলা সমালোচক পণ্ডিতে কৰা মন্তব্য বিশেষ প্ৰণিধান যোগ্য।

বিষ্ণু দেৱতাৰ লগত সৰ্প জড়িত হৈ থকা আমি সকলোৱে জানো। বিষধৰ ফেটি সাপৰ সপ্তফনাৰে নিৰ্মিত চন্দ্ৰতাপৰ তলত দণ্ডায়মান অৱস্থাত থকা পাথৰত খোদিত বিষ্ণুৰ মূৰ্ত্তি বঙ্গদেশ আৰু ভাৰতৰ আন আন ঠাইত দেখিবলৈ পোৱা যায়। সেয়েহে প্ৰসিদ্ধ কলা সমালোচক কালী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়ৰ সুকুমাৰ কলা বিভাগৰ মূৰব্বী অধ্যাপক এছ্, কে, সৰস্বতীয়ে এই মূৰ্ত্তিক অনম্ভ বিষ্ণুৰ মূৰ্ত্তি বুলি উল্লেখ কৰিছে।

এই বিষয়ত আন এক যুক্তিৰো অৱতাৰণা কৰিব পাৰি। প্ৰাণ্ঐতিহাসিক যুগৰে পৰাই উত্তৰ-পূৰ্ব অঞ্চলক সামৰি ভাৰতৰ বহুতো ঠাইত সূৰ্য্য আৰু সৰ্প ওতঃপ্ৰোত ভাবে জড়িত। দুয়ো বেলেগ আকৃতি আৰু প্ৰকৃতিৰ হ'লেও লোক বিশ্বাস অনুসৰি দুয়োকে বৰষুণ সৃষ্টিকাৰী বুলি গণ্য কৰা হয়। প্ৰচণ্ড গ্ৰীষ্ম অথবা অতি অনাবৃষ্টিৰ সময়ত বৰষুণ বিচাৰি সূৰ্য্যক উপাসনা কৰা হয় আৰু বাৰিষা কালত বৰষুণ আৰম্ভ হোৱাৰ পিচত সপ'পূজা অনুষ্ঠিত হয়।

গ্ৰীষ্ম কালত সূৰ্য্যৰ প্ৰখৰতা আৰু ইয়াৰ উত্তাপৰ প্ৰচণ্ডতাই মানুহৰ মনত আলোড়নৰ সৃষ্টি কৰে। আনহাতে বাৰিষা কালৰ মেঘাচ্ছয় বতৰত স্তিমিত সূৰ্য্যৰ পোহৰেও জনসাধাৰণক ভীতি-বিহুল কৰি তোলে। সেই সময়ত সাপৰ আবিৰ্ভাৱ আৰু দংশনে মানুহৰ মনত ত্ৰাসৰ সৃষ্টি কৰে। ভৰি নাই অথচ তীব্ৰ বেগী; মোট সলায় কিন্তু বাবে বাবে বাচি উঠে; বহুদিনলৈকে একো নাখাই গাঁতত সোমাই থাকে আৰু বাৰিষাৰ বৰষুণৰ পানী গাঁতত সোমালে বাহিৰলৈ ওলাই আহি দীৰ্ঘদিনৰ উপবাস ভঙ্গ কৰে। ঠিক সেই সময়তে সৰ্প দংশনৰ ঘটনা ভয়াবহ ভাবে বাঢ়ে। এইবোৰ কথাই সাপৰ প্ৰতি মানুহৰ মনত গভীৰ ত্ৰাসৰ সৃষ্টি কৰে আৰু এই ত্ৰাসেই মানুহৰ মনত বিষ্ময় আৰু ভক্তিৰ সঞ্চাৰ কৰে। এইবোৰ ঘটনাই কালান্তক শত্ৰু সাপক পূজা কৰিবলৈ অসহায় মানুহক বাধ্য কৰে। বাৰিষা কালত সূৰ্য্য দেৱতাই যিদৰে মানুহক আকৃষ্ট কৰে, ঠিক সেইদৰে সাপেও সেই সময়ত মানুহৰ মনোযোগ সমানে আকৰ্ষণ কৰে।

এইবোৰ কথাৰ আলম লৈ এই সিদ্ধান্তত উপনীত হ'ব পাৰি যে ওপৰত উল্লেখ কৰা দেৱমূৰ্ত্তিটো প্ৰকৃততে এক সূৰ্য্যৰ মূৰ্ত্তিহে আছিল। সৰ্পৰ সপ্তফনাৰে সজা চন্দ্ৰতাপৰ তলত দণ্ডায়মান অৱস্থাত থকা এনেকুৱা সূৰ্য্যৰ মূৰ্ত্তি বঙ্গদেশত থকা বুলি ড° মাইতিয়ে তেওঁৰ গৱেষণা গ্ৰন্থত উল্লেখ কৰিছে। এই মূৰ্ত্তিটোক সূৰ্য্য দেৱতাৰ মূৰ্ত্তি বুলি অনুমান কৰিব পাৰি যদিও এই কথা খাটাংকৈ এতিয়াও প্ৰমান কৰিব পৰা নাই। ই আমাৰ অনুমান মাত্ৰহে; ইয়াক সন্দেহতীত ভাৱে প্ৰমান কৰাটো যুক্তিপূৰ্ণ হ'ব।

এই সূৰ্য্য পাহাৰৰ পূব অংশটোৰ নাম এক্চালীয়া পাহাৰ। এই অঞ্চলত যিটো থান আছে তাক স্থানীয় লোকে ৰাণ্ডাচানৰ থান বুলি কয়। প্ৰকাণ্ড পাথৰ এটাই ঘৰৰ চাল এখনৰ দৰে এই থানৰ ওপৰত ওলমি থকা বাবে এই অংশটোৰ নাম এক্চালীয়া পাহাৰ। ইয়াত কোনো মূৰ্ত্তি নাই — এছটা শিলকে জনসাধাৰণে ৰাণ্ডাচান দেৱতা বুলি পূজা-অৰ্চনা কৰে। এই পূজা বছৰত এবাৰহে সাতদিন ধৰি অনুষ্ঠিত হয়। প্ৰতি বছৰে বহাগ মাহৰ প্ৰথম দিনা এই পূজা আৰম্ভ হয় যদিও সেই মাহৰে ষষ্ঠদিনা প্ৰধান অনুষ্ঠানটো উদ্যাপন কৰা হয়। ইয়াত কোনো ব্ৰাহ্মণ পূজাৰী নাই আৰু কোনো বলিবিধানৰো প্ৰচলন নাই। ব্ৰাহ্মনে পূজাৰীৰ ঠাইত ৰাজবংশী অথবা ৰাভা জনজাতিৰ লোকে ইয়াত দেউৰী হিচাবে পূজাৰ কাম সম্পন্ন কৰে। বৰ্ত্তমান ইয়াৰ ভক্ত সকলৰ অধিকাংশই ৰাজবংশী আৰু ৰাভাজাতিৰ লোক যদিও আন আন সম্প্ৰদায়ৰ কম সংখ্যক হলেও ভক্তবৃদ্দই আহি এই দেৱতাক ভক্তি জনায়।

গাখীৰ আৰু ফুলেৰে এই দেৱতাক অৰ্চ্চনা কৰা হয়। ভক্ত বৃন্দৰ
মাজত পুৰুষতকৈ মহিলাৰ সংখ্যাই অধিক। তিৰোতা সকলে এক
সুখৰ সংসাৰ কামনা কৰি এই দেৱতালৈ প্ৰাৰ্থনা জনায়। কুমাৰী
ছোৱালীয়ে ভৱিষ্যতে এক সং স্বামী আৰু এক সুখী দাস্পত্য জীৱনশান্তি আৰু ঐশ্বৰ্য্যৰে পৰিপূৰ্ণ এক জীৱন — কামনা কৰি পূজা
আগবঢ়ায়। ব্যক্তিগত আৰু ৰাজহুৱা কল্যাণ কামনা কৰি পুৰুষ ভক্ত
সকলে এই দেৱতালৈ ভক্তি জনায়।

ৰাঙাচান দেৱতাৰ চিনাক্তকৰণ এতিয়লৈকে সঠিক ভাৱে হোৱা নাই। প্ৰাচীন কালৰে পৰা ৰাঙাচান নামেৰে পৰিচিত এই দেৱতাক এজন আধুনিক লিখকে ৰাঙাচান নামটো সংস্কৃতি কৰণ কৰি ৰঙাচৰণ কৰিছে আৰু কোনো যুক্তি প্ৰদৰ্শন নকৰি এওঁক বিশ্বকৰ্মা বুলি চিনাক্ত কৰিছে। এনেকুৱা কাৰ্য্যই সঠিক তথ্য উৎঘাটন কৰাৰ ক্ষেত্ৰত বাধাৰ সৃষ্টিহে কৰে।

ৰাণ্ডাচান শব্দৰ এটা নিজস্ব অৰ্থ আছে — যি অৰ্থই আনক এই দেৱতাক চিনাক্ত কৰাত সহায় কৰে। ৰাণ্ডাচান শব্দ গাৰোভ হাৰ ৰাংচান্ শব্দৰ পৰা অহা বুলি অনুমান কৰিব পাৰি — গাৰো ভাষাত যাৰ অৰ্থ হৈছে সূৰ্যা। ঠিক একেদৰেই ৰংদানী ৰাভাসকলেও সূৰ্য্যক ৰাংচাং বুলি কয়। মুঠতে গাৰো সকলৰ ৰাংচান আৰু ৰাভা সকলৰ ৰাংচাং — এই দুয়োটা শব্দই সূৰ্য্যক বুজায়। এই দুয়োটা শব্দৰ পৰাই ৰাঙাচান শব্দৰ উদ্ভৱ হোৱা বুলি ক'ব পাৰি।

বিশেষ উল্লেখযোগ্য যে এই পাহাৰৰ নামনি অঞ্চলত এতিয়াও বহুতো ৰাজবংশী আৰু ৰাভা জাতিৰ লোক বাস কৰি আছে যদিও গাৰো সকলৰ সংখ্যা ইয়াত বৰ্ত্তমান নিচেই তাকৰ। মাত্ৰ কিছু বছৰ আগলৈকে এই অঞ্চলত অসংখ্য গাৰো দ্বোকে বসতি কৰিছিল, কিছু সম্প্ৰতি নানা কাৰণত তেওঁলোকে এই অঞ্চল এৰি আন ঠাইলৈ গুচি যাবলৈ বাধ্য হৈছে।

লোক বিশ্বাস মতে সূৰ্য্য দেৱতাই বন্ধ্যা তিৰোতাক পুত্ৰ সম্ভান লাভৰ বৰদান দিয়ে। সং স্বামীৰে সৈতে এক সুখৰ সংসাৰ লাভ কৰাৰ অৰ্থে কুমাৰী ছোৱালীয়ে কৰা প্ৰাৰ্থনাক সূৰ্য্য দেৱতাই মঞ্জুৰ কৰে। সেয়েহে ৰাঙাচান থানত তিৰোতাৰ সংখ্যাই অধিক। শেষত এক বিশেষ মন্তব্যবে এই প্ৰৱন্ধটো সামৰিছোঁ। The Sun and the Serpent love of Bengal নামৰ প্ৰসিদ্ধ গৱেষ মূলক গ্ৰন্থৰ লিখক কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয়ৰ আধুনিক ভাৰতীয় ভাষাৰবীন্দ্ৰ নাথ ঠাকুৰ অধ্যাপক আশুতোষ ভট্টাচাৰ্য্যৰ এই মন্তব্য এই ক্ষেত্ৰ বিশেষ ভাৱে উল্লেখযোগ্য — "It is thus apparent that be primitive sun cult which in all probabilities original with the proto-Austroloid period of time, is still previlent over a wide area extending upto the farthest coner of Assam in the East." মুঠতে শ্রীস্থ্য পাহাৰৰ ৰাখ্য থানে প্রাণ্ এই পাহাৰৰ ক্ষেত্ৰত কালিকা পুৰাণত উল্লেখিত — দেব আদিত্যঃ সততম্ স্থিতঃ — যত ভগবান আদিত্যই যুগ যুগা ব্যাপি অৱস্থান কৰিছে — কথাষাৰীয়ে আমাৰ এই ধাৰণ যথাৰ্থতাকেই প্রমান কৰে।

.... যিকোনো সামাজিক, ৰাজনৈতিক আদি সংগঠনৰ প্ৰতি আগ্ৰহী সকলৰ বাবে মৌলিকপ্ৰয়োজন হৈছে সততা, নিষ্ঠা, পৰিশ্ৰমৰ শিক্ষা; যেনেকৈ যিকোনো ভাৰতীয় সংগীতৰ বাবে প্ৰয়োজন হয় সা-ৰে-গা-মাৰ শিক্ষা।
—— ভবেন্দ্ৰ নাথ শইকীয়া

কেইগৰাকীমান বৰেণ্য কবিৰ কবিতাৰ সুৰ ঃ এটি সমীক্ষণ

দীপক শৰ্মা মেধি

ব্যাপকতম মেহনতী মানুহ যাৰ নিষ্পেষিত জীৱনে হাড় ভঙা শ্ৰম কৰিও ক্ষুধাৰ তাড়ণাত হাঁহাকাৰ কৰে। আমাৰ বৰ্ত্তমান সমাজৰ ইতিহাস হ'ল শ্ৰেণী বিভক্ত সমাজৰ ইতিহাস। ইয়াত উচ্চ কলাৰ সৃষ্টি বা ৰস গ্ৰহণ এতিয়াও অবাস্তৱ। আদিম সমাজৰ কবিতা মূলতঃ পদ্যৰ ৰূপত সজোৱা সাধাৰণ বাক্য হ'লেও ই সৰ্বসাধাৰণৰ মাজত মুখে মুখে প্ৰচলিত আছিল যাক বৰ্ত্তমানৰ কবিতাৰ ক্ষেত্ৰত দেখা নাযায়। সম্ভৱতঃ, আজি পৃথিৱীৰ সকলোতে বিশেষীকৰণ (specialisation) হোৱা বাবে কলাকাৰ সকলো যেন বিশেষজ্ঞ (specialist) হৈ পৰিছে। সৌ সিদিনালৈকে গেলিলিও এজন পদাৰ্থবিদ হৈও কবি হ'ব পাৰিছিল। ঠিক যেনেদৰে লিয়নার্ড-দা-ভিন্সি চিত্রবিদ হৈও পদার্থ বিদ্যাত বিশেষজ্ঞ হ'ব পাৰিছিল। কিন্তু আজিৰ পদাৰ্থবিদে এনে এটি ভাষাত কথা কয় যাক তেওঁৰ সগোত্ৰী সকলেহে বুজ্জি পায়। বৰ্ত্তমানৰ কলাকাৰ সকলেও যেন তেওঁলোকৰ সগোত্ৰী সকলৰ উদ্দেশ্যেহে কয়। আধুনিক কবিতা বহুতো পাঠকৰ বোধগম্য নহয় বোলা কথাষাৰ কিছু সত্য হলেও কবিতা বুজাৰ বাবে পাঠকৰ মানসিক আৰু বৌদ্ধিক প্ৰস্তুতিৰও প্ৰয়োজন।

নিজা সৃষ্টিৰ যোগেদি মানৱ জীৱনৰ সকলো কথা সাধাৰণৰ আগত কৃতকাৰ্য্যতাৰে দাঙি ধৰিব পৰা শ্বেক্সপীয়েৰে সম্ভৱতঃ আছিল শেষ মহৎ লেখক। এই কবিজনাৰ যোগেদিয়েই কবিতাই শেষ বাৰৰ বাবে স্বকীয় গুণাৱলী পৰিহাৰ নকৰাকৈ নিজকে প্ৰকাশ কৰিব পাৰিছিল। ১৮৭০-৮০ চনতফ্ৰান্সৰ কবি সকল ইংলেণ্ডৰ সকলতকৈ পাৰিছিল। ১৮৭০-৮০ চনতফ্ৰান্সৰ কবি সকল ইংলেণ্ডৰ সকলতকৈ বেছি দ্ৰুত গতিৰে আধুনিক যুগত প্ৰৱেশ কৰিলে। মহাদেশীয় কবিতাতকৈ কিছু আগতে আৰম্ভ হৈছিল ইংৰাজী কবিতাৰ ৰোমাণ্টিক কবিতাতকৈ কিছু আগতে আৰম্ভ হৈছিল ইংৰাজী কবিতাৰ ৰোমাণ্টিক আন্দোলন, হলেও ফৰটি বিপ্লৱ আৰু ইয়াৰ পৰৱৰ্ত্তী ১৮৩০, ১৮৪৮ আন্দোলন ১৮৭০ চনৰ গণ বিদ্ৰোহৰ লগে লগে ফৰাটী কবিতা আৰু ১৮৭০ চনৰ গণ বিদ্ৰোহৰ লগে লগে ফৰাটী কবিতা ভিক্টোৰীয়ান যুগৰ ইংৰাজী কবিতাতকৈ বেছি ক্ষীপ্ৰ গতিত আগবাঢ়ি

ন'ল।
ফ্রান্সৰ প্রথম বিশ্ব কবি শ্বার্ল বোদলেয়াৰ আধুনিক কবিতাৰ ফ্রান্সৰ প্রথম বিশ্ব কবি শ্বার্ল বোদলেয়াৰ আধুনিক কবিতাৰ জনক। এওঁৰ মৃত্যুৰ চাৰি বছৰ পিচত বিখ্যাত ফৰাচী কবি আর্থাৰ জনক। এওঁৰ মৃত্যুৰ চাৰি বছৰ পিচত বিখ্যাত ফৰাচী কবি আর্থাৰ শ্বাবোয়ে কৈছিল — "তেওঁ প্রথম দ্রষ্টা, কবি সকলৰ ৰজা আৰু সত্য দেৱতা।" কবি ভেৰ্লেনে ঘোষণা কৰিছিল যে "ফ্লৰ-দু-মাল"ৰ ৰচনা ভঙ্গী "আলৌকিক শুদ্ধতা সম্পন্ন।" জীৱন্ত কালত বিশেষ সমাদৰ লাভ নকৰা এইজনা মহান কৰি কেৱল প্ৰকৃতিবাদৰেই উৎসস্থল নহয় সামগ্রিক ভাৱে তেওঁ আধুনিক কবিতাৰ জন্মদাতাও। পৰৱৰ্ত্তী যুগত এওঁৰ নিচিনা অন্য কোনো ফৰটি কবিৰ প্ৰভাৱ বিদেশী সাহিত্যত ইমান বিস্তুত ভাৱে পৰা নাছিল।

মৌলিকতাৰ বাবে বোদলেয়াৰৰ ওচৰত শ্বৃণী আৰ্থাৰ বাৰাঁবে এজন ফৰাচী কবি। এওঁ বুৰ্জোৱা জগতৰ সকলো ধাৰ্মিক ৰাজনৈতিক আৰু নৈতিক ব্যৱস্থাৰ বিৰুদ্ধে বিদ্ৰোহ কৰি উঠিছিল। প্ৰত্যক্ষ ভাৱে পৰৱৰ্ত্তী ফৰাচী কবিতাত আৰু পৰোক্ষ ভাৱে আন ভাষাৰ আধুনিক কবিতাত ৰাঁবোৰ অপৰিসীম প্ৰভাৱ পৰি অনতিপলমেই ফৰাচী সাহিত্য দুটা ভাগত বিভক্ত হৈ পাৰ্ণেচিয়ানচ্ আৰু প্ৰতীকবাদৰ উদ্ভৱ হ'ল।

এটা কথা মনত ৰখা উচিত যে ফেচিবাদ আৰু সাম্যবাদ উভয়ে ব্যক্তিবাদত বিশ্বাস নকৰে। কমিউনৰ ঘটনাসমূহতেই যেন কাৰ্লমাৰ্ক্সে শ্ৰেণীহীন সমাজৰ সম্ভাৱনা দেখিছিল। মাৰ্ক্সে কৈছিল—

"The philosophers have only interpreted the world in various ways, the point, however, is to change it."

"তোমালোক যি সকলে পানোলও হৈ নাচি বাগি ৰাত্ৰি যাপন কৰা, আৰু পুৱাবেলা উষ্ণ স্থানাগাৰত বহি নতুনকৈ ভূষিত হোৱা বীৰ সকলৰ বিষয়ে পঢ়ি সময় কটোৱা — তোমালোকৰ নিচিনা উলংগ জাৰজ সকলৰ লগত বহাতকৈ মই বৰং গণিকালয়ত, গণিকাসকলক সুৰা যাচি সময় কটাম।" ৰুছ দেশৰ জনপ্ৰিয় কবি ভ্লাদিমিৰ মায়াক'ভস্কি আছিল সাম্যবাদত অতিশয় অনুপ্ৰাণিত মহান কবি। এওঁৰ মুক্ত ছন্দৰ কবিতা আছিল বিদ্ৰোহী, সাৱলীল আৰু তীক্ষ্ণধাৰযুক্ত। মাৰ্ক্সবাদৰ দ্বাৰা অনুপ্ৰাণিত হোৱা পৰিবৰ্ত্তনকামী কবি সকলৰ ভিতৰত জাৰ্মান কবি ব্ৰেখ্ট্ প্ৰথম। মহাযুদ্ধৰ পিচৰ পৰাই ৰাজনৈতিক আৰু অৰ্থনৈতিক সমস্যাৰ পটভূমিত কৃতকাৰ্য্যতাৰে কবিতা লিখা প্ৰথম পশ্চিমীয়া কবিতা 'To Posterity' ত ব্ৰেখ্টে এঠাইত লিখিছে —

" — কিন্তু, মই কেনেকৈ খোৱা-বোৱা কৰিম, যেতিয়া মোৰ এই আহাৰ কোনোবা ক্ষুধাতুৰৰ মুখৰ পবা কাঢ়ি অনা হৈছে।"

"কবিয়ে যেতিয়া লিখে, কথা কয় নাইবা অস্ত্র হাতত লয় — তেওঁ মানুহজন একেজনেই। কবিসকলতো আৰু ভ্ৰষ্ট নহয় যে তেওঁলোকে মেঘৰ ৰাজ্যত পাখি মেলি উৰি ফুৰাৰ সপোন দেখিব। কবি সকলো সমাজৰে একোজন — জীৱনৰ লগত তেওঁলোক যুক্ত, জীৱনৰ তেওঁলোক সংগঠক" বুলি নতুন কবিৰ বিষয়ে কোৱা নাজিম হিক্সং তুৰস্কৰ মহান গণ কবি। এজান কমিউনিষ্ট হিচাবে জনসাধাৰণৰ

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

বাবে নিজক উৎসৰ্গা কৰাৰ মহান আদৰ্শৰ শিক্ষা পাইছিল ৰুছ কবি মায়াক'ভস্কিৰ পৰা। হিক্মতে ''জেইলখানাব চিঠি''ত লিখিছিল —

"মই আছোঁ মানুহৰ মাজত, মই ভালপাওঁ মানুহক, ভালপাওঁ আন্দোলন, ভালপাওঁ চিম্ভা কৰি, মোৰ সংগ্ৰামক মই ভালপাওঁ, মোৰ সংগ্ৰামৰ অন্তঃস্থলত মানুহৰ আসনত তুমি প্ৰতিষ্ঠিত, প্ৰিয়তমা মোৰ, তোমাক ভালপাওঁ।"

এনে ধৰণৰ প্ৰগতিশীল বহুকবিতা পৃথিৱীৰ বিভিন্ন ভাষাত ৰচিত হৈছে। লেটিন আমেৰিকাৰ চিলিত ১৯০৪ চনত জন্ম গ্ৰহণ কৰা সাম্যবাদী কবি নেফ্তালি ৰিকাৰ্ডো ৰেইচ বা চুৱাতালি, চমুকৈ পাৱলো নেৰুদা এই সকলৰ মাজত শ্ৰেষ্ঠ। নেৰুদাই দহ বছৰ বয়সৰ পৰা কবিতা ৰচনাত হাত দি ১৯৫০ চনত আৰ্ম্ভজাতিক শান্তি বঁটা, ১৯৫১ চনত লেনিন বঁটা আৰু ১৯৭১ চনত নোবেল বঁটাৰে সন্মানিত হৈছিল। বিভিন্ন ৰাষ্ট্ৰত ৰাষ্ট্ৰদূত হিচাবে কাৰ্য্যনিৰ্বাহ কৰা নেৰুদাৰ চিলিব আয়েৰন্দ চৰকাৰৰ পতনৰ সময়তে মৃত্যু হয়। নেৰুদাই 'মেময়ৰচ্'ত শব্দৰ ওপৰত এটা টোকা লিখিছিল—

''আপোনাৰ যিহকে ইচ্ছা তাকেই কব পাৰে, কিন্তু যি গায়, উৰি উৰি ওপৰলৈ যায় আৰু তললৈ নামি আহে সেয়া হৈছে শব্দ — মই সিহঁতক নতশিৰে প্ৰণাম কৰো — সিহঁতক মই ভালপাওঁ - সাঙোৰ খাই লাগি ধৰো সিহঁতৰ গাত, দ্ৰুত গতিৰে ধাবিত হওঁ সিহঁতৰ বক্ষস্থললৈ, সিহঁতক কামুৰি চাওঁ, সিহঁতক গলাই গলাই নিঃশেষ কৰি পেলাওঁ — শব্দক মই খুব ভালপাওঁ — অপ্ৰত্যাশিত সকল! সিহঁতক মই আৰোপন কৰো — স্বৰবৰ্ণখিনি ভালপাওঁ মই — সিহঁতে ৰঙীন উপলা হৈ তিৰ্বিৰাই থাকে মোৰ সন্মুখত ৰূপালী মাছৰ দৰে, সিহঁতৰ কোমলতাখিনি ফেন সদৃশ, সিহঁত সূতা, ধাতু, নিয়ৰৰ দৰে — কিছুমান শব্দৰ পিচে পিচে মই লৰি ফুৰো — সিহঁতৰ স্থান বিচাৰি ফুৰো — যুজঁৰ মধ্যভাগত সিহঁতক মই ধৰি ৰাখো — সিহঁতে যেতিয়া গুন গুনাই মোৰ কাষেদি পৰা হৈ যায় সিহঁতক মই জালপাতি ধৰি পেলাওঁ, পৰিষ্কাৰ কৰি লওঁ, চিঙি আনো, নিজকে মই আহাৰৰ থালৰ সন্মুখত উপস্থাপন কৰো — সিহঁতে মোৰ বাবে কঢ়িয়াই আনে স্ফটিকৰ দৰে বয়ন উৎপাদন, অনুকম্পন, মণি মুকুতা, শাক-পাচলি, তৈল-সামগ্ৰী — ফলৰ দৰে, শেলুৱৈৰ দৰে, মণি পাথৰৰ দৰে, জলফাইৰ দৰে — তেতিয়া মই সিহঁতক সান-মিহলি কৰি পেলাওঁ, জোকাৰি দিওঁ, পান কৰো, গিলি খাই পেলাওঁ, থেতালি সোপসুপীয়া কৰো, সু-শোভিত কৰো, সিহঁতক মই যাবলৈ এৰি দিওঁ – সকলোবোৰ অন্তৰ্নিহিত হৈ থাকে শব্দত — এটা ধাৰণাই এক সম্পূৰ্ণ পৰিৱৰ্ত্তনৰ মাজেদি পাৰহৈ যায় কিয়নো এটা শব্দই আন এটাৰ ঠাই সলনি কৰে, আন এটাই পূৰ্ণ কৰে অৱস্থান যেনেকৈ খণ্ডবাক্যৰ মাজত প্ৰত্যাশিত ক্ষুদ্ৰ নষ্টপ্ৰায় বস্তু এটাৰ উপস্থিতিও হৈ পৰে গ্ৰহণ যোগ্য

— সিহঁতৰ ছাঁ আছে, স্বচ্ছতা আৰু পাষি আছে, আৰু আছে বোঁৱতী নৈৰ গতিশীলতা, নানা দেশ পৰিভ্ৰমনৰ দ্বাৰা সংগ্ৰীহিত অভিজ্ঞতাৰ সৰ্বজ্ঞান — সিহঁতবোৰ কৌটি কলীয়া পুৰণি আৰু সিহঁতবোৰেই অত্যন্ত আধুনিক — সিহঁত মৰাশ কঢ়িওৱা চাঙিত বাস কৰে, লুকাই থাকে পুষ্পিত কুসুমৰ ধুনীয়াষিনিৰ মাজত — সিহঁতে পৰিবহন কৰি লৈ যায় স্বৰ্ণ আৰু আমাৰ বাবে এৰি খে যায় সূৱৰ্ণ — সকলো ষিনিয়েই কঢ়িয়াই নিয়ে সিহঁতে, আমাৰ বাবে কেৱল এৰি থৈ যায় শব্দ-শব্দ-শব্দ"। ('নতুন দৈনিক' ২৮ নভেম্বৰ/'৮৯ ৰ পৰা)

ৰাঁবোৰ সময়ৰ পৰা এতিয়ালৈকে ইঙ্গ-মার্কিন আধুনিক কবিতাৰ ক্ষেত্রত প্রস্থাত কবি সকল হ'ল — ইয়েট, ডি, এইচ, লবেম্স, ইলিয়ট আৰু অ'ডেন। ইয়েটছ আছিল ৰাজনৈতিক আন্দোলনৰ সংগঠক, লবেম্স আছিল এজৰা পাউগুৰ বিপৰীত। তেওঁ মানৱ সভ্যতাক ৰোগাক্রান্ত বুলি ভাবিছিল যদিও বিশ্বাস কৰিছিল যে এই ৰোগাক্রান্ত প্রকৃতিৰ সহায়ত সুস্থ কৰি তোলা সম্ভৱ। ইলিয়ট আৰু অ'ডেন আছিল মূলতঃ চিন্তাশীল কবি।

১৮৮৮ চনত আমেৰিকা যুক্তৰাষ্ট্ৰৰ মিটোৰীৰ চেণ্টলুইত টি, এছ ইলিয়টৰ জন্ম হয়। আধুনিক জীৱনে সৃষ্টি কৰা আত্মাৰ শুষ্কতা আৰু যন্ত্ৰণাময় বিৰক্তিয়ে ভৰাই তোলে ইলিয়টৰ কবিতাৰ শৰীৰ—

''সময়, তোমাৰ বাবে

আৰু মোৰ বাবে সময় আছে এশটা সিদ্ধান্তহীনতাৰ বাবে আৰু এশটা বিবেচনা আৰু পুনবিবেচনাৰ বাবে টোষ্ট আৰু চাহ খোৱাৰ আগতে।"

১৯৪৮ চনত ইলিয়টে সাহিত্যৰ নোবেল বঁটা লাভ কৰে আৰু ইংলণ্ডৰ 'The Dean of English Letters' পদবীৰ সন্মান লাভ কৰে। 'JOURNEY OF THE MAGI ত এঠাইত ইলিয়টো লিখিছিল—

"Then the camel men cursing and grumbling
And running away, and wanting their liqur and women
And night-fires going out, and the lack of shelters,
And the cities hostile and the town unfriendly,
And the villages dirty and charging high prices,
A hard time we had of it."

১৯৬৬ চনত এক জটিল যুগৰ চিত্ৰকৰ এইজনা মহান কবি ইলিয়টৰ মৃত্যু হয়।

১৯০৭ চনত জন্ম গ্ৰহণ কৰা অ'ভেন নামৰ কবিজনাই ১৯৩৭ চনত King George ৰ Gold Medal আৰু ১৯৪৮ চনত Age of Anxiety ৰ বাবে Pulitzar পুৰদ্ধাৰ লাভ কৰাৰ উপৰিও ১৯৫৩ চনত লাভ কৰে Bollingen poetry prize। এইজন কবিয়ে শিল্প যুগৰ উপযোগীকৈ কিছুমান শব্দ যেনে — 'rubber gloves', acleron', 'neurosis' আদি কবিতাত ব্যৱহাৰ কৰিছিল। যুদ্ধ আৰু বিপ্লৱৰ প্ৰতি মোহ ভঙ্গ হোৱাৰ পিছত ব্যঙ্গাত্মক লিখনি পবিহাৰ কৰি ১৯৩৯ চনত আমেৰিকা যুক্তৰাষ্ট্ৰলৈ যোৱা এই কবিজন আছিল এজন সংকট কালৰ কবি। এওঁ এ ঠাইত লিখিছিল —

- And all the reports on his conduct agree that, in modern sense of an old fashioned word, he was a saint.
- For in everything he did served the Greater —
 Yet he was n't a scab or odd in his views
 For his union reports that he paid his dues
 (Our report on his union shows it was sound)
 And our social psychology worker found
 that he was popular with his mates and liked a drink.

(The Unknown Citizen)

প্ৰকৃতাৰ্থত এই যুগৰ কবি সকলৰ প্ৰকৃত নেতা আছিল অ'ডেন। ১৯৭৩ চনত এই কবিজনৰ মৃত্যু হয়।

মুচা জলিল। ছোভিয়েট ৰাছিয়াৰ এটি প্ৰাতঃস্মৰনীয় নাম। মুচা জলিলেই একমাত্ৰ কবি যিয়ে ৰাছিয়া চৰকাৰৰ "হিৰো অৱ দা ছোভিয়েট ইউনিয়ন" আৰু "লেলিন" বঁটাৰে পুৰষ্কৃত। মুচা জলিল আজি সাহস, বীৰত্ব আৰু দেশপ্ৰেমৰ প্ৰতীক, সু-সংগঠক, সাহসী যোদ্ধা। ১৯৭৬ চনত, জলিলৰ প্ৰকাশ পোৱা কাব্য গ্ৰন্থৰ পৰিমাণ আছিল ২,৫০,০০০ খন। ১৯২১ চনত ১৫ বছৰ বয়সত কবিয়ে লিখিছিল—

We are strong. We will not lose our bearings There is none can bar our onward treat. We are many, to the bright and tracking. We cannot and will not be misled.

এই একেই উদামেৰে কুৰি বছৰ পিচতো মোৱাবিট বন্দীশালত আপোচহীন ভাৱে লিখিছিল —

"Brave in battle you must be, djigit,
Hope in battle never leaves the brave.
Freedom goes with courage, they are granite,
If you have no courage you're a slave!"

মুচা জলিলৰ জন্ম হয় ৰাছিয়াৰ ওচেনবাৰ্গষ্টেপছৰ তাতাৰ গাওঁ মুষ্টাফিনোত। শৈশৱৰ পৰাই দাৰিদ্ৰৰ আঁচোৰত জৰ্জৰিত মুছা জলিলে ১৯৪২ চনৰ জুন মাহত জাৰ্মান ফেচিষ্ট সকলৰ যুদ্ধ ঘাটি দখল কৰিবলৈ গৈ শ্বেলৰ আঘাতত জখম হৈ বন্দী হয়। কবিৰ 'মোৱাবিট নোট বুক'ৰ শ্ৰীযুত অৱনী চক্ৰৱৰ্ত্তী আৰু শ্ৰীযুত অনিল ডেকাই কৰা অসমীয়া অনুবাদ 'মুছা জলিলৰ কবিতা'ৰ কাৰাগাৰৰ কুঠৰী (The prison cell) নামৰ কবিতাটিৰে সামৰিছোঁ —

কাৰাগাৰৰ কুঠৰী ঃ শিকলিত আৱন্ধ উকা আঙুলিৰে সৰু এই কুঠৰি ফালি ওলাই নগ'লে মৃত্যুৰ গোপন হাতে সকলোতে তোমাক বিচাৰি ফুৰিব। তোমাক বস্তাত বান্ধি সিহঁতে জঘন্য ধেমালি চলাইছে সৰ্বাংগত আঁজুৰি আঁজুৰি ধূলিৰ লগত মিলাব খুজিছে। যাঁতত পিহিছে মানুহৰ জীৱন জুৰুলা জীৱনৰ পাহাৰ জমিছে ইতিহাসৰ বাট কৰি বন্ধ, আতংক প্ৰতিদিনে শিঁয়ৰি উঠিছে। ঘেঁহ নহয়, পিহিছে জীৱন সিহঁতৰ উৰহৰ উশ্মন্ত লোভৰ জিভাই চুহি চুহি খাইছে ঘাৰ পৰা নিগৰা তেজ আৰু পুঁজ। স্তব্ধ হওক যাঁতকলৰ উন্মত্ত গৰ্জন ভাঙি যাওক তাৰ ঘূৰণৰ চকা আৰু যেন মোৰ দেশলৈ নবয় এই তেজৰ খমলা। বন্ধ বস্তাৰ মুখবোৰ খুলি দিয়া এই লোভৰ ঘৰত দিয়া জুই তোমাৰ ক্ষোভৰ অগ্নিৰ বৰ্শামুখেৰে চূৰ্ণ-বিচূৰ্ন কৰা যাতনাৰ এই যাঁতকল।

সহায়ক ঃ----

- ১। অসম সাহিত্য সভা পত্ৰিকা
- ২। ছন্দ শিল্প
- ৩। গণ কবিতা
- ৪। অনির্বান
- ৫। মুচা জলিলৰ কবিতা
- ৬। নতুন দৈনিক, ২৮ নবেম্বৰ/৮৯

সৃষ্টিশীল এজন শিল্পী ঃ কলাগুৰু বিষ্ণুৰাভা

শ্ৰীপ্ৰবীণ নাথ

"মই দেখি অহা এক যুগৰ বিষ্ময় গ্ৰেনাইট শিলৰ বুকু ফালি থিয় দিয়া অভ্ৰ ভেদী সীমান্ত প্ৰহৰী সেই শাল গছজোপা। মুখত দেখিছোঁ তাৰ দৰিদ্ৰৰ চেকা চকুত জিলিকি উঠে ভৱিষ্যতৰ আভা নাম তাৰ — কমৰেড ৰত্নেশ্বৰ ৰাভা।"

তেৱেঁই বিষ্ণু প্ৰসাদ ৰাভা, বিষ্ণুদা, বিষ্ণু ককাইদেউ, কলাগুৰু ৰাভা, তেজপুৰীয়া গায়ন অথবা হালোৱা-হজুৱা বাস্ধি সকলৰ 'আতা' একেজনেই মানুহ, যাক বিষ্মিত কৰি এজন সাহিত্যিকে এইদৰে সোঁৱৰিছে ঃ—

"ঘাঁহনিৰে ঘেৰা অসমৰ কোমল ৰঙামাটি ভেদ কৰি মাজে মাজে মূৰ দাঙি থিয় হৈ আছে সৰু সৰু গ্ৰেনাইট শিলৰ পাহাৰ। আমাৰ সকলোৰে প্ৰিয় 'বিষ্ণুদা' আছিল ঠিক তেনে। লোহাৰ খুটাৰ দৰে কঠিন পেশীৰ হাত ভৰি, বহল বুকু, দীৰ্ঘকায় আৰু তিব্বতো-বৰ্মন ৰাভা উপজাতিৰ চেপেটা গঢ়ৰ মুখ, সপোন সনা এজুৰি চকু। কণ্ঠস্বৰত উদাৰৰ খৰজ 'গন্তীৰতা '।"

১৯০৯ চনত ঢাকাত কলাগুৰুৰ জন্ম হয়। তাতে তেওঁ বাংলা ভাষাত প্ৰাথমিক স্কুলত পঢ়িছিল। ইয়াৰ পিছত তেওঁ তেজপুৰ চৰকাৰী হাইস্কুলৰ পৰা প্ৰথম বিভাগত প্ৰৱেশিকা পৰীক্ষা পাছ কৰে। তাৰ পিছত কলিকতাৰ ৰিপন কলেজত আই, এছ, চি আৰু ছেন্টপ'ল কলেজত বি,এছ,চি পঢ়োঁতে জাকত জিলিকা খেলুৱৈ বিষ্ণুপ্ৰসাদ ক্ৰমে ক্ৰিকেট আৰু ফুটবল টিমৰ কেপ্তেইন হৈছিল। তেওঁ সকলোৰে দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰিছিল আৰু আকৰ্ষণ কৰিছিল চৰকাৰী চোৰাংচোৱাৰো দৃষ্টি সন্ত্ৰাসবাদীৰ সৈতে সম্পৰ্ক ৰখাৰ অহৈতৃক সন্দেহত।

কলিকতাৰ পৰা বিদায় ল'বলৈ বাধ্য হ'ল। তাৰপৰা আহি কোচবিহাৰৰ কলেজত ভৰ্তি হল। কিন্তু তাতো সন্দেহ। বঙ্গত তেতিয়া সন্ত্ৰাসবাদী কাৰ্য্যকলাপৰ ভৰপক, দেশ জুৰি স্বাধীনতা ৰণৰ জোৱাৰ আৰু কেউপিনে পুলিচ চোৰাংচোৱাৰ পিতৃপিতানি।

কোচবিহাৰৰ ৰাজভৱনৰ দুৱাৰ মুখত এদিন ৰাতি গোপনে বিষ্ণুৰাভাই আঁৰি দিলে নিজে ৰচিত এটা ছড়া —

> "ৰাজ্যে আছে দুইটি পাঠা একটি কালো একটি সাদা ৰাজ্যেৰ যদি মংগল চাও দুইটি পাঠাই বলি দাও।"

ভাৰতবৰ্ষৰ দুটা পাঠা অৰ্থাৎ দুটা শোষক অত্যাচাৰী শ্ৰেণীৰ চৰিত্ৰ তেওঁৰ কাষত প্ৰফু টিত হৈছিল। এটা পাঠা হ'ল বগা জুৰ্মাই বৃটিছ সাম্ৰাজ্যবাদ আৰু আনটো হল ক'লা অৰ্থাৎ বৃটিছ সম্ৰাজ্যবাদৰ ছত্ৰছায়াত পোহপাল যোৱা আৰু ৰঘুমলাৰ দৰে লহ-পইকৈ ঠন ধৰি উঠা ভাৰতবৰ্ষৰ নতুন বুজোৱা বা শিল্পপতি শ্ৰেণীটো। ভাৰতবৰ্ষৰ স্বাধীনতা আন্দোলনৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত তীখাৰ দৰে পাগ লৈ উঠা ৰাভাদেৱে তেতিয়াই এই নতুন ক'লা শ্ৰেণী বা নতুন বুজোৱা শ্ৰেণীটোৰ পৰা আহিব পৰা ভৱিষ্যত ভয়াবহতাৰ কথা বুজিৰ পাৰিছিল। পিছে তেওঁৰ এনেবোৰ কাণ্ড বেছিদিন নিটিকিল। তেওঁৰ কোচবিহাৰৰ পৰা বহিষ্কাৰ কৰাৰ হুকুম হ'ল। তাৰ পিছত তেওঁ তেজপুৰ পালেগৈ আৰু গ্ৰহণ কৰিলে সুকীয়া এটা জীৱন — স্বাধীনতা যুঁজাৰুৰ জীৱন।

কিছুদিন পিছত তেওঁ ৰংপুৰৰ কাৰ্মাইকেল কলেজত পুনৰ্ ছাত্ৰ জীৱন আৰম্ভ কৰিলে। কিন্তু নাই, তেওঁ আৰু নোৱাৰিলে। পুলিছৰ জুলুমত পৰি শিক্ষা জীৱন সিমানতে সমাপ্ত কৰিলে। তেওঁ আকৌ কলিকতালৈ গ'ল।

"বাঁহী" আলোচনীত তেওঁ বিষ্ণুপ্ৰিয়া ৰাভা ঠাকুৰীয়াৰ ছগ্ম নামত "চিত্ৰলেখা" বিভাগটো পৰিচালনা কৰিলে। ইতিপূৰ্বে তেওঁ সুকুমাৰ কলা চৰ্চাত একনিষ্ঠ ভাৱে ব্ৰতী হৈ পৰিছিল। এতিয়া নতুৰ্ উদ্যমেৰে সংগীত, নৃত্যবাদ্য আদি সকলো কলাৰ সাধনাত সমাৰ্শে মনোযোগী হৈ উঠিল।

বিষ্ণুপ্ৰসাদে সুদূৰৰ পৰা অসমলৈ চাই পঠিয়ালে। দেখিলে অসমৰ বৰ্ণাঢ্য সংস্কৃতিৰ সু-সমৃদ্ধ ৰূপ আৰু তাৰ গৌৰৱময় ঐতিহা স্বৰূপ। তেওঁ ধ্যান কৰিলে যুগস্ৰষ্টা শ্ৰীমন্ত শংকৰক। ভাৰতৰ জাগি সত্ত্বাসমূহে নিজ নিজ পৰিচয় বিচাৰিছে, পূৰ্বাঞ্চলতো জাতীয় ধমনী স্পন্দন জাগিছে। বিষ্ণুপ্ৰসাদে দেখিছে সপোন!

সৃষ্টিশীল এজন শিল্পী ঃ কলাগুৰু বিষ্ণুৰাভা

শ্ৰীপ্ৰবীণ নাথ

"মই দেখি অহা এক যুগৰ বিশ্বয় গ্ৰেনাইট শিলৰ বুকু ফালি থিয় দিয়া অভ্ৰ ভেদী সীমান্ত প্ৰহৰী সেই শাল গছজোপা। মুখত দেখিছোঁ তাৰ দৰিদ্ৰৰ চেকা চকুত জিলিকি উঠে ভৱিষ্যতৰ আভা নাম তাৰ — কমৰেড ৰত্নেশ্বৰ ৰাভা।"

তেৱেঁই বিষ্ণু প্ৰসাদ ৰাভা, বিষ্ণুদা, বিষ্ণু ককাইদেউ, কলাগুৰু ৰাভা, তেজপুৰীয়া গায়ন অথবা হালোৱা-হজুৱা বান্ধি সকলৰ 'আতা' একেজনেই মানুহ, যাক বিদ্মিত কৰি এজন সাহিত্যিকে এইদৰে সোঁৱৰিছেঃ—

"ঘাঁহনিৰে ঘেৰা অসমৰ কোমল ৰঙামাটি ভেদ কৰি মাজে মাজে মূৰ দাঙি থিয় হৈ আছে সৰু সৰু গ্ৰেনাইট শিলৰ পাহাৰ। আমাৰ সকলোৰে প্ৰিয় 'বিফুদা' আছিল ঠিক তেনে। লোহাৰ খুটাৰ দৰে কঠিন পেশীৰ হাত ভৰি, বহল বুকু, দীৰ্ঘকায় আৰু তিব্বতো-বৰ্মন ৰাভা উপজাতিৰ চেপেটা গঢ়ৰ মুখ, সপোন সনা এজুৰি চকু। কণ্ঠস্বৰত উদাৰৰ খৰজ 'গন্তীৰতা '।"

১৯০৯ চনত ঢাকাত কলাগুৰুৰ জন্ম হয়। তাতে তেওঁ বাংলা ভাষাত প্ৰাথমিক স্কুলত পঢ়িছিল। ইয়াৰ পিছত তেওঁ তেজপুৰ চৰকাৰী হাইস্কুলৰ পৰা প্ৰথম বিভাগত প্ৰৱেশিকা পৰীক্ষা পাছ কৰে। তাৰ পিছত কলিকতাৰ ৰিপন কলেজত আই, এছ, চি আৰু ছেন্টপ'ল কলেজত বি,এছ,চি পঢ়োঁতে জাকত জিলিকা খেলুৱৈ বিষ্ণুপ্ৰসাদ ক্ৰমে ক্ৰিকেট আৰু ফুটবল টিমৰ কেপ্তেইন হৈছিল। তেওঁ সকলোৰে দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰিছিল আৰু আকৰ্ষণ কৰিছিল চৰকাৰী চোৰাংচোৱাৰো দৃষ্টি সন্ত্ৰাসবাদীৰ সৈতে সম্পৰ্ক ৰখাৰ অহৈতুক সন্দেহত।

কলিকতাৰ পৰা বিদায় ল'বলৈ বাধ্য হ'ল। তাৰপৰা আহি কোচবিহাৰৰ কলেজত ভৰ্তি হল। কিন্তু তাতো সন্দেহ। বঙ্গত তেতিয়া সন্ত্ৰাসবাদী কাৰ্য্যকলাপৰ ভৰপক, দেশ জুৰি স্বাধীনতা ৰণৰ জোৱাৰ আৰু কেউপিনে পুলিচ চোৰাংচোৱাৰ পিত্পিতানি।

কোচবিহাৰৰ ৰাজভৱনৰ দুৱাৰ মুখত এদিন ৰাতি গোপনে বিষ্ণুৰাভাই আঁৰি দিলে নিজে ৰচিত এটা ছড়া ——

> "ৰাজ্যে আছে দুইটি পাঠা একটি কালো একটি সাদা ৰাজ্যেৰ যদি মংগল চাও দুইটি পাঠাই বলি দাও।"

ভাৰতবৰ্ষৰ দুটা পাঠা অৰ্থাৎ দুটা শোষক অত্যাচাৰী শ্ৰেণীৰ চৰিত্ৰ তেওঁৰ কাষত প্ৰক্ষূ টিত হৈছিল। এটা পাঠা হ'ল বগা জুৰ্থাই বৃটিছ সাম্ৰাজ্যবাদ আৰু আনটো হল ক'লা অৰ্থাৎ বৃটিছ সম্ৰাজ্যবাদৰ ছত্ৰছায়াত পোহপাল যোৱা আৰু ৰঘুমলাৰ দৰে লহ-পইকৈ ঠন ধৰি উঠা ভাৰতবৰ্ষৰ নতুন বুজোৱা বা শিল্পপতি শ্ৰেণীটো। ভাৰতবৰ্ষৰ স্বাধীনতা আন্দোলনৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত তীখাৰ দৰে পাগ লৈ উঠা ৰাভাদেৱে তেতিয়াই এই নতুন ক'লা শ্ৰেণী বা নতুন বুজোৱা শ্ৰেণীটোৰ পৰা আহিব পৰা ভৱিষ্যত ভয়াবহতাৰ কথা বুজিৰ পাৰিছিল। পিছে তেওঁৰ এনেবোৰ কাণ্ড বেছিদিন নিটিকিল। তেওঁৰ কোচবিহাৰৰ পৰা বহিষ্কাৰ কৰাৰ হুকুম হ'ল। তাৰ পিছত তেওঁ তেজপুৰ পালেগৈ আৰু গ্ৰহণ কৰিলে সুকীয়া এটা জীৱন — স্বাধীনতা যুঁজাৰুৰ জীৱন।

কিছুদিন পিছত তেওঁ ৰংপুৰৰ কাৰ্মাইকেল কলেজত পুনৰ ছাত্ৰ জীৱন আৰম্ভ কৰিলে। কিন্তু নাই, তেওঁ আৰু নোৱাৰিলে পুলিছৰ জুলুমত পৰি শিক্ষা জীৱন সিমানতে সমাপ্ত কৰিলে। তেও আকৌ কলিকতালৈ গ'ল।

"বাঁহী" আলোচনীত তেওঁ বিষ্ণুপ্ৰিয়া ৰাভা ঠাকুৰীয়াৰ ছানামত "চিত্ৰলেখা" বিভাগটো পৰিচালনা কৰিলে। ইতিপূৰ্বে তেপুকুমাৰ কলা চৰ্চাত একনিষ্ঠ ভাৱে ব্ৰতী হৈ পৰিছিল। এতিয়া নতু উদ্যমেৰে সংগীত, নৃত্যবাদ্য আদি সকলো কলাৰ সাধনাত সমাধ্যেমিয়া হৈ উঠিল।

বিষ্ণুপ্ৰসাদে সুদূৰৰ পৰা অসমলৈ চাই পঠিয়ালে। দেখি অসমৰ বৰ্ণাঢ্য সংস্কৃতিৰ সু-সমৃদ্ধ ৰূপ আৰু তাৰ গৌৰৱময় ঐতিই স্বৰূপ। তেওঁ ধ্যান কৰিলে যুগস্ৰষ্টা শ্ৰীমন্ত শংকৰক। ভাৰতৰ জা সত্ত্বাসমূহে নিজ নিজ পৰিচয় বিচাৰিছে, পূৰ্বাঞ্চলতো জাতীয় ধৰ্মন স্পন্দন জাগিছে। বিষ্ণুপ্ৰসাদে দেখিছে সপোন! শঙ্কৰী কলাকৃষ্টিয়েই ৰাভাদেৱক সংস্কৃতিৰ জগতলৈ ওলাই অহাৰ প্ৰেৰণা যোগাইছিল। শংকৰ-মাধ্বৰ প্ৰতি যি অপৰিসীম শ্ৰদ্ধা কলাগুৰুৰ প্ৰাণত সঞ্চিত হৈছিল, সেই শ্ৰদ্ধা ভক্তিয়েই তেওঁক কলা-সংস্কৃতিৰ বিশাল সমুদ্ৰৰ মাজেৰে বাট দেখুৱাই লৈ গৈছিল। ৰাভাদেৱে অসমৰ বিভিন্ন জাতি-উপজাতি আৰু বাহিৰ- অসমৰো বিভিন্ন জাতিৰ ভাষা আয়ন্ত্ব কৰিছিল, প্ৰতিটো ভাষাতে তেওঁ গীত গাব পাৰিছিল, নৃত্যৰ তাল-মান-লয় ৰক্ষা কৰিব পাৰিছিল আৰু সেই ভাষাৰ মাধ্যমেৰে সেই জাতি-উপজাতিৰ কলা-সংস্কৃতিৰ বিভিন্ন দিশত আলোকপাত কৰিছিল।

সেই সময়তে, ৰুছ নৰ্তকী 'বেলেৰিনা আনা পাভ্লোভা'ৰ বিনন্দীয়া নৃত্য চাই তেওঁ আত্মহাৰা হৈ পিছদিনাই বেলেৰিনা গৰাকীক লগ ধৰিলেগৈ। তেওঁৰ পৰা শুনা এষাৰ কথাই তেতিয়া বিষ্ণুপ্ৰসাদৰ জীৱনলৈ নতুন প্ৰেৰণাৰ ফল আনিলে ঃ ভাৰতত নৃত্য শিক্ষা লাভ কৰা অতি সহজ। কাৰণ, নৃত্যৰ সকলো বস্তুৱেই ইয়াত আছে। ঠায়ে ঠায়ে সিঁচৰিত হৈ থকা শিলৰ মূৰ্তিৰ ভঙ্গিমাকেই গতিশীল কৰি তালত পেলাই দিলে ভাৱব্যঞ্জক নৃত্য হ'ব। কথাষাৰ তেওঁ সম্পূৰ্ণৰূপে হৃদয়ঙ্গম কৰিলে। চকুৰ আগত তেওঁ দেখিলে লেনিনৰ শ্ৰম, জ্ঞান, অভিজ্ঞতা আৰু কাৰ্য্যোদ্যম; দেখিলে মাৰ্ক্স, এক্ষেলচৰ উজ্জল ব্যক্তিত্ব। আৰু উপলব্ধি কৰিলে সুকুমাৰ কলা চৰ্চা আৰু যুদ্ধচৰ্চাৰ মাজত থকা স্বাভাৱিক সম্পৰ্ক। এই উপলব্ধিয়ে তেওঁক দেখুৱাই দিলে সমুখৰ দুৰ্গম পথ। সেই পথেই হ'ল তেওঁৰ পথ।

১৯৩১-৩৪ চন। তেতিয়া ৰাভাদেৱৰ ভৰ যৌৱন। ৰাভাদেৱে কলিকতাত লাভ কৰিলে গীত-বাদ্য-নৃত্যৰ শাস্ত্ৰীয় জ্ঞান। তাৰ যাদুঘৰৰ পৰা বুটলি ললে বিচিত্ৰ মূৰ্তিৰ লয়লাস ভৰা স্মৃতি। বিশাৰদ সকলৰ পৰা আয়ত্ব কৰিলে অনুপম শিক্ষা। এয়ে হল তেওঁৰ মূলধন। তাকে লৈ তেওঁ কৃষ্টিৰ উৰ্বৰা ক্ষেত্ৰ অসমলৈ আহিল। আহিয়েই তেওঁ এটা দুৰ্ঘটনাৰ সম্ভাৱনা বাতিল কৰি ল'লে। তেজপুৰত সেই কালৰ দৰং জিলাৰ এছ, পি, বাৰবীজ চাহাবে তেওঁক পুলিচ ইন্সপেক্টৰৰ চাকৰিএটা দিব খুজিছিল। স্বাভাৱিক অমায়িকতাৰে ৰাভাদেৱে চাহাবক তেওঁৰ বিদ্ৰোহী চেতনাৰ চিনাকি দিলে। বন্ধুহঁতক আহি তেওঁ ক'লে 'চাৰা জীৱন যাতে চাকৰি নাপাওঁ তাৰ ব্যৱস্থা কৰি আহিলোঁ।' এইদৰে তেওঁ বাট পোনাই ল'লে। চাকৰিৰ দুৰ্ঘটনা আৰু নহ'ল।

১৯৩৪ চনত জ্যোতিপ্ৰসাদ আগৰৱালাৰ লগত মনে-প্ৰাণে অভিন্ন হৈ বিষ্ণুপ্ৰসাদে তেতিয়া প্ৰথম অসমীয়া ছবি 'জয়মতী'ৰ কামত ব্যস্ত। মনত তেওঁৰ বিভিন্ন ভাৱৰ হেন্দোলনী। অধীৰ চিত্তে তেওঁ চিন্তা কৰিলে, 'শিল্পীৰ তপস্যাৰ ধন ধন-কুৱেৰহঁতে নি সঁচাত ভৰাই চিন্তা কৰিলে, কৰি । অমূল্য ধন ধনীৰ সঁচাত বন্ধ ...।' কিন্তু তেওঁ কাঠি ঘূৰাই বন্ধা কৰে। অমূল্য ধন ধনীৰ সঁচাত বন্ধ ...।' ততালিকে আশ্বাসো ঘূৰাই পালে। 'সপোন ভাগে, কল্পনা উৰে। দিঠকত থাকোঁ মই। জ্যোতি ককাইদেউ আৰু মই।' এনেকুৱাকৈ কামৰ সম্পৰ্কই বান্ধিলে গণশিল্পী দুজনক। ই অতি গভীৰ সম্পৰ্ক। জ্যোতি প্ৰসাদৰ মৃত্যুৰ পিছত বিষ্ণুৰাভাই কৈছিল, "তেওঁ কেৱল কবি, নাট্যকাৰ, সাহিত্যিকেই নাছিল, আছিল দূৰদৃষ্টা ঋষি।" আৰু জ্যোতিৰ গানৰ বিষয়ে তেওঁ কৈছিল, "হিয়াই হিয়াই নিবিড় ঘনিষ্টতাই জনপ্ৰিয়তাৰ ঘাই শিপা। হিয়া-কাৰেঙৰ গুপুত টোলত গোপন চ'ৰাত তেওঁৰ গানবোৰে উলাহৰ হেন্দোলনী তোলে। সেয়ে জ্যোতিৰ গান অসমীয়াই ভাল পায়।" হিয়াৰ নিবিড় ঘনিষ্টতাৰ বলতেই বিষ্ণুৰাভায়ো ঠাই পালে ৰাইজৰ মাজত। তেওঁ মিলি গ'ল ৰাইজৰ মৰমৰ ওপচনিত।

১৯৩৬ চন। বিষ্ণুৰাভা তেতিয়া তেজপুৰত। তেওঁ এজন সমাজসেৱকৰ ভূমিকাত অৱতীৰ্ণ। সেই সময়তে তেওঁ "কামৰূপী নৃত্য সংঘৰ" শিল্পী আৰু কৰ্মী ৰূপে জনজাত হ'ল। শিল্পীদলৰ লগত অসমৰ ঠায়ে ঠায়ে ঘূৰি, অসমৰ বাহিৰলৈকো গ'ল।

গণ বিপ্লৱৰ ইতিহাস আৰু ৰাজনীতি তেওঁ অধ্যয়ণ কৰিছিল আনা পাভলোভাক লগপোৱাৰ পিছত। সেই বিষয়ে তেওঁ নিজেই এইদৰে কৈছিল, "মাৰ্ক্সবাদ-লেলিনবাদে মোৰ চঞ্চল অস্থিৰ জীৱনলৈ আনি দিছে সাগৰ-সংগমৰ পূৰ্ণতা আৰু গভীৰতা।" আৰু তেতিয়া তেওঁ শিল্পী গজেন বৰুৱাক দৃঢ় কণ্ঠে জনালে, "গজেন, মই নাযাওঁ, কেতিয়াও নাযাওঁ, তুমিও যাব নোৱাৰা। মহাৰাজহঁতে আমাক বান্দৰতকৈ আৰু বেছি নাভাবে। আমাৰ সংস্কৃতি বা জনগণৰ সংস্কৃতি আৰু শক্তিৰ সিহঁতে কি মূল্য বুজে! কৃষ্টি-সংস্কৃতি সিহঁতৰ মস্কৰা প্ৰৱসৰ বিনোদন হে।"

প্রায় পাঁচ বছৰৰ ভিতৰতে বিষ্ণুৰাভাই শ শ গাওঁৰ হেজাৰ-বিজাৰ হালোৱা-হজুৱা-বনুৱাক লগ পালে। তেওঁলোকৰ জীৱনৰ ভিন্ ভিন্ দিশৰ সৈতে তেওঁৰ আত্মীয়তা গঢ়ি উঠিল। তেওঁ বুজিলে 'এগুটীয়া ৰাইজৰ শক্তি অলৌকিক। ৰুছিয়া-চীনৰ ঐতিহাসিক বিপ্লৱেই ইয়াৰ সাক্ষী। অমানুষিক প্রতিক্রিয়াশীল নিম্পেষণতো ইয়াৰ মৰণ নাই।' চীন বিপ্লৱৰ পিছত কোৱা হ'লেও এইষাৰ কথাৰ তাৎপর্য্য তেওঁ বহুত আগৰে পৰাই অনুভৱ কৰিবলৈ ধৰিছিল।

১৯৪১ চনৰ কোনোবা এটা দিনত ওদালগুৰিৰ ওচৰৰ আঠগাওঁত ৰামানাথ হাঁলৈৰ চাহৰ দোকান 'গৰীবখানা' নামটো দেখি
কৌতুহল বশতঃ বিষ্ণুৰাভা তাত সোমাল। হাঁলৈক কলে, "বনুৱামজদুৰক জগাই তুলিব লাগে। সেই কলঘৰৰ ঘিটঘিটনি বিলাকে
বনুৱা-মজদুৰক পিহি ধন উলিয়ায়। মালিক ধনী হৈ উঠে আৰু
সিহঁত (বনুৱা-মজদুৰ) হয় অৰ্দ্ধাহাৰী, গৰীব, সমাজৰ অনাদৃত।"
পিছলৈ বিহাৰী দোকানী হাঁলৈৰ লগত ৰাভাৰ দেখা-শুনা বাঢ়ি-

ছিল। বিয়াল্লিছৰ গণ-আন্দোলনত ৰামানাথ হ'লৈয়ে পলাই থাকি, পুলিছৰ আঁৰে আঁৰে, চৰকাৰ ভাঙিবলৈ কাম কৰি ফুৰিছিল। ৰাভা পলাতক অৱস্থাত থাকোঁতে তদানীন্তন কংগ্ৰেছ চৰকাৰে তেওঁৰ মূৰটোৰ দাম দহ হেজাৰ টকা ঘোষণা কৰোঁতে আৰু ১৯৬১ চনত তেজপুৰৰ ৰাম্ভাইদি কঁকালত ৰচি লগাই লৈ গৈ জে'লত ৰখাৰ সময়ত অসমৰ 'ডাঙৰ' (!) মানুহবোৰে একো মাতকে মতা নাছিল।

শিল্পী-সৈনিক ৰাভাই তেজপুৰৰ পৰা ওলাই ঠায়ে ঠায়ে বোপনি পুতি, বিস্তীৰ্ণ অঞ্চল জুৰি গাঁৱে গাঁৱে বিয়পাই দিছিল সংগ্ৰামী চেতনাৰ বীজ। তেওঁ প্ৰচাৰ কৰিছিল নতুন মতাদৰ্শ, দেখুৱাইছিল এটা পথ "এটা চাকি"। তাৰ পোহৰতেই দেখুৱাই দিয়ে বাট -খেপিয়াই ফুৰিব নালাগে। আঁউয়ীৰ ঘোপমৰা এন্ধাৰ গুচি যায়। আদৰ্শৰ চাকি, সাম্যবাদৰ পোহৰে, ৰাইজৰ অন্তৰৰ অজ্ঞানতাৰ অন্ধানৰ আঁতৰাই দিয়ে। পোহৰত মুকুতিৰ বাট মুকলি হয়, বিপ্লৱৰ বাট। আমি জ্বাওঁ সেই চাবিকাঠিৰ জুই-জুমুঠি। সেই বাট, সেই পটি, সেই পথেদি আগুৱাই যাবলৈ মন যায় জনতাৰ।

দলিত-নিৰ্য্যাতিত-দৰিদ্ৰ ৰাইজৰ লগত ৰাভাই সততে পুৱা-গধূলি কটাইছিল — তেতিয়া এক গভীৰ বেদনাবোধে ৰাভাৰ গোটেই সত্বা কঁপাই তুলিছিল। যি তেওঁক ঠেলি দিছিল বিপ্লৱৰ পৰ্যলৈ।

অসমৰ ইম্ৰৰ পৰা সিম্ৰলৈ ফুৰোঁ, ঘূৰোঁ, টহলোঁ। পূৱে বৰ্মা সীমান্ত, পশ্চিমে নেপালৰ পূৰ্বান্ত; আনকি তিৰ্ব্বত সীমান্ত লৈকো যাওঁ। কিমান ধৰণৰ মানুহৰ সৈতে যে নিবিড় সম্পৰ্ক হয়! মই জানো আবৰ, খামতি, ফাকিয়াল, চুতীয়া, আহোম, ৰাভা, কছাৰী, লালুং, মিকিৰ, গাৰো, ডিমাচা, কোঁচ, কলিতা, বামুণ, গোঁসাই, গৰীয়া, মৰীয়া, লেপ্চা, ভুটীয়া, নেপালী আৰু বৰণ বেলেগ, জাতি বেলেগ, ধৰ্ম বেলেগ কিন্তু স্বাৰ্থ একেই। মুণ্ডা, উড়িয়া, কুৰ্মি, চাওতাল আদি আদিবাসী সকলোৰো হালোৱা-হজুৱা-বনুৱা তলমজলীয়া খলপৰ দুখীয়া ৰাইজৰ ভিতৰত বিৰিঙি উঠা দুখ-দূৰ্গতিৰ কোনো বিভিন্নতা নাই।.. সেই একেই অৰ্থনৈতিক হেঁচা।

সুধিলে "যি বিলাক ধনী জমিদাৰ, হাকিম, পুঁজিপতি, চাহ বাগিছাৰ মালিক; তেওঁলোকে এই বাপতি সাহোন কৃষ্টি-সংস্কৃতি, উপহাস আৰু আমোদৰ উপকৰণ বুলি ইতিকিং কৰি নিষ্ঠুৰ আনন্দ লভে। কিন্তু তেওঁলোক জানো অসমীয়া ?"

তেওঁ আহ্বান জনালে — "আজিৰ সমাজত সেই অশান্তিৰ প্ৰবি ধনতন্ত্ৰবাদকেই ওফৰাই পেলোৱা। তাত ৰাইজৰ ইচ্ছানুযায়ী নতুন গণতন্ত্ৰ নাইবা সমাজতন্ত্ৰৰেই থাপনা পাতা।" মুকুতিৰ একমাত্ৰ পথটো ৰাভাই দেখিছিল আৰু আনকো দেখুৱাইছিল। "এডৰা আহল-বহল উলুৱনি উভালি আগুৱাই গ'লে পাছে পাছে আকৌ গজালি মেলে। মুকলি নহয়। কাঁচিৰে কাটি ৰেপি গ'লেও শেষ্ট্ৰ নহয়; দুনাই গজালি মেলি উলুৱনি ভৰপূৰ হৈয়েই থাকে। চাফ-চিকুনৰ দিহানো কি? এটি ফিৰিঙতি, কেৱল এটি অগ্নিস্ফূলিংগ। শুকান খৰালি বতৰ। ফাগুন-চ'ত মাহ। এটি ফিৰিঙতিদ্বে দাবানল সৃষ্টি কৰে। ফাগুন-চ'তৰ বতাহে হাত উজান দিয়ে। উলুৱনী চাফ-চিকুন হৈ পৰে। তাত খেতি কৰা, হাল বোৱা; যি মন যায় ছে কৰা। সেয়া শুৱনি বাৰী, নাইবা ধুনীয়া পথাৰ হৈ পৰে; জীৱিকা উপাদান।"

এইবাৰ ৰাভাই পণ ল'লে নিৰ্য্যাতিতৰ মুক্তিৰ। ৰং-তুলি, সুৰ্ কবিতা, নৃত্য-বাদ্য-অভিনয় তেওঁৰ হৈ পৰিল অস্ত্ৰ। ''বিশ্ববিশ্ব নজোৱান-মুক্তিকামী ভাৰতৰ, ওলাই আহা, ওলাই আহা, সন্তান ৰ্তু বিপ্লৱৰ" আদি গীতেৰে সমাজৰ সকলো শ্ৰেণীৰ বিশেষকৈ দুৰী গাৱলীয়া সমাজত এক গণ বিপ্লৱৰ আলোড়ন তুলিলে। মানুষ্ আপোন ভাবে পাৰ্বলৈ তেওঁৰ বৰ হেপাহ আছিল। 'শুৱনী বা আৰু 'ধুনীয়া পথাৰ'ৰ সপোন ফলাবলৈ ৰাইজৰ াৰেই তেওঁৰো মু ৰাইজক আনন্দ দিবলৈ তেওঁৰ অনিৰুদ্ধ প্ৰয়া।। সেই বাবেই ৰে সৌন্দৰ্য্যৰ সাধনা কৰিছিল, সুন্দৰ সৃষ্টি কৰিছিল আৰু মানব-ট্ৰে গৱেষক ৰূপে বুৰঞ্জীৰ তথ্য বিচাৰি ফুৰিছিল। তেতিয়া তেওঁ দেখিৰ্ছি ''এফালে ৰাইজ, আনফালে চৰকাৰ। চৰকাৰে সুঙি সুঙি মোক বি ফুৰে, চৰকাৰ বিৰোধী বুলি — ৰাইজৰ বুকুৰ এফাল হিয়াৰ আমঠু বুলি ৰাইজে বিচাৰে মোক ৰইখা কৰিবলৈ -আজিৰ সমা যেন কিবা কেৰোণ লাগে।" পুলিছ মিলিটেৰী, চোৰাংচোৱাৰ শু খেদি ফুৰোঁতে তেওঁক ৰাইজে নেৰিছিল। সিহঁতহে ভাগৰি পৰিৰ্শ্বি কিন্তু তেওঁক নাপাই সিহঁতে তেওঁৰ অমূল্য সম্পদ বোৰক বু কৰিলে। আক্ষেপ কৰি তেওঁ লেখিছে — "পুলিছ মিলিটেৰীৰ সাম্ বিৰোধী অভিযানে মোৰ বহুতো ৰচনা, বহুতো সৃজন নাশ কৰি আনকি বহুতো গৱেষণাৰ সৰ্বনাশো সাধিলে। হয়তো সেইবোৰ অ অসমীয়া সাহিত্যৰ দীপাৱলীত বন্তি এগছিৰ শিখা নহ'লেও ধোঁৱা হৈ অলপ জেউতি চৰালেহেঁতেন।" ৰাভাৰ বহুতো অপ্ৰকাশিত জ গল্প-কবিতা-ৰচনা কিছু হ'লেও এতিয়া চাঁগৈ ক'ৰবাত পৰি আ নাম নজনা গাওঁ বোৰৰ অখ্যাত বাস্বৈহঁতে ইয়াৰে কিছু নিশ্চয় ই হাতে গুপুতে ৰাখিছিল, যি সকলে ৰাভাক বুকুৰ এফাল হিয়াৰ ত वुनि बािशहिन।

অসমীয়া ৰাইজৰ কল্যাণৰ হকে জীৱন উছৰ্গা কৰি দিহি
দিপাঙে অনাই-বনাই ফুৰা তেওঁৰ শৃংখলহীন জীৱনত তেওঁ ফি
গীত, কবিতা আৰু ৰচনা অসমৰ অ'ত ত'ত সিঁচৰিত কি
আহিছিল, সেইবোৰ তেওঁৰ পৰিবাৰ শ্ৰীমতী মোহিনী ৰাভাই অ
বুকুত বান্ধি ৰৈ আছে। অথচ লাখ লাখ টকা ঘৰ সজাত খৰছ কি

কাৰ্পণ্য নকৰা 'অসম প্ৰকাশন পৰিষদে' দাম-দৰ কৰি মাত্ৰ পাঁচ হেজাৰ টকাৰ বাবে ৰাভাৰ ৰচনাৱলী ওভতাই পঠিয়ালে। ৰাভাৰ প্ৰতি অনাদৰ অৱহেলাৰ, ৰাভাৰ স্মৃতিৰ প্ৰতি অসম্মানৰ ইয়াতকৈ মুমান্তিক উদাহৰণ থাকিব পাৰেনে ?

ৰাভাৰ ৰচনাৱলী প্ৰকাশৰ বাবে প্ৰথম বাজহুৱা দাবী 'অসম সাহিত্য সভাই' তোলা নাছিল। সেই দাবী তোলা হৈছিল দিছপুৰত ভাৰতৰ ছাত্ৰ সংস্থাৰ উদ্যোগত বহা এখন সভাত। তাৰ পিছত পত্ৰিকা আদিৰ পিনৰ পৰা সৰ্বপ্ৰথমে এই দাবী তুলিছিল 'সাম্প্ৰতিক সাময়িকী'যে। কাৰণ বোধ হয় এয়ে যে শোষিত শ্ৰেণীৰ ভাৱাদৰ্শত দীক্ষিত নহ'লে ৰাভাৰ জীৱনৰ মূল্য সঁচাকৈয়ে বুজা টান। ৰাভাৰ প্ৰতিভাৰ মূল্য অন্তৰেৰে অনুভৱ কৰিলেহে তেওঁৰ ৰচনাৱলীৰ প্ৰতি আকৰ্ষণ অনুভৱ কৰিব পাৰি। ধৰ্মোৎসৱৰ দৰে ধূপ-ধূনাৰে নুপূজাকৈ ৰাভাক পূজা কৰিবলৈ অন্তৰৰ অনুভৱ ন'হলেও চলে। কিন্তু তেওঁৰ প্ৰতি হৃদয়ৰ আকৰ্ষণ অনুভৱ কৰা লোকেহে তেওঁৰ ৰচনাৱলীৰ মূল্য সঁচাকৈ উপলব্ধি কৰিব পাৰিব।

বিষ্ণুৰাভাৰ ৰাজনৈতিক চিন্তা আছিল স্পষ্ট। তেওঁ স্বপ্ন দেখিছিল 'শুৱনী বাৰী' আৰু 'ধুনীয়া পথাৰ'ৰ। তেওঁ দিহা দিছিল এটা ফিৰিঙতিৰ। তেওঁ কৈছিল "আজি এই কুৰি শতিকাৰ মাজছোৱাত মানৱ সভ্যতা চৰম সীমাত, অথচ ৰাইজ আজিও সেই আদিম যুগত, নৰক কুণ্ডত। ই বিধাতাৰ বন্ধান নে সমাজ ব্যৱস্থাৰ কেৰোণ ?" বাস্তৱলৈ চাই তেওঁ দেখিছিল, মুকুতিৰ হেঁপাহত কোনোবাই ধর্ম লয়, কোনোবাই ভিন্ ভিন্ ৰাজনৈতিক দলত সোমায়, কোনোবাই সেই হাবিলাসত উধাই মুধাই ঘূৰে, ঠেলা-হেঁচাত উশাহ নাপাই মৰে; কতই আপোন ঘাতী, স্বজন ঘাতী হয়, মুকুতি আৰু নাপায়। সেই একেই অসুখ, একেই অশান্তি, একেই অকল্যাণ। জীৱন বিষত বিষময় হৈ উঠে।" শ্রেণী সংগ্রামৰ পথেই যে মুকুতিৰ পথ, তাকে তেওঁ বাবে বাবে কৈছিল। জনজীৱনৰ মুক্ত বিকাশৰ কাৰণে প্রয়োজন সমাজ বিপ্লৱ, এয়ে আছিল তেওঁৰ স্থিৰ প্রত্যয়। সেয়ে ৰাইজৰ ইচ্ছানুযায়ী নতুন গণতন্ত্ব অথবা সমাজতন্ত্রবেই থাপনা পতাৰ বাবে তেওঁ আহ্বান জনাইছিল। 'শুৱনী বাৰী' আৰু 'ধুনীয়া পথাৰ' তাৰেই হে কাব্যিক প্রকাশ।

আনহাতে, যিবোৰ স্বজন ঘাতী কাৰ্য্য কলাপে শ্ৰেণী-সংগ্ৰামত বাধা দিছিল, সেইবোৰৰ বিৰুদ্ধে বিষ্ণুৰাভাই হুংকাৰি উঠিছিল। ১৯৬০ চনৰ ভাষা সংঘৰ্ষৰ সময়ত, গণনাট্য সংঘৰ উদ্যোগত, মিলন আৰু শুভেচ্ছা মূলক অভিযানত ওলোৱা শিল্পী বাহিনীটোৱে সকলো ধৰণৰ ৰাজনৈতিক হেঁচা বা প্ৰতাৰণাৰ পৰা মুত্ত থাকিবলৈ প্ৰয়োজনীয় সকলো ব্যৱস্থা লৈছিল। ক'তো কোনো ৰাজনৈতিকৰ বত্তব্য দাঙি নধৰাৰ সিদ্ধান্তকে সকলো শিল্পী আৰু সকলো সহযোগীয়ে মানিলৈ সেইমতে অভিযানৰ কাৰ্য্যসূচী তথা কৰ্মসূচী আগবঢ়াই নিছিল। ৰাভাৰ সপোন এতিয়াও বাস্তৱত পৰিণত হোৱা নাই। প্ৰতিক্ৰিয়াশীল, উগ্ৰজাতীয়তাবাদী, ফেচিবাদী শক্তিবোৰৰ চক্ৰান্তৰ ব্যুহ্ ফালি আগবাঢ়ি যোৱাৰ কথা ৰাভাই কৈছিলঃ-

> "চিনি ল' তোৰ কোন শক্ৰ লুকাই আঁৰত তোৰ, ভাঙ ৰঘুমলা তেজপিয়া কুবেৰৰ মূৰ, জীৱন ভৰি নপৰিব তোৰ দুখৰে ওৰ, যিমান দিন বাচি থাকিব ধনৰ খকুৱা। বাবে বাবে জাতিৰ নামত চুৰি-ডকাইতিৰ খেল, বজ্জাতৰ দলে পাতে নানা জালিয়াতি মেল। আগবাঢ়ি ব'ল ভাঙি জুলুম বাজীৰ জাল নকৰিবি ভয়, ব'ল হই শোষণবাদীৰ কাল; নতুন যুগৰ, নতুন ভাৱৰ, নতুন ৰণৰ মাল! আগুৱাই যা, আগবাঢ়ি ব'ল, আগবাঢ় দুখীয়া।"

ৰাভাই বাৰে বাৰে শ্ৰেণী শত্ৰুৰ বিৰুদ্ধে দৰিদ্ৰ জনগণৰ প্ৰতিবাদৰ ধ্বনি বজ্ৰকণ্ঠেৰে ঘোষণা কৰিছিলঃ

"দুখীয়াৰ কলিজা নিঙাৰি লৱ,
টুপি টুপি তেজ শুহি শুহি পিয়,
ৰুকি ৰুকি মঙহ চোবাই খাৱ;
.... শেষ যুদ্ধৰ আমি ৰণুৱা
পৃথিবীৰ হালুৱা-বনুৱা
হম বিজয়ী আমি দুখীয়া!
ক'ত ৰবি ধনী এইবাৰ?
হুচিয়াৰ! হুচিয়াৰ!!
ধনী! মহাজন!! জমিদাৰ!!!
হুচিয়াৰ! হুচিয়াৰ!!"

অসমৰ অন্যতম শ্ৰেষ্ট কবি, উপন্যাসিক, জ্ঞানপীঠ বঁটা বিজয়ী ডঃ বীৰেন্দ্ৰ কুমাৰ ভট্টাচাৰ্য্যই কাৰাৰুদ্ধ ৰাভাক উদ্দেশ্য কৰি লিখা কবিতাটি অসমীয়া আধুনিক কাব্য-সাহিত্যত চিৰম্ভন দিগদ্শন। কবিতাটি হল:

"বিষ্ণুৰাভা এতিয়া কিমান ৰাতি ?
তুমি সাৰে আছা, সাৰে আছে আৰু
জাগ্ৰত জনতা, নিদ্ৰা বিহীন ৰাতি,
বিষ্ণুৰাভা, এতিয়া কিমান ৰাতি ?
ৰাজপথ জুৰি নবউন্মেষ ধ্বনি
হেজাৰ জনৰ অবিৰাম কুৰুলি
মাজনিশা কোনে মৰিশালি জুৰি চিঞৰি উঠে

কল্লোল বন্ধু জীৱনৰ কল্লোল ! ডাচ কেপিটেল এঘাৰ পৃষ্ঠা বাকী।"

শ্ৰীমেদিনী মোহন চৌধুৰীদেৱে বহুতদিন জুৰি বিষ্ণুৰাভাৰ জীৱন অধ্যয়ণ কৰি তাৰ ভেটিত এখন উপন্যাস লেখি উলিয়াইছে। "ফেৰেংগাদাও" নামৰ এই গ্ৰন্থ খন নিঃসন্দেহে বিষ্ণুৰাভাৰ জীৱনৰ এখন প্ৰামান্য দলিল হৈছে।

১৯০৯ চনৰ জানুৱাৰি মাহৰ কোনোবা এটা দিনত পৰাধীনতাৰ শিকলি পিন্ধি ৰাভাদেৱে জন্ম লাভ কৰিছিল। কিন্তু নিয়তিৰ কি পৰিহাস - ১৯৬৯ চনৰ জুন মাহত এইজনা অক্লান্ত শিল্পীয়ে আমাৰ মাজৰ পৰা চিৰ বিদায় ল'লে। ৰাভাদেৱৰ জীৱন কাল আছিল মাথোন ৬০ টা বছৰ। আমাৰ দৰে ঘটিৰাম-বাটিৰামহঁতৰ বাবে এই জীৱন কাল অফুৰম্ভ হ'লেও ৰাভাদেৱেৰ দৰে "সৃষ্টিশীল এজন শিল্পী", গণনেতাৰ যি সামাজিক প্ৰয়োজন, তাৰ তুলনাত এই সময় আছিল নিচেই কম। তথাপি ৰুছ বিপ্লৱৰ সৃষ্টি নিকোলাই অস্ত্ৰভস্কি আদিৰ দৰে লৌহ মানৱৰ জীৱনে দেখুৱাইছে যে — জীৱন কালৰ পৰিস্বৰেৰে কোনো ব্যক্তিৰ জীৱন আৰু কৰ্মক জোখা নাযায়।

(বিভিন্ন আলোচনী আৰু কিতাপৰ সহায় লোৱা হৈছে)

"— মধ্যযুগীয় কবি, সাহিত্যিক, ঔপন্যাসিক সকলক পৃষ্ঠপোষকতা কৰিছিল — ৰজা, মহাৰজা, জমিদাৰ আদি সকলে। গতিকেই তাত আমি সামন্ত শ্ৰেণীকে লৈ সাহিত্য ব্যস্ত থকা বহুত ক্ষেত্ৰত দেখা পাওঁ।

— আজিৰ যুগে মধ্যযুগীয় মনোবৃত্তি দলিয়াই দি, কৃষক-বনুৱাক সমাজত আগ আসন দিছে। যুগে যেতিয়া জনতাক এই মহান স্থীকৃতি দিছে, সাহিত্য জনতামুখী নহৈ নোৱাৰে। — হেমবৰুৱাৰ ভাষাত ক'বলৈ গ'লে — "বৰ্তমান ঔপন্যাসিকে প্ৰাচীন ঔপন্যাসিকৰ দৰে সমাজৰ উচ্চ মহলৰ তথাকথিত সন্ত্ৰান্ত যুৱক-যুৱতীক লৈ সাহিত্য সৃষ্টি কৰিব নোখোজে। আজি সাহিত্য সৃষ্টি হৈছে সাধাৰণ ব্যক্তিক লৈ; সমাজৰ 'ৰাংকুকুৰে' নিমু স্তৰৰ 'জুৰুলা কুকুৰ'ৰ ওপৰত কৰা অত্যাচাৰ উৎপীক্ষনৰ ফলত উদ্ভৱ হোৱা জটিল সমস্যাবোৰ লৈ।" — ৰুচীয় সাহিত্যত সমাজবাদী আদর্শৰ সৃষ্টি কৰাত ডষ্টয়ভস্কি, ভ্লাদিমিৰ মায়াকভস্কি আদি সাহিত্যিক সলকৰ বহুমূলীয়া অৱদানো মন কৰিবলগীয়া। — বিশ্ববিখ্যাত ইংৰাজ সাহিত্যিক জৰ্জ বানাৰ্ডশ্ব'ৰ অমৰ লিখনি সমূহ সমাজবাদক কেন্দ্ৰ কৰিয়েই ৰচিত হৈছে। — কবিতাৰ সম্বন্ধেও একে কথাকে ক'ব পাৰি। জনগণৰ ছন্দহীন জীৱনৰ অভিব্যক্তি ৰূপে কবিতাত আজি ছন্দবিলাসিতা নোহোৱা হৈছে —"।

— জিতেন শর্মা, 'আধুনিক জগতত সমাজবাদী সাহিত্য'

সম্প্ৰতি ভাৰতবৰ্ষৰ চাৰিও ফালে আগুৰি ধৰা এবিধ নিচাযুক্ত দ্ৰব্য হৈছে ডাগছ। যাৰ নাম শুনি সকলো মানুহৰে গাৰ নাম শিয়ৰি উঠে। এই ডাগছৰ প্ৰকৃত অসমীয়া নাম হ'ল কানি। এই কানিব উৎস ক'ত আৰু ইয়াৰ ব্যৱহাৰ ক'ত হৈছিল ইয়াৰ বিষয়ে যদি আমি বুৰঞ্জীৰ পাত লুটিয়াই চাও দেখা পাম যে খৃষ্টপূৰ্ব ১০০ শতিকাত গ্ৰীক সকলে এই নিচাযুক্ত দ্ৰব্য পোন প্ৰথমে ইৰাকত ব্যৱহাৰ কৰিছিল। অৱশ্যে তেতিয়া কানি ঔষধ হিচাপেহে ব্যৱহাৰ হৈছিল। পেটৰ কামোৰ, পেটৰ বিষত, ভাগৰ, নানা দুশ্চিষ্টা দূৰ কৰিবৰ কাৰণে কানি ধুমপান আৰু

ধপাত ব্যৱহাৰ কৰিছিল। তেতিয়া ইয়াৰ অপব্যৱহাৰ হোৱা নাছিল।
কানি প্ৰকৃততে পপি বা আফু গছৰ পৰা ওলোৱা এবিধ
আঠাহে। ইয়াৰ জাতি পেপাভাৰছি। এই পেপাভাৰ চোমনি ফেৰাম
গছৰ আঠা বা শল আঘাত কৰি পোৱা গাখীৰৰ নিচনা পনীয়া আঠা
শুকুৱাই তৈয়াৰ কৰা হয় আফিং বা কানি। এই কানিৰ পৰা বিভিন্ন
ধৰণৰ অসুখৰ ঔষধ তৈয়াৰ কৰা হয়। সেই সুযোগতে ইষ্ট ইণ্ডিয়া
কোম্পানীয়ে ভাৰতবৰ্ষত চৰকাৰী পৃষ্ট পোষকতাত ব্যৱসায়িক মুনাফা
আদায় কৰিবলৈ চীনৰ সহযোগত কানিৰ খেতি কৰিবলৈ উদগনি
যোগাইছিল।

কানি তৈয়াৰ কৰাৰ নিয়ম আফু গছৰ পৰা পোৱা বা গুটিৰ পৰা পোৱা আঠাখিনি তাপ দি শুকালে যি তেলেতীয়া পদাৰ্থ পোৱা যায় সেয়ে হ'ল প্ৰকৃত কানি। এই কানি ভাগ পগাই ইয়াৰ পানী ভাগ কমাই লোৱা হয়। তেতিয়া তাত ১০% ভাগ মান কফিন নামৰ এবিধ পদাৰ্থ থাকে। এই কানি খিনি আকৌ পনীয়া চৃণ আৰু এমোনিয়াম ক্লৰাইড শুকাই লৈ চেকি লোৱা হয় যাতে তাত অন্য অলাগতিয়াল পদাৰ্থবোৰ নেথাকে। তেতিয়া তাত মৰ্ফি নৰ পৰিমান শতকৰা ৫০-৭০ ভাগলৈ বৃদ্ধি পায়। এই কানি খিনি ৰাসায়নিক প্ৰক্ৰিয়াৰে মৰ্ফিন লোন মিশ্ৰণ তৈয়াৰ কৰা হয়। যাক আমি হিৰোইন বৃলি কওঁ। এই মেফিনযুক্ত লোন যেনে মৰ্ফিন হাইডুক্লৰাইড, মৰ্ফিন চালফেট, মৰ্ফিন এচিটেট, মৰ্ফিন ডাই এচিটাইল আদি। এই মৰ্ফিন লোনৰ পৰা বিভিন্ন ঔষধ তৈয়াৰ কৰা হয়।

ডাই এচিটাইল মৰ্ফিন আকৌ এচিটিক এন হাই ড়াইডৰ লগত উতলাই এচিতোন, এলকহল আৰু টাটাৰিক এছিদ আদিৰ মাধ্যমত চৈকা প্ৰণালীৰে উন্নত হিৰোইন প্ৰস্তুত কৰা হয়। ইয়াক দেখাত ব্ৰাউন ৰঙৰ হয়। সেইবাবে ইয়াক ব্ৰাউন চুগাৰ বুলি কোৱা হয়। এই ব্ৰাউন চুগাৰৰ লগত ষ্টিকনাইন, কেফেইন আৰু কবিটোন মিহলাই বেছি চুগাৰৰ লগত ষ্টিকনাইন, কেফেইন আৰু কবিটোন মিহলাই বেছি চুগাৰৰ কৰা হয়। এই ব্ৰাউন চুগাৰ পাতনৰ পিছত শুকাই এবিধ বিগা গুৰি তৈয়াৰ কৰা হয় যাৰ নাম আমি ড্ৰাগছ হিচাপে জানো।

বিষ্ণান ডিভিক প্রবদ্ধ ঃ

ড়াগছৰ উৎস ঃ এইডচ্ ঃ সঙ্গতি নিৰাময়তা, আৰু কিছু ঃ

তৰুণ নাথ

এই নিছাকাৰী ঔষধে আজি সমগ্ৰ পৃথিবীৰ লগতে ভাৰতবৰ্ষ তথা অসমকো আগুৰি ধৰিছে। ড্ৰাগছ সেৱন কৰাৰ ফলত মাৰাত্মক এইডচ ৰোগত আক্ৰান্ত হৈছে। মৃত্যু দৃত এইডচ সম্প্ৰতি ভয়াবহ ৰূপ ধাৰণ কৰিছে। এই ৰোগ এইচ আই ভি নামৰ এবিধ ভাইৰাচৰ দ্বাৰা সংবহিত হয়। সংক্ৰমিত হয় মুখ্যতঃ যৌন সংগমৰ দ্বাৰা আৰু তেজ সংস্পশৰ জৰিয়তে। এইডচ্ আক্ৰান্ত ব্যক্তিৰ তেজ যদি কোনো কাৰণত সুস্থ ব্যক্তিৰ তেজৰ সৈতে মিহলি হয়, তেনেহলে তৎক্ষনাত ইয়াত ভাইৰচ সংক্ৰমিত হ'ব। তেজৰ সংস্পৰ্শতা সাধাৰণতে দুই প্ৰকাৰে হ'ব পাৰে। প্ৰথমতেঃ হ'ল শিৰাৰ মাজেৰে দিয়া বেজী। আজিকালি নানান ৰোগৰ বেজী, এনেকি চেলাইন আদিও শিৰাৰে ৰোগীক প্ৰয়োগ কৰা হয় ৰোগীক সোনকালে উপশমিত কৰিবলৈ। অজানিতে বা অসাবধানতবসতঃ কোনো এইডচ্ ভাইৰাচ থকা ব্যক্তিক দিয়া বেজীৰে যদি আন এজনক বেজী দিয়া হয়, তেনেহলে ৰোগৰ ভাইৰাচে তেজৰ সংস্পশ পাই যায়। অবশ্যে বেজীটো সম্পূর্ণৰূপে শোধিত কৰিলে এনে বিপদৰ আশঙ্কা নাথাকে। দ্বিতীয়তে, ৰোগীক যেতিয়া তেজ দিবলগীয়া হয়, বিনা পৰীক্ষাই কোনো দাতা বা বিক্ৰেতাৰ পৰা তেজ ল'লে আৰু সেই তেজ ৰোগীক দিলে এইডচ্ সঞ্চাৰিত হয়, যদিহে দাতা বা বিক্ৰেতাজন এইডচ্ৰ ভাইৰাচ থকা হয়। বহুতো এইডচ্ চিনাক্ত কৰা পদ্ধতি নাই। মাদক দ্ৰব্য সেবী সকলৰ মাজত এইডচ্ বিয়পি পৰিছে। হিৰোইনৰ নিচা বেজীৰে প্ৰবেশ কৰোৱা সকলে একেটা বেজীকেই ব্যৱহাৰ কৰে। মণিপুৰৰ বিভীষিকা এই দৰেই বিয়পি পৰিছে বুলি অনুমান কৰা হৈছে। প্ৰসঙ্গ ক্ৰমে উল্লেখযোগ্য যে ১৯৮৯ চনলৈ উত্তৰ পূৰ্বাঞ্চলত এইডচ্ ৰোগী এজনো চিনাক্ত হোৱা নাছিল। কিন্তু ১৯৯০ ৰ শেষত নগালেওত ৩৩ জন আৰু মণিপুৰত হেজাৰত বাৰ (১২) জনকৈ ব্যক্তি চিনাক্ত কৰা হৈছিল এইডচ্ৰ বলি হোৱা বুলি। কথা হ'ল — আক্ৰান্ত সকলতো চিনাক্ত হৈছে ঠিকেই কিন্তু সিহঁতৰ লগতে যৌন সম্পৰ্কত মিলিত হোৱা সকল বা সিহঁতৰ ঔৰসত জন্ম গ্ৰহণ কৰা শিশু সকলো যে এই দুৰাৰোগ্য ৰোগৰ বলি হৈছে বা হৈ আছে তাৰ জানো হিচাপ ৰখা হৈছে ?

এনে হিচাপ ৰখাতো সম্ভৱ নহয়। কাৰণ এইডচ্ৰ ভাইৰাচ শৰীৰত প্ৰৱেশ কৰাৰ পাছত কোনো ধৰণৰ বিশেষ উপসৰ্গ ব্যক্তিৰ গাত দেখা নিদিয়ে। শৰীৰৰ ভিতৰত ভাইৰাচ বোৰৰ অবস্থান প্ৰমাণ কৰিব পাৰিলেহে নিশ্চিত হ'ব পাৰি যে ব্যক্তিজনৰ এইডচ্ আছে। বহুত গবেষণাৰ মুৰকতো এতিয়ালৈ এনে চেষ্টা ফলপ্ৰসু হৈ উঠা নাই। সম্প্ৰতি এইডচ্ৰ অন্তিম্ব প্ৰমাণিত হয় এণ্টিবডিৰ সহায়ত। যেতিয়া কোনো জীবানু মানব দেহত প্ৰবেশ কৰে, তাক প্ৰতিৰোধ কৰিবৰ বাবে এক বিশেষ ধৰণৰ ৰাসায়নিক পদাৰ্থ শৰীৰত সৃষ্টি হয়, যাক ইংৰাজীত (এণ্টিবডি), বোলা হয়। এন্দিবডি পৰীক্ষা কৰি প্ৰমাণ কৰা হয় শৰীৰত কোন জাতৰ জীৱাণু বা ভাইৰাচ সংক্ৰমিত হৈছে। এইচ্ আই ভি ভাইৰাচ চিনাক্ত কৰিবলৈ সম্প্ৰতি 'এলাইছা' আৰু 'ওৰেষ্টাৰ্ণ ক্লিট' নামৰ দুটা জটিল পদ্ধতি আছে। তাৰ ভিতৰত প্ৰথম ব্যৱস্থাটো ব্যয়বহুল হলেও আমাৰ দেশৰ বহুতো গবেষণা কেন্দ্ৰত আছে।

এই বাবেই আমি কওঁ যে এই মাৰাত্মক ৰোগ সম্পর্কে সর্বসাধাৰণে কিছুমান নৈতিক বাধা মানি চলা উচিত হব। এক, যিহেতু যৌন সম্পর্কৰ মাজেৰে এইডচ্ সংক্রেমিত হয়, সেয়ে মন সংযম কৰি পৰসঙ্গত যৌন সম্পর্ক বাদ দিব লাগিব। দুই, সমকামী সকলে নিজৰ বদ অভ্যাস এৰা উচিত হব। তিনি, তেজ দিওঁতে বা আন শিৰেৰে প্রয়োগ কৰা ঔষধাদি দিয়াৰ আগেয়ে বেজীটো বৈজ্ঞানিক উপায়ে শোধিত কৰিব লাগে। চাৰি, ৰোগীৰ দেহত তেজ সংযোজন কৰাৰ আগেয়ে তেজ পৰীক্ষা কৰাৰ ব্যৱস্থা প্রত্যেক চিকিৎসালয়ত থাকিব

লাগে। পাচ, মাদক দ্ৰব্য সেৱনৰ, বিশেষকৈ বেজীৰে নিচা প্ৰয়োগৰ বিৰ্ধম ফল সম্প্ৰকৈ সমাজত সচেতনতা সৃষ্টি কৰিবৰ বিহিত ব্যৱস্থা অনতি পলমে কৰিব লাগে। মুৰকত কও যে এইডচ্ ৰোগৰ কাৰ্ম আৰু ইয়াৰ মাৰাত্মক প্ৰতিফল সম্পৰ্কে জনচেতনা সৃষ্টি কৰাটো নিত্তিই প্ৰাসঙ্গিক হব। নহলে এই ৰোগৰ ব্যপকতা (ব্যাপ্তি) বন্ধ কৰাটো সহজ নহব।

চিকিৎসা শাস্ত্ৰৰ ফালৰ পৰা এইডচ্ৰ ভাইৰাচ প্ৰতিৰোধ কৰিবলৈ বা ৰোগটিৰ প্ৰতিষেধক পাবলৈ ব্যয়বহুল ফল দায়ক প্ৰতিষেধক পাব পৰা নাই যদিও কেইবিধ মান অন্য ভাইৰাচ বিৰোধী ঔষধে এইজ্ ভাইৰাচৰ ক্ষেত্ৰতো আশাৰ মুখ দেখুৱাইছে। এই কেইবিধ ঔষধ ইন্দ্ — এইচ, পি, এ হত চুৰামিন, ৰিবাভিৰিণ, এজাইডোথাইমিডিনির্বি সংক্ষেপে A.Z.T আৰু ছাইক্লোস্পোৰিণ এ।

এইচ, পি, এ-২৩ হ'ল টাংষ্টেন আৰু এন্টিমনিৰে ক্যো কৰা এবিধ জৈৱ পদাৰ্থ। সেইদৰে চুৰামিনো অন্য এক ৰোগৰ জ্য হে। এইডচ্ ভাইৰাচ ৰোধৰ বাবে চেষ্টা কৰা হৈছে ইয়াৰ সহায়ত ৰিবাভিৰিণ হ'ল আফ্ৰিকাত হোৱা 'কুখ্যাত' হ্ম্বৰ-লাচাৰ প্ৰতিৰ্বেশক সম্প্ৰতি এইডচ্ৰ বিৰুদ্ধে ইয়াক প্ৰয়োগ কৰি চোৱা হৈছে। এই ডোথাইমিডিন নামৰ ঔষধটি তৈয়াৰ কৰিছিল ডাঃ জোৰোম হ্ৰ্ম্ব্ৰে ১৯৬৮ চনত। ১৯৮৫ চনত বোৰোজ ওৱেলকাম নামৰ উষ্ণ কোম্পানী এটিয়ে ইয়াক এইডচ্ৰ বিৰুদ্ধে ব্যৱহাৰ কৰে।

মুঠতে, এইডচ্ এটা মাৰাত্মক ৰোগ। ই মানব জীৱনলৈ আ থকা এটা কালদৃত। ইয়াক প্ৰতিৰোধ কৰিবলৈ হলে আমি আটা সচেতন হব লাগিব। পথ ভ্ৰষ্টা আমি বোৰে ড্ৰাগছ, যৌনাচাৰ আ পৰিত্যাগ কৰি মুক্ত কৰিব লাগিব আমাৰ সোণালী সপোন জ জীৱন। আমি মনত ক্ষুদ্ধৰ ধ্বজা লৈ ড্ৰাগছৰ বিৰুদ্ধে জেহাদ ৰোধ কৰিব লাগিব, আৰু এনে প্ৰতিহিংসা মূলক ভাব মনত ৰাখি বোধকৰো আমি প্ৰত্যোকে উপকৃত হম।

'অতীতৰ ফালে চোৱাৰ প্ৰয়োজন নাই, আগবাঢ়া। আগব ফালে চোৱা; আমাক লাগে অসীম শক্তি, অদমা উৎসাহ, দুৰ্জন সাহস, অসীম ধেয়। চেতিয়াহে আমি মহৎ কাৰ্য সাধন কৰিব পাৰিম।''

— স্বামী বিবেকানন্দ

সিন্ধু উপত্যকাৰ সভ্যতা

সোণমা চক্রবর্ত্তী

যিকোনো দেশৰ বুৰঞ্জী পঢ়িলে দেখা যায় যে, প্ৰকৃতিৰ দান-বিলাকে দেশখনৰ বুৰঞ্জীৰ ওপৰত কিছুদূৰ প্ৰভাৱ বিস্তাৰ কৰে। প্ৰকৃতিৰ দানবিলাকৰ ভিতৰত নৈ হৈছে এটা উল্লেখযোগ্য দান। প্ৰাচীন মিচৰীয় সভ্যতাৰ সৃষ্টি হৈছিল নীল নৈৰ পাৰত। সেইদেৰ প্ৰাচীন ভাৰতীয় প্ৰাক্-আৰ্যসভ্যতাৰো উৎপত্তি হৈছিল সিন্ধু নৈৰ উপত্যকাত।

আজিৰ পৰা কিছু বছৰৰ আগলৈকে বুৰঞ্জীবিদ সকলৰ ধাৰণা আছিল যে আৰ্য সকল ভাৰতলৈ অহাৰ লগে লগে ভাৰতীয় প্ৰচীন সভ্যতাৰ আৰম্ভ হয়; কিন্তু দক্ষিণ পঞ্জাৱৰ মন্টগ্মাৰি জিলাৰ হৰপ্লাত আৰু সিন্ধু প্ৰদেশৰ লাৰকানা জিলাৰ মহেঞ্জোদাৰোত মাটি খান্দি যিবিলাক বুৰঞ্জীয়ে ঢুকি নোপোৱা যুগৰ নিদৰ্শন পোৱা গৈছে, তাৰপৰা বুৰঞ্জাবিদ সকলৰ আগৰ ধাৰণাৰ পৰিবৰ্তন হৈছে আৰু তেওঁলোকে এই সিদ্ধান্তত উপনীত হৈছে যে, আৰ্যবিলাক ভাৰতলৈ অহাৰ অন্ততঃ এহেজাৰ বছৰ আগেয়ে সিন্ধু নৈৰ উপত্যকাত এটি সু-সভ্য জাতিয়ে বসবাস কৰিছিল।

১৯২২ চনত পূৰাতত্ত্ববিদ চাৰ জন মাৰ্ছেল আৰু তেওঁৰ ভাৰতীয় সহযোগী অধ্যাপক ৰাখাল দাস বেনাৰ্জীয়ে মহেঞ্জোদাৰোত এটা বৌদ্ধমঠৰ ভগ্নাৱশেষ খনন কাৰ্য্যত লাগি থাকোতে কিছুমান খড়িয়া পাথৰৰ মোহৰ আৱিষ্কাৰ কৰে। এই মোহৰ বিলাকত জম্ভু আদিৰ ছবিৰ সহায়ত লিখা এবিধ লিপি পোৱা হয়। এনেকুৱা মোহৰ আগেয়ে পঞ্জাৱৰ হৰপ্পাত পোৱা গৈছিল। এই আৱিষ্কাৰে এটা অনুপ্ৰেৰণা যোগোৱাত ভাৰতবৰ্ষৰ প্ৰত্নতত্ত্ব বিভাগৰ চেষ্টাত এই দুয়োখন নগৰৰ মাটি খান্দি অনুসন্ধান চলোৱাত এটি অতি প্ৰাচীন নগৰীয়া সভ্যতাৰ নিদৰ্শন পোৱা গৈছে। এই সভ্যতা সিন্ধু নৈৰ উপত্যকাত উদ্ভৱ হৈছিল দেখি, ইয়াক সিন্ধু উপত্যকাৰ সভ্যতা বা সিন্ধু সভ্যতা বোলে।

হৰপ্পা আৰু মহেঞ্জোদাৰোত আৱিষ্কৃত হোৱা সভ্যতাৰ নিদর্শনঃ

মহেজ্যোদাৰো শব্দৰ অৰ্থ হৈছে "মৃত সকলৰ স্তৃপ"। অতীতৰ মৃতক সকলৰ দেহবিলাক এই ঠাইত মাটিৰ তলত পোত খাই আছিল দেখিয়েই বোধকৰো পৰবৰ্তী কালত এই নাম দিয়া হয়। খনন কাৰ্য্যৰ পৰা বুজা যায় যে মহেজ্ঞোদাৰো নগৰৰ বহুতবাৰ উত্থান-পতন হৈছিল। এই ঠাইখন ঠায়ে ঠায়ে ২০ ফুটৰ পৰা ৭০ ফুটলৈকে ডাঠ মাটিৰ দ'মে ঢাকি ৰাখিছিল।

নগৰ আৰু গৃহনিমাণ ব্যৱস্থা ঃ

মহেঞ্জোদাৰো নগৰৰ ভগ্নৱশেষ এখন আধুনিক নগৰৰ ভগ্নাৱশেষ যেনহে লাগে। মহেঞ্জোদাৰো, হৰপ্লা, লোথাল আদি নগৰবোৰ পৰিকল্পিত ভাৱে তৈয়াৰ কৰা হৈছিল। এই নগৰৰ বাজআলিবোৰ আহল-বহল আছিল। এইবোৰেদি মানুহ, যান-বাহন অবাধে অহা-যোৱা কৰিব পাৰিছিল। আলিবাটবিলাক সমান্তৰালভাৱে নগবৰ এমূৰৰ পৰা আনমূৰলৈ বিস্তৃত আছিল। আলিবাটবিলাক ৯ ফুটৰ পৰা ৩৪ ফুটলৈকে বহল আছিল। অট্টালিকাবোৰ ডাঙৰ আলিবাটৰ দাঁতিত সজা হৈছিল। সৰু আলিবোৰৰ দাঁতিয়েদি শাৰী-শাৰীকৈ মানুহৰ ঘৰ আছিল। হৰপ্পা নগৰ মহেঞ্জোদাৰোতকৈ আয়তনত বেছি আহল-বহল আছিল। সিন্ধু উপত্যকাত আৱিষ্কাৰ হোৱা ঘৰবোৰ তিনি ভাগত ভগাব পাৰি। (১) মানুহ থকা ঘৰ (২) ডাঙৰ অট্টালিকা (৩) ৰাজহুৱা স্নানাগাৰ। মানুহ থকা ঘৰবোৰৰ আকাৰ সমান নহয়। কিছুমান দুটা কোঠা থকা আৰু কিছুমানৰ বহুত কোঠা। অট্টালিকাবিলাকৰ কাৰুকাৰ্য্যও সাধাৰণ আছিল। হৰপ্পাত আৱিষ্কৃত হোৱা ঘৰবিলাকৰ ভিতৰত আটাইতকৈ ডাঙৰ হৈছে এটা শস্যৰ ভঁৰাল। ইয়াৰ দীঘ আৰু পুতল যথাক্ৰমে ১৬৯ ফুট আৰু ১৩৫ ফুট। মাজত ২৩ ফুট বহল ওখ ভেটিৰে সৈতে এখন চোতালে ঘৰটোক দুটা ভাগত বিভক্ত কৰিছে। হৰপ্পাত আৱিষ্কৃত হোৱা আন এটা ঘৰ হৈছে বনুৱা সকলৰ নিবাস। এই বাসস্থানত ১৪টা ঘৰ আছে। এই ঘৰবোৰ সাজোতে সৌন্দৰ্য্যতকৈ সুবিধাৰ ওপৰত গুৰুত্ব দিছিল। মহেজোদাৰো আৰু হৰপ্লাত ঘৰৰ বেৰ, চোতাল, গা- ধোৱা ঘৰ, পানী যোৱা নলা আদিত পকা ইটা বেছি ব্যৱহৃত হৈছিল। ঘৰৰ ভেটি বান্ধোতে ৰ'দত শুকুৱা ইটাও ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। ইটাবিলাক গঠনত আয়তাকাৰ আছিল আৰু এই ইটা আজিকালিৰ ইটাবোৰতকৈও ভাল আছিল। চানহুদাৰু বোলা ঠাইত বেঁকা ভাঁজ থকা ইটাও পোৱা গৈছে। মহেঞ্জোদাৰোত ইটাৰ ভটাও আৱিষ্কৃত হৈছে। পকীঘৰ সাজোতে সধাৰণতে বোকাৰে গাঁথনি বা লেপন দিয়া হৈছিল। পানী যোৱা নলা, গা-ধোৱা ঘৰ আদিত জিপ্ছাম, চূণ আৰু পানীৰে তৈয়াৰ কৰা এবিধ মচলাৰে গাঁথনি দিয়া হৈছিল।

প্ৰতিটো সৰু আলিৰ কাষতে এটাকৈ ৰাজহুৱা কুঁৱা আছিল, প্ৰায়বোৰ ঘৰতে একোটাকৈ ব্যক্তিগত কুঁৱা আৰু গা-ধোৱা ঘৰ আছিল। গা-ধোৱা ঘৰৰ মজিয়াখন কোনো এটা চুকলৈ হেলনীয়া আছিল। পানী ইয়াৰ নলাইদি গৈ বাটৰ দাঁতিৰ নলাত পৰিছিল। পানী যোৱা নলাৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে, ওপৰ মহলাতো গা-ধোৱা ঘৰ আছিল। ঘৰ বিলাকৰ ভিতৰত বতাহ চলাচল কৰিব পৰাকৈ খিৰিকী বিলাকত জালনা দিয়া হৈছিল। প্ৰত্যেক ঘৰতে পকা খটখটি পোৱা গৈছে। নগৰৰ পৰা পানী ওলাই যোৱা ব্যৱস্থাটো অতি উৎকৃষ্ট আছিল। ঘৰৰ পৰা লেতেৰা পানী ওলাই গৈ আলি কাষৰ নলা বা নৰ্দমাত পৰিছিল। প্ৰতিটো ডাঙৰ আলি আৰু সৰু বাটৰ দাঁতিতে একোটাকৈ ঢাকনি থকা নৰ্দমা আছিল। এই নৰ্দমাবোৰ এফুটৰ পৰা দুফুট দ আৰু ইয়াৰ ঢাকনিবিলাক শিল বা ইটাৰ তৈয়াৰী আছিল। প্ৰত্যেক ঘৰুৱা নৰ্দমাৰ পানী আহি এই নৰ্দমাত পৰিছিল আৰু নৰ্দমাৰ পানীৰ লগত মিলি অৱশেষত নৈত পৰিছিলগৈ। আলিৰ দাঁতিৰ ঠায়ে ঠায়ে একোটা চৌবাচ্চা আছিল। টৌবাচ্চাত জমা হোৱা আৱৰ্জনা আৰু পানী চাফা কৰিবলৈ আৰু নৰ্দমাবোৰ পৰিষ্কাৰ কৰিবলৈ লোক নিয়োগ কৰা হৈছিল।

মহেঞ্জোদাৰোত আৱিষ্কৃত হোৱা ভগ্নাৱশেষ বিলাকৰ ভিতৰত আটাইতকৈ উল্লেখযোগ্য নিদর্শন হৈছে ৰাজহুৱা স্নানাগাৰটো। এই স্নানাগাৰটো চতুৰ্ভূজ আকাৰৰ আৰু ইয়াৰ চাৰিওফালে বাৰাণ্ডা আৰু কোঠা আছিল। ইয়াৰ মাজত সাঁতুৰিবৰ কাৰণে ৩৯ ফুট দীঘল, ২৩ ফুট বহল আৰু ৮ ফুট দ এটা পুখুৰী আছিল। ইয়াৰ প্ৰত্যেক পাৰতে খটখিট আছিল। এই পুখুৰীৰ পানী লেতেৰা হ'লে তাক উলিয়াই নতুনকৈ পূৰাবলৈ ওচৰতে কুঁৱা আছিল। ছাই, কাঠ, কয়লা আদি পোৱাৰ পৰা অনুমান কৰা হয় যে স্নান কৰি জুই পুৱাবলৈ ওপৰ মহলাত জুই ধৰাৰ ব্যৱস্থা আছিল। এই সাঁতোৰা পুখুৰীটোৰ পকা গাঁথনিয়েদি কোনোমতে পানী সৰকিব নোৱাৰে। ডাঙৰ স্নানাগাৰটোৰ দক্ষিণ-পশ্চিম চুকত আছিল এটা গৰম পানীৰ ব্যৱস্থা থকা স্নানাগাৰ।

দুশাৰী গা-ধোৱা ঘৰৰে সৈতে আন এটা স্নানাগাৰ আৱিষ্কৃত হৈছে। অনুমান কৰা হয় যে এই ঘৰবিলাক পুৰোহিত সকলে ব্যৱহাৰ কৰিছিল আৰু ডাঙৰ স্নানাগাৰটো সৰ্বসাধাৰণৰ কাৰণে মুকলি আছিল।

সুচিন্তিত নগৰ পৰিকল্পনা, উপযুক্ত পানী যোগান আৰু পানী ওলাই যোৱাৰ ব্যৱস্থা আদিৰ পৰা অনুমান কৰা যায় যে, সিন্ধু উপত্যকাৰ অধিবাসীসকলৰ নাগৰিক আদৰ্শ বৰ উচ্চ আছিল। বাটৰ দাঁতিত থকা খুটাৰ পৰা অনুমান হয় যে বাটৰ কাষত চাকি জ্বলোৱাৰ ব্যৱস্থা আছিল। নগৰত পহৰা দিবৰ বাবে সুব্যৱস্থা কৰা হৈছিল। নগৰৰ লেতেৰা আৱৰ্জনা নগৰৰ বাহিৰত পেলোৱা হৈছিল। ইয়াৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে, সিন্ধু উপত্যকাৰ নিবাসীসকল স্বাস্থ্য

কৃষিজাত সামগ্ৰী, খাদ্য আৰু ব্যৱসায় ঃ

খনন কাৰ্য্যত পোৱা কৃষিজাত বস্তু যেনে - ঘেঁহ, ধান, য-ধান আদিয়ে প্ৰমাণ কৰে যে এই ঠাইত প্ৰচুৰ পৰিমাণে খেতি-বাতি হৈছিল। খেজুৰ, চাউল, গাখীৰ, শাক-পাচলি আদি যথেষ্ট আছিল। হৰপ্পাত মটৰমাহ আৰু তিলৰ খেতিও হৈছিল। তাৰ উপৰিও গোটেই উপত্যকাতে গৰু, ভেৰা, গাহৰি, কুকুৰা, ঘঁৰিয়াল আৰু কাছৰ মাংস খোৱাৰো প্ৰথা আছিল। এই বিলাকৰ হাড়-মূৰ মাটিৰ তলত পোত খাই থকা, অনেক ঘৰ আৰু বাট-পদুলিত পোৱা গৈছে। মাছ ধৰাৰ প্ৰমান স্বৰূপ কিছুমান বৰশী পোৱা গৈছে।

ঘৰচীয়া আৰু বনবীয়া দুয়োবিধ জন্তুৰে অন্তিত্ব পোৱা গৈছে। কুঁজ থকা বলদ, মহ, মেথোন, ছাগলী, হাতী আৰু উটৰ জঁকা পোৱা গৈছে। মাটিৰ তলত পোৱা অনেক শীলমোহৰতো কুঁজ থকা বলদ আৰু গাইগৰুৰ মূৰ্তি পোৱা গৈছে। গাধ আৰু সিংহৰ হাড়ো পোৱা গৈছে।

সেই সময়ত মহেজ্ঞোদাৰোৰ লগত আন ঠাইৰ বিশেষ যোগাযোগ আছিল। মহেজ্ঞোদাৰোৰ অধিবাসীসকলৰ বেছিভাগে কৃষিৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰিছিল। বয়ন শিল্পকো ইয়াত প্ৰাধান্য দিয়া হৈছিল। খনন কাৰ্য্যত আৱিষ্কাৰ হোৱা যঁতৰ আৰু টাকুৰীৰ পৰা এই কথাৰ প্ৰমাণ পোৱা যায়। তেওঁলোকে কাপোৰত ৰং দিয়া বিদ্যাতো সিদ্ধহণ্ড আছিল। সোণ, ৰূপ, তাম আদি ধাতুৰে তেওঁলোকে নানা ধৰণৰ সামগ্ৰী তৈয়াৰ কৰিছিল। হৰপ্পাৰ অধিবাসীসকল বেপাৰ-বাণিজ্ঞাৰ্ড বেছি আগ্ৰহী আছিল। বহুত ধাতু আৰু বহুমূলীয়া পাথৰ ভাৰতৰ আন ঠাইৰ পৰা নাইবা মধ্য এচিয়া আৰু পশ্চিম এচিয়াৰ পৰা অনা হৈছিল। এটা 'শীলমোহৰ'ত পোৱা এখন জাহাজৰ চিত্ৰৰ পৰা অনুমাণ কৰিব পাৰি যে, সেই সময়ত সিন্ধু-উপত্যকাবাসী সকল সাগৰীৰ্থ বাণিজ্যত পাঁকৈত অছিল।

সাজ-পোচাক আৰু অলংকাৰ ঃ

সাজ-পোচাক সম্বন্ধে ইয়াৰ কোনো সংৰক্ষিত নমুনা নাই, কি শিলত কটা মূৰ্তিৰ পোচাকৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে মতা মানু ধূতিৰ নিচিনা এখন বস্ত্ৰ ব্যৱহাৰ কৰিছিল। গাৰ ওপৰৰ অংশত এখ চাদৰ লৈছিল। এই চাদৰখনেৰে বাওঁ বাহুটো ঢাকি সোঁবাহুটো উলিয় লোৱা হৈছিল। মহিলাসকলে মেখেলা চাদৰৰ দৰে এবিধ বস্ত্ৰ পৰিধ কৰিছিল। পোচাকৰ বাবে কপাহ আৰু উন ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল মাটিৰ তলত পোৱা বেজিৰ পৰা অনুমান কৰা হয় যে সেই সম মানুহে চিলাইবিদ্যাও জানিছিল। তেওঁলোকে চুলি ভালদৰে সজ

ছিল। মাইকী মানুহে খোপা বান্ধিছিল বা কেইবাধৰণেৰে বেণী গুঠি-ছিল। মতা মানুবোৰেও চুলি দীঘলকৈ ৰাখি পিছফালে ফণিয়াইছিল। <mark>দাড়ি-গোফ কৰ্মকৈ ৰাখিছিল আৰু গোঁফৰ মাজৰ অংশ খুৰাইছিল।</mark> ধনী-দুখীয়া নিৰ্বিশেষে মতা-মাইকী উভয়ে সোণ, ৰূপ, তাম নাইবা শংখৰ অলংকাৰ পিন্ধিছিল। মাইকী মানুহবোৰে বিচনীৰ আকাৰৰ এখন শিৰোভূষণ বা কিৰীটি পিন্ধিছিল। চুলিবিলাক মূৰৰ ইফালে-সিফালে বাগৰি নপৰিবৰ কাৰণে মূৰত সোণ, ৰূপ বা তামৰ এবিধ আঙঠি বা ক্লিপ ব্যৱহাৰ কৰিছিল। কাণত নানা ধৰণৰ অলংকাৰ পিক্ষিছিল। ডিঙিত পিন্ধা নানা ধৰণৰ অলংকাৰ আৱিষ্কৃত হৈছে। হাতত নানা ধৰণৰ খাৰু আৰু আঙুলিত আঙঠি পিন্ধা প্ৰথা আছিল। দুই-এপদ কঁকালত পিন্ধা অলংকাৰো আৱিষ্কৃত হৈছে। নানা ধৰণৰ পাথৰ কাটি তৈয়াৰ কৰা শিল্পীসকলৰ কাৰ্য্য-কুশলতাৰ প্ৰশংসা কৰিব পাৰি। সেই সময়ৰ মহিলা সকল যে বিলাসপ্ৰিয় তথা সৌন্দৰ্য্য-প্ৰিয় তাৰ অনুমান হৰপ্পাত পোৱা এটা প্ৰসাধনৰ সামগ্ৰী থকা পাত্ৰৰ পৰা পোৱা যায়। প্ৰসাধনৰ পাত্ৰবোৰ হাঁতীৰ দাঁত বা যিকোনো ধাতু বা মাটিৰ আছিল। মহিলাসকলে হাঁতীৰ দাঁতৰ ফণিৰে মূৰ আচুৰিছিল, মহেপ্ৰোদাৰোত অঞ্জন আৰু মুখত ঘঁহা ৰং ব্যৱহৃত হৈছিল। চানহুদৰুত ওঠত ঘঁহা ৰং ব্যৱহাৰ কৰিছিল।

গৃহস্থালিৰ বাচন-বৰ্তন ঃ

গৃহস্থ ঘৰত ব্যৱহাৰ হোৱা অনেক বাচন-বৰ্তন মহেঞ্জোদাৰোত পোৱা গৈছে। সেই বিলাক মাটি, শিল আৰু নানা ধাতুৰে তৈয়াৰী আছিল। চকি, খাট আদিৰে বৈঠকখানা সজোৱা হৈছিল। এই বিলাক কাঠেৰে বা খাগৰিজাতীয় বস্তুৰে সজা হৈছিল। তামৰ আৰু মাটিৰ পাত্ৰত চাকি জ্বলোৱা হৈছিল। ব্ৰঞ্জনিৰ্মিত নানা ধৰণৰ অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰ আৱিষ্কাৰ হৈছে।

খেল-ধেমালি আৰু কলাচৰ্চা ঃ

সেই সময়ত মানুহে নানা ৰকমৰ ধেমালিৰ খেল খেলিছিল। বল, মাৰ্বল আৰু পাশাখেলৰ প্ৰথা আছিল। বহুত শীলমোহৰত পোৱা চিকাৰীৰ মূৰ্তিৰপৰা ক'ব পাৰি যে সেই সময়ত বনৰীয়া জম্বু চিকাৰ চিকাৰীৰ মূৰ্তিৰপৰা কাব পাৰি যে সেই সময়ত বনৰীয়া জম্বু চিকাৰ কৰা প্ৰধান আমোদ আছিল। চৰাই যুঁজ চাই আমোদ পাইছিল ল'ৰাকৰা প্ৰধান আমোদ আছিল। চৰাই যুঁজ চাই আমোদ পাইছিল। ছোৱালীবোৰে। মাটিৰ পুতলা সাজিও আনন্দ পাইছিল।

ছোৱালাখোনে। সাতি বুল সিন্ধু উপত্যকা নিবাসীসকলৰ কলা আৰু কাৰু-কাৰ্য্য আছিল নিয়মীয়া বা সাধাৰণ ধৰণৰ। কলা বিদ্যাৰ নিদৰ্শন মূৰ্তিবিলাকত, নিয়মীয়া বা সাধাৰণ ধৰণৰ। কলা বিলাকত ভালকৈ ফুটি ওলাইছে। শীলমোহৰ বিলাকত আৰু তাবিজ বিলাকত ভালকৈ ফুটি ওলাইছে। মূৰ্তিবিলাক ভালদৰে পোৰা হৈছিল আৰু কিছুমানত ৰঙা বোল দিয়া হৈছিল। যি বিলাক মূৰ্তি পোৱা গৈছে তাৰ বেছিভাগ তিৰোতাৰ মূৰ্তি। কাঁচৰ দৰে চক্চকীয়া মাটিৰে নিৰ্মিত কেইটামান কেৰ্কেটুৱা আৰু বান্দৰৰ চিত্ৰ পোৱা গৈছে। এটা শংখৰে নিৰ্মিত কাছও পোৱা গৈছে। অনেক শীলমোহৰত চুটি শিং থকা বলদ গৰুৰ মূৰ্তিও পোৱা গৈছে। ব্ৰঞ্জ নিৰ্মিত এজনী নাচনী ছোৱালীৰ মূৰ্তিটো সঁচাকৈয়ে চাবলগীয়া। ভাস্কৰ্যৰ নিদৰ্শন বৰ বিৰল। মূৰ্তিবিলাক নানা ধৰণৰ শিলত কটা হৈছিল। হৰপ্পাত দুটি সুন্দৰ মূৰ্তি পোৱা গৈছে।

সিন্ধু উপত্যকাৰ বেলেগ বেলেগ ঠাইত পোৱা 'শীলমোহৰ'ৰ সংখ্যা দুহেজাৰতকৈও বেছি। আৱিষ্কৃত বস্তুবিলাকৰ ভিতৰত ই এবিধ ডাঙৰ সম্পত্তি। 'শীলমোহৰ, বিলাকত জন্তু আদিৰ প্ৰতিমূৰ্ত্তি থকাৰ উপৰিও ছবিৰ সহায়ত লিখা এবিধ লিপি পোৱা গৈছে। এফালে কোনো জন্তু আৰু আনফালে আখৰ বা লিপি থকা নাইবা দুয়োফালে লিপি থকা এবিধ তামৰ ফলি আৱিষ্কৃত হৈছে। ধনী-দুখীয়া নির্বিশেষে সকলোৰে ঘৰত শীলমোহৰ পোৱা গৈছে। ইয়াৰ পৰা অনুমান হয় যে সম্পত্তিৰ ওপৰত স্বন্ধ বজাই ৰাখিবলৈ নাইবা যিকোনো ব্যৱসায় বা বন্দৱস্ততে সেইবিলাকৰ প্রয়োজন হৈছিল আৰু প্রত্যেকেই অন্ততঃ একোটাকৈ 'শীলমোহৰ' লগত লৈ ফুৰিছিল।

শিক্ষা ঃ

শীলমোহৰ আদিত পোৱা লেখাৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে সিন্ধু উপত্যকাবাসীসকল সুশিক্ষিত আছিল। তেওঁলোকে কিছুমান জম্ভু আদিৰ ছবিৰ সহায়ত তেওঁলোকৰ ভাষা লিখিছিল। লিপিৰ অৰ্থ এতিয়ালৈকে উলিয়াব পৰা হোৱা নাই। 'শীলমোহৰ' বিলাকত প্ৰায় ৪০০ মান ছবি পোৱা গৈছে।

ধর্ম-সংস্কাৰ ঃ

অতি প্রাচীন কালত প্রায়বিলাক সমাজতে ধর্মৰ স্থান বৰ উচ্চত আছিল যদিও সিন্ধু উপত্যকাবাসীবিলাকৰ ধর্মৰ বিষয়ে সঠিককৈ ক'ব নোৱাৰি। মাটিৰ তলত ওলোৱা বহুত অট্টালিকাৰ কোনোটোক ধর্ম মন্দিৰ বুলি অনুমান কৰিলেও উপাসনা কৰা বেদী বা আন ধর্ম বিষয়ক চিন পোৱা হোৱা নাই। তথাপি 'শীলমোহৰত পোৱা মূর্তি, শিলৰ সৰু মূর্তি বা কিছুমান প্রতিমাৰ পৰা তেওঁলোকৰ ধর্মৰ বিষয়ে অনুমান কৰিব পাৰি। হৰপ্পা আৰু মহেজ্ঞোদাৰো উভয় ঠাইতে মাতৃপূজা কৰিছিল। পুৰুষদেৱতা সকলৰ ভিতৰত এজন তিনিখন মুখ থকা, মূৰত এটা শিং থকা শিৰাভৰণ পিন্ধা দেৱতাই বিশেষ উল্লেখযোগ্য। এই

দেৱতাজ্ঞনে পদ্মাসনীয়াকৈ এখন সিংহাসনত বহি যোগ আৰাধনা কৰিছে আৰু হাতী, মহ, বাঘ, হৰিণা আদি বনৰীয়া জন্তুবিলাকে তেওঁক চাৰিওফালৰ পৰা বেঢ়ি আছে। পণ্ডিতসকলে এই দেৱতাজনক শিৱ বুলি অনুমান কৰিছে। পোৰা মাটি আৰু শিলৰ অনেক মূৰ্তিৰ পৰা জ্ঞভুৰ পূজাও প্ৰচলিত আছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি। জ্ঞভুবিলাকৰ কিছুমানৰ গঠন কাল্পনিক। অনেক শীলমোহৰত পোৱা চিত্ৰৰ পৰা বক্ষ, জল আৰু অগ্নিকো পূজা কৰা হৈছিল বুলি অনুমান কৰিব পাৰি।

সৎকাৰ ঃ

সিন্ধু বাসীসকলে তিনি ধৰণে মৃতকৰ সংকাৰ ব্যৱস্থা কৰিছিল। ছাই, অস্থি আদি থকা অনেক মাটিৰ পাত্ৰ আৱিষ্কৃত হৈছে। মিছৰৰ পিৰামিড্বোৰত পোৱাৰ দৰে ইয়াতো মৃতকসকলৰ লগত লাগতিয়াল বস্তুৰ যোগান দিয়া হৈছিল। ছাই, হাড় আদি পূৰ্ণ হৈ থকা বহু মাটিৰ পাত্ৰৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে মৰা শ সাধাৰণতে দাহ কৰা হৈছিল। মহেজ্ঞোদাৰোত পোৱা ২১টা মৰা মানুহৰ জঁকাৰ পৰা অনুমান কৰিব পাৰি যে কবৰ দিয়া প্ৰথাও প্ৰচলিত আছিল।

আৰ্য্য আৰু দাবিড় সভ্যতাৰ লগত সিন্ধু সভ্যতাৰ সম্পর্ক ঃ

সিন্ধু সভ্যতা গঢ়ি তোলা লোক সকল কোন জাতীয় মানুহ আছিল সঠিককৈ কোৱা টান। সিন্ধু সভ্যতাৰ বিকাশ হৈছিল তাম্ৰ-প্ৰস্তৰ যুগত। জঁকা আৰু লাওখোলাৰ জোখৰ পৰা তলত দিয়া চাৰি জাতি মানুহৰ অন্তিত্ব পোৱা হৈছে। (১) প্ৰট্' অষ্ট্ৰেনইড (২) ভূমধ্যসাগৰীয় (৩) এলপিনইড্ (৪) মঙ্গোলীয়। বহুতো পণ্ডিতে ইয়াক প্রাক্ আর্য্য

সভ্যতা বুলি প্ৰমান কৰিছে। অনেকে এই সভ্যতাক দাবিড়ী সভ্যতা বুলি ক'ব খোজে; কিন্তু খনন কাৰ্য্যত পোৱা লাওখোলা বিলাকে প্ৰমান কৰে যে এই সভ্যতা কেৱল এটা জাতিয়ে গঢ়ি তোলা নাছিল। সেই সময়ত সিন্ধু উপত্যকাত অনেক জাতিৰ মানুহৰ সংমিশ্ৰন হৈছিল। সিন্ধু সভ্যতা কেৱল হৰপ্পা আৰু মহেজ্ঞোদাৰো এই দুই ঠাইত সীমাবদ্ধ নাছিল। চানহুদাৰো আম্ৰি, জুকৰ, লহুম্জ'দাৰো আদি ঠাই, খনন কাৰ্য্যৰ পৰা এনে ধৰণৰ নিদৰ্শন পোৱা 'গৈছে। কিছুমানৰ মতে এই সভ্যতা বেলুচিস্থান পর্য্যন্ত বিস্তৃত আছিল।

সিন্ধু সভ্যতা ধ্বংসৰ কাৰণ ঃ

এই সভ্যতা কেনেদৰে ধ্বংস হ'ল তাক সঠিককৈ কোৱা টান 🎣 তৰপে তৰপে খান্দি উলিওৱা মাটিৰ গঢ়-গতিৰ পৰা অনুমান কৰিক পাৰি যে মহেজ্ঞোদাৰো নগৰ কেইবাবাৰো বানপানীয়ে ধ্বংস কৰিছিল আৰু ইয়াৰ অধিবাসীসকলে বাৰে বাৰে এই নগৰ ত্যাগ কৰি গৈছিল। কালক্ৰমত এই নগৰ পুনৰ প্ৰতিষ্ঠা হৈছিল আৰু ধ্বংস হৈছিল । বানপানীৰ পৰা ৰক্ষা পাবলৈ বান্ধ আদি তৈয়াৰ কৰি উপযুক্ত ব্যৱস্থা লোৱাৰ প্ৰমান পোৱা নাযায়। কোনো কোনো পণ্ডিতৰ মতে দূৰ্গ আদি নিৰ্মাণ কৰি বাহিৰা শক্ৰৰ পৰা ৰক্ষা পোৱাৰ ব্যৱস্থা কৰা নাছিল। সেই বাবেই বাহিৰা শত্ৰুব আক্ৰমণত এই নগৰবোৰ ধ্বংস হৈছিল।

* হৰপ্পা আৰু মহেপ্ৰোদাৰোৱে ভাৰতৰ অতীত গৌৰৱৰ কাহিনী ঘোষনা কৰিছে। ''শীলমোহৰ'' বিলাকৰ ভাষাৰ অৰ্থ যদিহে ভৱিষা**ে** বুজিব পৰা হয় তেতিয়াহে সিশ্ধু সভ্যতাৰ প্ৰকৃত স্বৰূপ প্ৰকাশ পাব। গতিকে আমি আশা কৰিব পাৰো যে ভৱিষ্যতৰ আৱিষ্কাৰে সিগ্নু সভ্যতাৰ লুকাই থকা ফালটোৰ বুৰঞ্জী পোহৰলৈ আনিব।

प्रशयक श्रुव ४

- প্ৰাচীন সভ্যতা অমিয় কুমাৰ শৰ্মা
- History of Ancient India K. Chaudhury (२)
- (৩) Ancient India — V.D. Mahajan

১৯৪৫ চনৰ ৬ আগষ্ট। জ্বাপানৰ ওপৰত পৃথিবীৰ প্ৰথমটো আণৱিক বোমা বিস্ফোৰিত হ'ল। লগে লগে পৃথিবীত সৃষ্টি হ'ল সম্বাস আৰু ভয়ৰ। বিজ্ঞানৰ প্ৰগতিৰ ওপৰত শান্তিকামী মানুহৰ আস্থা হেৰাই গ'ল। সমগ্ৰ বিশ্বতে শিহৰণ জগোৱা এই আতংকজনক আৰু মাৰাত্মক কাৰ্য্যৰ পৰিকল্পনা কিন্তু অতি সংগোপনে কৰা হৈছিল।

প্ৰথম মহাসমৰৰ ভয়াৱহ যাতনাৰ পৰা ৰক্ষা পোৱাৰ কেইবছৰমানৰ ভিতৰতেই জাৰ্মানীৰ যুদ্ধবলিয়া একছত্ৰী সম্ৰাট হিট্লাৰে পুনৰ মিত্ৰশক্তিৰ বিৰুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা কৰিলে। যুদ্ধৰ বতাহ লাগি বিশ্বৰ প্ৰায়বোৰ সৰু-বৰ দেশতে আলোড়নৰ সৃষ্টি হ'বলৈ ধৰিলে। এটা শক্তিয়ে আন এটা শক্তিক নতুন অস্ত্ৰেৰে আঘাত কৰিবলৈ নানা উপায় চিম্ভা কৰাৰ ফলত সৃষ্টি হ'বলৈ ধৰিলে নতুন নতুন কৌশলী অস্ত্ৰ। পৰোক্ষ ভাবে বিজ্ঞানী সকলো যুদ্ধক্ষেত্ৰত সোমাই পৰিল। তেতিয়াও কিছু চৰম অস্ত্ৰপাট কোনো এটা শক্তিৰ হাতলৈ অহা নাছিল।

সেই সময়ত আমেৰিকা যুক্তৰাষ্ট্ৰৰ ৰাষ্ট্ৰপতি আছিল শান্তিপ্ৰিয় (?) বুলি খ্যাত ফ্ৰেংকলিন ডিঃ ৰুজভেল্ট। ১৯৩৯ চনৰ ২ আগষ্টত পদাৰ্থবিদ আইনষ্টাইনকে আদি কৰি কেইবাজনো আগশাৰীৰ বিজ্ঞানীয়ে এখন গুৰুত্বপূৰ্ণ চিঠিৰ যোগে ৰুজভেল্টক জনালে যে বিপক্ষ শক্তি জাৰ্মানীয়ে অতি সোনকালেই এবিধ নতুন ধৰণৰ শক্তিশালী মাৰণাস্ত্ৰ তৈয়াৰ কৰাৰ পথত আৰু এই মাৰণাস্ত্ৰৰ প্ৰয়োগৰ ফল হ'ব অতি ভয়াবহ। সেয়ে অতি সোনকালেই এটা উপযুক্ত ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিব লাগে। চিঠিৰ গুৰুত্ব বুজি পাই ৰুজভেল্টে তৎকালেই কেইজনমান প্ৰখ্যাত বিজ্ঞানীক লৈ আণৱিক বোমা প্ৰস্তুত কমিটি এখন গোপনভাবে নিযুক্ত কৰিলে। প্ৰকল্পটোৰ মূৰব্বী ৰূপে নিৰ্বাচিত হ'ল অসাধাৰণ মেধাসম্পন্ন পদাৰ্থবিদ ডেঃ জুলিয়াছ ৰবাৰ্ট অপেনহাইমাৰ।

আনফালেদি ইউৰোপৰ ইংলেণ্ড, জার্মানী, ইটালি আদি
দেশসমূহতো আণৱিক গৱেষণাত যথেষ্ট অগ্রগতিলাভ কৰিছিল। ১৯৪১
চনৰ মাজভাগত বৃটিছ পদার্থবিদ চাৰ জেমছ চাডউইকে বৃটিছ চৰকাৰক
দিয়া এখন গোপন প্রতিবেদনত উল্লেখ কৰি কৈছিল — We are satisfied that the project of making an atomic bomb is practicable and likely to lead to decisive results in the war.

পিছৰ বছৰত আমেৰিকা যুক্তৰাষ্ট্ৰ আৰু ইংলেণ্ডে লগলাগি স্থিৰ কৰিলে যে আণৱিক শক্তিৰ গৱেষণা আৰু উন্নয়ন সম্পৰ্কে যুটীয়াভাবে পৰস্পৰক সহায় কৰি একেলগে কাম কৰিব। ইয়াৰ পিছত দুয়োখন দেশৰ সন্মতিক্ৰমে আণৱিক বোমা পৰীক্ষা কাৰ্যাৰ বাবে নিউ দুয়োখন লছ আলামোছ নামৰ এডোখৰ স্থান বাছনি কৰিলে। ইয়াৰ মেক্সিকোৰ লছু আলামোছ নামৰ এডোখৰ স্থান বাছনি কৰিলে। ইয়াৰ গেক্সিকোৰ লছ্ আলামোছ নামৰ এডোখৰ স্থান বাছনি কৰিলে। ইয়াৰ ওচৰতে এখন সৰু চহৰ ছান্তা ফে। এই সৰু চহৰখনতেই পৰিকল্পনা ওচৰতে এখন সৰু চহৰ হান্তা ফে। এই সৰু চহৰখনতেই পৰিকল্পনা অনুযায়ী পৰীক্ষা কাৰ্যাৰ বাবে প্ৰয়োজনীয় যন্ত্ৰপাতিৰে অত্যাধুনিক অনুযায়ী পৰীক্ষা কাৰ্যাৰ বাবে প্ৰয়োজনীয় যন্ত্ৰপাতিৰে অত্যাধুনিক

আণৱিক বোমাৰ জন্ম ৰহস্য ২য় মহাযুদ্ধৰ এটা গোপন আৰু মাৰাত্মক পৰিকল্পনা

ভাৰ্গৱ কলিতা

গৱেষণাগাৰ, কাৰ্য্যালয় আৰু প্ৰকল্পৰ লগত জড়িত লোকসকলৰ বাবে বাসস্থান, ল'ৰা ছোৱালীৰ বাবে বিদ্যালয় আদি অতি কম সময়ৰ ভিতৰতে গঢ়'লে উঠি সৰু নীৰৱ চহৰখনক নতুন ৰূপত সজাই পেলালে। সেই সময়ৰ বিজ্ঞান জগতত খলকনি তোলা প্ৰায়বোৰ মুধাফুটা বিজ্ঞানীৰে চাঙা ফে মিলন ক্ষেত্ৰত পৰিণত হ'ল। এই কামবোৰ ইমান গোপনে কৰা হৈছিল যে চাঙ্গা ফেৰ অধিবাসী সকলেও ইয়াত কি কৰিবলৈ লোৱা হৈছে তাক ঘুনাক্ষৰেও জনা নাছিল। ইয়ালৈ অহা বিজ্ঞানী সকলো বিজ্ঞানীৰ দৰে হৈ অহা নাছিল। বিজ্ঞানী সকলে গোপনীয়তাৰ খাতিৰত নিজৰ প্ৰকৃত নামবোৰ সলাই স্থানীয়তাৰ গোন্ধ থকা কিছু নামেৰে পৰিচিত হ'ব লগীয়া হৈছিল। ফলত নীৰব হৈ পৰিছিল মিঃ বেকাৰ, এনৰিকো ফাৰ্মি, হৈ পৰিছিল মিঃ ফাৰ্মাৰ আৰু প্ৰকল্পটোৰ মূৰব্বী অনেপনহাইমাৰ হৈ পৰিছিল মিঃ ব্ৰেভ্লী।

প্রকল্পৰ বাবে প্রথমতে ব্যয়ৰ মাত্রা ধৰা হৈছিল প্রায় ৬০০০ ডলাৰ; কিছু প্রকল্পটোৰ কাম-কাজ ইমান প্রসাৰিত হ'ল যে অৱশেষত প্রকল্পৰ ব্যয়ৰ মাত্রা দুহাজাৰ নিযুত ডলাবলৈ বৃদ্ধি কৰা হ'ল। পৰমাণু বোমাৰ প্রস্তুতিৰ বাবে প্রয়োজনীয় ইউৰেনিয়াম (U-235) আৰু প্লুটোনিয়াম উৎপন্ন কৰিবলৈ টেনেচিৰ অ'ক ৰিডজ্ আৰু ৱাচিংটন ৰাজ্যৰ হেনফোর্ডৰ বিৰাট এলেকাৰ মাটিত পৰমাণু কেন্দ্র গঢ়ি উঠিল। অ'ক ৰিডজ্ব কেন্দ্রটোৱে দিনে প্রায় চাবে ছয় পাউণ্ড U-235 আৰু হেনফোর্ডৰ কেন্দ্রটোৱে ২০ পাউণ্ড প্লুটোনিয়াম দিনে উৎপন্ন কৰিছিল।

এই প্ৰকল্পটোৰ কাম-কাজ চলা লছ আলামোছ, অ'ক ৰিডজ আৰু হেনফোৰ্ড কেন্দ্ৰত নিৰাপত্তাৰ খাতিৰত অতি সৰ্তক ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰা হৈছিল। প্ৰধানকৈ দুটা সম্ভাব্য বিপদৰ বাবে কৰ্ত্বপক্ষ সতৰ্ক হৈছিল। এটা হৈছে, প্ৰকল্পটোৰ আঁচনিখনৰ ভিতৰুৱা খবৰ বাহিৰলৈ যোৱা আৰু আনটো হৈছে তেজস্ক্ৰিয় পদাৰ্থবোৰ মানুহৰ স্থাস্থ্যৰ বাবে যথেষ্ট ক্ষতিকৰ। সেয়ে হেনফোৰ্ডৰ প্লুটোনিয়াম উৎপাদন কেন্দ্ৰটোত

সতৰ্কতামূলক ব্যৱস্থা হিচাবে প্ৰত্যেক কোঠাৰ বতাহ পৰিষ্কাৰ কৰি ৰাখিবৰ বাবে বিশেষ বতাহ সঞ্চালন পদ্ধতি ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। ইয়াৰ উপৰিও ইয়াত ব্যৱহৃত সাজ-পোছাক, ব্য়বস্তুবোৰ ধুবলৈ সুকীয়া বিশেষ লব্ডি তৈয়াৰ কৰি লৈছিল। সেইদৰে অ'ক ৰিডজৰ কেন্দ্ৰটোৰ কৰ্মচাৰী সকলেও প্ৰতিষেধমূলক ব্যৱস্থা হিচাবে দেহৰ কোনো কোনো অংগত অনুভৱ নোহোৱা তেজজ্বিয় ৰশ্মিৰ বিকিৰণ ৰেকৰ্ড হোৱা কিছুমান প্লে' পিন্ধি লৈছিল।

অৱশেষত অলেখ কষ্ট আৰু চেষ্টাৰ ফ্লত মাৰাত্মক অস্ত্ৰপাৰ্ট তৈয়াৰ কৰা হ'ল। মাৰাত্মক অস্ত্ৰপাট প্ৰয়োগ কৰাৰ আগতে পৰীক্ষা কৰাৰ প্ৰয়োজন হ'ল। স্থান নিৰ্বাচন কৰা হ'ল লেছ আলামোছৰ ২০০ মাইল উত্তৰৰ আলমাগৰডোৰ মৰুময়, জনপ্ৰাণীহীন ট্ৰিনিটি অঞ্চল। জনমানবহীন অঞ্চলটোৰ চাৰিওদিশে অলেখ ফণীমনসা আৰু সৰু সৰু মৰুজ উদ্ভিদৰ জোপোহাৰ মাজে মাজে কিছু বিষাক্ত সাপ পোকৰ বাসস্থান। ইয়াৰ এটা সৰু পাহাৰৰ ওপৰত প্ৰায় ১০০ ফুট উচ্চতা আৰু ৩২ টন ওজনৰ তীখাৰ স্বস্তু এটাৰ ওপৰত ১৪ জুলাই তাৰিখে এখন ক্ৰেনৰ দ্বাৰা এই বিভীষিকাময় বোমাটো তোলা হ'ল। পাহাৰ টোৰ সাংকেতিক নাম দিয়া হ'ল 'জিৰো হিল'।

সর্বসন্মত সিদ্ধান্ত অনুযায়ী পৰীক্ষাৰ ক্ষণটো স্থিৰ কৰা হ'ল জুলাইৰ ১৬ তাৰিখৰ ৫.৩০ বজা (ৰাতিপুৱা)। বোমাটো বিক্ষোৰণ ঘটাবলৈ জিৰো হিলৰ পৰা প্ৰায় ন মাইল আঁতৰত এটা নিয়ন্ত্ৰণ কেন্দ্ৰ প্ৰতিষ্ঠা কৰা হ'ল। নিয়ন্ত্ৰণ কেন্দ্ৰৰ দায়িত্বত থাকিল ডঃ অপেনহাই নমাৰ। বোমাটো বিক্ষোৰণ ঘটাবৰ বাবে প্ৰায় ৫০০ মাইলতকৈ দীঘল তাঁৰ ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল। নিয়ন্ত্ৰণ কেন্দ্ৰৰ ভিতৰত গতিগোত্ৰ পৰিচালনাৰ বাবে চাৰিও ফালে নানা ইলেকট্ৰনিক সা-সৰঞ্জামেৰে পূৰ্ণ। সকলো চূড়ান্ত ক্ষণটোৰ বাবে প্ৰস্তুত। বিশ্বৰ প্ৰথম আণৱিক বোমাৰ বিক্ষোৰণ কাৰ্য্যৰ পৰিচালনা আৰু নিৰীক্ষণৰ বাবে নিয়ন্ত্ৰণ কেন্দ্ৰটোত কেইবা শ বিজ্ঞানী, চৰকাৰী বিষয়া আৰু সশস্ত্ৰ নিৰাপত্তা বাহিনীৰে ভৰপূৰ। বিক্ষোৰণ ঘটিবলগীয়া স্থানৰ ওপৰত বিক্ষোৰণ ঘটাৰ পাছৰ অৱস্থা পৰ্য্যবেক্ষণ কৰিবলৈ আধুনিক বৈজ্ঞানিক সা-সৰঞ্জামেৰে পূৰ্ণ দুখন B-29 প্লে'ন আকাশমাৰ্গত উৰাৰ ব্যৱস্থাও কৰা হৈছিল।

'জিৰো আৱাৰ' অথাৎ শেষক্ষণ পুৱা ৫-৩০ লৈ ৪৫ ছেকেণ্ড সময় থাকোঁতেই কালিফর্নিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ৰ বিজ্ঞানী ডঃ জোছেফ এল, লেক্কিৰেনে ৰবটৰ সহায়ত ক্ষণ গণিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে। সকলো নিৰীক্ষককে মাটিত পেট পেলাই আৰু চকুত বিশেষ ডাঠ গ্লাচ ল'বলৈ কোৱা হ'ল। ক্ষণ গণনা ক্রমে চূড়ান্ত ক্ষণলৈ আগবাঢ়িল। দহ-ন-আঠ-পাঁচ-চাৰি-তিনি-দুই-এক-এক-শৃন্য-লগে লগে এটা কাণ তাল

মৰা বিস্ফোৰণ আৰু গোটেই অঞ্চলটোত একেলগে দহটামান সূৰ্য্য উদয় হোৱাৰ পোহৰে সৃষ্টি কৰিলে ভয়াৱহ অৱস্থাৰ মাজতো এটা অপূৰ্ব স্বৰ্গীয় দৃশ্য। ক্ষন্তেকতে প্ৰায় ৪০ হাজাৰ ফুট জুৰি উৰ্ধলৈ ৰামধেনুৰ সাতটা পোহৰ বিকিৰীত কৰি কাঠ ফুলাৰ দৰে ডাৱৰৰ সৃষ্টি হ'বলৈ ধৰিলে। কেইমুহূৰ্তমানৰ ভিতৰতে বিৰাটাকাৰ তীখাৰ স্তম্ভটো নাইকিয়া হৈ গ'ল। সীহে আৱৰা এটা টেংকৰ সহায়ত স্তম্ভটো থকা ঠাইৰ পৰা মাটি পৰীক্ষাৰ বাবে বিজ্ঞানী সকলে আনিবলৈ গৈ দেখিলে যে বালিময় মৰুভূমিৰ বালি প্ৰচণ্ড উত্তাপত গলি সেইবোৰ সেউজীয়া কাঁচলৈ ৰূপান্তৰিত হৈছে। অন্ততঃ এ মাইল ব্যাসাৰ্ধৰ ভিতৰত থকা সকলো প্ৰাণী জীৱন্তে দগ্ধ হ'ল। গাঁতৰ ভিতৰত বাস কৰা ৰেট্লস্লেকবোৰো জীয়াই নাথাকিল। ২০-২৫ মাইল আঁতৰত থকা গৰু মইবোৰৰ ছালবোৰ সৰি গ'ল। প্ৰায় ৫০০ মাইল দূৰৰ মানুহবোৰে ক'ৰবাত 🕻 বোমা বিস্ফোৰণ হৈছে নেকি জানিবলৈ পুলিচলৈ ফোন কৰিছিল। বাতৰি কাকতবোৰত প্ৰকাশ হৈছিল যে আলমাগৰডোত থকা অন্ত্ৰাগাৰত বিস্ফোৰণ হৈছে। আচৰিত কথা যে ৫০০ মাইল দূৰত থকা অন্ধ ছোৱালী এজনীয়েও বিস্ফোৰণৰ পোহৰ দেখা পাই-ছিল।

এই বিস্ফোৰণে পৃথিৱীৰ ইতিহাসত এটা নতুন যুগৰ সূচনা কৰিলে। বিজ্ঞানী সকলে এই পৰীক্ষা কাৰ্য্যৰ সফলতাত আনন্দিত হ'ল যদিও ইয়াৰ ধ্বংসাত্মক কাৰ্য্যৰ প্ৰকোপ দেখি ভৱিষ্যতৰ বাবে আশংকিত হ'ল। এই মাৰাত্মক পৰিকল্পনাৰ আঁচনি লোৱা ৰুজভেল্টৰ মৃত্যু হোৱাত ট্ৰুমেন্ আমেৰিকাৰ নতুন ৰাষ্ট্ৰপতি হ'ল। ট্ৰুমেনে তৎকালীন জয়ৰ আশাৰ্ত বিপক্ষৰ সেও নমনা জাপানৰ ওপৰত আণৱিক বোমাৰ বিস্ফোৰণ ঘটালে। ফলত জাপান মিত্ৰ শক্তিৰ আগত ধৰাশায়ী হ'ল। কণ কণ শিশুকে ধৰি অলেখ লোকৰ প্ৰাণহানি হ'ল। প্ৰকৃততে এই বোমাৰ বিস্ফোৰণে ২য় মহাযুদ্ধৰ ওৰ পেলালে। জাপানৰ এই বীভৎস নাৰকীয় ঘটনাৰ পাছত প্ৰকল্পৰ মুৰব্বী অপেনহাইমাৰে মাৰ্কিন যুক্তৰাষ্ট্ৰৰ এনে নৃশংস কাৰ্য্যৰ প্ৰতিবাদ কৰি লছ আলামোছৰ পৰা পদত্যাগ কৰিলে। পদত্যাগ পত্ৰত পদত্যাগৰ কাৰণ হিচাবে তেওঁ লিখিছিল, 'মই কোনো অস্ত্ৰ-শস্ত্ৰৰ প্ৰস্তুতকাৰক নহওঁ।' তেওঁ আৰু কৈছিল —

If atomic bombs are to be added as new weapons to the arsenals of a warring world, or to the arsenals of nations preparing for war, then the time will come when mankind will curse the names of Los Alamos and Hiroshima.

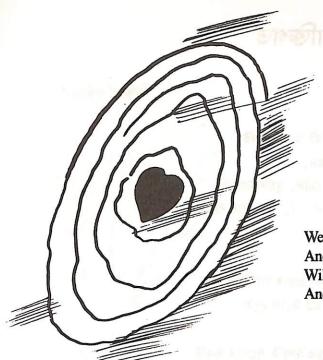
এই পৰিকল্পনাৰ জৰিয়তে পদাৰ্থৰ অণু-পৰমাণুৰ শক্তি পৰীক্ষা কৰি মানৱ-সমাজৰ বাবে উপকাৰ নে অপকাৰ কৰিলে সেয়া ইতিহাসে নিশ্চয় বিচাৰ কৰিব। যুদ্ধজনিত তিক্ততাৰ সৰ্বাত্মক অভিজ্ঞতা আৰু বিয়াল্লিছৰ বিপ্লৱৰ পটভূমিতেই আধুনিক কবিতাৰ সূচনা।

— হীৰেন্দ্ৰ নাথ দত্ত



The poets duty is to be clinically minded, and poetry should be clinical, a kind of therapy performing a function analogous to the prychonalytic.

— Oden



ঈশ্বৰ

অভিজিৎ ভট্টাচার্য

We shall not cease from exploration
And end of all our exploring
Will be to arrive where we started
And know the place for the first time.

T.S. Eliot

ঈশ্বৰক লগ আৰু নেপালোঁ তথাপি।

অনেক শৰত, বসন্ত হৈমন্তী নিশা
ভ্ৰমিলোঁ বহুতো মন্দিৰ, কুন্দ্ৰাক্ষৰ ফাঁকে ফাঁকে
দেখিছোঁ আত্মাহীন ঈশ্বৰৰ বিভিন্ন কংকাল
ঈশ্বৰৰ হৃৎপিণ্ডত — সভ্যতাৰ বিষাক্ত বীজানুবোৰে
নিজ পৰাক্ৰম লৈ — আপোন মহিমা মুগ্ধ - অহং অধীৰ!

আচৰিত ঈশ্বৰ
যাৰ অশ্বেষণ হেতু — নিয়ত ক্ষয়িত হয় মনৰ সম্ভাৰ
অলপ নতুন — অলপ মৰম থকা — সৰু সৰু মানুহৰ বাবে
তেনে এক ঈশ্বৰ লাগে — নিপাৰ নিৰীতিৰে ভৰা
এই সুপ্তি মগ্ন নদীৰ পাৰত।

ঈশ্বৰ লুকালে ক'ত ? সেই আচৰিত ঈশ্বৰ !
হৃদয়ৰ গভীৰ গুহাত ? অথবা মানুহৰ মন্দিৰত ?
সেই ঈশ্বৰৰ
বৰ প্ৰয়োজন মোৰ
সেই যে মহাৰ্ঘ ঈশ্বৰ !
যাৰ অদৃশ্য বিভাৰে — লাগিব সাজিব ইয়াতে
নতুন বৃহৎ এক সেতু — নদী আৰু সমুদ্ৰৰ স'তে
মানুহ আৰু মন্দিৰৰ সতে !!

হৃদয়ৰ সৰু সৰু কথাবোৰ এতিয়া ৰক্ত তৃষ্ণা মন লৈ সৰু সৰু দ্বীপ হ'ল ; দ্বীপবোৰ প্ৰেম আৰু স্বপ্নেৰে আকীৰ্ণ কৰি ক্লীৱতাৰ যি হাহাঁকাৰ আছে — নেপথ্যত পূৰাব লাগিব — সেই ঈশ্বৰক মাতি।।

এক ঈশ্বৰ
সৰল শিশুৰ দৰে
পৰম নিৰ্ভৰ
হৃদয়েৰে কেৱল — নিসংগ হোৱা এই পৃথিৱীত
মোৰ আৰু মানুহৰ বৰ প্ৰয়োজন আছে
মাতালৰ পানীয়ৰ দৰে।

এইবোৰ নিসংগ মনৰ কথা।
হাদয় গভীৰ হ'লে — নিবিড় ক্ষণত
প্ৰেমালাপ কৰোঁ মই অন্য এক
আচৰিত ঈশ্বৰৰ সৈতে।।
দূৰৈৰ পৰা উটি অহা এটি
অট্টহাস্যৰ সৈতে …..।

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

বিষয় ঃ ব্যক্তিগত

সিদ্ধার্থ ভট্টাচার্য

আজিকালি আৰু মই আগৰদৰেই
যাপন নকৰো জীৱন,
জীৱনৰ অভিধান মেলি, খুচৰি নাচাওঁ
জীৱনবোধৰ গভীৰ অৰ্থ, মোৰ প্ৰিয় ব্যক্তিৰ
কুঁশল কামনা নকৰো,

শ্মশানত ন্থলিলেও হেজাৰ আত্মীয়ৰ চিতা আজিকালি আৰু মই উচুপি নুঠো।

আচলতে মোৰ শুভ ইচ্ছাই সুখেৰে ভৰাই নোতোলে দুখময় কাৰোবাৰ জীৱন

তথা, আজিকালি আৰু মই মোৰ প্ৰাচীন প্ৰিয় বিষয়বোৰক লৈয়ে ব্যস্ত নাথাকো।

মই যেতিয়া একান্ত সদিচ্ছাৰে আবৃতি কৰিবলৈ লওঁ মোৰ প্ৰিয় কবিৰ কবিতা, গুণগুণাব খোজো প্ৰিয় এটি গান, মোৰ জিভা চেঁচা পৰি যায় বুকুত অনুভূত হয় আশ্চৰ্য্য এক বিষৰ অনুভৱ।

কবিতা এটা আৰম্ভ কৰিলেই
মোক মোৰ অনুভৱৰ পৰা বহু দূৰলৈ লৈ যায়
আচলতে কবিতা এটা লিখাৰ জোখাৰে
এতিয়া আৰু মোৰ অনুভৱে কিবা এটা
ঢুকি নাপায়।

সুহৃদ পাঠক। এনেদৰেই মই কিছুদিনৰ পৰা এৰাই চলিছো মোৰ সমস্ত প্ৰিয় বিষয়।



মোৰ প্ৰেমৰ স'তে

হিদ্দিকী ভৌফিকুল আলম আহমেদ

মোৰ প্ৰেম একান্ত গোপন
নদীয়ে যিদৰে চুম্বন কৰে অৰণ্যক
আকাশে পৃথিৱীক
তেনেদৰেই মই আলিংগন কৰো মোৰ প্ৰেমক,
প্ৰতিজন নাৰীৰ স'তে যেন মই গোপনে কৰো প্ৰেম
অলক্ষিতে সোমাই যাওঁ গৰ্ভলৈ,
আছে নেকি সোঁৱনশিৰিৰ উঠন বুকুৰ লালিমা
প্ৰতিটো মুহূৰ্তৰ স'তে মোৰ প্ৰগাঢ় প্ৰেম।

মোৰ নঙলা মুখৰ নাঙঠ পাইন জোপা ও শৈশৱৰ আধাভগা দোলন ঘড়ীটো বিচাৰি অথবা এৰি অহা আত্মকথা, যেন যুদ্ধৰত প্ৰেমিকৰ বাবে প্ৰেয়সীৰ অন্তহীন অপেক্ষা।

অনভ্যম্ভ হাতে তুলি লওঁ এটাৰ পিছত এটাকৈ চুৰট মেৰ ঘৰৰ মাজত বিচাৰি যাওঁ মোৰ প্ৰেমৰ বৰ্ণময় ৰূপ আৰু মোৰ প্ৰিয় মধুৰ শব্দবোৰৰ শীৰ্ণ ছাঁ, আচলতে প্ৰেম মোৰ সহচৰ, বেদনাৰ নিটোল মুহূৰ্ত।



পতিবাদ

সীমান্ত কলিতা

তেজত মৰাশৰ ছাই বৈছে,
সেমেকা আন্ধাৰৰ বুকুত জঁকা এটা হৈ
মৃতপ্ৰায় মানুহজাকে বিচাৰে শব্দৰ কোলাহল
সিহঁতৰ কোৱাৰি ফালি প্ৰতিবাদৰ তীক্ষ্ণ স্বৰ
মানুহ-মাটিৰ স্বপ্পত সিহঁত মুখৰ।



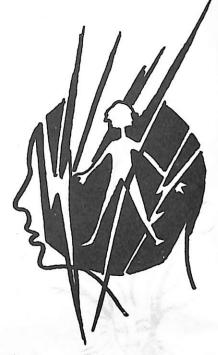
শৈশৱৰ সাধু

মृन : काध्धन कूडना মুখোপাধ্যায় অনুবাদ : জোনালী ৰয়

মোৰ মূৰৰ ওপৰত, বুকুৰ ওপৰত চাৰিওফালৰ পৰা বৰষুণৰ দৰে সৰি পৰক শৈশৱৰ সাধুবোৰ।

পাঁচশ বছৰৰ পুৰণি লোক কথা,
চৰাইৰ ফুট ফুটীয়া ঠেঙৰ ছাপ গৃহস্থৰ আগচোতাল জুৰি,
মা মোৰ চকুৰ ওপৰত ধৰি ৰখা চন্দনৰ পাত।
মই শুম, শুম আৰু
মোক ঘেৰি সৰি পৰিব অফুৰম্ভ শৈশৱৰ সাধু,
নিবিড় অৰণ্যৰ দৰে ঘেৰি ধৰিব মোক।
পৌৰাণিক অন্ধাকাৰত —
তৰাৰ দৰে ফুটি উঠিব নীলকমলৰ সাধুৰ কুঁকি।
যদি 'বগী' আহে,
ঘূৰাই নিবলৈ সেই কোমল কলি, মাৰ হাত
সিহঁতৰ আজঁলি ভৰি সৰি পৰিব দুই চাৰিটাকৈ নিচুকনি সাধু।

অপল অলপকৈ টোপনি নামিব সিহঁতৰ চকুত।
দিগন্ত ৰেখাৰ বুকুত মূৰ্ছিত সূৰ্য্যান্তৰ দৰে।
জোৎস্নাৰ স্নিগ্ধ ৰাতিৰ আগচোতালত
আকৌ শুকাব সোণালী শইচ,
সাতশ বুলবুলিৰ আনন্দমেলা বহিব
আমি আকৌ ঘূৰি যাম
আমাৰ সমবেত শৈশৱৰ দিনবোৰত।



অনিন্দিতালৈ

অমিত কুমাৰ ^{দাৰ্গ}

অনিন্দিতা, মোৰ ঠিকনা নিবিচাৰিবা কাহানিবাই মই মোৰ ঠিকনা হেৰুৱাইছো, কোনোবা গাওঁৰ গলিত এৰি আহিছো মোৰ পথাৰৰ সপোন আৰু পাহৰিছো বহুতো চিনাকি কবিতাৰ মুখ।

অনিন্দিতা,
মোক কবিতা নুশুনাবা
মোলৈ কবিতাই নানে অনিন্দিতা জোনাক।
সংগোপনে লুকুৱাইছো মই মোৰ প্ৰতিখন মু^{খা}
প্ৰতিটো টকলা শৃংগত থৈ আহিছোঁ
হেৰোৱা বাটৰ নক্সা।

অনিন্দিতা,
সম্প্রতি জীৱন মোৰ খুবেই সহজ
একো নাথাকিলও শূন্যতা
সতেজ সপোন নাথাকিলে ফচিলে পূর্ণ কৰে জী^{র্রণ}
অনিন্দিতা

গ্লেমাৰৰ কোলাহল

মনোজ কুমাৰ ডেকা



গ্লেমাৰৰ কোলাহলত সৰি পৰিব খোজে জোনটো

ভোকৰ যন্ত্ৰণাত মাজনিশা
চিঞৰি উঠে
পীৰ মছজিদৰ গে'টত শোৱা
ভিখাৰীটো,

একে যন্ত্ৰণাত শেষনিশাও বাঁহীত ফু দিয়ে কলেজৰবাৰান্দাত শুই থকা গলাটোৱে,

সম্প্ৰতি আমাৰ ভীষণ অসুখ

গ্লেমাৰৰ কোলাহলত সৰি পৰিব খোজে জোনটো।

বিপ্লৱ

সঞ্জীৱ কুমাৰ ৰাভা

সন্মুখত দেখিছোঁ
এতিয়া চৌদিশে অন্ধকাৰ!
এ কে 47 , ৰকেট লাম্পাৰ, গ্ৰেনেড ...
গাঁৱে ভূঁয়ে, চহৰে নগৰে বোমা বিষ্ফোৰণ।
ৰাজ পথত জনতাৰ চিঞৰ,
অন্ধ গলিত কাৰোবাৰ মৃতদেহ।
চৌদিশে হত্যা, লুগুন, অপহৰণ
সন্ত্ৰাসৰ তাণ্ডৱ লীলা
মৃত্যুৰ বিভীষিকা!

পূৱ দিশত ৰাতিপুৱা ফেঁহুজালি দিছে, অন্ধকাৰ কুঁৱলী ভেদি। ওলাই আহিল ৰৌদ্ৰ স্নাত এজাক স্বপ্নাতুৰ

মানুহ! পোহৰ বিলাবলৈ

ত্ৰস্বাৰ জগতত।



স্বাধীনতা

ৰক্তিম শৰ্মা

গড়ালৰ বাঘৰ দৰে গুজৰি গুমৰি থকা স্থদেশৰ আকাংক্ষিত স্বাধীনতাৰ পম খেদি যাওঁতে, মোৰ সতে গঢ়ি উঠিছিল নিবিড় আত্মীয়তা, প্রতিটো শৃংখলিত মানুহ আৰু এন্ধাৰে আৱৰা উৰুখা পজাঁ; সিদিনা মোৰ নিষিদ্ধ পথত লগ পাইছিলো শইচৰ পথাৰৰ এজাক প্রত্যয়িত মানুহ; পথৰুঘাটাৰ শ্বহীদৰ শুকান লাওখোলাবোৰত সিদিনা প্রতিধ্বনিত হৈছিল বেঞ্জামিন মোলাইছৰ সূৰ: সেই সুৰৰ সতে খোজ মিলাই মই আগবাঢ়িছিলো সূৰ্য্যমুখী পথত, শইচৰ পথাৰৰ মোৰ মানুহ জাকৰ স'তে।





অৰুণ নাথ

বিৰিণা পাতৰ চেকা লগা দিনটোত তাই গাভৰু হ'ল সময়ৰ পাত সৰিল আৰু উৰি গল বতাহত সোমালে কাৰোবাৰ বুকুৰ মাজত কাৰোবাৰ কাৰ্বাইনৰ মস্তিষ্কত

গুলিবিদ্ধ হোৱা সেই জাক মানুহ মোৰ তেজৰ উপশিৰা বুকুৰ মধ্যাংশত কক্বকাই থকা সেই ঘনচিৰিকা জাকে নিজৰ পেটত হাত লুকুৱাই মুখ মেলিছে মোৰ চকু দুটা ক'ত

অস্তমিত দিবাকৰ নাই তাহানিৰ ৰভাতলী সজোৱা জোনাকী মেল

আছে মাথো নিয়ন লাইট জ্বলোৱা অশ্লীল ৰাতিৰ দুটা এটা জুপুৰী ঘৰ।

পদ্য কিম্বা সপোনৰ শীৰ্ষক ঃ সপোন

নয়নজ্যোতি দাস

'In spring when woods are getting green
I'll try to tell you what I mean' —

এক সপোনত নেদেখা সপোন

দোভাগ নিশা
সকলো শুই থাকে যেতিয়া
শুই থাকে সময়, শুই থাকে সপোন
আৰু সপোনৰ য'ত ৰাজকুমাৰ, পখিলা আৰু ৰং,
মই সাৰে ৰওঁ তেতিয়া
আৰু মোৰ সতে মিতিৰালি পাতি;
কথা পাতি ৰয় স্তব্ধ বতাহে, সুগন্ধি বতাহে
বতাহৰ কোঁহে কোঁহে মাথো তুমি
তুমি, তোমাৰ মৰম, তোমাৰ কোঁচা গোন্ধা;
কোঁচা কোঁচা হালধী শৰীৰৰ গোন্ধা।

কতিতা লিখি পাৰ কৰি দিলো, ভাঙি চিঙি এনে বহু দোভাগ নিশাৰ মৌনতা শেষ নিশা লেতু সেতু হৈ সপোন লুকাই পৰে লুকাই পৰে মৌন নিশাৰ ছন্দ যিদৰে প্ৰেয়সীৰ মৰমত কুমলি যায় বসন্ত ।

প্ৰিয়তমা, কেতিয়াবা আহিবা!
মোৰ ঘৰৰ পিছদুৱাৰ এতিয়াও খোলা,
চাবা! তুমি আহিলেই আগচি ধৰিব
অসুৰ্য্যস্পৰ্শা সপোনৰ কেঁচা কেঁচা মৰমে
আৰু তোমাৰ সুগন্ধি দেহৰ উজ্জলতাত হেৰাই যাব
মোৰ যত দোভাগ নিশাৰ কাব্য আৰু
সপোনৰ পদ্যগাথা।



দুই সপোন কিম্বা সপোন

নাৰীৰ বুকুত মূৰ গুজি শুনি ৰ'ম কাহানিবা ফুল ফুলাৰ গোপন গল্প (When these wild ecstasies shall be matured into a sober pleasure,)

'তেনে ফুল এটাৰ পাহিত পখিলা পৰে
আৰু সপোন দেখা অবাক সপোন এটা পাখিমেলি উৰি যায়
ফুলৰ নগ্নদেহত মাথো সুগন্ধি ৰয়;
ৰয়, মোৰ প্ৰিয়তমা নাৰীৰ বুকুৰ কোমল স্পৰ্শ,
কোমল কোমল বুকুত মৰম,
বুকুৰ অন্তৰ্ভাগত কুমলীয়া নুমলীয়া সপোন গঁজাৰ এটা গঁজালি সপোন

নাৰীৰ বুকুত মূৰ গুজি শুনি ৰ'ম কাহানিবা ফুলাম সপোন গঁজাৰ কাহিনী, এটা অকমাণি গঁজালি সপোনৰ কাহিনী; সপোনত গঁজা, গঁজালি সপোনৰ কাহিনী ...

এটা দুঃচিন্তাই খুন্দি থাকে হৃদয়

ৰাখেশ্যাম

হৃদয়ত এটা নিগনিয়ে অনবৰত কুট্ কুটায়

বহুদিন ধৰি দুখৰ উপত্যকাত অবাধ আহ্-যাহ

মোৰ ভঙাপঁজাত অবিৰত দৌৰা-দৌৰি কৰিছিল যদিও

কোনোদিন নষ্ট কৰা নাছিল

বাঁহৰ দুৰ্বল বেৰকে ধৰি ঘৰৰ সমস্ত আচ্-বাব

তাৰ গুণৰ কথা প্ৰায় চৰ্চা হৈছিল বন্ধুমহলত



কিন্তু হঠাৎ এদিন প্ৰেমৰ চোলা আৰু যাৱতীয় আচ্-বাব নষ্ট কৰি পলাই গ'ল চহৰলে

অনেক দিন হ'ল কোনো খবৰ নাই তাৰ

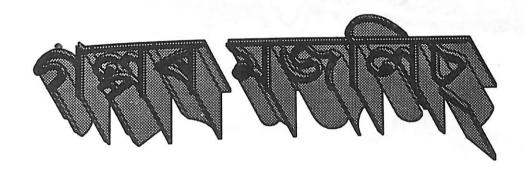
সম্প্রতি এটা দুঃচিন্তায় খুন্দি থাকে হৃদয়

শুনিছোঁ

চহৰত মেকুৰীৰ অত্যাচাৰ বেছি।

যোৱা পঁচিশ বছৰৰ অসমীয়া গল্প-উপন্যাসত মানৱীয় মূল্যবোধ আৰু জীৱনক মুখামুৰ্খিকৈ চাবৰ সাহস: আৰু শত্তি বাঢ়িছে। জনজীৱনৰ লগত ক্ৰুমাৎ বেৰ্ছিকৈ এই দুইটা সাহিত্যৰূপ জড়িত হৈ পৰিছে। মানুহৰ কৰ্ম আৰু মানুহৰ মনত ৰোমান্টিক মোহত যিমানখিনি দেখা নোপোৱা হৈ আছিলো, এতিয়া মোহ মুক্তিৰ পিচত সেইখিনি কলাকাৰৰ ৰূপত ধৰা দিবলৈ ধৰিছে।

ড° মহেশুৰ নেওগ



উপন্যাস বিস্তৃত, চুটি গল্প সংহত; উপন্যাসত পৰিতৃপ্তি, চুটি গল্পত বাঞ্জনাৰ অতৃপ্তি। উপন্যাসে পাঠকক সকলো বুজাই দিয়ে, চুটি গল্পই পাঠকক বুজি লবলৈ অবকাশ দিয়ে। 'সাহিত্য সন্দর্শন'



(>)

ৰাতিপুৱা সোনকালে শুই উঠি ফুৰিবলৈ যোৱা অভ্যাস মোৰ কেতিয়াও নাছিল। মোৰ এই সুদীৰ্ঘ ৩৫ বছৰীয়া চাকৰি জীৱনত কেতিয়াও নাছিল। মোৰ এই সুদীৰ্ঘ ৩৫ বছৰীয়া চাকৰি জীৱনত ৰাতিপুৱা সাৰপাই উঠাৰ সময় আঠ বজাৰ আগতে বুলি মনত ৰাতিপুৱা সাৰপাই উঠাৰ সময় আঠ বজাৰ আগতে বুলি মনত নপৰে। চাকৰিৰ পৰা অৱসৰ ল'বৰ আজি মূৰামূৰিকৈ হলেও আঠ নপৰে। চাকৰিৰ পৰা অৱসৰ জীৱনৰ এই নতুন দিন মাহেই হ'ল। তথাপি কিয় জানো অৱসৰ জীৱনৰ এই নতুন দিন মাহেই হ'ল। তথাপি কিয় জানো অৱসৰ জীৱনৰ এই নতুন দিন মাহেই হ'ল। তথাপি কিয় জানো পৰা নাই। আচলতে অৱসৰ লিপিখন একো এটা গততে পেলাব পৰা নাই। আতে আকৌ ভূতৰ ল'বৰ পৰা মনটোকে থিতাপি লগাব পৰা নাই। তাতে আকৌ ভূতৰ ল'বৰ পৰা মনটোকে থিতাপি লগাব পৰা নাই। তাতে আকৌ ভূতৰ ল'বৰ পৰা মনটোকে খাৰীৰিক আৰু মানসিক দুয়োভাবেই অসুস্থ গ'লে অৱসৰৰ পাছত মই শাৰীৰিক আৰু মানসিক দুয়োভাবেই অসুস্থ

এটা মানুহ হৈ উঠিছোঁ।
শাৰীৰিক অসুস্থতাই মোৰ চাকৰি জীৱনৰ কৰ্মব্যস্ততাৰ মাজত
কাৰীৰিক অসুস্থতাই মোৰ চাকৰি জীৱনৰ কৰ্মব্যস্ততাৰ মাজত
কৈতিয়াও ইমান আমনি কৰিব পৰা নাছিল, কিন্তু হঠাতে ব্যস্ততা কমাৰ

লগে লগে ই উক্ দি উঠিছে। যোৱা পৰহি ডা° শৰ্মাক দেখুৱালো। কেইটামান ঔষধ দিলে আৰু মহৌষধ হিচাপে ৰাতিপুৱা সোনকালে উঠি খোজকাঢ়ি ফুৰাৰ পৰামৰ্শ দিলে। হয়, ডা° শৰ্মাৰ উপদেশ মতেই মই মোৰ ৬১ বছৰীয়া জীৱনত কেতিয়াও নকৰা কামটো শৰীৰটোৰ কথা সামান্য হ'লেও চিম্ভা কৰি আজি কৰিবলৈ ওলাইছোঁ।

(২)

আজি মোৰ প্ৰাতঃ ভ্ৰমণৰ প্ৰথম দিন। এলাম দিয়া টেবুল ঘড়ীটোৰ টিঙটিঙিয়া শব্দত মই সাৰ পাইছিলোঁ। ঘড়ীটো চালো ৰাতিপুৱা চাৰি বাজিছে। গৰমৰ দিন বাহিৰত মোটা-মুটি পোহৰ হৈছে । বিচনাখন উঠাই থৈ ঘৰৰ কাকো মাত নিদিয়াকৈ পায়জামা-পাঞ্জাবী যোৰ পিন্ধি পকী ৰাস্তাৰে মই মোৰ খোজ আগবঢ়ালোঁ। ৰাস্তাত গাড়ী প্ৰায় নহিয়েই। দুই এখন সৰু গাড়ী ইফাল-সিফাল কৰি আছে। হয়তো

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

কোনোবা নতুন শিকাৰুৱে ষ্টিয়েৰিঙত হাত বহুৱহিছে। দিনত এই ৰাস্তাটোৱেই হৈ পৰে চহৰখনৰ এটা সদাব্যস্ত পথ। গাড়ী, মটৰ, চহিকেল, ৰিক্সাৰে এটা হলস্থূল পৰিবেশ। উশাহ লবলৈকে টান লাগে, ধূলিৰ উৎপাতত। এনেকুৱা পৰিবেশেৰেই এই মোৰ চাকৰি জীৱনৰ সুদীৰ্ঘ ৩৫ টা বছৰ অহা- যোৱা কৰিছোঁ। আজি ৰাতিপুৱাৰ যি নিকা-সঞ্জীব পৰিবেশ দেখা পালো সেয়া মোৰ আচৰিত লাগিব লগা কথা।

মই চাকৰিত জইন কৰোতে অৱশ্যে বৰ্তমানৰ দৰে ইমান হুলস্থুলীয়া পৰিবেশ নাছিল, কিন্তু মানুহ অভ্যাসৰ দাস। এই ৩৫ বছৰে কিমান পৰিবৰ্ত্তন হ'ল অথচ একো এটাও মোৰ চকুত নতুন লগা নাছিল। কৰ্মব্যস্ততাই মানুহক ক'ব নোৱাৰাকৈয়ে বহু অনুভূতিৰ পৰা আঁতৰত ৰাখে।

(७)

বহুদিনৰ মুৰত আজি সামান্য হ'লেও মুক্ত পৰিষ্কাৰ পৰিবেশটো মোৰ ভাল লাগি আহিছে। এজাক মৃদু ফিৰফিৰিয়া বতাহ'বৈ গ'ল। মূৰৰ পৰা ভৰিলৈ মোৰ দেহৰ প্ৰতিটো অংশ শাত পৰা যেন অনুভৱ হ'ল। ইমান দিনে মই নিজতকৈ মোৰ পৰিয়ালৰ কথাই বেছিকৈ ভাবিছোঁ। এয়া মোৰ কৰ্ত্তব্য, দায়িত্ব নে অইন কিবা? ইয়াৰ উত্তৰ মহি কেতিয়াও বিচাৰি পোৱা নাই, কিন্তু এতিয়া অনুভৱ হৈছে যেন সেই দায়িত্ব পালন কৰাৰ অধিকাৰ কমি আহিছে। সেই কাৰণে আজিকালি নিজৰ কথা সামান্য হ'লেও ভাবিবলৈ প্ৰয়াস কৰিছোঁ। প্ৰকৃততে বাধ্য হৈছোঁ।

অযথা ইমানবোৰ কথা চিন্তা কৰিছোঁ। অৱসৰেই মোক এনেকুৱা খন কৰিলে নেকি ?? মোৰ চাৰিও ফালে থকা এই পৰিবেশতকৈও ক'ব নোৱাৰো কিয় বাৰু আজি নিজকে বেছি ভাল লাগিছে। হয়তো এই কাৰণেই যে মই অকলশৰীয়া। মোক আমনি কৰিবলৈ কোনো নাই। এতিয়ালৈকে ৰাস্তাত এজনো মানুহ লগ পোৱা নাই। মই বোধহয় সময়তকৈ বহুত আগতেই ওলালোঁ। ন'হলে হয়তো আজিকালি আমাৰ ইয়াত কোনেও প্ৰাতঃ ভ্ৰমণ নকৰেই।

সেইজন ৰঞ্জিত দাস বোধকৰো। মই তেখেতক ভালকৈয়ে চিনি পাওঁ। আজি চাৰি বছৰ মান আগতে অৱসৰ লৈছে চৰকাৰী চাকৰিৰ পৰা। তেওঁ বাৰু কিয় প্ৰাতঃ ভ্ৰমণ কৰে ? অ' তেখেতেটো প্ৰতিজন মানুহৰে প্ৰাতঃ ভ্ৰমণ প্ৰয়োজন।

(8)

চাৰি বাজি পঁচিছ মিনিট। ঘড়ীটো চাই গম পালো।

সময়ানুবৰ্তিতাৰ মূল্য কিমান বুজো কব নোৱাৰো, কিন্তু ঘড়ীটো মোৰ হাতত প্রায়েই থাকে। ইতিমধ্যে দুই এজন মানুহ ওলাই আহিব ধবিছে । ইমান দিনে মই নকৰা এই কামটোৰ প্ৰতি মোৰ ইমান শ্ৰদ্ধা নাছিল, ^ন কিন্তু আজি প্ৰথমবাৰৰ বাবে এক বিশাল যান্ত্ৰিকতাৰ পৰা বেহাই পোৱা যেন লাগিছে। অৱসৰৰ পাছত মোৰ মনত যি অকৰ্মান্যতা আৰু অজ্ঞান চিম্ভা-চৰ্চাই বাহ লৈছিল তাৰপৰা কিছু পৰিমানে হ'লেও সকাহ পোৱা যেন অনুভৱ কৰিছোঁ। সঁচাকৈয়ে জীৱনত মানুহে দুবাৰ নিজৰ কথা কিছু বেৰ্ছিকৈ ভাবে তাৰে প্ৰথমবাৰ হ'ল ডেকা বয়সত সংস্থাপন এটা পোৱাৰ আগে আৰু দ্বিতীয়বাৰ এতিয়া, অৱসৰৰ পাছত!! উস্ ইমান বিলাক চিন্তা মই একেলগে কেতিয়াও কৰা নাই। মই মোৰ গোর্টেই জীৱনত কি উল্লেখনীয় কাম কৰিলো বাৰু ?? কর্ত্তব্যক মই অৱহেলা কেতিয়াও কৰা নাই। পিতা-মাৰ প্ৰতি কৰ্ত্তব্য পালনৰ্ত অৱহেলা নকৰাৰ দৰে মোৰ পৰিয়ালৰ পত্নীৰ পৰা সম্ভানিলৈকে কাৰ্যে প্ৰতি মই মোৰ দায়িত্ব পাহৰি যোৱা নাই। পিতা-মাক মৃত্যু আগমুহূৰ্ত্তলৈ খোৱা-বোৱাৰ পৰা চিকিৎসালৈকে সকলো খিনিয়েতে মই দিছোঁ। ল'ৰা ছোৱালী হালকো পঢ়া শুনাৰ পৰা খেল ধেমাৰ্লিলৈকে যি সমস্ত যোগাৰ পাতি লাগে সেয়া মই দিছোঁ। আৰ্জি কেইবছৰ মান আগতে ছোৱালীজনী বিয়াও দিলো ভাল ঘৰত (অৱশ্যে সেয়া তাইৰ ইচ্ছাৰ বিপৰীতে)। যোৱা বছৰ ল'ৰাটোও বিয় কৰালে। তাকো মই একলাখ টকা দি মেডিকেলত ভৰ্ত্তি কৰাই দিছিলো। এতিয়া সি হকে-বিহকে ডাক্তৰ। তাৰ পষ্টিঙৰ কাৰণে ওপৰ মহলাত ক'ত কি কৰিব লাগে মই সেয়াও নকৰাকৈ থকা নাই মোৰ পৰিয়ালৰ এগৰাকী গুৰুত্বপূৰ্ণ সদস্যা, তথা মোৰ ৩২ বছৰী জীৱন-সঙ্গী পত্নীকো মই একো অভাৱজনিত অসুবিধাৰ সন্মুৰী কেতিয়াও হব দিয়া বুলি মোৰ মনত নপৰে। তথাপি কিয় জ্বানো আৰ্থি মোৰ এনেকুৱা ভাব হৈছে যেন মই তেওঁলোকক কিবা এটা দিবা প নাছিলো বা নাই। কব নোৱাৰো বিবেকৰ আগত কিয় আজি মই এ উত্তৰ দিব লগা হৈছে। পিতা আৰু মাক যেন মই দিব পৰা নাৰ্ছি অকণমান পুত্ৰৰ মৰম। যেনেকৈ হয়তো মই দিব নোৱাৰিলো ল'ৰ ছোৱালী হালক অভিভাবকৰ মৰম, স্নেহ। আধাজীৱন মোৰ কাৰ্য থাকিও মোৰ পত্নীয়ে মোৰ পৰা বিচাৰি নাপালে প্ৰেমৰ-আশ্বাস।

এই বিলাক চিন্তাটো মোৰ আগতে কেতিয়াও হোৱা নাছিল। তিতিয়াটো সকলো ঠিকে-ঠাকেই চলি যোৱা যেন লাগিছিল। বিবাৰ এতিয়া মোৰ ভাব হৈছে যে মোৰ উপাৰ্জনেৰে নিৰ্মিত বিশ্বৰটোৱে পিতা-মাকে ধৰি পাঁচটা প্ৰাণীক আশ্ৰয় দিব পাৰিলেও কোনো এজনকে মই মোৰ বুকুৰ মাজত আশ্ৰয় দিব নোৱাৰিলে হয়তো মই কব নোৱাৰাকৈয়ে মোৰ পৰা আটায়ে বিচাৰিছিল জোল পোৱাৰ অকণমান দীতল ছাঁ ...!

সুদীৰ্ঘ ৩৫ বছৰ মই চাকৰি কৰিলোঁ। অথচ আজি বিবেকে মোক বাৰে বাৰে প্ৰশ্ন কৰিছে যে মই মোৰ চাকৰি জীৱনত টকাৰ বাহিৰে একোকে চিনি নাপালো নেকি ? চাকৰিৰ যান্ত্ৰিকতাৰ মাজত পৰিয়ালৰ প্ৰতি সকলোখিনি কৰিও যেন আজি মোৰ ভাব হৈছে মই সিহঁতক একোকে দিব নোৱাৰিলো।

এস্ পাঁচ বাজিলেই। বহুত দূৰ আহিলো, উভতি যাবই আছে। মানুহজনক চিনি পাওঁ যেন লাগিছে। অ' জীৱন ডেকা। আমাৰ অফিচৰ সন্মুখৰ অফিচটোতে চাকৰি কৰে। কাৰোবাৰ মূখত শুনিছিলো তেখেতৰ ডায়েবেটিছ আৰু প্ৰেছাৰ আছে। সেই বাবেই হয়তো প্ৰাতঃভ্ৰমণত ওলাইছে নহ'লেনো ৰাতিপুৱাৰ এই সময়খিনি তেওঁ এই ফেৰা কামৰ কাৰণে নষ্ট কৰেনে? শুনিছিলো ৰাতিপুৱাৰ এই সময়খিনি তেওঁ থই ফেৰা কামৰ কাৰণে নষ্ট কৰেনে? শুনিছিলো ৰাতিপুৱাৰ এই সময়খিনি তেওঁ ঘৰত ফাইলৰ কাম কৰে, মানে ফাইল ইফাল-

তেওঁ নিশ্চয় সিটো বাটেদি যাব। যাওঁক, তেওঁক আগধৰি মাত নিদিও। এতিয়া ঘৰ পাব লাগে সোনকালে। যোৱাকালিৰ বাতৰি কাকতৰ বাতৰিটোৱে কিয় জানো মোক ইমান আমনি দিছে। বাতৰিটোত আমাৰ বিভাগটোৰ ১০০ কোটি টকীয়া কেলেংকাৰীৰ কথা আছিল। চি.বি. আইয়ে উলিয়াইছে। আমাৰ স্থানীয় শাখাতো ১০ কোটিৰ গণ্ডগোলৰ উমান পোৱা বুলি লিখিছে।

ইতিমৃধ্যে চি.বি.আইয়ে গ্ৰেপ্তাৰী পাৰোৱানা জ্ঞাৰি কৰা বিষয়া সকলৰ তালিকাটোত মোৰ নাম নাই, আৰু নাথাকিবৰে কথা কাৰণ প্ৰত্যক্ষভাবে মই কেতিয়াবা কাৰোবাৰ অপকাৰ কৰা বুলি মোৰ মনত প্ৰত্যক্ষভাবে মই কেতিয়াবা কাৰোবাৰ অপকাৰ কৰা বুলি মোৰ মনত নপৰে। তালিকাত থকা আটাইকেইজনকে মই চিনি পাওঁ। হয় এই কোখিনিৰ খেলি- মেলিৰ কাম মোৰ চকুৰ আগতে হৈছিল। নাই মই কোখিনিৰ খেলি- মেলিৰ কাম মোৰ চকুৰ আগতে হৈছিল। নাই মই কোথিনিৰ খেলি- মোলৰ কাম মোৰ কাৰণে আজি মই ভূক্তভোগী তেনেকুৱা কোনো কাম কৰা নাই যাৰ কাৰণে আজি মই ভূক্তভোগী হ'ব লাগিব। সাপ মাৰিলেও মই নেগুৰত বিষ এৰা কাম কৰা নাই। হ'ব লাগিব। সাপ মাৰিলেও মই নেগুৰত বিষ এৰা কাম কৰা নাই। হ'ব লাগিব। সাপ মাৰিলেও মই নেগুৰত বিষ এৰা কাম কৰা নাই। আৰু তাভিজ্ঞ হিচাপে সকলো খিনি কামৰ বাবে বাট ময়ে দেখুৱাইছিলোঁ আৰু তাভিজ্ঞ হিচাপে সকলো খিনি কামৰ বাবে বাট ময়ে দেখুৱাইছিলোঁ আৰু তাৰ পাৰিশ্ৰমিক হিচাপে টকাখিনিৰ বুজন অংশ নোপোৱাকৈ আৰু তাৰ পাৰিশ্ৰমিক হিচাপে টকাখিনিৰ বুজন অংশ নোপোৱাকৈ থকা নাই। (তেতিয়া ইয়াকে মই মোৰ যুক্তিসংগত পাৰিশ্ৰমিক গণ্য থকা নাই। (তেতিয়া ইয়াকে কৰাৰ পাছতো মোৰ মনত পৰা নাই যে কৰিছিলোঁ)। এই সমস্ত কাম কৰাৰ পাছতো মোৰ মনত পৰা নাই যে কৰিছিলোঁ)। এই সমস্ত কাম কৰাৰ পাছতো মোৰ কাৰণে আজি আইনৰ মই কিবা এনেকুৱা ভুল কৰি থৈ গৈছো যাৰ কাৰণে আজি আইনৰ

কাঠগড়াত আচামী হিচাপে থিয় দিব লাগিব। অর্থাৎ আইনৰ চকুত মই এজন নিকা মানুহ। গতিকে মই নিজৰ চকুতো !! এইখিনি ভাবিলেই মোৰ মনটো জিকাৰ খাই উঠে। মই জানো আটাইখিনি টকাই দুখীয়াৰ বাবে আছিল। এতিয়া মোৰ মনত পৰিছে।

(७)

মই সকলোকে কাষতে পহিও দূৰত্ব অনুভৱ কৰাৰ কাৰণ হয়তো এইটোৱেই। ইমানদিনে মই বিবেকৰ পৰিপন্থীয়েই আছিলো। সেই কাৰণেই মই এজন, অভিভাবক বা স্বামী হৈয়ো হব নোৱাৰিলো। উস্ এই ৰাতিপুৱা!! চিন্তাৰ গধূৰ বোজা কঢ়িওৱা এটা পথ। অ'ঘৰৰ সন্মুখ দেখোন পালোৱেই। এতিয়াহে যেন মুক্তি পাওঁ! মুক্তি? কিহৰ পৰা? ঘড়ীটো চালো। ছয় বাজিবলৈ পোন্ধাৰ মিনিট বাকী। কোনটো, কোনটো ৰাস্তাৰে গ'লো জানো!! পাহৰিলোৱেই!!

মোৰ প্ৰাতঃ ভ্ৰমণৰ প্ৰথম দিন ইয়াতেই শেষ। অ'হাকালি বাৰু মই যামনে নাযাম ?? নাই, নাই মই নোৱাৰো। ইমান কঠোৰ বান্তবৰ সন্মুখীন মই হব নোৱাৰো। কি অন্মুট সেই যন্ত্ৰণা !! নাই ইয়াৰ পৰা মই আঁতৰি থাকিবই লাগিব। মই ইমানদিনে কৰা কোনো কামৰ যুক্তি যুক্ততাৰ জবাব বিবেকক দিব নোৱাৰো। সেই শক্তি মোৰ নাই; কিন্তু সেই একেই যান্ত্ৰিকতা লৈ মোৰ চাৰিবেৰৰ মাজত আবদ্ধ হৈ থকাটোও যন্ত্ৰনাদায়ক।

কোঠাৰ খিড়িকি দুখন খুলি দিয়াই ভাল হব। টেবুলত এতিয়াও ঘড়ীটোৱে টিক্ টিক্ কৰি আছে। কি নিষ্ঠুৰ যান্ত্ৰিকতা !! এই বিলাকেই এদিন মোৰ প্ৰিয় আছিল, যেনেকৈ প্ৰিয় আছিল মোৰ অফিচৰ কোঠাৰ চাৰিও ফালে থকা ফাইলৰ ওখ-ওখ ঢাপবোৰ। এতিয়া ঘৰ পালো যেতিয়া এই চিম্ভাটোৰ পৰা অন্তত অৱসৰ পাম।

নহি নাই কিবা এটা মোৰ ভাল লগা নাই। বুকুৰ ওপৰত যেন এটা গধূৰ বোজা আছে (অনুভৱ কৰিছো) যাক মই আঁতৰাব পৰা নাই। মই অহাকালি প্ৰাতঃ ভ্ৰমণত যামনে, নাযাম? যামনে, নাযাম ...!! নাই আৰু নোৱাৰি। হেজাৰ চিন্তাই মোক খুলি খুলি খালেও অহাকালিৰ পৰা মই সদায় প্ৰাতঃ ভ্ৰমণত যাম (এয়া মোৰ দৃঢ় সংকল্প) মোৰ বিবেকৰ কাঠগড়াত নিজকে আজিৰ দৰেই থিয় কৰাম আৰু আৰম্ভ হব দীঘলীয়া বিচাৰ, অন্তহীন জবাব অন্ততঃ যেতিয়ালৈকে



নির্মম

চেলৰ পৰা

অনুলৈ শেষ চিঠি

জুপিতা দাস

অনু মোৰ মৰমৰ,

পৰিচিত আখৰৰ চিঠিখন তোমাৰ হাতত পৰতেই তোমাৰ ^{মুন} বহু প্ৰশ্নৰ উদ্ভৱ হ'ব — মই ইয়াৰ পৰাই বেচ অনুমান কৰিছোঁ। ^{হুয়} পৰা মানে এই নিৰ্জন জেলৰ এটি অন্ধকাৰ কোঠাৰ পৰাই ৷ এতিয়া মে জীৱনৰ অন্তিম ক্ষৰ্ণলৈ মই আঙুলিত গণি গণি অপেক্ষা কৰিছোঁ। পৃথি^{ত্ৰ} চকুত আজি এইটোৱেই সত্য — মইও এদিন মানুহ আছিলো; আ মই অমানুহ হৈ গ'লো। অমানুহ হোৱাৰ শাস্তি মই নিশ্চয় পামেই, অনু মই আজি কিয় অমানুহ হৈ গ'লো, তোমাৰ জানো জানিবলৈ ই যোৱা নাই।

প্রকৃততে সামাজিক বিধি ব্যৱস্থা আৰু অনুশাসনব বিৰুদ্ধে ব্যক্তিয়ে বিদ্ৰোহ ঘোষণা কৰি কেতিয়াবা সমাজৰ হেচাঁত দলিত হয় আৰু কেতিয়াবা সমাজক পৰাজয় কৰি ব্যক্তি সত্ত্বাই গৌৰৱ অনুভৱ কৰে; কিন্তু অনু! মোৰ বা তোমাৰ কাৰ পৰাজয় আজি এই সমাজৰ চকুত। তুমিও দেখোন আজি মোক ঘৃনা কৰিছা শৃদ্ৰ বুলি; কিন্তু জাতিয়েই জানো মনুষ্যত্বৰ প্ৰকৃত পৰিচয় ? তুমিয়েতো এদিন কৈছিলা তুমি ব্ৰাহ্মণৰ ছোৱালী হৈও নীচ জাতিক ঘৃনা কৰিবলৈ শিকা নাই; তোমাৰ অম্ভৰত লিখিত হৈ আছে কীৰ্ত্তনৰ সুললিত ভক্তি ৰসাত্মক বিশ্বপ্ৰেমে বলীয়ান কৰা, জাতি বৰ্ণৰ প্ৰতি উদাৰতা প্ৰদৰ্শক মহাপুৰুষ শ্ৰীশংকৰ দেৱৰ ৰচিত এই পদফাঁকি ---

''কুকুৰ চাণ্ডাল গৰ্দ্দভৰো আত্মাৰাম। জানিয়া সবাকো পৰি কৰিবা প্ৰণাম।। সমস্ত ভূততে ব্যাপি আছোঁ মই হৰি। সবাকো মানিবা তুমি বিষ্ণু-বুদ্ধি কৰি॥ ব্ৰাহ্মণৰ চাণ্ডালৰ নিবিচাৰি কুল। দাতাত চোৰত যেন দৃষ্টি এক তুল।।"

কিয়নো মিছা দাম্ভিকতা দেখুৱাইছিলা ? তোমাৰ আভিজ্ঞাত্যৰ, তোমাৰ উচ্চত্বই মোৰ হৃদয়তো শেষত আঁকি দিলে এখনি জাতি ভেদৰ প্ৰবল চিত্ৰ। সচাঁই মই আজি পঙ্গু হৈ গলো; কিছু মোৰ মৃত্যুৰ আগৰ্মুহূত্তত লিখা এই চিঠিখন পঢ়ি তোমাৰ মিছা গৌৰৱ, মিছা অহংকাৰ ত্যাগ কৰিবলৈ বাধ্য হ'বা হয়তো। অৱশ্যে তোমাৰ চকুতো মোৰ সত্য পৰিচয়ৰ বাবে তোমাৰ শুকান চকুযুৰিয়ে হুমুনিয়াহ নকৰাকৈ নাথাকে।

জানা অনু, মই তেতিয়াও ধৈৰ্যা হে'ৰুৱাই পেলোৱা নাছিলো যেতিয়া শুনিলো তোমাৰ বিবাহ হৈ গ'ল এজন ইঞ্জিনিয়াৰৰ লগত আৰু ল'ৰাজন ব্ৰাহ্মণ; কিন্তু যেতিয়া তুমি লিখা চিঠিখন পঢ়িলো, তোমাৰ চিঠিৰ প্ৰতিটো বাক্যই মোক কাঁইটৰ দৰে বিশ্বিলে। মানুহ কথাতে কটা যায় আৰু কথাতে বঁটা পায়। তোমাৰ প্ৰতি থকা মোৰ যি মৰম-স্লেহ, আম্ভৰিকতা আছিল সেয়া তেতিয়া চাৰখাৰ হৈ গৈছিল। তোমাৰ চিঠিৰ প্ৰতিটো শাৰী আজিও মই মুখস্থ কৰি ৰাখিছোঁ। এয়া চোৱা —

তুমি শুনিছাই মোৰ বিবাহ হৈ গ'ল এজন ইঞ্জিনিয়াৰ ল'ৰাৰ লগত। তেওঁ জাতত ব্রাহ্মণ। তোমাতকৈ কিন্তু বহু উচ্চ; মই এতিয়া বহু সুখী। আচলতে কি জানা মোৰ মনত কিছুমান অসাৰুৱা যুক্তি আছিল, যি আগতে তোমাৰ আগত বলকিছিলোঁ, এতিয়া কিন্তু বুজিছোঁ তুমি মোৰ একেবাৰেই উপযুক্ত নাছিলা; মই তোমাতকৈ বহু উচ্চ উচ্চ

আচৰিত, কি অসহনীয় আছিল মোৰ বাবে এই বাক্যবোৰ। মইহে ইত্যাদি। জানো মই কিহত, কাৰবাবে চকুলো বোৱাম; মোৰ নিজৰ ওপৰতে ঘৃনা

উপজিছিল, তোমাব দৰে ছোৱালীকো মই ভাল পাইছিলো, পাওঁ ...!

অনু, তুমি বেয়া নাপাবা, তোমাক বিমৃঢ় কৰি দি মই এসোপা নুবুজা কথা কৈ তোমাক আজি ব্যতিব্যস্ত কৰিছোঁ। আচলতে কি জানা, তুমি মোক ঘৃণা কৰিলেও বা মই তোমাক পাহৰিবলৈ চেষ্টা কৰিলেও তোমাৰ আৰু মোৰ মাজত সাঁজি থৈ দিয়া সেই স্বৰ্গৰাজ্যখন মই এতিয়াও হৃদয়ৰ পৰা মচি পেলাব পৰা নাই। মোৰ প্ৰতিটো চিম্ভা-ভাৱনাৰ আঁহে আঁহে তোমাৰ গভীৰ স্লান সেই চকুহালিয়ে মোক পথভ্ৰষ্ট পথিকৰ দৰে সদায় আঘাত কৰে। আচলতে তোমাৰ দৰে 'মোৰ জাতৰ প্ৰতি নিজৰেই ঘৃণা উপজিছিল; মোৰ জীৱিকাৰ আহিলা হিচাপে যি গ্ৰহণ কৰিছিলোঁ তাকো মই ঘূনা কৰিবলৈ শিকিলো; আৰু এদিন ত্যাগো কৰিলো, কিছু এদিন তুমিয়ে কৈছিলা মূৰৰ ঘাম মাটিত পেলাই সৎ হৈ জীয়াই থকাৰ সকলো প্ৰচেষ্টাই সুন্দৰ। তোমাৰ কথাৰ হয়তো এয়া মিছা মূল্যবোধ আছিল।

वह्य आरक-वारक लिशिएं। वृत्रि आप्रति भाँदेहा तिकि অনু ? কিছু এয়াই যে মোৰ শেষ লেখা!

তুমি হয়তো ভাবিছা মই কিয় কাপুৰুষৰ দৰে পৰাজয় স্বীকাৰ कबिटनाँ।

পৃথিৱীত মানুহ হৈ জন্মাৰ লগে লগে জন্ম হ'ব লাগে, নহ'লে এই মিছা অভিযোগৰ উদ্ভৱ সদায়েই হৈ থাকিব। আভিজাত্য, গৰ্ব — য'ত মানুহৰ অধিকাৰ নাই, তাতে উচ্চবৰ্ণৰ লোকসকল ওফন্দি অন্যান্য সৰ্ব সাধাৰণ শ্ৰেণীৰ মনুষ্যন্ত হ্ৰাস কৰিছে। তুমিতো জানাই মোৰ এই পৃথিৱীত এজনী ভনীৰ বাহিৰে আন কোনোৱেই নাছিল আপোন वृत्रिवरित । এদিন তাইয়ো वनी হ'न সমাজৰ এই নিষ্ঠুৰ বিচাৰৰ। আভিজাত্যৰ শিকলিৰে বন্ধা তাইৰ প্ৰেমিকে এদিন তাইক থেলি দিছিল ধ্বংসৰ মুৰ্খলৈ। মোৰ অজ্ঞাতেই তাই দোষ স্বীকাৰোক্তিৰে ক্ষমা প্ৰাৰ্থনা কৰি মোৰ কাষৰ পৰা বিদায় লৈছিল চিৰদিনৰ বাবেই আৰু তেতিয়াই মোৰ হৃদয়ত দ্বলি থকা জুইকুৰা পুনৰাই বেছি সক্ৰিয় হৈ পৰি-ছিল। হত্যাৰ সংকল্পই মোকো আগুৱাই নিছিল ধ্বংসৰ পৰ্থলৈ আৰু আদালতৰ অজস্ৰ কৌতৃহলী জনতাৰ আগত মই সুস্থ মগজুৰে হত্যা কৰা বুলি স্বীকাৰো কৰিছিলোঁ; বিচাৰত মোৰ ফাঁচিৰ আদেশ আহিল।

এয়া মৃত্যুৰ আগৰাতি জেলখানাৰ নিৰ্জন কোঠাটোত তোমালৈ লিখা এই চিঠিখন যেতিয়া তুমি পাবা তেতিয়া মই আৰু এই নিষ্ঠুৰ জগতখনত জীয়াই নাথাকিম। জানা অনু মোৰ আজি জীয়াই থাকিবঁলৈ প্ৰৱল হেঁপাহ হৈছে। এনে লাগিছে মোৰ নামৰ লগত যুক্ত হত্যাকাৰী উপাধিতো হাতেৰে মচি পেলাম। এদিন কি ভাবিছিলো, कি হৈ গ'ল। সেই দিনা কল্পনাও কৰা নাছিলো জীৱনত কেৱল হাঁহিয়েই নাই, কান্দোনো আছে।

মোৰ ভাৱ হয় মোৰ মৃত্যুৰ বাবে মই নিজেই অপৰাধী নহয়; অপৰাধী হ'ল — মোৰ দাৰিদ্ৰতা, মোৰ জাতি-ধৰ্ম, মোৰ প্ৰিয়তমা তুমি, আৰু এই নিষ্ঠুৰ সমাজখন ! ইত্যাদি।



ক্ধকীয়া বগা ধৃতি পাঞ্জাৱী পিন্ধি পৱন বৰুৱা বাহিৰৰ বাবান্দাৰ চকীখনত গাটো অলসভাৱে এৰি দি বহি আছে। বৰুৱাৰ বাবে ঠাইডোখৰ একেবাৰে নতুন যদিও কিবা চিনাকি চিনাকি যেন পৰিবেশৰ বাবে ঠাইডোখৰ তেওঁৰ খুব ভাল লাগিছে। সেয়েহে চহৰৰ উপকণ্ঠ অঞ্চলৰ এই ঠাইডোখৰ তেওঁ মাত্ৰ কেইদিনমানতে আপোন কৰি লব পাৰিছে। তেওঁৰ গাঁওত থকা ঘৰটোৰ সন্মুখৰ পথাৰখনত কিছুমান সৰু সৰু ল'ৰা ছোৱালীয়ে খেলি থকাৰ দৰেই ইয়াতো সন্মুখৰ ৰাষ্টাৰ সিপাৰে থকা বিস্তৃণ পথাৰখনত কিছুমান সৰু সৰু ল'ৰা ছোৱালীয়ে গৈলি আছে। সিহঁতৰ প্ৰাণচঞ্চল হাঁহি ধেমালিবোৰ বৰুৱাৰ খুব ভাল লাগে। জীৱনৰ প্ৰায় পয়ষষ্ঠিটা বসন্ত পাৰ কৰা বৰুৱাই সেই ল'ৰালিৰ দিনবোৰলৈ ক্ষণিকৰ বাবে উভতি যায়; কিন্তু সাংসাৰিক জীৱনৰ ব্যৰ্থতাই ভাৰাক্ৰান্ত কৰা তেওঁৰ মনোজগতত অতীতৰ সেই মধুৰ স্মৃতিবোৰ হঠাতেই হেৰাই যায়।

দুৰ্বল মুহূৰ্ত্তত মৃত্যুৰ চিন্তাই তেওঁৰ মনোজগত আচ্ছন্ন কৰি হঠাতেই এক অনামী শিহৰণৰ দোলা দি যায়। শুদ্ৰ সাজত তেওঁক যেন লৈ যোৱা হৈছে শ্মশানলৈ। সৰু সমদল এটাৰ শোভাযাত্ৰা। মাজে মাজে তেওঁৰ ভাব হয় মৃত্যুয়েও হয়তো তেওঁৰ পিতৃত্বৰ কলঙ্ক মুছি পেলাব নোৱাৰে। তীব্ৰ অপৰাধবোধত ছটফ্ট্ কৰাৰ বাহিৰে যে তেওঁৰ উপায়ো নাই সেয়া তেওঁ বুজে।

তেওঁ জীৱনৰ বিয়লি বেলিকাহে নিজৰ ভুল উপলব্ধি কৰিব পাৰিছে। যিজন মানুহে অসংখ্য ল'ৰাক মানুহ কৰিছে তেওঁৰ ল'ৰাই দুবেলা দুমুঠিৰ বাবেই কাৰখানাত হাড়ভঙা পৰিশ্ৰম কৰিব লগা হৈছে। অংকৰ শিক্ষক হিচাপে তেওঁৰ ভাল নাম আছিল। কঠিন অংকও অনায়াসে কৰি শুদ্ধ উত্তৰ উলিওৱাত তেওঁ পাৰ্গত আছিল; কিন্তু নিজৰ সাংসাৰিক জীৱনৰ কঠিন সমীকৰণটোত ক'ত কি ভুল হৈ গৈছিল যাৰ বাবে শুদ্ধ উত্তৰ নোলাল সেয়া বুজাত বৰুৱাৰ পলম হৈছিল। কিন্তু নিজৰ আঁকোৰ-গোজ স্বভাৱৰ পৰিৱৰ্ত্তন হোৱা নাছিল।

পৱন বৰুৱাৰ বিবাহ কিছু পলমকৈ হৈছিল। বিবাহিত জীৱনতো তেওঁৰ আঁকোৰ-গোজ স্বভাৱৰ বাবেই ঘেণীয়েকৰ লগত প্ৰায়ে খুঁত-খাত লাগিছিল। পত্নী অমলা আছিল শিক্ষিত আৰু কু-সংস্কাৰমুক্ত; কিন্তু বৰুৱা আছিল প্ৰায়ক্ষেত্ৰতে গোড়া স্বভাৱৰ। নিজৰ ল'ৰা দুঁটাক শাসন কৰাৰ বেলিকাও তেওঁ আছিল অত্যন্ত কাঢ়া। বৰুৱাৰ বদ্ধমূল ধাৰণা আছিল ছাত্ৰ অৱস্থাত পঢ়া-শুনাই একমাত্ৰ কৰ্তব্য। পত্নী অমলাই কিন্তু সিহঁতৰ ল'ৰা দুটাক লগৰীয়াৰ লগত কিছুসময় খেলাধূলা বা ফুৰা-চকা কৰিব দিয়াৰ পক্ষপাতী আছিল। বৰুৱাৰ ভয়ত ল'ৰা দুটা সৰুবে পৰা ঘৰৰ চাৰি চুকৰ মাজত আৱদ্ধ আছিল। অৱশ্যে স্কুলীয়া জীৱনত দুয়োটা ল'ৰাই পঢ়াশুনাত ভাল কৰিছিল।

ল'ৰা দুটা কলেজ পোৱাৰ পিছতহে যেন বৰুৱাৰ ঘৰৰ জুইকুৰা জ্বলি উঠিছিল। বৰুৱাৰ দুয়োটা ল'ৰা ৰঞ্জন আৰু বিজন একেলগে পঢ়িছিল। কলেজ পোৱাৰ পিছতে ৰঞ্জনৰ পৰিৱৰ্ত্তন হৈছিল। পঢ়াশুনাৰ প্ৰতি তাৰ স্পৃহা কমিছিল। ইতিমধ্যে চুবুৰীয়া দীনেশ দাসে বৰুৱাৰ সেই ভঙংকৰ সংবাদটো দিছিল — বৰুৱাৰ ল'ৰা ৰঞ্জনে তেওঁ ছোৱালীক প্ৰেমপত্ৰ দিছে। প্ৰচণ্ড ক্ৰোধত বৰুৱাই সেইদিনা ৰঞ্জন ছেকনিৰে খুব পিতিছিল। গাৰে তেজ বিৰিঙাতো তেওঁ ক্ষান্ত হোনাছিল। পত্নী অমলাই বৰুৱাক বাধা দিব পৰা নাছিল। সেইদিনা ৰাজিৰ ৰঞ্জন ঘৰৰ পৰা পলাই গৈছিল। দুদিন পিছতহে ওচৰৰে নদী এখন তাৰ মৃতদেহটো ভাঁহি উঠা অৱস্থাত পোৱা গৈছিল। পৱন বৰ্ষ দুখত ভাগি পৰিলেও তেওঁৰ স্বভাৱৰ পৰিৱৰ্ত্তন হোৱা নাছিল। ত

যেন বেছি জেদীহে হৈ পৰিছিল। বিজনক তেওঁ অনবৰতে চকুৰ আগত ৰখাৰ চেষ্টা কৰিছিল। বিজন আনমনা হৈ গৈছিল। সি ছৱি আঁকিবলৈ আৰম্ভ কৰিছিল। পঢ়াশুনা নিয়মিত কৰিলেও পঢ়াশুনাৰ প্ৰতি তাৰ মনোযোগ কমি আহিছিল। ফলত কোনোমতেহে সি উচ্চতৰ মাধ্যমিক শিক্ষান্ত পৰীক্ষাত উৰ্ত্তীণ হৈছিল। বিজাল্ট ওলোৱাৰ দিনা পৱন বৰুৱা খঙৰ ভমকত বিজনৰ ৰামত সোমাই বিজনে অঁকা সকলো ছবি ফালি পেলাইছিল। সেইদিনৰ পৰাই বিজনে ছবি আঁকিবলৈ এৰি দিলেও সি অসম্ভৱ ধৰনে গহীন হৈ পৰিছিল।

পৱন বৰুৱাৰ কিন্তু বিশেষ পৰিৱৰ্ত্তন হোৱা নাছিল। মানসিক অশান্তিত ভুগিলেও তেওঁৰ কাৰ্য্যকলাপৰ পৰিৱৰ্ত্তন হোৱা নাছিল। অমলা পুতেক ৰঞ্জনৰ মৃত্যুৰ পিছৰ পৰাই মুক্ হৈ গৈছিল। কথাও খুব কৰ্মকৈ কৈছিল। স্বাস্থ্যও ভাগি পৰিছিল।

বিজনে বি.এ. পাছ কৰিয়ে সুৰমায়াক বিবাহ কৰায়। এই বিয়াত বাপেকৰ মত নাছিল, গতিকে ৰেজিষ্ট্ৰাৰী বিয়া হৈছিল। পৱন বৰুৱাই পুতেকক ত্যাজ্য পুত্ৰ কৰিব বিচাৰিছিল; কিন্তু ৰোগশয্যাত থকা মৃত প্ৰায় পত্নীৰ অনুৰোধ উপেক্ষা কৰিব নোৱাৰি তেওঁ সেয়া নকৰিলে। অমলাৰ বিজনৰ বিবাহৰ মাত্ৰ কেইদিনমান পিছতে মৃত্যু হয়। বৰুৱাই পুতেকক মাতিবলৈ এৰি দিছিল। সুৰমায়াই পৰপক্ষত শহুৰেকৰ পৰা আঁতৰি থাকিছিল। পত্নী অমলাৰ মৃত্যুৰ পিছৰপৰা বৰুৱাই নিজে অকলে বেলেগকৈ ৰান্ধি খোৱাৰ ব্যৱস্থা কৰিছিল। ইতিমধ্যে বিজনেও কিছু আঁতৰত থকা চহৰখনৰ কাৰখানা এটাত সাধাৰণ চাকৰি এটা পাইছিল।

পৱন বৰুৱাৰ সেই দিনটোৰ কথা এতিয়াও ভালকৈ মনত আছে যিদিনা বিজন বৰ্ত্তমানৰ এই সৰু ঘৰটোলৈ আহিছিল বৰুৱাক গাঁওৰ ঘৰখনত অকলে এৰি। তেওঁ নিজেও আচৰিত হয় কেনেকৈ তেওঁ সেইদিনা ইমান নিষ্ঠুৰ হৈ পৰিছিল। বিজন ৰাতিপুৱাই কাৰখানালৈ গৈছিল। দুপৰীয়াৰ পৰা বিজনৰ পত্নীৰ প্ৰসৱ বেদনা আৰম্ভ হৈছিল। অসহ্য বেদনাত কেঁকাই থকা বোৱাৰীৰ ওচৰলৈ যোৱাৰ তিলমানো প্ৰয়োজন বোধ কৰা নাছিল তেওঁ। প্ৰকৃততে তেওঁ পত্নী অমলাৰ মৃত্যুৰ বাবে বোৱাৰীয়েককে দায়ী কৰিছিল। পাষাণৰ দৰে বৰুৱা আগফালৰ চকীখনতে নিৰ্বিকাৰ ভাবে বহি আছিল। বিজন অফিছৰ পৰা আহিহে সুৰমায়াক চিকিৎসালয়লৈ লৈ গৈছিল। ইয়াৰ পাছত বিজন দেউতাকৰ ওচৰৰ পৰা আঁতৰি গৈছিল। চিকিৎসালয়লৈ পৰা বাহিৰে বাহিৰে কণমানি কেঁচুৱা এটা লৈ বৰ্ত্তমানৰ এই ঘৰটোলৈ আহিছিল। পৱন বৰুৱাই মাত্ৰ শুনিছিল অতিমাত্ৰা ব্লিডিং হৈ তেওঁৰ বোৱাৰীৰ চিকিৎসালয়তে মৃত্যু হয়। পৱন বৰুৱাৰ চকুৰ একোণত এটোপাল পানী বিৰিঙাৰ বাহিৰে একো ভাবান্তৰ দেখা নগৈছিল। মাত্ৰ পুত্ৰ-বোৱাৰীৰ অনুপস্থিতিত ঘৰখন যেন বেছি জয়াল হৈ পৰিছিল।

পৱন বৰুৱাই ইতিমধ্যে শিক্ষকতাৰ পৰা অৱসৰ লৈছিল। তেওঁৰ অফুৰন্ত সময়বোৰ কিবা এক আক্ৰোশত ছটফটাই পাৰ কৰিছিল। খোৱা লোৱাৰ ক্ষেত্ৰতো ৰুটিনৰ সাল-সলনি হৈছিল। নিঃসঙ্গতাই তেওঁক সততে আমনি কৰিছিল।

হঠাৎ বিজুলী ঢেৰেকণিত বৰুৱাৰ তন্ত্ৰা ভাঙিল। অলপ পাছতে হয়তো ধাৰাসাৰ বৰষুণ আহিব। লাহে লাহে বতাহ বলিছে । ৰাষ্ট্ৰাৰ সিপাৰে থকা খেল পথাৰখনত ল'ৰা-ছোৱালী কেইটাই তেতিয়াও আপোনমনে খেলিয়ে আছে। হঠাৎ ধাৰাসাৰ বৰষুণ নামি আহিল। ল'ৰা-ছোৱালী কেইটাই হুলস্থূল লগাই ওচৰতে থকা ভগ্নপ্ৰাপ্ত বিল্ডিংটোৰ তলত আশ্ৰয় ল'লে। বৰষুণৰ তীব্ৰ শব্দকো ভেদ কৰি সিহঁতৰ কল্কলনি বৰুৱাৰ কাণত পৰি থাকিল।

বতাহৰ কোবত আৰু খটখটিত চালৰ পৰা বাগৰি অহা পানীবোৰ পৰি ছিটিকি আহি বৰুৱাৰ গাটো পানীৰ ক্ষুদ্ৰ ক্ষুদ্ৰ টোপাল পৰিছে। তেওঁ খট্খটিৰ পৰা কিছু আঁতৰলৈ গ'ল। থৰক-বৰককৈ বহোতে কিছু বিষ অনুভৱ কৰিলে। এক্সিডেন্টত হোৱা ঘাঁবোৰ এতিয়াও ভালদৰে শুকোৱা নাই।

তেওঁ সেইদিনা চহৰলৈ আহিছিল তেওঁৰ পেঞ্চনৰ কামত।
ৰাষ্টাটো পাৰ হ'ব খোজোতে হঠাৎ পিছফালৰ পৰা অহা মটৰ চাইকেল
এখনে তেওঁক খুন্দিয়াইছিল। তেওঁ অজ্ঞান হৈ পৰিছিল। চিকিৎসালয়ত
চকু মেলিয়ে তেওঁ বিজনক দেখিছিল। বিজনে তেওঁক সাৱটি ধৰি সৰু
ল'ৰাৰ দৰে কান্দি উঠিছিল। বৰুৱাইও বিজনক সাবটি ধৰিছিল। প্ৰায়
পাঁচ বছৰ নেদেখা পুতেকক দেখিও তেওঁ নিৰ্বিকাৰ আছিল যদিও
হৃদয়ৰ একোণত তেওঁ বেদনা অনুভৱ কৰিছিল। প্ৰায় এসপ্তাহ আগতে
তেওঁক চিকিৎসালয়ৰ পৰা ৰিলিজ দিয়া হৈছিল। বৰুৱাই ঘৰলৈ উভতি
যাব বিচাৰিছিল, কিন্তু ৰুগ্ন শৰীৰ আৰু পুতেকৰ কথা পেলাব নোৱাৰি
বিজনৰ ভাৰা ঘৰটোলৈ আহিবলৈ বাধ্য হৈছিল। এইকেইদিন বিজনে
কাৰখানাৰ পৰা ছুটী লৈছিল। নাতি ল'ৰা পাঁচবছৰীয়া ৰাতুলেও
দুদিনমান স্কুললৈ যোৱা নাছিল। ককাকক পাই সি খুব আনন্দিত
হৈছিল। বৰুৱাৰ জীৱন ৰাতুলৰ আবদাৰ ভৰা কথাই পৰিপূৰ্ণ কৰি
তুলিছিল। জীৱনত প্ৰথমবাৰৰ বাবে অনুশোচনাত দগ্ধ হৈ গৈছিল
পৱন বৰুৱাৰ হৃদয়।

তেওঁ ৰাষ্টাৰ ফালে চালে। বিজন আজি কাৰখানালৈ গৈছে।
সোনকালে অহাৰ কথা কৈছে। বৰ মুণৰ বাবে আহিব নোৱাৰিলে
হ'বলা, বৰুৱাই ভাবিলে। ৰাতুলৰো স্কুলৰ পৰা অহাৰ সময় হৈছে।
হঠাতে বৰুৱাই সন্মুখৰ ভগ্নপ্ৰাপ্ত বিল্ডিংটোলৈ চালে। এজন ল'ৰা
অকলে আছে, বাকী ল'ৰা ছোৱালীবোৰ নাই। বৰুৱাই ল'ৰাজনক
চিনি পালে। ৰাতিপুৱা ল'ৰাজনক ৰাতুলে তেওঁৰ লগত পৰিচয় কৰাই
দিছিল। ল'ৰাজনেই কৈছিল তাৰ দেউতাকৰ বাহিৰে কোনো নাই।

80

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

মহাবিদ্যালয় আলোচনী



ল'ৰাজনে আপোনমনে বৰুৱাৰ ফালেই চাই আছে। ঘৰত ছাটি এটা থকা হ'লে বৰুৱাই ল'ৰাজনক ইয়ালৈকে লৈ আহিলেহেঁতেন। ল'ৰাজনৰ লগৰীয়াবোৰক নিশ্চয় ভাগে ভাগে ঘৰৰ পৰা ছাটি লৈ আহি'লে গ'ল। ল'ৰাজনৰ দেউতাক নিশ্চয় অফিচৰ পৰা অহা নাই। ল'ৰাজনৰটো মাক নাই। বৰুৱাৰ অম্ভৰত এক তীব্ৰ বিষ অনুভৱ হ'ল। ৰাতুলৰ মাকৰ মৃত্যুৰ বাবেতো তেঁৱে দন্মী। সোনকালে চিকিৎসালয়ত লৈ যোৱা হ'লে হয়তো ৰাতুলৰ মাক বাচি থাকিলেহেঁতেন।

কাঠৰ সৰু গোটখন খোলাৰ শব্দত বৰুৱা সচকিত হ'ল। পিঠিত কিতাপৰ বেগ আৰু হাতত ছাটিলৈ ৰাতুল সোমাই আহিছে। ককাকক বাৰান্দাত দেখিও অইনদিনৰ দৰে আজি তাৰ মুখমণ্ডল উজ্জ্বল হৈ নুঠিল। সি ছাটিটো বাৰান্দাতে পেলাই থৈ বৰুৱাৰ ওচৰলৈ আহিল। তেওঁ মাত্ৰ একেথৰে চাই ৰ'ল। "ককা! লগৰ ল'ৰাবোৰে আজি মোক জোকহিছে, মোৰ বোলে মা নাই। মই নেমানো। দেউতাই কৈছে নহয় মোৰ মা স্বৰ্গত আছে। দেউতা কামৰ বাবে স্বৰ্গলৈ যাব নোৱাৰে। তুমি গৈ মাৰ স্বৰ্গৰ পৰা আনিব পাৰিবা ককা?"

ৰাতুলৰ সৰল, নিৰ্মল ধুনীয়া মুখখনলৈ চাই পৱন বৰুৱাৰ অন্তৰে হাহাকাৰ কৰি উঠিল। তেওঁ একো উত্তৰ দিব নোৱাৰিলে।

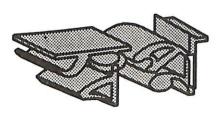
"কোৱা ককা ! পাৰিবা ? পাৰিবই লাগিব ককা !!" ৰাতুলে বৰুৱাৰ গা জোকাৰি জোকাৰি সোধে।

"হত্যাকাৰীয় কেবল হত্যাহে কৰিব জানে, জীৱ দিব নাৰ্জানে সোণ। তোমাৰ মাৰ হত্যাকাৰী এই অসমৰ্থ ককাকক তুমি অভিনাপ দিয়া যিমান পাৰা অভিশাপ দিয়া। তোমাৰ ককা এজন হত্যাকাৰী। মোক " পৱন বৰুৱা ৰাতুলৰ গাত ধৰি হুক্ছ্ক্

সমাজত দৈনন্দিন ব্যৱহৃত অশালীন, অসংস্কৃত শব্দ ব্যৱহাৰ নকৰিলে আধুনিক মনৰ সংঘাত যথেষ্ট ভাৱে প্ৰকাশ কৰিব নোৱাৰি বুলি ভবাসকল সাহিত্য সৃষ্টিক এক মহৎ কলা হিচাপে ৰূপায়িত কৰিবলৈ অক্ষম। সমাজত ঘটি থকা অলেখ ঘটনাৰ মাজৰ পৰা গল্পৰ বিষয় বস্তু নিৰ্দ্ধাৰণ কৰিবলৈ যেনেকৈ কঠোৰ নিৰ্ব্বাচনৰ প্ৰয়োজন, তেনেকৈ শব্দ নিৰ্ব্বাচনো এক কঠোৰ আৰু গুৰুতৰ দায়িত্ব।

- চন্দ্ৰ প্ৰসাদ শইকীয়া





এলার্ম ক্লকটো বাজি উঠিল। নীতাই চকুদুটা মুদিয়েই এলার্মটো অফ কৰি দিলে। শর্মা চাৰৰ ঔষধ খোৱাৰ সময় হৈছে। ৰাতিটো হাস্পাতালত উজাগৰে কটোৱাৰ বাবে পুৱতি নিশা নীতাৰ টোপনীৰ নিচা লাগিছিল। নার্চ এজনী আহি চাৰক ঔষধ খুৱাই দিলে। নীতাই খিৰকীখন খুলি দিলে। সুন্দৰ ৰাতিপুৱা। ৰঙাকৈ বেলিটো ওলাইছে। এই বেলিৰ ৰঙতে তাইও সপোন ৰচিছিল অৰিন্দমৰ

স'তে। অ' থিকেই মনত পৰিছে সেইদিনাখন প্ৰচণ্ড বৰষুণ পৰিছিল। তাই লাষ্ট ক্লাচটো কৰি অকলে আহিব লগা হ'ল। ল'ৰা এজনে আহি ৰিক্সা এখন যোগাৰ কৰি দিলে। সেয়াই অৰিন্দমৰ লগত প্ৰথম চিনাকি। তাৰপাছত তাই কলেজ চৌহদত অৰিন্দমক বহুবাৰ লগ পাইছে। খুউব মাৰ্জিত। প্ৰতিটো কথাই যুক্তিবাদৰ ওপৰত ৰচিত। অৰিন্দমৰ বিপ্লৱৰ কথা, প্ৰাপ্য অধিকাৰৰ কথা, শোষণৰ কথা আদি। তাইৰ বাগিছাৰ ফুলজোপা, টেবুলৰ প্ৰতিখন কিতাপেই যেন চিঞৰিব ধৰিলে অৰিন্দম, অৰিন্দম। সঁচাকৈয়ে অৰিন্দমে ইমান সুন্দৰ আৰু শুদ্ধ কথাবোৰ নিপুণভাবে প্ৰকাশ কৰিব পাৰে। সেইদিনাখন কেনটিনৰ অবিন্দমক বৰ ভাগৰুৱা যেন লাগিছিল সি যেন সেইদিনাখন কিবা ক'ব বিচাৰিছে। অ' থিকেই বিদায়ৰ কথা কৈছে। অৰিন্দমে সংগ্ৰামৰ বাবে তেজৰ লগত খেলা কৰিব বিচাৰিছে। অৰিন্দম, তাইৰ প্ৰতিটো মুহূৰ্ত্তৰ লগৰীয়া, প্ৰতিটো সিদ্ধান্তৰ অংশীদাৰ। তথাপিও তাই ব্যক্তিগত স্বাৰ্থ বিসৰ্জন দি বুকুত শিলবান্ধি অৰিন্দুমক বিদায় দিলে। তাৰপাছত অৰিন্দমৰ খৱৰ তাই ৰাখিব বিচৰা নাই। তাৰ কথা সুধি বহুবাৰ তাইক পুলিছৰ জিম্মাত জেৰা কৰা হৈছে। ইয়াৰ বাবে ঘৰৰ মানুহেও চুবুৰীয়াৰ কটু মন্তব্যৰ সন্মুখীন হব লগা হৈছে। বৰ্ত্তমান নীতা শইকীয়া কলেজৰ অসমীয়া বিভাগৰ অধ্যাপিকা। সদাঁ<mark>ই পুৱা তাই গোসাঁইৰ মন্দিৰত</mark> বন্তি জ্বলাই নীৰৱে অৰিন্দমৰ দীৰ্ঘায়ু কামনা কৰে। কিন্তু এয়া কি ? এচ কালাৰৰ মাৰুতিখনৰ ভিতৰত। নাই, নাই তাই অৰিন্দমক চিনাত ভুল কৰিব নোৱাৰে। তাৰ কেৱল শৰীৰটো আৰু বেচি আটিল হৈছে আৰু চচ্মাৰে ঢাকি যোৱা চকুজুৰিত পৰাজয়ৰ গ্লানিৰ চিন স্পষ্ট। তাৰমানে অৰিন্দমে হাৰ মানিলে। সি মানসিকভাবে দুৰ্ব্বল হোৱাৰ ভয়<mark>ত তাই</mark>তো তাৰ খৱৰকে লোৱা নাছিল। অৰিন্দম পলৰীয়া, স্বাৰ্থপৰ। সেই প্ৰতিটো

যুক্তিবাদ, স্পর্শকাতৰ মুহূর্ত্তবোৰ আৰু বৈপ্লৱিক বাণীৰে পুষ্ট আলোচনাবোৰ মাথো মৌখিকহে আছিল। নাই, নাই তাই আৰু ভাবিব নোৱাৰে। তাইৰ হৃদয়ত গঢ় লৈ উঠা অৰিন্দম বাস্তৱ অৰিন্দমতকৈ বহু ওপৰত। তাই, তাৰ ভেটা-ভেটি হৈ চলনাময়ী কথাৰ শ্রোতা হ'ব নিবিচাৰে।

আঃ আঃ! শৰ্মাচাৰে বাগৰ সলাওতে দুখ পাইছে। শৰ্মাচাৰ অসমীয়া বিভাগৰ মুৰববী অধ্যাপক। অসমৰ এজন নামৰ্থলা সাহিত্যিক। সঁচাঁকৈয়ে এজন ঈশ্বৰতুল্য ব্যক্তি। নীতাক কন্যাসম আদৰ কৰে। তেওঁৰ সংসাৰ বুলিবলৈ থকা একমাত্ৰ ল'ৰাটোৱেও বিপ্লৱক আদৰ্শ হিচাপে লৈ ঘৰৰ পৰা ওলাই গ'ল। এওঁলোকৰে এসময়ৰ ভাতৃ আহি চাৰৰ ল'ৰাট্যেক বিচা<mark>ৰি ঘৰ চ</mark>লাথ কৰিলে। পাচত ঘৰত কাকো বিচাৰি নাপায় চাৰ<mark>ৰ তিনিকুৰি বছৰীয়া শ</mark>ৰীৰটোৰ ওপৰত সি**হঁ**তে মাতাল কচৰৎ চলালে। উঃ কেনে জঘন্য অত্যাচাৰ। চাৰৰ ঘৰৰ কিতাপকে ধৰি সকলো আচবাব পত্ৰ থানবান হৈ পৰি আছে আৰু কোঠালীৰ এটা কোনত অসহ্য যন্ত্ৰনাত চাৰে চট্ফটাই আছে। নীতাই তংক্ষণাত চাৰক হাস্পাতালত ভৰ্ত্তি কৰালে। এইখন চকীত বহিয়ে তাই গোটেইটো নিশা উজাগৰে কটাইছে। আঠ বাজিলেই। নিতাই <mark>বাথৰূমলৈ</mark> গৈ মুখ হাত ধুই আহিল। চকুকেইটাও অসম্ভৱ পুৰিছে। <mark>খৱৰ</mark>-কাগজখন আহি পালেহি। হত্যা, ধৰ্ষনৰ দুঃসংবাদবোৰ কঢ়িয়াই আনিছে। উঃ কি ? আমাৰ শৰ্মাচাৰৰ ওপৰত চলোৱা অত্যাচাৰী কেইজনৰ অন্যতম হ'ল অৰিন্দম, অৰিন্দম বৰুৱা। মোৰ আদৰ্শৰ <mark>স্বৰূপ অৰিন্দম। ইমান অধঃপতন। তাৰমানে মই নিঃসংগ ভাৰে</mark> কটোৱা এই ডেৰকুৰি বসন্তই গৰকা দিনবোৰৰ আদৰ্শৰ ভেটি এট স্বপ্ন আছিল। অ' হয় মাজনিশা দেখা এটা জয়াল স্বপ্ন।

※※※

..... যিখন হাতে আপেলটো আগবঢ়াই দিয়ে, সেইখন হাতৰ পৰা আপেলটো লৈ কামুৰি চাই সেইটো টেঙা নে মিঠা সেইষাৰ কথা মুকলিকৈ কোৱাৰ অধিকাৰ যিকোনো সমালোচকৰে আছে। কিন্তু, আপেলটো লওঁতে হাতখনো টানি আনি আঙুলিকেইটা চোবোৱাৰ অধিকাৰ কোনো সমালোচকৰ নাই।....



ৰাতি বাৰবজাৰ ট্ৰেইন

তিনিদিন একেৰাহে বৰষুণ। চাৰিওফালে পানী। নদী-নলা-খাল একাকাৰ। মুক্ত আকাশখন এতিয়া নামি আহিছে গছবোৰৰ আৰ্গলৈ।

ত কুলি হে আছে লাগে চল । ভাষণ খাঁচৰ পুটিটোত ভোলা নি

কালি ছোছে গোনাকাৰ যাক। মেৰুনেবিয়া শেক্তেমী নিভাল যাবিত্ৰ

ভেকুলীৰ কোলাহল। ঝিলিৰ কান্দোন। আকাশেও কান্দিছে। চকুৰ পাৰ বাগৰি পানী আহিছে। টোপ টোপ। ৰাতি ক্ৰমে গভীৰ হৈ আহিছে। চাৰিও পিনে নিম্বন্ধ।

অনামিকা ভট্টাচার্য

— মা, দেউতা এতিয়াও কিয় নাহে ?

উবুৰি হৈ আছে ভাতৰ চৰু। ডাঙৰ বাঁহৰ খুটিটোত ভেজা দি কান্দি আছে পোনাকণৰ মাক। মেৰ্মেৰিয়া শেতেদী নিতাল মাৰিব পৰা নাই। গোটেই ঘৰখনতেই এতিয়া বন্যা।

--- বৰষুণ কিয় হয় মা ?

ক্ষীণ পোহৰ। পোহৰৰ আঁবে আঁবে জেঠী, পোক ধৰে। পোনাকনৰ মাকে মূৰতুলি চায়। দুগাল উপচি চকুপানী।

--- আমাৰ ঘৰত পানী কিয় পৰে মা ?

ৰাতি বাঢ়ি আহিছে। ঘন আকাশ আৰু বেছি ঘোলা হৈছে। কাৰো চকুতেই টোপনি নাই। বাৰবজাৰ ট্ৰেইন এতিয়াও যে নাইল! সেই ৰাতিপুৱাইে ৰিক্সালৈ ওলাল, এতিয়াও উভতিবৰ হোৱা নাই নে ? পোনাকণৰ স্বৰ। গোটেই দিন চৰু কাতি হৈ থাকিল।

— মা, ইমান বৰষুণত দেউতাই কিয় ৰিক্সা চলায় ?

বিজুলীৰ গাজনি । বৰষুনো বেছি হৈছে । পোনাকণৰ মাৰ্কে দুৱাৰৰ ফাঁকেৰে কিবা চাই আছে । ভৰিব শব্দ, ভেকুলীৰ ক্ৰন্দন, বি
ঝিঁ, সোঁ সোঁ বতাহ, আকৌ ইয়াৰ মাজতে চোৰ । নিগনিবোরে
আনাহকত দৌৰি ফুৰিছে । চাৰিওপিনৰ ওখ দালানবোৰ নিচিষ্ট মনে
শুইছে ।

— ভোক কিয় লাগে মা ?

বতাহৰ কোবত খালী চৰু মজিয়াত বাগৰি গৈছে। পু-উ-উ উ-উ হুইসেলৰ শব্দ। মাকে পোনাকণক জ্বোৰেৰে সাবটি ধৰি চু খাইছে। বাৰবজ্ঞাৰ ট্ৰেইন আহিছে।

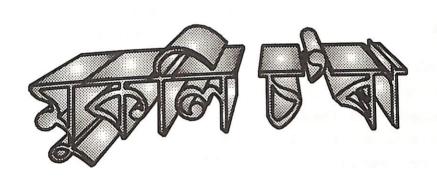
— জ্ব কিয় হয়, মা ?

ৰাম্ভাৰে টিং টং শব্দ এটা দ্ৰুত গতিত আগবাঢ়ি আহিছে এতিয়াই দেউতাকে পোনাকণৰ বাবে খোৱাবস্তু আৰু ঔষধ আনি

— মা, দেউতা আহিছে।

যি ৰাজ্যৰ বা ৰাষ্ট্ৰৰ গৰিষ্ঠ সংখ্যক অধিবাসীৰ বিচিত্ৰ সাহিত্য সম্ভাৰেৰে সমৃদ্ধিশালী লিখতি আৰু কথিত ভাষাৰ সেই ৰাজ্যত ৰাষ্ট্ৰীয় মৰ্য্যদা নাই, সেই ৰাজ্যত সেই ভাষা কোৱা অধিবাসীসকলৰো ৰাষ্ট্ৰীয় মৰ্য্যদা নাই। অসমত অসমীয়াৰ ভাগ্যত আজি সেয়ে ঘটিছে।

— অম্বিকাগিৰি ৰায়চৌধুৰী





অতনু ভট্টাচার্য্য

(১৯৮৬-৮৭ আৰু ১৯৮৭-৮৮ বৰ্ষৰ গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ শ্রেষ্ঠ সাহিত্যিক অতনু ভট্টাচার্য্য অসমৰ কবি আৰু কবিতাৰ জগতত এক সুপৰিচিত নাম। তেওঁৰ কবিতাৰ সহজ-সৰল ভাব-ভাষাই সাধাৰণ পাঠকৰো হৃদয় চুই যায়। আধুনিক কবিতাৰ দুর্বোধ্যতা সম্প্র্কত সততে যি সমালোচনা শুনা যায় তাৰপৰা ভট্টাচার্য্যৰ কবিতা মুক্ত। তেওঁ নিজেও কৈছে মানুহৰ সুখ-দুখ, মৃত্যু-চেতনা আৰু জীৱনবোধ তেওঁৰ কবিতাত আয়ানাৰ দৰে স্বচ্ছ। তেওঁ কিয় আৰু কেনেদৰে লিখিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে সেয়া জনাৰ সাগ্রহেৰে তেওঁৰ কাষ চাপিছিলো। তেওঁ আমাক বিমূখ নকৰিলে। লৰালৰি হ'লেও অকপট সৰলতাৰে কৈ গ'ল তেওঁৰ কবিতাৰ জগতখনত বিচৰণৰ সুখপাঠ্য বর্ণাঢ্য কাহিনী। — সম্পাদক)

প্রস্তারনা ঃ

মই কিয় আৰু কেতিয়াৰ পৰা কবিতা লিখিবলৈ আৰম্ভ কৰিলোঁ সেই প্ৰশ্নৰ উত্তবে কাকো সহায় নকৰিব। তথাপি মাজে মাজে মই সেই প্ৰশ্নৰ সন্মুখীন হওঁ। কবিক অশ্ৰদ্ধা আৰু উপলুঙা কৰা মানুহ যেনেকৈ থাকে, তেনেকৈ আগ্ৰহী আৰু অতি-কৌতৃহলী কবিতা-প্ৰেমিকো থাকে। সেইকাৰণে, — আৰু হয়তো কেৱল সেইকাৰণেই — আলোচনীৰ সম্পাদকে মোক লিখিবলৈ বাধ্য কৰিব পাৰিছে মোৰ কবিতাৰ অন্তৰালৰ কথা।

এক

প্রথম কবিতাৰ কথা মোৰ মনত নপৰে। মনত পৰে মাথোন সেইবোৰ দিনৰ কথা যেতিয়া মোৰ স্কুলৰ নোটবহীৰ শেষপৃষ্ঠাত আঁক-বাঁক কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিছিলোঁ। যেতিয়া জ্যামিতি আৰু লেখচিত্ৰৰ মাজত বিচৰণ কৰি থাকোঁতে হঠাৎ অন্যমনস্ক হৈ পৰিছিলোঁ। সদায় দেখি থকা গছ আৰু চৰাই, ওখ ওখ পকীঘৰ আৰু বাটৰ কাষৰ ডাষ্টবিন দেখি থকা অলপ বেলেগ ধৰণে চাবলৈ শিকিছিলোঁ। প্রথম কেতিয়াৰ — মই যেন অলপ বেলেগ ধৰণে চাবলৈ শিকিছিলোঁ। প্রথম কেতিয়াৰ পৰা ? প্রথম কোন দিনা নদীৰ পানীবোৰক কেৱল পানী যেন নালাগিল, আলমাৰিৰ কাঠবোৰক কেৱল কাঠ যেন নালাগিল, — মই ক'ব নোৱাৰো। মই লিখি থকা অলেখ কথাৰ মাজৰ প্রথম কোন দুশাৰী কথা সম্পূৰ্ণ মোৰ নিজা আৰু কোন দুশাৰী কথা কবিতাৰ লাইন হ'ল, — মই ক'ব নোৱাৰো।

মোৰ ভিতৰৰ ক'ৰবাত যেন মই নিজেই নজনাকৈ জঠৰ হৈ ৰৈ আছিল অন্য এক কবিতাপুৰুষ! সময়ৰ যাদুদণ্ড ডালে এদিন তাক যেন স্পৰ্শ কৰিলে আৰু সি সাৰ পাই উঠিল। তাৰপিছত আৰম্ভ হ'ল মোৰ এক নতুন যাত্ৰা — কবিতাৰ হাত ধৰি ধৰি মই — অকোৱা-পকোৱা এটা বাটেদি এক অনিৰ্দিষ্ট গন্তব্যস্থললৈ।

पुरे

মোৰ 'অনুভূতি' আছিল সঁচা, কিন্তু তাক কবিতাত ৰূপান্তৰিত কৰিবলৈ মোৰ অধ্যয়ণৰ পৰিসৰ আছিল সীমাৱদ্ধ। কিবা এটা লিখাৰ আগ্ৰহেই ইফালে মোক প্ৰায় উদ্বাউল কৰি তুলিছিল। মই কি লিখিম, সেয়া মোৰ বাবে সমস্যা নাছিল। টোপাশে যেন বিষয়, বিষয় আৰু বিষয়। বৰং 'কেনেকৈ লিখিম' সেই প্ৰশ্নই হে মোক চিন্তাত পেলাইছিল, যি চিন্তাৰ পৰা আজিও মই মুক্ত হ'ব পৰা নাই। সেইবাবে অন্ততঃ মই এটা কথা ঠিক কৰি পেলালোঁ যে মই 'কেনেকৈ নিলিখিম'।

মানুহৰ সুখ-দুখ, মৃত্যু-চেতনা আৰু জীৱনবোধ মোৰ কবিতাত আয়নাব দৰে স্বচ্ছ। জটিল অনুভূতিবোৰকো কিমান সহজে আৰু কিমান আকৰ্ষণীয়ভাৱে প্ৰকাশ কৰিব পাৰোঁ, সেই চেষ্টাত ৰত হৈয়েই থাকিলোঁ। বিভিন্ন প্ৰান্তৰ পৰা মোলৈ প্ৰশংসাৰ চিঠি আহিল, নিমন্ত্ৰণ আহিল আৰু আহিল বন্ধুত্বৰ প্ৰস্তাৱ। কিন্তু স্বীকাৰ নকৰিলে ভুল হ'ব যে মোৰ অপৰিপক্কতাৰ সুৰুঙাইদি ভালেমান অপঠনীয় কবিতাও প্ৰকাশ পাই থাকিল।

মই দেশী-বিদেশী কবিতা পঢ়িবলৈ আৰম্ভ কৰিলোঁ। ইংৰাজী, ফৰাচী, লেটিন-আমেৰিকান। গোৱালপাৰা নামৰ এই সৰু চহৰখনৰ সৰু এটা লাইব্ৰেৰীয়ে যিকণ সুবিধা দিয়ে, মই তাৰ এশভাগেই গ্ৰহণ কৰিলোঁ।

তিনি

কটন কলেজ মোৰ জীৱন আৰু কবিতাৰ বাবে এটা টানিং

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

(3)

মহাবিদ্যালয় আলোচনী

পয়ন্ট। এফালে সৃষ্টিৰ উশ্মাদনা, আনফালে প্ৰতিষ্ঠাৰ বাবে যুঁজ। কটন কলেজেই প্ৰথম দিলে মোক আত্মমৰ্যাদা আৰু প্ৰতিষ্ঠাৰ সোৱাদ। অসমৰ বিভিন্ন প্ৰান্তৰ পৰা অহা মেধাৱী ছাত্ৰ সকলৰ মাজত থাকি নিজকে যেতিয়া তেনেই সাধাৰণ বা মূৰ্খ যেন বোধ হ'ল, ঠিক তেনে সময়তে আৱিষ্কাৰ কৰিলোঁ মোৰ এক সুকীয়া পৰিচয়।

তাৰপিছত দৈনিক অসম, ৰংঘৰ, বুধবাৰ, প্ৰেক, সূত্ৰধৰ আদি বিভিন্ন কাকত-আলোচনীত লিখিবলৈ ধৰিলোঁ। সেই সময়ত কবিতা একোটা লিখা, খামত ভৰাই সেইবোৰ আলোচনীৰ অফিটলৈ পঠিওৱা আৰু পিছত নিজৰ নামটো ছপা আখৰত দেখা — এই গোটেই কাৰবাৰটোত মনে মনে মই এক ধৰণৰ উৎসাহ অনুভৱ কৰিছিলোঁ।

তেনেকুৱা এটা দিনতে, বোধকৰোঁ ১৯৮৭ চনত, মোৰ কোনোবা এটা কবিতা প্ৰান্তিকত ছপা হ'ল। প্ৰান্তিক এনে এখন আলোচনীৰ নাম যাৰ সম্পাদনাৰ দায়িত্বত ড° ভবেন্দ্ৰ নাথ শইকীয়াৰ দৰে এজন বিচক্ষণ, জ্ঞানী আৰু বহুমুখী প্ৰতিভাসম্পন্ন ব্যক্তি থাকিব পাৰে। মই কবি হীৰেন ভট্টাচাৰ্য্য, অৱনী চক্ৰৱৰ্ত্তা, সমীৰ তাঁতি, ৰবীন্দ্ৰ সৰকাৰৰ সান্নিধ্য লাভ কৰিলোঁ। প্ৰান্তিকে মোক অসমৰ কবিতা-পাঠকৰ মহাসভালৈ লৈ গৈ যেন চিনাকি কৰাইহে দিলে। কিন্তু এই খিনিতেই মই এটা নতুন সমস্যাত পৰিলোঁ। মোৰ এনে লাগিল যেন মোৰ দায়িত্ব বহুগুনে বাঢ়ি গ'ল। কবিতা লিখোঁতে মই প্ৰয়োজনতকৈ অধিক সংযমী হ'বলৈ আৰম্ভ কৰিলোঁ। ফলস্বৰূপে কিছু 'অখাদ্য' কবিতাৰো সৃষ্টি নোহোৱাকৈ নাথাকিল।

চাৰি

কবিতা নো কি ?

মানুহৰ নিজস্ব অনুভূতিৰ এক বিশেষ কলাসন্মত প্ৰকাশ। প্ৰকাশৰ বাবে লাগে ভাষা। ভাষাৰ কাৰণে শব্দ।

মই মন কৰিছিলোঁ, মই পঢ়া বহু কবিতাই আছিল অবাঞ্চিতভাৱে জটিল। শব্দই কবিতাক জটিল কৰা নাছিল; কবিতা দুৰাহ-দুৰ্বোধ্য হৈ পৰিছিল জটিল বাক্য গাঁথনিত। ইতিমধ্যে প্ৰতিষ্ঠিত বহু পণ্ডিত-কবিয়ো এই ক্ষেত্ৰত আছিল দুখলগাঁকৈ দুৰ্বল। মানুহে কবিতা পঢ়িবলৈ প্ৰায় এৰিয়েই দিছিল (যদিও কোৱা হয় কবিতাৰ পাঠক সকলো যুগতে সীমিত) আৰু কবিক তাচ্ছিল্য কৰিবলৈ লৈছিল। হীৰেণ ভট্টাচাৰ্যাই, আৰু পিছত সমীৰ-সনম্ভ-নীলিম কুমাৰে অসমীয়া মানুহক কবিতাৰ মাজলৈ লৈ আহিল। সেই সন্ধিক্ষনত মই ঠিক কৰি ললোঁ যে মই যি লিখিম পোনপটীয়া ভাষাৰে লিখিম। অত্যন্ত সততাৰে মোৰ বক্তব্যক কবিতাৰ ৰূপ দিম। মোৰ কবিতাৰ ঘৰ যে সদায় উন্মুক্ত হৈ ৰ'ব সেই কথা নকওঁ। সেই ঘৰৰ দুৱাৰ খিৰিকিত থাকিব লাগিব আকৰ্ষণীয় পৰ্দা য'ত নিমন্ত্ৰণৰ ৰং সনা থাকে।

আজি মোৰ কবিতাৰ পাঠকৰ সংখ্যাটো তুলনা মূলক ভাৱে ডাৰ্জ্ৰ হোৱাৰ কাৰণ এইটোৱেই।

পাঁচ

১৯৯৬ চনৰ ১৯ জানুৱাৰী দিনটো মোৰ বাবে এটা উল্লেখযোগী
দিন। অল ইণ্ডিয়া ৰেডিঅ', নতুন দিল্লীয়ে আয়োজন কৰা সৰ্বভাগী
কবি সন্মিলনলৈ মই অসমৰ পৰা আমন্ত্ৰিত হৈছিলোঁ। সংবিধান শ্বীকৃতি
প্ৰতিটো ভাৰতীয় ভাষাৰ পৰা একোগৰাকী কবি দিল্লীৰ নেশ্বনেশ্ব
মিউজিয়াম অডিটৰিয়ামত উপস্থিত হৈছিল। বিখ্যাত ওড়িয়া কবি জ্বন্ধী
মহাপাত্ৰ, হিন্দীবোলছবিৰ জনপ্ৰিয় গীতিকাৰ তথা উৰ্দু কবি জালে
আখতাৰ, বহু ৰাষ্ট্ৰীয় সন্মানেৰে বিভূষিত হিন্দী কবি কুঁৱৰ নাৰ্মাণ
আদিৰ সৈতে একে মঞ্চতে বহিবলৈ পাই মই গবিত হৈছিলোঁ।

মোৰ কবিতাৰ হিন্দী অনুবাদ আৰু পাঠ কৰিছিল আন এজ প্ৰখ্যাত কবি লক্ষ্ণৌৰ নৰেশ চাক্সেনাই। ২৫ জানুৱাৰী তাৰিখে সেই অনুষ্ঠান আকাশবাণী যোগে সমগ্ৰ ভাৰততে প্ৰচাৰিভ হৈছিল।

ছয়

১৯৯১ চনত মোৰ প্ৰথম কবিতা সংকলন 'সহযোদ্ধা' প্ৰকাশি হয়। গোৱালপাৰা সাহিত্য সভাই প্ৰকাশ কৰা সেই সংকলনত পাৰ্জ লিখি দিয়ে কবি অৱনী চক্ৰৱৰ্তীয়ে। আজি কবি অৱনী চক্ৰ^{ৱত} সন্ধানহীন। এটা দুখলগা কবিতাৰ নায়কৰ দৰে মানুহজন হে^ৱ গ'ল। (এই সুযোগতে তেখেতক শ্ৰদ্ধাৰে স্মৰণ কৰিছোঁ)।

মোৰ দ্বিতীয় কবিতা সংকলন 'অশ্লীল ৰাতিৰ কবিতা' প্ৰকাশি হয় ১৯৯৫ চনত। প্ৰকাশক গুৱাহাটীৰ ষ্টুডেন্টচ ষ্টোৰ্চ্।

মোৰ দুয়োটা সংকলনৰেই বেটুপাত অঙ্কন কৰিছে কলিকণ বিখ্যাত শিল্পী-কবি পূৰ্নেন্দু পত্ৰীয়ে।

মোটামুটিকৈ এইখিনিয়েই মোৰ কবিতাৰ দিনবোৰৰ গ্ৰন্থ ভ্ৰমন। এখন্তেক জিৰাই লওঁ। তাৰপিছত আকৌ আৰম্ভ কৰিম ন যাত্ৰা।

প্ৰথম স্তৰ ঃ

প্ৰথম স্তৰত প্ৰতিজন মতদাতাই নিম্নলিখিত প্ৰশ্নসমূহৰ উত্তৰ 'Questionare' ত উল্লেখ কৰামতে যিকোনো এটা বাচি লব পাৰিছিল। এই প্ৰক্ৰিয়াৰ ফলত আমাৰ মন্তব্যৰ ওপৰত কৰা মতবোৰৰ গুৰুত্ব (importance) আৰু প্ৰাসঙ্গিকতা স্পষ্টভাবে প্ৰকাশ পাইছে।

(ক) আমাৰ শিক্ষাপদ্ধতি ভৱিষ্যত জীৱনৰ বাবে উপযোগীনে ?

| WINIA LITTURE | হ্য | নহয় | মত প্রকাশত অনিচ্ছুক |
|---------------|-----|---|-----------------------------|
| মুঠ মতদাতা | 30 | 80 | famentanista oblase |
| ৫০ জ্ন/জনী | | 31 - 31 - 31 - 31 - 31 - 31 - 31 - 31 - | TO RESERVE LA MINISTRALISMO |

(খ) সাম্প্ৰতিক উশৃংখল যুৱ মানসিকতাৰ বাবে দায়ী কোন ?

| प्राप्ति | শিক্ষা ব্যৱস্থা | ছাত্র সমাজ | অভিভাৱক | মত প্ৰকাশত অনিচ্ছুক | |
|-----------------|-----------------|----------------|---------|----------------------|--|
| মুঠ মতদাতা সমাজ | 25 | ٩ | ъ | > | |
| ৫০ জন/জনী ১৩ | ० व्यवस्थ | সাধ্যম কি হোৱা | উচিত ? | Notes and the second | |

(গ) সৰ্বভাৰতীয় প্ৰতিযোগিতালৈ চাই অসমৰ শিক্ষা-ব্যৱস্থাৰ মাধ্যম কি হোৱা উচিত ?

| া) সৰ্বভাৰতীয় প্ৰতিখোগতাৰ | ইংৰাজী | হিন্দী | যিকোনো — | মত প্রকাশত অনিচ্ছুক |
|----------------------------|--------|--------|-------------|---------------------|
| মুঠ মতদাতা অসমায়। | >> | 8 | 040 × 1404 | 2 |
| ৫० জन/জनी २৫ | | TANK (| ਕ? | lg selle y , |

| (ঘ) মহাবিদ্যালয়ৰ সামাগ্ৰণ নামত | নহয় | মত প্ৰকাশত অনিচ্ছুক |
|---------------------------------|------|---------------------|
| মুঠ মতদাতা | 00 | 2 |
| ৫০ জন/জনী | (4)0 | |

বিভীয় তব ঃ

প্ৰথম স্তৰত যিকেইটা মৌলিক বিষয়ৰ ওপৰত মত গ্ৰহণ কৰা হৈছিল সেইকেইটা বিষয়ৰ ওপৰতে আমি বিতং ভাবে আলোচনা আৰু অধ্যয়ণ কৰিবলৈ কেইগৰাকীমান সচেতন ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক লগ ধৰি তেওঁলোকৰ সাক্ষাৎকাৰ গ্ৰহণ কৰিছিলোঁ। তেওঁলোকৰ অধ্যয়ণপুষ্ট উত্তৰবোৰ ঠাইৰ নাটনিৰ বাবে বত্তব্যৰ হানি নকৰাকৈ বাহুল্য বৰ্জন কৰি সম্পাদনা কৰা হৈছে।

আমাৰ প্ৰশ্নকেইটা আছিল ঃ

- ভৱিষ্যত কৰ্মজীৱনৰ সফলতাৰ বাবে বিভিন্নজনে আসোঁৱাহপূৰ্ণ অসমৰ শিক্ষা-পদ্ধতিক বাদ দি কাৰিকৰী শিক্ষা প্ৰচলনৰ পক্ষপাতী। এই সম্প্ৰিত আপোনাৰ মতামত ?
- অসমৰ সাম্প্ৰতিক উশৃংখল যুৱ মানসিকতাৰ প্ৰসংগত দেখা পোৱা গৈছে বিভিন্ন মহলে সময়ে সময়ে অকল ইয়াৰ কাৰণসমূহ উল্লেখ কৰি আহিছে। কাৰণ যিয়েই হওঁক, উশৃংখল যুৱ মানসিকতা ৰোধ কৰাৰ 'সমাধান সূত্ৰ' আপোনাৰ মতে কি ?
- সৰ্বভাৰতীয় স্তৰৰ প্ৰতিযোগিতাত অসমৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বিফলতাৰ পিনে লক্ষ্য কৰি বহুসংখ্যকে অসমৰ শিক্ষা-ব্যৱস্থাৰ মাধ্যমকে জগৰী কৰে। কিন্তু অকল মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তনে এই সমস্যাৰ সমাধান আনিবনে ?
- গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সামগ্ৰিক পৰিৱেশ সম্প্ৰকত আপোনাৰ মত কি ?

আমাৰ প্ৰশ্নৰ উত্তৰ সমূহ এনেধৰণৰ আছিল —

- এইক্ষেত্ৰত ময়ো আপোনাৰ স'তে একমত। প্ৰাণপ্ৰাচুৰ্যহীন শিক্ষা ব্যৱস্থাই আজি জন্ম দিছে মাথো এচাম মৌলিক চিন্তাহীন, নিয মেধাক। সাধাৰণ প্ৰচলিত শিক্ষাই ভৱিষ্যত কৰ্মজীৱনৰ, ভৱিষ্যত স্ব-নিয়োজনৰ কোনো স্পষ্ট ইংগিত নিদিয়ে। বাঢ়ি অহা নিব সমস্যালৈ চাই ভৱিষ্যতৰ নিৰাপত্তা বিচাৰি প্ৰচলিত সাধাৰণ শিক্ষাৰ পৰিৱৰ্তে কাৰিকৰী শিক্ষাক অগ্ৰাধিকাৰ দিয়াই বাস্তৱস হ'ব।
- সমাজ আৰু দেশৰ স্থালনৰ চূড়ান্ত ৰেহ-ৰূপ দেখি আজি যুৱ সমাজ বিপৰ্য্যন্ত হৈ পৰিছে। সাম্প্ৰতিক পৰিস্থিতিয়ে তেওঁলৈ ওপৰতো প্ৰভাৱ পেলাইছে। মই ভাবো সমাজৰ লগতে তেওঁলোকেও এক শুদ্ধ পথৰ সন্ধান কৰিব লাগিব আৰু শান্তি-প্ৰগ বাট-সুগম কৰাতো নিশ্চিত কৰিবলৈ সকলোৱে যত্নপৰ হব লাগিব। অভিভাৱসকলে তেওঁলোকৰ লৰা-ছোৱালীয়ে কু -কৰ্মত লিপ্ত হ'ব নোৱাৰে সেয়া দৃষ্টি ৰাখিব লাগিব।
- মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তন কৰিলে সমস্যাটোৰ সমাধানৰ ক্ষেত্ৰত এক দৃঢ় পদক্ষেপ হ'ব বুলিয়ে মই ভাবো। বিশেষকৈ সৰ্বভা প্ৰতিযোগিতামূলক সাক্ষাৎকাৰ ভিত্তিক পৰীক্ষাসমূহত শুদ্ধ আৰু শুৱলাকৈ ইংৰাজী ক'ব পৰা হ'ব লাগে। ৰাজ্যখনত ই শিক্ষাৰ অৱস্থা দুখ লগা হৈয়ে আছে; ইংৰাজী চৰ্চাৰ পৰিৱেশ নাই। মই ভাবো অষ্টম শ্ৰেণীৰ পৰা মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তন বাধ্যত কৰিব লাগে। অৱশ্যে সৰ্বভাৰতীয় স্তৰৰ প্ৰতিযোগিতামূলক পৰীক্ষাত অসমৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বিফলতাৰ কেতবোৰ আন আছে। যেনে ঃ
 - সঠিক 'information' ৰ অভাৱ
 - উপযুক্ত কিতাপ আলোচনীৰ অভাৱ। অসমীয়া মাধ্যমত তেনেকুৱা পৰীক্ষাৰ বাবে উপযুক্ত কিতাপ আলোচনী নাই বুলি
 - দিল্লী বিশ্ববিদ্যালয়, কলিকতা বিশ্ববিদ্যালয় আৰু ৰাজ্যৰ বাহিৰৰ আন বহুকেইখন বিশ্ববিদ্যালয়ৰ অধীনত I.A.S., I.F.S agement trainee আৰু অন্যান্য সৰ্বভাৰতীয় পৰীক্ষাৰ বাবে বিশেষভাৱে প্ৰতিষ্ঠা কৰা Study Circle, Carrier Cons Course আদি আছে। কিন্তু স্থানীয় বিশ্ববিদ্যালয় কেইখনত এনেধৰণৰ সুবিধাৰ অভাৱ।
 - আচলতে আমাৰ প্ৰতিযোগী মনৰ অভাৱ। ফলত আমি নিজকে সাহসেৰে নিয়োজিত কৰিব পৰা নাই।
- যুৱ উশৃংখলতাৰ প্ৰভাৱ গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়তো পৰিছে। আনহাতে ছাত্ৰ জিৰণি কোঠা থকা সত্ত্বেও ছাত্ৰ সকলে 'অফ্ ঠেক কৰিদৰেদি অহা যোৱা কৰি হাই-উৰুমি কৰি থকা দৃষ্টি গোচৰ হয়। আকৌ শ্ৰেণীকোঠাৰ অভাৱত বিশেষকৈ কলা শাখা

ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে প্ৰকাণ্ড প্ৰেক্ষাগৃহটোত ক্লাছ কৰা দৃশ্য পুতৌলগা । মুঠতে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সামগ্ৰিক পৰিৱেশ উন্নত বুলি কোৱাৰ থ'ল নাই।

- These two systems are not competitive but complementary to each other. To advocate only the second one is nothing but a reflection of the schizophrenic state of mind. Probably it is high time to give a second thought on both for the success in future.
- The youths of Assam will have to share a sympathetic relationship between human beings by utilising their thoughts for the greater welfare of our society.
- Obviously not. All of us, both students and teachers in Assam are interested only in stereoptyped thinking and routine treatment. We want to substitute swiming a river, say, Brahmaputra, by merely pinpointing it on a map. As we are in the oxygen tent — the result is failure. These lines suggests the solution too.
- Frankly speaking, there are no longer believers in the (academic) environment of our college except on the lunatic fringe. Irregularity of classes, inadequate library facilities etc., are responsible for such a tragic situation.

Deb Kumar Chakraborty

- সাম্প্ৰতিক অসমৰ শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ বিকল্প হিচাপে ময়ো কাৰিকৰী শিক্ষাক অগ্ৰাধিকাৰ দিব বিচাৰো। বৰ্ত্তমান অসমৰ শিক্ষা ব্যৱস্থাই আমাক চাকৰিমুখী কৰি গঢ়ি তোলে, এজন স্বাৱলন্বী মানুহ কৰি নহয়। তদুপৰি এই ব্যৱস্থাই আমাক পৰমুখাপেক্ষী কৰি গঢ়ি তোলাৰ লগতে নিৱনুৱা সমস্যাৰো জন্ম দিয়াইছে। কাৰিকৰী শিক্ষা বা বৃত্তিমূলক শিক্ষা ব্যৱস্থাই ইয়াৰ অন্যতম বিকল্প। কাৰণ এই শিক্ষাই আমাক এজন পূৰ্ণমানৱ কৰি গঢ়ি তোলাত সহায় কৰিব পাৰে। 'Cramming' ৰ ওপৰত প্ৰতিষ্ঠিত বৰ্ত্তমানৰ শিক্ষা ব্যৱস্থাই ভৱিষ্যতৰ নিৰাপত্তাৰ ইংগিত বহন নকৰে।
- উশৃংখল যুৱ মানসিকতা অসমৰ বহুচৰ্চিত বিষয়বোৰৰ অন্যতম। সাধাৰণতে দেখা যায় যে আমাৰ সমাজৰ ৰক্ষণশীল লোক এচামে যুৱসমাজ আৰু যুৱশক্তিক নৈৰাজ্য আৰু সন্ত্ৰাসৰ অন্ধকাৰ দিনৰ বাৰ্ত্তাবাহক হিচাপেহে গণ্য কৰে। কিন্তু যেতিয়ালৈকে সমাজে এক বিকল্প আদৰ্শ আৰু কাৰ্যকৰী পন্থা যুৱসমাজৰ আগত দাঙি ধৰিব নোৱাৰে তেতিয়ালৈকে তেওঁলোকৰ যুৱ মানসিকতা সম্পৰ্কে সমালোচনা অথবা মন্তব্য দিয়াৰ নৈতিক অধিকাৰো থাকিব নোৱাৰে। সেয়েহে মোৰ মতে সমাজে তেওঁলোকৰ আগত এক কাৰ্যকৰী আৰ্দশবাদী পন্থা দাঙি ধৰাটোহে আজিৰ তাৰিখত আদৰণীয় হ'ব। নহলে যুৱসমাজৰ অৱক্ষয়ে এদিন গোর্টেই সমাজ ব্যৱস্থাকে অচল কৰি তুলিব। গতিকে সময় থাকোতেই সকলোৱে ইতিবাচক দৃষ্টিভঙ্গীৰে সমস্যাটোৰ সমাধানৰ ক্ষেত্ৰত আগবাঢ়ি অহা সমীচীন হ'ব।
- মাধ্যম বোলোতে আপুনি কেৱল ভাষিক মাধ্যমকহে বুজাইছে নে শিক্ষাদান প্ৰক্ৰিয়াকো বুজাইছে সেয়া ধৰিব পৰা নাই। যি কি নহওঁক মই দুয়োবিধ বিষয়কে সামৰি লৈছোঁ।

আমি অসমৰ শিক্ষাদান প্ৰক্ৰিয়া অসম্পূৰ্ণ বুলিয়ে ধৰি লব পাৰো। বহুতো এনে পাঠ্যক্ৰম আছে যিটোৰ বিষয়ে তাত্বিকভাৱে জ্ঞান আাম অসমৰ বিষয় আৰু ব্যৱহাৰিক দৃষ্টিভংগীৰে পৰীক্ষা কৰিলেহে সি বোধগম্য হয়। কিন্তু দুখৰ বিষয় অসমৰ বৰ্ত্তমান শিক্ষা দিলেই সি বোধগম্য নহয়, তাক ব্যৱহাৰিক দৃষ্টিভংগীৰে পৰীক্ষা কৰিলেহে সি বোধগম্য হয়। কিন্তু দুখৰ বিষয় অসমৰ বৰ্ত্তমান শিক্ষা াদলেহ ।স বোৰ্ম্যন্য লবন, তাৰ প্ৰথমন শিক্ষা ব্যৱস্থাই এতিয়াও উক্ত দিশ সামৰি লোৱা নাই। আকৌ, ভাষিক মাধ্যমৰ ক্ষেত্ৰত মই কোনোপধ্যেই অসমীয়া ভাষাৰ পক্ষপাতী নহওঁ। ব্যৱস্থাহ এ।৩রাও ৬৬ নি শ্রুণাদিৰ উপযুক্ত প্রতিশব্দ পোৱা নাযায় আৰু পোৱা গ'লেও সি অতি শ্রুতিকটু হয়। তদুপৰি অসমীয়া অসমীয়া ভাষাত বিজ্ঞানৰ বহু শব্দাদিৰ উপযুক্ত প্রতিশব্দ পোৱা নাযায় আৰু পোৱা গ'লেও সি অতি শ্রুতিকটু হয়। তদুপৰি অসমীয়া অসমায়া ভাষাত বিভাগৰ বৰ্ষ নিৰ্মাণ কৰা কিন্তু আটাইতকৈ ডাঙৰ কথা হ'ল উচ্চতৰ মাধ্যামিকলৈ অসমীয়া ভাষাক মাধ্যম হিচাপে ভাষাত উচ্চ মানদণ্ডৰ কিতাপৰো সংখ্যা তাকৰ। কিন্তু আটাইতকৈ ডাঙৰ কথা হ'ল উচ্চতৰ মাধ্যামিকলৈ অসমীয়া ভাষাক মাধ্যম হিচাপে ভাষাত ডচ্চ মানদত্তৰ সম্পূৰ্ণ কৰাৰ পাছত এজন ছাত্ৰই যি দিশতেই অধ্যয়ন নকৰক কিয়, তেওঁ অসমীয়াত পঢ়িব নোৱাৰে। আকৌ লৈ ছাত্ৰ এজনে অধ্যয়ন সম্পূৰ্ণ কৰাৰ পাছত এজন ছাত্ৰই যি দিশতেই অধ্যয়ন নকৰক কিয়, তেওঁ অসমীয়াত পঢ়িব নোৱাৰে। আকৌ লৈ ছাত্ৰ এজনে অযাধন সমূহ বিষয়ে ইংৰাজী হোৱা হেতুকে অসমীয়া মাধ্যমত পঢ়া ছাত্ৰ এজনে বিফলতা মূৰ পাতি লব লগা হয়। সৰ্বভাৰতীয় যিকোনো পৰীক্ষাৰে মাধ্যম ইংৰাজী হোৱা হেতুকে অসমীয়া মাধ্যমত পঢ়া ছাত্ৰ এজনে বিফলতা মূৰ পাতি লব লগা হয়। সৰ্বভাৰতায় যিকোনো শ্ৰাম্বাত পৰ লগা হয়। গতিকে সন্দেহ নাই অসমীয়া ভাষাক মাধ্যম হিচাবে ২য় ভাষাৰ স্থান দি এটি আন্তৰ্জাতিক ভাষাক মাধ্যম হিচাপে গ্ৰহণ কৰিলে ছাত্ৰ চ্নৃত্ৰী সকল বেছি উপকৃত হ'ব।

44

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

মহাবিদ্যালয় আলোচনী

ত গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সামগ্রিক পৰিৱেশ বোলোতেই মনলৈ আহিছে সদায় সশ্মুখীন হোৱা সমস্যা কিছুমানৰ কথা। আমি পাঠ
গ্রহণত সদায় এক অভাৱনীয় সমস্যাৰ সশ্মুখীন হ'ব লগাত পৰে। সেয়া হ'ল বহাৰ সমস্যা; কাৰণ ছাত্র-ছাত্রীৰ অনুপাতে বেঞ্চৰ সংখ্যা
অতি কম। মহাবিদ্যালয়লৈ নতুনকৈ আহি এই সমস্যাটোত পৰি বিবৃধিত পৰিছিলো। ছয়জনকৈ এখন বেঞ্চত বহিলেও বহু ছাত্র-ছাত্রী
শ্রেণীৰ পিছফালে থিয়হৈ থাকিব লগা হয়; যিটো এক হতাশাজনক দৃশ্য। সেয়ে আমি বিজ্ঞান শাখাৰ ছাত্র-ছাত্রীসকলে বহু স্বাক্ষৰ
সম্বলিত এখন আবেদনপত্র কর্তৃপক্ষক জমা দিছিলো। কিছু কর্তৃপক্ষৰ সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আকৌ পাঠ গ্রহণ কৰি থকা অৱস্থাত বহু
ছাত্র-ছাত্রী বাৰান্দাত থিয়হৈ নাইবা অহা-যোৱা কৰি থাকোতে উচ্চস্বৰত কথা পাতি পাঠদান প্রক্রিয়াত বাধাৰ সৃষ্টি কৰে। তদুপৰি শ্রেণী
চলি থকা অৱস্থাত স্কুটাৰ, মটৰ চাইকেল বা গাড়ীৰ অহৰহ অহা- যোৱাই কেনেধৰণৰ হুলস্থূলীয়া পৰিৱেশৰ সৃষ্টি কৰে সেয়া সহজেই
অনুমেয়। গতিকে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ কর্তৃ পক্ষলৈ আমাৰ অনুৰোধ যাতে উক্ত সমস্যাসমূহৰ সমাধানৰ বাবে বিহিত ব্যৱস্থা
গ্রহণ কৰে।

অমিত কুমাৰ দাস

যি সময়ত অসমৰ দৰে ক্ষুদ্ৰ অথচ প্ৰচুৰ প্ৰাকৃতিক সম্পদৰে ভৰপুৰ ৰাজ্য এখনতো লাখ লাখ যুৱক যুৱতীয়ে উপযুক্ত শিক্ষা আৰু সুবিধাৰ অভাৱত জীৱিকাবিহীন ভাৱে এটা অন্ধকাৰাছন্ন ভৱিষ্যতৰ গহুৰলৈ আগবাঢ়ি গৈছে তেনেকুৱা পৰিস্থিতিত আমি ভৱিষ্যত কৰ্মজীৱনৰ সফলতাৰ বাবে আঁসোৱাহযুক্ত অসমৰ শিক্ষা পদ্ধতিক বাদ দি কাৰিকৰী শিক্ষাক অগ্ৰাধিকাৰ দিয়া উচিত হব বুলিয়ে মই ভাবো।

আজি অসমত যিকোনো উদ্যোগ প্ৰতিষ্ঠান, প্ৰকল্প গঢ়ি তুলিবলৈ হ'লে বাহিৰৰ পৰা কাৰিকৰী জ্ঞান সম্পন্ন ব্যক্তি লৈ আহিব লাগে। তাৰ ফলত এক বৃহৎ আকাৰৰ ধন আমাৰ হাতৰ পৰা গুচি যায় যিখিনিৰ প্ৰকৃত দাবীদাৰ অসমীয়া মানুহে হোৱা উচিত আছিল। কিন্তু অসমৰ ক্ৰটীপূৰ্ণ শিক্ষা পদ্ধতিৰ বাবে এই খিনি আজিলৈকে সম্ভৱ হৈ উঠা নাই।

আজি অসমৰ যুৱসমাজৰ বাবে এটি "অনুভৱ পৰিৱৰ্ত্তন আন্দোলন"ৰ প্ৰয়োজন হৈছে। অসমীয়া সমাজত যুৱ সমাজ আজি নিজেই নিজৰ অন্তিত্ব সম্পূৰ্কে সন্দিহান হৈ পৰিছে। আজি অসমৰ যুৱসমাজৰ হৈছে কি ? যুৱসমাজৰ এচামে ইজি মানি, ধৰ্মণ, হত্যা, লুষ্ঠন, অপহৰণ আদি কুটাঘাটমূলক কামৰ প্ৰতিহে যেন আকৰ্ষিত হৈছে। মদ, ভাং, ড্ৰাগছ আদিয়ে তেওঁলোকৰ উশৃংখলতা বঢ়াইছে। জীৱনৰ প্ৰকৃত তথা শাশ্বত উদ্দেশ্যৰ কথা পাহৰি গৈ তেওঁলোকে ইবিলাকৰ মাজতেই মৰ্ত্তত স্বৰ্গৰ হাবিয়াস কৰে। সেয়েহে ওপৰত উল্লেখ কৰা হৈছে আমাৰ যুৱসমাজক এটা 'অনুভৱ পৰিৱৰ্ত্তনৰ আন্দোলনৰ' প্ৰয়োজন হৈছে যাৰ সহায়ত তেওঁলোকে আত্মোপলিদ্ধি আৰু আত্মদৰ্শনৰ বিশ্লেষণৰ দ্বাৰা অধঃপতন উলপদ্ধি কৰিব পাৰে আৰু মূল্যবোধ আৰু চিন্তাৰ পৰিৱৰ্ত্তন ঘটাব পাৰে।

সৰ্বভাৰতীয় স্তৰৰ প্ৰতিযোগিতা সমূহত অসমৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বিফলতাৰ বাবে অসমৰ শিক্ষাৰ মাধ্যম জগৰীয়া নহয়। মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তনেই এই সমস্যাৰ সমাধান আনিব বুলি ভবা ভুল। আচলতে মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তনৰ কথা ভবাতকৈ পাঠদান নিয়মীয়া কৰা, উপযুক্ত পাঠ্যপুথিৰ অভাৱ দূৰ কৰা, ছাত্ৰ-ছাত্ৰীলৈ সকলোপ্ৰকাৰ সুযোগ-সুবিধা আগবঢ়োৱা, ইংৰাজী ভাষাৰ ওপৰত অধিক গুৰুত্ব দিয়া তথা ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ মাজত প্ৰতিযোগতিামূলক মনোভাৱ গঢ়ি তোলাত গুৰুত্ব দিলেই এইক্ষেত্ৰত লাভবান হ'ব পাৰি।

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সামগ্ৰিক পৰিৱেশ খুবেই বেয়া, পুতৌলগা। গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ এই বিশৃংখল পৰিস্থিতিৰ বাবে উশৃংখল যুৱ মানসিকতাও কিছু পৰিমানে দায়ী বুলি কলে অত্যুক্তি কৰা নহ'ব। প্ৰকৃতাৰ্থত উশৃংখল যুৱ মানসিকতাৰ প্ৰভাৱ গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়তো পৰিছে।ক্লাছ নকৰি তথাকথিত 'দাদা' সাজি ছোৱালী জোকোৱা, কৰিদৰত উচ্চস্বৰে কথা-বতৰা পাতি চলি থকা শ্ৰেণীসমূহণ বাধাৰ সৃষ্টি কৰা, স্কুটাৰ, মটৰ চাইকেল আদি মহাবিদ্যালয়ৰ চৌহদৰ মাজেদি অযথা দৌৰাই ফুৰা এচাম বিকৃত ৰুচিৰ ছাত্ৰৰ নিত্য-নৈমিত্তিৰ্প দিনলিপিৰ ভিতৰত পৰে। এই বিলাকে মহাবিদ্যালয়ৰ সামগ্ৰিক পৰিবেশ বিনষ্ট কৰি তুলিছে। অৱশ্যে এইটোও সত্য যে মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে বহুক্ষেত্ৰত পাবলগা নিমুতম সা-সুবিধা (যেনে: পুথিভঁৰালত পুথিৰ অভাৱ, পৰীক্ষাগাৰত সঁজুলিৰ অভাৱ, বহিবলৈ বেঞ্চৰ অভাৱ) নোপোৱাৰ ফলতো নানা সমস্যাত পৰিছে।

মীনাাক্ষী তালুকদাৰ

শিক্ষাৰ ত্বি উদ্দেশ্যৰ কথা কব লাগিলে মই ক'ম যি শিক্ষাৰ দ্বাৰা ব্যক্তিয়ে জীৱনবােধ আহৰণ কৰি নিজৰ লগতে আনৰ সুখ সমৃদ্ধিৰে এখন বন্ধুত্বপূৰ্ণ সমাজ প্ৰতিষ্ঠাৰ বাবে অনুপ্ৰাণিত হব পাৰে সেয়াই প্ৰকৃত শিক্ষা। শিক্ষাৰ এই উদ্দেশ্য মনত ৰাখিয়েই আমি শিক্ষা পদ্ধতিৰ দৰে গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয় এটাৰ কথা ভবা ভালা। শিক্ষাৰ এই উদ্দেশ্য যে সফল হোৱা নাই তাত বিন্দুমাত্ৰও সন্দেহ নাই। নতুনত্ব নথকা, বাস্তৱৰ লগত সংগতি বিহীন, একঘেয়েমী ধৰণৰ শিক্ষা ব্যৱস্থাই আমাক কেৱল চাকৰ্ৰিমুখী কৰিহে তুলিছে। ওপৰত উদ্লেখ কৰা ধৰণৰ শিক্ষাই কেৱল আত্মপ্ৰতিষ্ঠাবাদৰহে পোষকতা কৰিলেও বাস্তৱ ক্ষেত্ৰত কিন্তু সংস্থানৰ পথ বিচাৰি নাপাই শিক্ষিত চামে নিৱনুৱাৰ সংখ্যাটো দিনক দিনে বঢ়াইহে আছে। বিজ্ঞান আৰু প্ৰযুক্তিবিদ্যাৰ উন্নতিৰ ফলস্বৰূপে আজি আমাক কাৰিকৰী শিক্ষাৰ শিক্ষিত লোকৰ বেছি আৱশ্যক যদিও বিভিন্ন কাৰিকৰী প্ৰতিষ্ঠান, মহাবিদ্যালয় আদিৰ পৰা ওলাই অহা বিপুল সংখ্যাকে নিবনুৱা হোৱালৈ চাই এইক্ষেত্ৰতো নতুনকৈ ভাবিবৰ থল নথকা নহয়। পৰ্য্যাপ্ত উদ্যোগীকৰণ তথা ব্যক্তিগতভাৱে বৃত্তিমুখী কৰ্মত নিয়োজিত হোৱাতো আজি সময়ৰ দাবী হিচাপেই পৰিগণিত হৈছে। অকাৰিকৰী শিক্ষাৰ লগতে কাৰিকৰী শিক্ষাৰ ওপৰতো সমানে গুৰুত্ব দি দুয়োটাকে সমান্তৰালভাবে প্ৰচলনৰ লগতে আমাৰ প্ৰচলিত আত্মঘাতী মূল্যবাধ পৰিৱৰ্ত্তনৰ নৈতিক শিক্ষাইহে দেশ আৰু স্বজ্ঞাতিৰ কল্যাণৰ পথ প্ৰশন্ত কৰি দিব।

যুৱ উশৃংখলতাৰ বাবে মূলতঃ দায়ী বৰ্ত্তমানৰ সামাজিক পৰিৱেশ। বিপর্যস্ত সমাজ ব্যৱস্থাৰ উন্নতিৰ বাবে প্রতিজন ব্যক্তিয়ে ভূমিকা লব লাগিব। বিশেষকৈ অভিভাৱক সকলৰ দায়িত্ব বেছি। শিক্ষক তথা বুদ্ধিজীৱি সকলে যুৱসমাজক সঠিক পথ দেখুৱাব লাগিব। শিক্ষা ব্যৱস্থা সলনি কৰি নতুন ৰূপত গঢ়ি তুলিব লাগিব, যাৰদ্বাৰা নৈতিক শিক্ষা দিয়াৰ লগতে যুৱসমাজ কর্মসংস্কৃতিৰ প্রতি আকর্ষিত হব পাৰে। প্রশাসন যন্ত্রটোও শক্তিশালী ৰূপত গঢ়ি তুলি এই উশৃংখলতা ৰোধ কৰাৰ বাবে সচেষ্ট হোৱা নিত্যান্তই আৱশ্যক।

ৰাজ্যখনততো ইংৰাজী মাধ্যমৰ বিদ্যালয়ৰ বা জুনিয়ৰ কলেজৰ সংখ্যা কম নহয়। গতিকে মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তন কৰিলেই সমস্যাটোৰ সমাধানৰ ক্ষেত্ৰত কিবা বিশেষ সুফল পোৱা যাব বুলি ক'ব নোৱাৰি। আজি অসমৰ শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰত বিভিন্ন সমস্যাই দেখা দিছে। সমগ্ৰ সমাধানৰ ক্ষেত্ৰত কিবা বিশেষ সুফল পোৱা যাব বুলি ক'ব নোৱাৰি। আজি অসমৰ শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰত বিভিন্ন সমস্যাই দেখা দিছে। সমগ্ৰ শিক্ষা পদ্ধতিকে নতুন ৰূপত গঢ়ি তুলিবলৈ হলে শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ আমূল পৰিৱৰ্ত্তন কৰিবই লাগিব। কিন্তু তাৰ সমাধান নিশ্চয় মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তন নহয়। মাধ্যম পৰিৱৰ্ত্তন এটা বিৰ্তকিত বিষয়। মাতৃভাষাৰ দ্বাৰাইহে যে ল'ৰা-ছোৱালীয়ে সহজভাবে শিক্ষা লাভ কৰিব পাৰে বিশেষজ্ঞসকলৰ

সেয়।
মত। অৱশ্যে ইংৰাজী আন্তৰষ্ট্ৰীয় ভাষা হোৱা হেতুকে আৰু সৰ্বভাৰতীয় প্ৰতিযোগিতামূলক পৰীক্ষাসমূহত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ কৃতকাৰ্যতাৰ বাবেই ইংৰাজী ভাষাক অধিক গুৰুত্ব দিয়া সময়োপযোগী হ'ব। মহাবিদ্যালয় সমূহত অসমীয়া আৰু ইংৰাজী দুয়োটা ভাষা মাধ্যম হিচাপে বাবেই ইংৰাজী ভাষাক অধিক গুৰুত্ব দিয়া সময়োপযোগী হ'ব। মহাবিদ্যালয় সমূহত অসমীয়া আৰু ইংৰাজী দুয়োটা ভাষা মাধ্যম হিচাপে বাচি লব পাৰে। চলাৰ ফলত পাঠদান প্ৰক্ৰিয়াত কিছু বাধাৰ সৃষ্টি হলেও ল'ৰা-ছোৱালীয়ে ইচ্ছা মতে যিকোনো এটা ভাষা মাধ্যম হিচাপে বাচি লব পাৰে। আচলতে মৃষ্টিমেয় কেইজনমান ছাত্ৰৰ বাহিৰে সৰহ সংখ্যকে বিদেশী ভাষা এটাক মাধ্যাম হিচাপে ল'ব লাগিলে যথেষ্ট অসুবিধাৰ সন্মুখীন আচলতে মৃষ্টিমেয় কেইজনমান ছাত্ৰৰ বাহিৰে সৰহ সংখ্যকে বিদেশী ভাষা এটাক মাধ্যমে হিচাপে ল'ব লাগিলে যথেষ্ট অসুবিধাৰ সন্মুখীন হব। তাতোঁকৈ উচ্চ মাধ্যমিক পৰ্য্যায়ৰ পৰা ইংৰাজী ভাষা অধিক গুৰুত্ব দি শিকোৱাহে উচিত হ'ব। তদুপৰি পাঠদান নিয়মীয়া কৰা, পাঠ্যক্ৰমৰ মানদণ্ড সৰ্বভাৰতীয় পৰ্য্যায়ৰ কৰা, ছাত্ৰ-ছাত্ৰীলৈ যথাসম্ভৱ সা-সুবিধা আগবঢ়োৱাহে উচিত হ'ব।

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সামগ্রিক পৰিৱেশ উন্নত বুলি কব নোৱাৰি। শৈক্ষিক পৰিৱেশ উন্নতিত প্রকৃততে ছাত্র-ছাত্রী আৰু গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সামগ্রিক পৰিৱেশ উন্নত বুলি কব নোৱাৰি। শৈক্ষিক পৰিৱেশ উন্নতিত প্রকৃততে ছাত্র-ছাত্রী আৰু শিক্ষক-শিক্ষয়িত্রীসকলৰ দায়িত্ব আছে। সুস্থ শৈক্ষিক বাতাবৰণ গঢ়ি তোলাত তেওঁলোকেই মুখ্য ভূমিকা লব পাৰে। অৱশ্যে বিভিন্ন অভাৱ-অভিযোগ সমূহে এইক্ষেত্রত অনুৰূপ প্রভাৱ পেলায়। সি যিয়েই নহওক সুস্থ সবল শৈক্ষিক পৰিৱেশ গঢ়িবলৈ লবা-ছোৱালীয়ে অভাৱ-অভিযোগ সমূহে এইক্ষেত্রত অনুৰূপ প্রভাৱ পেলায় কর্ত্বপক্ষ এইক্ষেত্রত কাঢ়া হব লাগিব। শিক্ষক ছাত্রৰ মধুৰ সম্পূক্ত অথবা শৃংখলাবদ্ধতা, নিয়মানুৱর্তিতা মানিবই লাগিব। মহাবিদ্যালয় কর্ত্বপক্ষ এইক্ষেত্রত কাঢ়া হব লাগিব। শিক্ষক ছাত্রৰ মধুৰ সম্পূক্ত অথবা লবা-ছোৱালীৰ মাজত নিয়মানুৱর্তিতাৰ অভাৱ পৰিলক্ষিত হয়। মুষ্টিমেয় কেইজনমান ছাত্র-ছাত্রীৰ বাহিৰে সৰহ সংখ্যকে যেন তেওঁলোকৰ লবা-ছোৱালীৰ মাজত নিয়মানুৱর্তিতাৰ অভাৱ পৰিলক্ষিত হয়। ৰোমিও-জুলিয়েট সকলৰ পৰিচিত দৃশ্যইও দৃষ্টিকটুভাৱে শৈক্ষিক পৰিৱেশৰ ওপৰত মুখ্য কর্তব্যৰ প্রতি সচেতন নহয় তেনে অনুভৱ হয়। ৰোমিও-জুলিয়েট সকলৰ পৰিচিত দৃশ্যইও দৃষ্টিকটুভাৱে শৈক্ষিক পৰিৱেশৰ ওপৰত মুখ্য কর্তব্যৰ সেয়া অস্থীকাৰ কৰিব নোৱাৰি। আকৌ এচাম ছাত্র-ছাত্রীৰ বেপৰোৱা মনোভাব, কিছুমানৰ নিজকে নেতা বোলোৱাৰ প্রৱণতা, পেলায় সেয়া অস্থীকাৰ কৰিব নোৱাৰি থাকেইও পৰিৱেশৰ ওপৰত প্রভাৱ পেলাইছে।

চন্দন নাথ

69

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

মহাবিদ্যালয় আলোচনী

নোৰত কিছু কথা ঃ

বৰ্তমান অসমৰ শিক্ষা-ব্যৱস্থাৰ কেৰোণসমূহ আৰু ইয়াৰ সমাধান তথা শৈক্ষিক পৰিৱেশ বা যুৱ উশৃংখলতা সম্পৰ্কত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ মতামত সমূহ বিচাৰ কৰাৰ দায়িত্ব শিক্ষাবিদ, বুদ্ধিজীৱি তথা আপোনাসৱৰ হাতত। সেয়ে হলেও সমীক্ষাত্মক সাক্ষাৎকাৰটোৱে মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ চিন্তা আৰু মূল্যবোধৰ কিছু নতুন দিশ উদ্মোচন কৰিছে, যি চিন্তা আৰু মূল্যবোধৰ যুক্তিপূৰ্ণ বিশ্লেষণে হয়তো সমস্যাটোৰ সমাধান সূত্ৰ হিচাপে কিছু হলেও ইতিবাচক ভূমিকা লব পাৰে। অৱশ্যে এইটোও ঠিক বৰ্তমান অসমৰ শিক্ষা পদ্ধতি, ইয়াৰ মাধ্যম, শৈক্ষিক পৰিৱেশ অথবা যুৱ উশৃংখলতা সম্পৰ্কে যথেষ্ট আলোচনা-বিলোচনা, বিৰ্তক আদি হৈছে। তথাপিও সমস্যাবোৰৰ সমাধানৰ ক্ষেত্ৰত কাৰ্যকৰী পদক্ষেপ দেখা নাযায়। অন্ততঃ শিক্ষা তথা যুৱ উশৃংখলতাৰ দৰে স্পৰ্শকাতৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ বিষয়ত দেশ আৰু জাতিৰ মংগল চিন্তা কৰা সংশ্লিষ্ট সকলো পক্ষীং গা এৰা দিয়া মনোভাৱ পৰিত্যাগ কৰি কিবা এটা কৰাৰ বাবে আগবাঢ়ি অহা ভাল।

সামাজিক অৱক্ষয় ৰোধ কৰাত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ ভূমিকা

(ছাত্ৰশক্তি এক বিৰাট শক্তি। যোৱা দশকটোৰ অসম আন্দোলন, কেইবছৰমান আগতেফ্ৰাম্স আৰু চুবুৰীয়া চীনৰ বৃহৎ গণ অভ্যুদয়ে ছাত্ৰশক্তিৰ বিষয়ে স্পষ্ট সাক্ষ্য দাঙি ধৰে। বৰ্ত্তমান বিপৰ্যন্ত সমাজৰ উচ্ছন্নপ্ৰায় ৰেহ-ৰূপে গোৰ্টেই সমাজখনকে ধূলিস্যাৎ কৰাৰ আগতে এই নতুন প্ৰজন্মটোৱে কিবা এটা কৰিব পাৰে। এই সম্পঁকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ মাজত এখন ৰচনা প্ৰতিযোগিতাৰ আয়োজন কৰা হৈছিল। অৱশ্যে সামাজিক অৱক্ষয়ৰ বিভিন্ন দিশত তেওঁলোকৰ কাৰ্যপন্থা কেনেধৰণৰ হব সেয়া স্পৰ্ষ্টকৈ দাঙি ধৰিবলৈ সক্ষম হোৱা নাছিল। তথাপিও সামাজিক অবক্ষয় ৰোধ কৰাত তেওঁলোকৰো যে যথেষ্ট কৰণীয় আছে সেয়া প্ৰকাশ পাইছিল। তাৰে গুৰুত্বপূৰ্ণ কিছু অংশ সম্পাদিত ৰূপত প্ৰকাশ কৰা

ছাত্ৰসমাজৰ প্ৰথম কাম হৈছে নানা 'ism' বা মতাদৰ্শৰ ভিত্তিত বহুধাবিভক্ত ছাত্ৰসমাজক সংগঠিত কৰা। সমাজৰ বৃহৎ স্বাৰ্থৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখি ছাত্ৰসমাজ একত্ৰিত হোৱাটো অতীব প্ৰয়োজন। বৰ্ত্তমান শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ আমূল পৰিৱৰ্ত্তন ঘটাবলৈ তেওঁলোকে চেষ্টা কৰিব লাগিব। আমাৰ পাঠ্যক্ৰমে দেশ তথা জাতিৰ প্ৰতি আমাৰ কৰ্তব্যবোধ জগাঁই তুলিব পাৰিব লাগিব। আকৌ আমোলমুখী শিক্ষা ব্যবস্থাৰ পৰিৱৰ্ত্তন ঘটাই পৰিৱৰ্ত্তিত সময়ৰ লগত খাপ-খোৱাঁকৈ নতুন শিক্ষাব্যৱস্থাৰ প্ৰবৰ্তন কৰিব লাগিব।

ছাত্ৰসমাজে প্ৰতিজন মানুহকে সামাজিক দায়বদ্ধতা সম্পৰ্কে সচেতন কৰিব লাগিব। প্ৰ<mark>তিজন মানুহৰে যে দেশ</mark> তথা জাতিৰ বাবে কৰণীয় আছে আৰু প্ৰতিজন ব্যক্তিয়ে যে দেশ আৰু জাতিৰ প্ৰগতিৰ বাবে বিভিন্ন ধৰণে কাম কৰিব পাৰে, সেই সম্বন্ধে ছাত্ৰসমাৰ্জেই তেওঁলোকক সচেতন কৰিব পাৰে। বিভিন্ন অপৰ্কম, দুৰ্নীতি, অপসংস্কৃতি আদি ৰোধ কৰাৰ বাবে ছাত্ৰসমাজে বিভিন্ন ব্যৱস্থা লব পাৰে। কোনো ব্যক্তিয়ে যাতে অপকৰ্মত লিপ্ত হব নোৱাৰে তাৰবাবে চুবুৰীয়ে চুবুৰীয়ে স্বেচ্ছাসেৱক বাহিনী খুলি দিও এইক্ষেত্ৰত নজৰ দিয়াব পাৰে। মুঠতে প্ৰতিটো অপকৰ্মৰ বিৰুদ্ধে যাতে সমাজত ৰাজনৈতিক মুনাফাৰ বাৱে বিভেদৰ সৃষ্টি কৰিব নোৱাৰে তাৰ প্ৰতিও সদা-স<mark>ৰ্তক হৈ থাকিব পাৰে।</mark>

ভৱিষ্যতৰ বাৰ্তাবাহক স্বৰূপ ছাত্ৰসমাজে সামাজিক অৱক্ষয় ৰোধ কৰাৰ বাবে ভূমিকা লব পাৰে। শিক্ষাৰ উদ্দেশ্য সকলো জ্ঞান আৰু আৰ্দশ কেবল মুখস্থ কৰি পৰীক্ষাত লিখিবৰ বাবে বা প্ৰয়োজন অনুসৰি বক্তৃতাৰ ফুলজাৰিৰে পাণ্ডিত্য জাহিৰ কৰা নহয়। সেয়া বাস্তৱত প্ৰয়োগ কৰিব লাগিব। এক সুস্থ-সবল নৈতিক আদৰ্শবোধেৰে তেওঁলোকে দুৰ্নীতি, অন্যায়, অনীতি মুক্ত সমাজ গঠনৰ প্ৰক্ৰিয়াত আগভাগ লব লাগিব।

নিজকে আত্মসমালোচনাৰে শুদ্ধ পথত অনাটোৱে তেওঁলোকৰ প্ৰথম কাম হ'ব। বৰ্ত্তমান জটিল পৰিস্থিতিত তেওঁলোকে নিজৰ মূল দায়িত্ব নিষ্ঠা আৰু সততাৰে পালন কৰাৰ লগতে সমাজৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ কৰিব লগা আছে। আচলতে এই বৃহৎ শক্তিটোৱে প্ৰতিটো অন্যায়-অনীতিৰ বিৰুদ্ধে সদা জাগ্ৰত হৈ থাকিলে সামাজিক বিশৃংখলাসমূহ বহু পৰিমানে আঁতৰ হ'ব বুলি আশা কৰিব পাৰি।

স্থান্ত হৈ বিজ্ঞান বিশ্ব প্ৰতিষ্ঠিত হ'ব লাগিব তেওঁলোকৰ চিন্তাধাৰা। সামাজিক অপংস্কৃতি, কু-সংস্কাৰ, অন্যায়-অবিচাৰ আদি আঁতৰ কৰাৰ কাৰণে তেওঁলোক দৃঢ়প্ৰতিজ্ঞ হ'ব লাগিব। সভা-সমিতি বা যিকোনো সংকাশ, সংস্থান উপায়েৰে তেওঁলোকে এইবোৰৰ বিৰুদ্ধে জনসাধাৰণক জাগ্ৰত কৰিব পাৰে। ছাত্ৰসমাজে এইক্ষেত্ৰত আগভাগ ললে ভশাৱেৰে তেওঁলোড । আৰু সমাজকো প্ৰভাৱিত কৰাৰ চেষ্টা কৰিলে কিবা সুফল আশা কৰিব পাৰি। প্ৰয়োজন সাপেক্ষে বিক্ষোভ, হ্ৰতাল আদি অহিংস নীতিৰ আশ্ৰুয় লোৱাটো সময়োপযোগী হ'ব।

প্রদীপ দাস

বলিষ্ঠ আদর্শৰে ছাত্রসমার্জেই বিপর্যস্থ সমাজক নতুন পথৰ সন্ধান দিব পাৰে। অৱশ্যে ছাত্রসমাজৰ কণ্ঠ হব লাগিব পৰিষ্কাৰ, যাতে যুগোচিত নতুন ধ্যান ধাৰণাৰ দ্বাৰা সমাজে প্রগতিৰ পথত অগ্রসৰ হ'ব পাৰে।

চূড়ান্ত সামাজিক অৱক্ষয়ে যে সমাজৰ ভৱিষ্যত অন্ধকাৰময় কৰি তুলিছে সেই সন্ত্ৰপ্নে সমাজক সচেতন কৰাৰ আগতে তেওঁলোকেও আত্মবিশ্লেষণ কৰিব লাগিব। সামাজিক অৱক্ষয়ৰ বাবে তেওঁলোকো বহু পৰিমাণে দায়ী সেয়া অস্থীকাৰ কৰিলে নহ'ব। বৰঞ্চ যুক্তিৰে নিজকে ফঁইয়াই চাই এইক্ষেত্ৰত সমাধানৰ নতুন পথ উলিয়াব লাগিব। নিজৰ নিজৰ বেপৰোৱা অসুস্থ মানসিকতা ত্যাগ কৰিব লাগিব। তাৰ ঠাইত প্ৰগতিশীল চিন্তা চৰ্চাৰে নিজৰ নিজৰ দায়িত্ব সূচাৰুৰপে পালন কৰাৰ লগতে সমাজৰ তথা দেশৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ দায়বদ্ধতা সন্বন্ধে সচেতন হৈ থাকিব লাগিব। সমাজৰ ক্ষয়িষ্কৃতাৰ প্ৰতিটো দিশ চালি-জাৰি চাই বাস্তৱ সন্মত উপায়ে এইবোৰৰ নিৰ্মূল কৰাটোৱেঁই আজিৰ তাৰিখত তেওঁলোকৰ আন এক কৰ্তব্য।

..... সমাজৰ প্ৰতিজন মানুহকে সমাজৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ দায়বদ্ধতাৰ বিষয়ে স্পষ্টকৈ বুজাই দিব লাগিব। নিৰক্ষৰ মানুহক স্বাক্ষৰ কৰাৰ দায়িত্ব, সমাজৰ বিভিন্ন উন্নয়নমূলক কাম আদি নিষ্ঠা আৰু সততাৰে পালন কৰাৰ দায়িত্ব ছাত্ৰসমাজেও লব পাৰে। প্ৰতিটো অন্যায় কামৰ বিৰুদ্ধে তেওঁলোক নিজেই আগবাঢ়ি আহিব লাগিব। নিছাযুক্ত দ্বব্যৰ অবাধ প্ৰচলন, বিভিন্ন সামাজিক কু:সংস্কাৰ, অপকৰ্ম দুৰ্নীতি আদিৰ বিৰুদ্ধে তেওঁলোকৰ পদক্ষেপ হ'ব লাগিব নিৰপেক্ষ। তেনে অপকৰ্মত লিপ্ত সংশ্লিষ্ট সকলো পক্ষকে তাৰপৰা বিৰত কৰাৰ বাবে সকীয়াই দিয়াৰ লগতে সামাজিক ভাৱে সভা সমিতিৰ আয়োজন কৰি নানা ব্যৱস্থা লব পাৰি। প্ৰয়োজন সাপেক্ষে প্ৰতিটো অন্যায় কামৰ বিৰুদ্ধে বিক্ষোভ, হৰতাল, শান্তিপূৰ্ণ শোভাযাত্ৰা আদিৰ দ্বাৰাও তীব্ৰ বিপ্লৱ গঢ়ি তুলিব পাৰি।

— ৰত্বেশ্বৰ ৰায়

'জ্ঞান, চৰিত্ৰ আৰু একতা' এইকেইটা গুনৰ সমন্বয় আদর্শবান ব্যক্তিৰ বাবে অৱশ্যম্ভাৱী। কিন্তু সমাজৰ বেছি সংখ্যক মানুহেৰে এই কেইটা গুনৰ অভাৱ দেখা যায়। স্থাপিত মূল্যবোধে আজিৰ সমাজত অৱক্ষয়ৰ সৃষ্টি কৰিছে। অৰ্থনৈতিক দুৰৱস্থাই আমাৰ সমাজৰ এই অৱস্থাৰ সৃষ্টি কৰিছে বুলি পলায়নবদী মনোভাৱেৰে আমি হাত সাৱটি বহি থাকিলে সমস্যাৰ সমাধান আশা কৰিব নোৱাৰি। আচলতে আমাৰ চিন্তা আৰু মূল্যবোধত নতুন ৰূপ দিয়াৰ বাবে আমি যত্নপৰ হ'ব লাগিব, কিন্তু সেয়া সহজ কথা নহয়। কিতাপত থকা আদৰ্শ আৰু সততাৰ বাণীয়ে কাকো প্ৰভাৱিত নকৰে । ছাত্ৰসমাজেই যদি নেতৃত্ব লৈ এইক্ষেত্ৰত সজাগতাৰ সৃষ্টি কৰে কিবা পৰিৱৰ্ত্তন আশা কৰাটো একবাৰেই অসন্তৱ নহয়। বৰ্ত্তমান সমাজত চলি থকা ব্যাপক দুনীতি নিৰ্মূলৰ বাবে ছাত্ৰসমাজে অহিন আদালতৰ কাষ চাপিব পাৰে দুৰ্নীতিবান লোকক প্ৰশ্ৰয় নিদি সেইসকলক তেনে কাম নকৰিবলৈ সৰ্তক কৰি দিয়াৰ উপৰিও প্ৰয়োজন হ'লে আহি ত্ৰাদালতৰ ওচৰ চাপিব পাৰি। বৰ্ত্তমান সন্ত্ৰাসবাদী কাৰ্যকলাপ অথবা কুটঘাটমূলক কাৰ্যকলাপ সমূহৰ বিৰুদ্ধেও মা মতাৰ সাহস ছাত্ৰ সমাজৰ থাকিব লাগিব। সুবিধাবদী মানুহবোৰৰ বিৰুদ্ধে সামাজিক ভাবেও সভা-সমিতিৰ আহ্বা কৰি তেনে লোকক হেয় কৰিব পাৰে। অন্ধাবিশ্বাস, অপসংস্কৃতি, কু:সংস্কাৰ এইবোৰৰ বিৰুদ্ধে জনসাধাৰণক সচেত কৰি তুলিব পাৰি। সামাজিক উশৃংখলতাৰ কাৰক নিছাযুক্ত দ্ৰব্যসমূহৰ অবাধ প্ৰচলন ৰোধ কৰাৰ বাবে সামাজিকভা তীব্ৰ প্ৰতিবন্ধক গঢ়ি তুলিব পাৰে। দৰকাৰ হ'লে তেনে ঘাটিসমূহ উচ্ছেদ কৰি দিব লাগে। অন্যায়, অবিচাৰ আ সম্পৰ্কত সচেতন হৈ ন্যায় বিচাৰৰ বাবে ব্যৱস্থা লোৱাৰ বাবে ছাত্ৰসমাজ আগবাঢ়ি আহিব লাগিব। বিভিন্ন ৰাজনৈতি দলৰ ভুৱা প্ৰলোভন, ৰাৰ্জনৈতিক চল-চাতুৰি আদিয়ে যাতে জনসাধাৰণক বিপথে পৰিচালিত কৰিব নোৱাৰে ত প্ৰতিও ছাত্ৰ-সমাজে চকু দিব লাগে। অৱশ্যে ছাত্ৰসকলে সমাজৰ বিভিন্ন দিশত চলি থকা অৱক্ষয়বোৰৰ বাবে সুকী সুকীয়াকৈ আৰু ঠাই বিশেষে ভিন ভিনকৈ কমিটি পাতি সেঁইবোৰৰ বিৰুদ্ধে ব্যৱস্থা লব পাৰে। অৱশ্যে প্ৰতি পদক্ষেপ

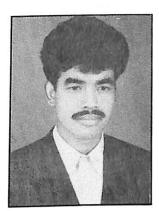
— मिश्रष्ट

Photo feature — Snaps and Faces

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰ সন্থা



বিজু কলিতা উপ-সভাপতি



প্ৰনৱ কুমাৰ ৰায় সাধাৰন সম্পাদক



বলভদ্র পাঠক সহঃ সাঃ সম্পাদক



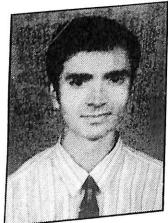
শ্বপন কুমাৰ দাস সম্পাদক, সাংস্কৃতিক বিভাগ



ত্ৰিদীপ কুমাৰ ৰয় সম্পাদক, আলোচনী



জ্যোতির্ম্ময় দাস সম্পাদক, উৎসৱ বিভাগ



চন্দন নাথ সম্পাদক, তৰ্ক আৰু আলোচনী চক্ৰ বিভাগ



তাবুল হুছেইন মণ্ডল সম্পাদক, বহিঃদ্বাৰ ক্ৰীড়া



ৰণজিৎ সিনহা ৰায় সম্পাদক, অন্তঃদ্বাৰ ক্ৰীড়া



তপন কুমাৰ দাস সম্পাদক, ফুটবল আৰু ভলীবল বিভাগ



উত্তম কুমাৰ সিংহ সম্পাদক, ক্ৰিকেট বিভাগ



কিশোৰ কুমাৰ ৰাভা সম্পাদক, ছাত্ৰ জিৰণি কোঠা

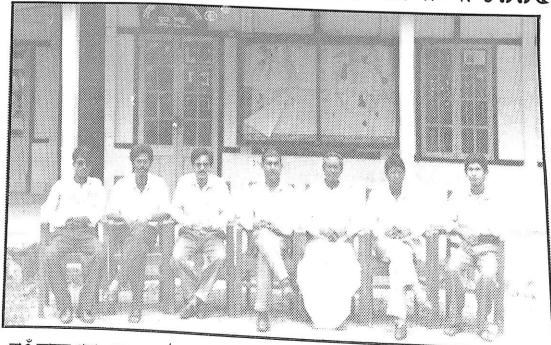


সঞ্জীৱ কুমাৰ ৰাভা সম্পাদক, সমাজ সেৱা



ছন্দামিতা দেৱী সম্পাদিকা, ছাত্ৰী জিৰণি কোঠা

সম্পাদনা সমিতিঃ গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালঃ আলোচনী ১৯৯৫-৯৬ চন



বাওঁ ফালৰ পৰা ঃ বলভদ্ৰ পাঠক, খৰ্গেশ্বৰ নায়ক, সম্ভোষ মিশ্ৰ, ৰতন ভট্টাচাৰ্য্য, ড. ৰৱীন চৌধুৰী, জয়নাল আবেদিন, ত্ৰিদীপ কুমাৰ ৰয় 🐞 উপস্থিত নাই ঃ অৰুন শৰ্মা, প্ৰনৱ ৰয়



অমল মেধি
গুঃ বিঃ যুৱ মহোৎসৱত ৪টা সোণৰ
পদবোৰে একেৰাহে ২য় বছৰৰ
বাবে সুকুমাৰ কলা বিভাগত শ্ৰেষ্ঠ
প্ৰতিযোগী । পশ্চিমবন্ধৰ কল্যানী
বিশ্ববিদ্যালয়ত অনুষ্ঠিত আন্তঃ
বিশ্ববিদ্যালয়ৰ যুৱ মহোৎসৱত
যোগদান কৰাৰ সুযোগ লাভ কৰে।



শ্বাবনা আনজুম
গুঃ বিঃ যুৱ মহোৎসৱত শাস্ত্রীয়
সংগীতত সোণৰ পদক বিজেতা।
পশ্চিমবঙ্গৰ কল্যানী বিশ্ববিদ্যালয়ত
অনুষ্ঠিত আন্তঃ বিশ্ববিদ্যালয় যুৱ
মহোৎসৱত যোগদান কৰে।



হাজিৰ আলী সৰকাৰ বহিঃদ্বাৰ বিভাগৰ শ্ৰেষ্ঠ খেলুৱৈ



বৰ্ণালি শৰ্মা বহিঃদ্বাৰ বিভাগৰ শ্ৰেষ্ঠা খেলুৱৈ



নাচৰিণ ফিৰদোসী ইছলাম একেৰাহে ৩য় বছৰৰ বাবে শ্ৰেষ্ঠা গায়িকা



অনামিকা ভট্টাচাৰ্য্য একেৰাহে দুবছৰৰ বাবে তৰ্ক আৰু আ. চ. বিভাগৰ শ্ৰেষ্ঠা প্ৰতিযোগী



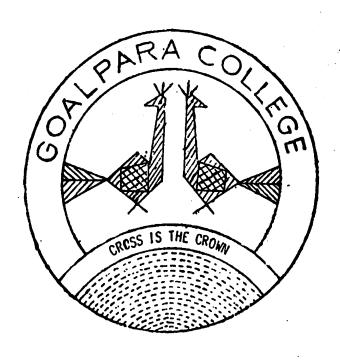
মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ শ্ৰেষ্ঠ ভলীবল দল বহি (বাওঁফালৰ পৰা) ঃ তপন কুমাৰ দাস (সম্পাদক, ফুটবল আৰু ভলীবল বিভাগ), কৰ্ম্মপ কুমাৰ দাস (দলপতি), অভিজিৎ দাস। থিয় হৈ (বাওঁফালৰ পৰা) ঃ আবু ছামাম শ্বেখ, ৰফিকুল ইছলাম, মজমুল ইছলাম , বিনয় কৃষ্ণ ভৰালী।



শ্ৰী অমিত কুমাৰ দাস শ্ৰেষ্ঠ সাহিত্য প্ৰতিযোগী

GOALPARA MAHAVIDYALAYA ALACHONI

28th Volume 1995-96



Editor: Tridip Kumar Roy

CHOM

Thanks To: -

Sukracharya, Bijan,
Nilmoni, Arun,
Dhneswar, Safola,
Bakul, Ratul, Taposh,
Rajib, Swapan,
Pranita, Binita,
Bhumidhar, Mukuta,
Hiru

emphasized upon the self-8 pendence of the indi- to re in radio But almost all the mores were of the wanted to do. According to General, everyoody has

got the special duties and obligations towards his Vinderson Britania Marini Mohan Sarma is to serve one's immension maghinesis. A person

any of the minimum modern surrance. He I hroughout his whole career, Gandhi spoke and wrote about his ideas and conceptions and what he achieved or perceived in his experiments with truth. There is hardly any subject under the sun that concerns life and society that he left untouched. In the course of his intellectual odyssey in the vast universe of human wisdom, he paused, pondered, spoke and set forth in black and white about his ideas on his ideal society every now and then and here and there. Let us venture here to formulate them all concisely.

Cardbi understand that well hades lived in the

Gandhi's ideal society, the Ramrajya is a casteless and stateless society. Its slogan is "to each according to his need, from each according to his capacity." Every one in the society must render manual labour according to his capacity for the good of himself and of the community. There should be no "high and low", and every one is entitled to a living wage, "the living wage being the same for all". In his ideal society, everyone was to have what one actually needed. The rich were to give up their wealth for the masses of the people. The rich were to be, in plain language, the trustee of the state's wealth. They were to spend wealth for the masses of the people. They must give up their surplus wealth for the masses of the people. They should be persuaded to do it voluntarily. If they could not be persuaded, then non-cooperation was to be tried against them. But the non-cooperation must be non-violent. The rich cannot accumulate property without the co-operation of the poor. If the rich do not act like the trustee, the poor should non-cooperate. And then the rich would be bound to come to terms. For peace and prosperity in the society goodwill, understanding and co-operation between the

my bis neighbours, really serves acidica the world haves and have-nots are necessary. But these are not possible to be brought about by force or compulsion. They cannot be imposed from above. They must grow from below. Co-operation and communism is possible only through the persuasive power of non-violence. His was a Marxism minus violence. Good brought about through violence and force contradicted itself. If the end is to be good, then the means too is bound to be good. The attainment of good through bad means is simply impossible. Once Gandhi said: "The means may be likened to a seed, the end to a tree and there is just the same inevitable connection between the means and the end as there is between the seed and the tree. I am not likely to attain the result following from the worship of God by laying myself prostrate before Satan. If, therefore, anyone were to say, 'I want to worship God, it does not matter that I do so by means of Satan', it would be set down as ignorant folly. We reap exactly as we sow".

mankind by destroying individuality. He

who precends to serve the whele world while replace

The Marxist classless society makes the physical body and its needs exclusively its God. Gandhi's philosophy on the other hand, makes the individual seek to be "emancipated from the bondage of the physical body". He rules out all other means save truth and non-violence for the realisation of the goal of individual freedom, equality and brotherhood.

Gandhi denounced Communism. His approach to social justice was based on minimum government control and decentralization of power and self-dependence of the individual. He had warned against the replacement of the white bureaucrats by the brown bureaucrats. He disliked the increase of the power of the state, because, though it apparently does good by

minimizing the exploitation, it does the greatest harm to mankind by destroying individuality. He emphasised upon the self-dependence of the individual. He thought that it would be a negation of democracy if the government did everything for the people and the people did nothing or if the government prevented them from doing anything they wanted to do. According to Gandhi, everybody has got the special duties and obligations towards his immediate environment. One's first and foremost duty is to serve one's immedidate neighbours. A person who pretends to serve the whole world while neglecting his neighbours, really serves neither the world nor his neighbours but only his own pleasures and whims. One should sacrifice oneself for the betterment of the community one lives. The logical sequel of self-sacrifice, according to Gandhi, is that the individual sacrifice himself for the community, the community for the district, the district for the province, the province for the nation and the nation for the world.

In his ideal society the 'Principle of Swadeshi' plays a vital role. The Principle of swadeshi is capable of application to every walk of life in the society. In politics, swadeshi stands for the decentralization of power. Every regional unit must be autonomous and free, so that, it may rise to the full height of its stature by developing institutions to its peculiar tradition and genius. In economics, it means that one should make use of the services of a workman who is one's neighbour. Instead of importing skilled workman from outside one should help one's poor, unskilled neighbours to acquire the skill.

Even in case of religion, the principle of Swadeshi is applicable. In religion it means that one should stick to the religion one is born in and help it grow into perfection by incorporating into it the excellences of all other religions. This would make for constant growth and expansion of one's own religion and toleration of religions other than one's own.

Gandhi understood that real India lived in the villages. At that time nearly 700,000 villages were there in India. But almost all the villages were of the same wretched condition. There were no school, no road, no sanitation, no dispensaries. There were only poverty, illiteracy, malnutrition and epidemics. Gandhi felt that if India was to survive, she must live in the villages. So, he gave emphasis upon making villages self-sufficient. For this, he selected Segaon, near Wardha, a typically small and under-developed village in central India. As many as six hundred people lived there in that burning hot in summer. It did not have any of the minimum modern amenities. Everyone in it was illiterate and suffering from either dysentery or malaria.

Segaon was renamed "Savagram". Gandhi made it his headquarter and started virtually alone to work in accordance with his idea of model village. What he achieved in doing there, is a pointer of the unique materialization of his conception of ideal society.

In the National Conference on Educational theories, he proposed that handicraft centres be used as a means for educating villagers and that handicraft made in the villages be sold and the money be used for the expences, in part, of the educational system. Instead of English, their own language should be the medium of instruction. In a specific span of time say, within seven to fourteen years, illiteracy should be totally removed from the country. This was his idea of Basic Education. The entire responsibility for the education of the children must be taken over, according to Gandhi, by the state.

It is the duty of the state to provide support for the aged and the infirm. Women were to play a vital role in his ideal society.

In his ideal society, as in a democratic country every citizen has to obey the corporate will, i.e. the will of the state, because, the state conducts the government through the people and for the people.

Though his ideal society is based on non-violence yet a small police force is necessray.

All our knowledge is relative; we have no power to grasp the Absolute.

— Swami Vivekananda

Education and the Creation of Human Capital

Nissar A. Barua

The quality of a population depends upon two factors, namely genetic endowment and acquired abilities. Although genes do have a role in determining the quality of a population, it tends to be insiginficant on the average. For large populations the immense difference in the qualities of different populations can largely be explained by the difference in their acquired abilities. Whereas, these acquired abilities are largely had from education, and the process of acquiring such abilities is referred to as creation of human capital which is created by investment, and by investment, most economists refer to the process of expenditure on the creation of assets which are likely to generate income in the future. Hence, when we talk of creation of human asset, we mean the process by which human beings invest in themselves, by means of education, training, and other activities which makes them more efficient and hence more productive.

In the early years economists analysing capital development, tended to concentrate on physical capital, and until the early 1960's this concept of human capital was an unknown entity. But after, T.W. Schultz capital was an unknown entity. But after, T.W. Schultz capital was an unknown entity. But after, T.W. Schultz capital was a supplement on "Investment in human bepublished a supplement on "Investment in human bepublished a supplement, and also after the publication of "Human Capital" by Gary Becker, who delication of "Human Capital" by Gary Becker, who delication of theory of human capital formation and veloped a theory of human capital formation and possibilities of and training, that the problems and possibilities of human capital formation came to the fore-front.

Education as a means of developing human capital has an all pervasive effect on each and every aspect of the economy. The acquisition of knowledge and skill through a process of education, training etc. increases the value of labour-time, which has a profound effect on the economy. Thus, given the same amount of physical capital, natural resources, and other productive inputs, a country with a more developed hudouctive inputs, a country with a more developed hudouctive inputs, a country with a more developed hudouctive inputs.

man capital will definitely have a more dynamic growth rate than a country which has a relatively less developed human capital. Thus, a group of people with developed skills, acquired through education and training, will have a higher salary or wage structure or they will be earning more entrepreneural rewards besides having the immense personal satisfaction of experiencing their value as productive units. Of course, we must consider the fact that in an under-developed country Human Capital Formation consists in investment in health and nutrition, besides education. But in developed countries, health and nutrition is already adequately available and hence, here the perspective of human capital formation extends only to the sphere of education and training. The formation of human capital is of great importance for the all round development of an under-developed country. This is partcilarly true in the case of countries like India, where un-utilised natural resources co-exist with un-utilised and some-times mis-utilised human resources. Here, the formation of human capital will bring about far reaching changes in the total environment of the so called under-developed countries. And for a start, they will have a dramatic effect on the attitudes, aspirations and motiations of the people. These people will gain the knowledge of the possibility of a higher level of living, and would start giving priorities to such things which would help them to acheive it. In fact, human capital formation, through a process of education, training and skill-formation serves as vehicle which ushers in various structural changes in the economy, as a result of which a static and traditional society transforms itself into a vibrant modern society.

Gains from Human Capital Formation:

Just as profitability of investment on physical capital can be measured by applying the technique of cost-benfit analysis and investment appraisal, so also the actions from expenditure on education and training, which is in fact, investment in human capital, can be gauged using the same techniques. Thus, costbenifit analysis presents the opportunity to weigh the costs and benifits accruing from a particular form of investment and express it in the form of a single figure. And since, human capital formation, consisting of provision of education, training and health is one form of investment, it is thus possible to determine the most benifical form of expenditure to improve the quality of the people.

Investment in human capital benifits both the individual as well as the society. The individual benifits because he improves his skill and productivity, as a result of which he expands his scope of employment whereas, at the same time he increases his potential life time earning. Again, the society benifits by having a more productive work-force and an enlightened social environment.

Problems and Policy:

The formation of human capital is an immediate necessity for the poor and under-developed countries. However, their ground situation throws up various forms of obstacles and barriers, in implementing the various schemes taken up to acheive the objectives.

One major problem is the explosive growth of population, which has an adverse impact on the quality of the human resources. This happens because, an ever increasing population reduces the per-head availability of existing resources which has a bearing upon the population quality. Thus, a bigger population will mean smaller per-head investment in them in the form of education, health, and other services which leads to various constraints in the adequate formation of human capital. Thus, in this context, the task of human capital formation becomes immense since a massive quantity of critical skills have to be developed and at the same time a population of gigantic proportion has to be managed. The problem, moreover, is magnified when it is viewed against a back-drop of paucity of resources, inadequate organisational arrangements, and the absolute poverty of the majority of the people of these countries.

In the context of country like India, the typical problems and obstacles towards the development of human capital is clearly evident. Besides, having an explosive population growth rate, here, we also have a huge base population to contend with. And with a stagnant and over burdened agricultural sector and a relatively small secondary and tertiary sector, the problem of human capital formation and the question of its nature and direction presents a formidable exercise. However, education as a means of slowing down the population growth rate has distinct possibilities. After the total failure of the various schemes of the family planning programmes, it has dawned upon the planners that the key to reduction in birth-rate was in women centered programmes, which includes education, health care, and social awareness programmes.

Besides, a school of economists have pointed out that, in order to have a dynamic agricultural sector, on which four-fifth of the total population is dependent, it is necessary to reduce the burden of surplus populaion which exist here in the form of disguised unemployed. This is so, because, in order to be dynamic, any sector will have to earn a surplus, which can be re-invested so as to improve the productivity of both the physical, as well as, the human capital which it utilises. Hence, in view of this argument, the assertion that the curriculum of the primary and secondary schools in rural areas needs to be manipulated, in order to steam the flow of population from rural to urban areas needs to be reconsidered.

However, this argument does not apply in the case of higher education, since here specialization is the name of the game, as far as job-opportunities are considered. Manpower planning, here, has a vital role to play in bridging the gap between the manpower demand and supply with reference to various skills. This methodology considers both the quantitative and qualitative aspects of development of human capital. On one hand it estimates the presently existing manpower and projects the future needs of the same, while on the other hand, it lays down appropriate strategy for acheiving the estimated targets of manpower. Manpower planning is particularly useful in planning the number of persons who are to be imparted critical skills under various specialization programmes

since, dis-equilibrium in the demand and supply of skilled manpower results in complete obsoletion of human capital, which in turn leads to youth alienation and social unrest.

Bibliography:

Schultz T.W.: Schooling and Higher education. An economist's view. Human capital. pa-

per no 82-13. Department of Economics, University of Chicago.

Becker G.S.: 1975, Human Capital: A theoritical

poetry of open process which terall, own in

and empirical analysis, with special reference to education. 2nd education, Princeton University Press... Princenton.

Schultz T.W.: (ed) 1961 Investment in Human Be-

ings. University of Chicago Press, Chicago, Illinois.

They derive the inspiration to or

A.N. Agarwal

and

Kundan Lall: 1989, Economics of development and

was markedly one of popularization and commen jal

resulted in making that work rather unlar alian and dif-

planning. Vikas Publishing House Pvt.

Ltd., New Delhi-110014.

Three passions, simple but overwhelmingly strong, have governed my life: the longing for love, the search for knowledge and unbearable pity for the suffering of mankind. These passions, like great winds, have blown me hither and thither, in a way ward course, over a deep ocean of anguish, reaching to the very verge of despair.

- Bertraned Russel, in his autobiography

he Modern poets are represented by Stephen Spender, W.H. Auden, Louis Mac Neice, Dylan Thomas and a few others. These poets show no loyalty to the traditional idea of Keats, that poetry is a reflection of beauty and they are firm in the conviction that time has come for ugliness to have its poetic day. They derive the inspiration to compose poems from an industrial world, full of factories, smoke and noise which is completely devoid of nature's charm which the Romantic poets glorified so highly.

During the early part of the twentieth century men more and more lost faith in certain traditional ways of seeing the world, due to developments in the religious, economic, political, military and other fields. This age was markedly one of popularization and commercialization. The bulk of the work written during this period was written under a special kind of influence which resulted in making that work rather unfamiliar and difficult. This was the influence of contemporary writers abroad and in case of poety it was the influence of a foreign school of poetry, that of certain late nineteenth century French writers whose works were obscure and genuinely condensed.

Nineteenth century poetry was complex and widely varied. F. R. Leavis has said, 'Nineteenth century poetry was characteristically preoccupied with the creation of a dream world." This points to much of the poetry of the late nineteenth century.

The other tradition of verse presents an use of language which is undoubtedly vernacular. It is a personal, intimate and yet unassertive tone in which nature is presented in a more or less domestic way. The poetry of Thomas Hardy is characterised by its plain vernacular language and its strong awareness of everyday life. This poetry bridges the nineteenth and twentieth centuries.

The new poetry which came into being from about 1910 did not modify the English tradition but departed from it. This new poetry looked not to the country-side, but to the great city.

The technical features of modern verse were: In the first place, it demanded that social respectability should not be allowed to impose restrictions of subject matter upon the poet. Secondly it demanded that liter-

Modern Poetry and Tradition

Mrs L. Baruah

ary conventions should not be allowed to impose restrictions on diction or emotion. There was an insistence on the supreme virtue of economy and concentration.

T.S. Eliot, W. B. Yeats and Ezra Pound stand out among the shapers of modern poetry in English. Their main artistic contribution is the modulation toward a poetry of open process which tends toward a balancing of emotional states. A great part of this balancing in their work is enforced by their deep sense of traditional form and its values.

Eliot formed a means of expression in poetry of a representative modern mind. He was one of the first English writers to respond to the most significant developments in modern French poetry, influenced by Laforgue and Baudelaire. From them Eliot has adopted his urban settings. In his poetry, the idea of time has the same kind of prominence as the idea of nature in the poetry of the romantics.

Eliot's view of poetry is derived from the nineteenth century. It comes from French writers like Flaubert and Baudelaire, and from the direct influences of Irving Babbitt and Santayana at Harvard, Ezra Pound and T.E. Hulme in London.

W.B. Yeats is one of the major forces in modern poetry. He is an advocate of straight forward syntax and of the use of intelligence as an active poetic energy. He dealt with words magically. In his poetry words are made to transcend their literal meaning to ecplore through precise symbolism a whole world of reality behind the common world known by sensation.

Ezra Pound brings his private and his professional selves into much of his poetry, along with the world of past and present as he knows it. Eliot was occupied with the horror and boredom of modern life.

Modernism is a sort of reaction to the crisis of authority in the nineteenth century. It is not what the contemporary is. It is a way of viewing the world.

WILLIAM SHAKESPEARE HIS LIFE AND WORKS

Sri Manashi Dihidar

Shakespeare can not be written because very little about the man has come down to us from genuine sources. The available facts about his life are based chiefly on guess-work and conjecture.

William Skakespeare was born on 23rd April, 1564, in the village of Startford-on-Avon in the country of Warwickshire. His father, John Skakespeare was a trader. His mother was Mary Arden.

For a few years he probably attended the Grammar school at Startford where he picked up 'little Latin and less Greek'. His real teachers meanwhile were the men and women and the natural influences which surrounded him. Every aspect of the natural beauty of Avon's exquisite region is reflected in Shakespeare's poetry. When Shakespeare had attained the age of four-teen, his father lost his little property and fell into debt. From evidence found in his plays, it is maintained that From evidence found master and a lawyer's clerk. It he was a country school master and a lawyer's clerk. It is impossible from a study of his works to form a definite opinion about his early occupation.

In 1582, Shakespeare married Anne Hathaway, the daughter of a peasant family. She was eight years older than Shakespeare. He soon left his wife and family and went to London. And after his enormous success in London he returned to Startford to live quietly cess in London he returned to Startford to live quietly with his wife and daughter, confirms this conclusion.

Of the life in London from 1587 to 1611, nothing definite is known. It was the period of his greatest literary activity. Ben Johnson said, "I loved the man and do honour to his memory, on this side idolatry as and do honour to his memory, on this side idolatry as and. He was indeed honest and of an open and much as any. He was indeed honest and of an open and free nature." Shakespeare's poems, rather than these early free nature attempts, mark the beginning of his success. dramatic attempts, mark the beginning of his success. 'Venus and Adonis' became immediately popular in 'Venus and Adonis' became immediately popular in London. Within a decade of his arrival in London, he

had become one of the most famous actors and literary men in England. Much of Shakespeare's plays depends on previous plays; even his Hamlet uses name, probably by Kyd, which was well-known to the London stage in 1589, some twelve years before Shakespeare's great work was written. There came a series of great plays from his pen including 'Hamlet', 'The Merchant of Venice', 'As you like it', 'Twelfth Night', 'Julius Ceasar', 'Mackbeth', 'Othello', 'King Lear', 'Antony and Cleopetra'. Shakespeare's plays became popular very soon. It was the reign of Queen Elizabeth then. Another reason was that at that time the public were very conscious in England. For his popularity Shakespeare also became one of the richest men of London. In 1597 he bought the finest house in Startford and soon added a tract of farming land to complete his estate. In 1611, he left London and settled permanently at Startfordon-Avon.

Skaspeare's last play was 'The Tempest'. After a few years of quiet life at Startford-on-Avon, Shakespeare died on the anniversary of his birth, April 23, in 1616.

Shakespeare was not simply a genius; he was also a great worker, and he developed in exactly the same way as did all his fellow craftsmen. And, contrary to the prevalent opinion, the Elizabethan drama is not a Minervalike creation, springing full grown from the head of one man; it is rather an orderly though rapid development, in which many men bore a part. There is hardly any one to compete with Shakespeare, the great.

Collected from :—

- (i) Merchant of Venice, by R. Tilak
- (ii) History of English Literature, by William J. Long

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

DELINQUENCY, A DISEASE OF SOCIETY

Mauchumi Ray

We live in a society. Without society we cannot live a civilized life. One of the most complicated problems of society is the problem of delinquency. In the society we must follow certian rules and regulations on which depends the peace and tranquillity of the society. Failure to make adjustment to these rules, regulations and customs of the society, and denial of the social control by the child is known as Delinquency. A delinquent child is one who causes concern to the parents and teachers by violating the laws of the society, playing treatment without reason, indulging in stealing and lying and committing other social offences.

The problems of delinquency is intimately connected with the social environment of the child. The delinquent child is not a biological product but is chiefly the product of environment. Delinquency is, therefore, chiefly a social problem. Following are the main causes of delinquency in children.

Unhappy home is an important cause of delinquency. Children generally play truant without reason, resort to stealing and lying habits and show other forms of behaviour disorders if they suffer from unhappy atmostphere of the family. In the family atmosphere the children develop delinquency traits due to the following causes:—

- 1. If he is neglected by the parents.
- 2. If he is punished too much and too frequently.
- 3. If the family is a broken one.
- 4. If there is economic insecurity in the family.
- 5. If there is lack of discipline.
- 6. If the child gets indulgence from parents.
- 7. If parents and other relations are of questionable character etc.

Children develop behaviour problems due to unhealthy neighbourhood also. For example, the over crowded slum areas of big cities are unfavourable for physical and mental health of children. Because these areas suffer from lack of acceptable moral codes and existence of such things as prostitution, cheap film shows, hotels etc.

Children become delinquent due to the influence of undiserable companions. The juvenile gangs residing in cities commit many offences as a group.

In big cities children living in over crowded areas have little scope for healthy recreation. So they turn to some cheap commercial reaction like gambling, betting, visiting cheap cinema shows etc. and gradually develop delinquent traits.

The school may be one of the causes of delinquency it if fails to provide recreational facilities to children for breaking up the monotony of the academic life.

Employment of small children in hotels and restaurants of big cities is often found to be very much harmful for the mental health of children.

The most common forms of delinquent behaviour are the following:-

- (a) Telling lies
- (b) Stealing
- (c) Truancy
- (d) Indiscipline
- (f) Aggression
- (g) Cheating
- (h) Destructive behaviour
- (i) Sex offence

These forms of delinquency appear in different children in different degrees.

For the prevention of delinquency the following measures may be adopted.

1. The emotional and social atmosphere of the family should be improved.

- Proper care should be taken so that the child is not neglected in the family.
- The family discipline should be suitable for the mental health of children.
- 4. Proper attention should be paid for the removal of emotional insecurity of children.
- 5. The school should provide for more recreational facilities.
- 6. The child should be kept in a good residential school if he belongs to a broken home.
- The society should also provide for extra-curricular activities of children.
- 8. In big cities provision should be made for childrens' parks, childrens' clubs and other recreational centres for children.

It may be stated that delinquency is really a social problem. Therefore, for the prevention and cure of this malady, the society should take up necessary measures.

measures.

Delinquency is the main problem of Adolescence period. According to Stanley Hall: "Adolescence period."

riod is a period of storm and stress of human life." The adolescents need freedom; they feel the need of sexual satisfaction; need for self dependence, need for self expression etc. appear during the critical period of human life.

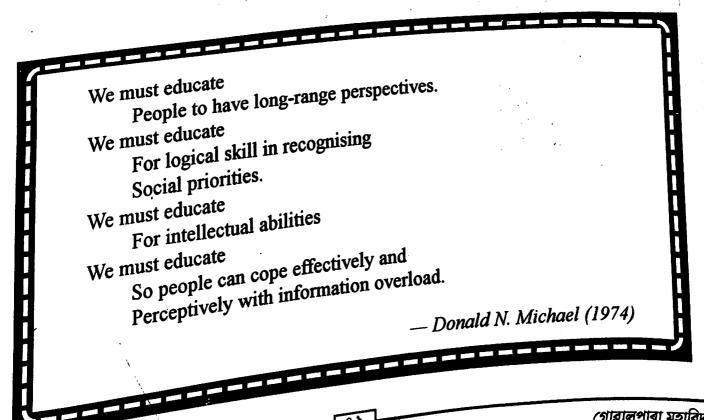
The home and the school should try to satisfy these needs of the Adolescents so that they may develop normally and take their place in the future society. As regards the problems of Adolescence the main one is delinquency. For dealing with the problem of delinquency the home, school and society should make combined efforts.

If we want a happy family, if we want a happy society, if we want a peaceful country then we must try to prevent delinquency. Delinquency is a terrible disease in today's society. If we cannot prevent delinquency we cannot see a peaceful society, a happy family and a developed country.

Reference Book: A Text book of Education

By

Dr. Lakhahira Das.



A visit to the Pristine Islands

Prof. D. J. Abedin

had long cherished a desire to visit an island, particularly the Pristine islands of Andaman and Nicobar. The opportunity came unexpectedly in the month of October, 1994, when the Rules Committee of Assam Legislative Assembly drew up a programme of a study tour to some state capitals to study the procedure and implementation of rules in those states. The schedule included the Union Territory of the Andaman and Nicobar Islands which was on way to getting a full-fledged statehood and a State Legislature. As a member of the Rules Committee, I availed mysef of the opportunity, although it was not exactly as I had desired. I had longed for a sea-voyage, but what we got instead was a plane flight from Calcutta to Port Blair, the capital Port city of the Andamans.

Port Blair is situated at a distance of 1255 Km from Calcutta and it takes about two hours by plane. The Pristine islands of Andaman and Nicobar had once been a hill range in the Bay of Bengal extending from Burma to Indonesia. Parts of the range have been washed away by the waves over the years. The remaining islands, islets and rocks numbering about 572 are spread over an area of 700 Km. from North to South forming a broken arc. These undulating islands covered with dense forests and endless variety of exotic flowers and birds shimmer like emeralds in the Bay of Bengal and this is the reason why these are called 'the Emerald Islands'. Here the white beaches on the edge of a meandering coastline have got rows of palm trees that sway to the rhythm of the sea. Geographically, the Islands are situated between 920 to 94º East Longitude and 6º to 14º North Latitude.

A journey by plane has its charms and thrills, sometimes indescribable in words. But I was particularly lucky in my journey to the Andamans, lucky in

two ways. One, I got a seat at the window and two, the weather was fine like crystal. It was morning time. While flying from Calcutta southwards over the Sundarbans I got a clear birds' eye view of the different streams of the Ganges and the Brahmaputra flowing finally into the Bay of Bengal forming immumerable deltas in the mouths of the rivers. I was very much fascinated to see the picturesque mangrove forests of the Sundarbans from the sky and I was reminded of the ancient Indian mythological story beautifully narrated by Sir Edmund Hillary in the book 'From Ocean to Sky' wherein he has described how the Brahmaputra -a male, and the Ganges -a female, ran from the Manas and the Himalayas to meet each other and finally to merge with the sea.

While flying over the Bay of Bengal towards the Andamans, I frequently peeped out and it appeared to me as if the bottom of the sea was quite visible. Very often I could see something dazzlingly white at the sea bed and I could not suppress the curiosity of asking the man sitting next to me what these objects might be. He informed me that those were coral reefs. Before touching down, I was very much thrilled to have an aerial view of the island. In the airport, which is rather small, we were received by some officials of the Andaman and Nicobar administration. In the lounge of the airport we could see a photograph of Netaji Subhas Chandra Bose who had landed at this airport in 1943. We were accommodated partially at the Govt. Circuit House and partially at the Pradesh Councillors' Hostel. Some of our attending official were put in the Hornbill Nest Guest House near th famous carbyn's cove. I was tagged with Mr. Bada Baruah, MLA who was a cultured man with a literar aptitude. We enjoyed each others company.

As we had only two days' brief halt in the Island, we did not want to lose time. Immediately after our arrival we went out for the programmes already chalked out by the officials. Mr. Golok Rajbongshi, the then Minister for Parliamentary Affairs and the Chairman of the Rules Committee, also accompanied us in the tour. His presence imparted an added air of official formality to our programmes. First of all we went to the Martyrs' Column raised in memory of all those known and unknown fighters of Independence Movement who had laid down their lives on the soil of the Islands or in the sea around them and offered floral wreaths in honour of the martyrs. Then we proceeded to see the historic Cellular Jail, declared a National Memorial in 1979 by the then Prime Minister Sri Morajee Desai. My singlemost desire behind my visit to the Andaman and Nicobar Islands had been to pay a visit to the Cellular Jail. It is almost a pilgrimage to me. In fact, it is being looked upon as a holy place by all patriotic people of India.

The Cellular Jail, otherwise known as the Indian Bastille, has got a history of its own and the history of the Jail is inseparably linked up with the history of Independence Movement of our country. Many of us know that most of the present inhabitants of the Andaman & Nicobar Islands are the descendants of the ex-convicts of the Island which had earned the notorious sobriquet of 'Kala Pani' since the earliest days of the Indepandence Movement. But we may not always remember the saga of struggle and sacrifice of those freedom fighters who had been incarcer-

The modern history of the Andaman and Nicobar ated here. Islands begins with the transportation of a large number of 'mutineers of 1857' to these Islands. Not much is known about their total number and individual records of the prisoners. But it is known that two important leaders of the 'Mutiny' well known for their moral character and scholarship lived and died as prisoners in the Andamans. They were Allama Fazal Haque Khairabadi and Maulana Liaqat Ali. Another mutineer, Mir Jafar Ali Thaneswari, spent twenty years of penal servitude in the Andamans. In the 2nd floor of the central Tower of the Cellular Jail there is a list of different categories of prisoners incarcerated there. With heads bowed down in reverence, one can see, alongwith other names, the following names from

Assam transported in the wake of the Munity of 1857, otherwise known as the First War of Indian Independence:

- 130 1 Sri Bahadur Gaonburha
 - 2. Sri Dutriam Baruah
 - Sri Madhu Mallik 3.
 - Sri Sheikh Formud Ali

The second group of political prisoners to the Andamans consisted of the convicts of the Wahabi Movement (1860-1870). Here again, the detail records about this group of prisoners are not available. However, the following names are available:

- 1. Sri Ahmadullah (Patna Trial 1865)
- 2. Sri Amir Uddin (Maldah Tiral 1870)
 - 3. Sri Ibrahim Mandal (Rajmahal Trial 1870)
 - 4. Sri Yahya Ali (Ambala Trial 1864)
- 5. Sri Mohammed Sher Ali (Killer of Lord Mayo) block it stands now as a monument of ere

But these were all before the construction of the Cellular Jail. The convicts considereed 'dangerous' by the British Administration were transported from that mainland to these islands where they were put in fetters and were forced to work hard with their fetters on. The tiny, serene and beautiful island of Viper stands as a mute witness to the untold sufferings the freedom fighters had to undergo. Prior to the construction of Cellular Jail, a jail was constructed in this island as early as 1867 under the supervision of Major Fortand on top of a hillock in the island. The island derives its name from the vessel Viper in which Lt. Archibold Blair came to the island in 1796 with the purpose of conducting a survey for estalishing a penal settlement. It is believed that the vessel met with on accident and the wreckage was abandoned near the island. The capital port had been established by and named after Lt. Archibald Blair.

The construction of the Cellular Jail was prompted and accelerated by an incident. Mohammed Sher Ali, a Pathan convict connected with the Wahabi Movement, murdered the Viceroy, Lord Mayo when the latter came to inspect the open Air penal settlement of the Viper Island. Sher Ali was condemned to death and hanged from the Gallows at Viper Island. The construction of the Cellular Jail was taken up in 1896 and completed in 1906. Being situated on the North-Eastern coast of Atlanta Point of Port Blair, the Jail is the first sight that greets a visitor on his first arrival at Port Blair. The name, Cellular Jail is derrived from its unique feature as it had only cells and no dormitories. It had 698 cells, one for every prisoner. Each cell measured 13¹/₂ ft. by 7 ft. with an iron grating in front and a 3 feet by 1 foot ventilator about 10 ft. high. The Jail was initially constructed as a three storied edifice with seven wings, each wing stretching from a central tower like the spokes of a wheel. The huge building strikes terror in the minds of the onlookers. Every brick of the Jail has a heart-rendering story to tell, the story of resistance, sufferings and sacrifices.

The earthquake of 1941 and the subsequent Japanese invasion and occupation of the terriroty caused substantial damage to the Jail building resulting in subsequent demolition of 4 out of 7 wings of the building. With its three remaining wings and the entrance block it stands now as a monument of great historical importance. We were shown round the campus, corridors and the cells. The torture and cruelties meted out to the political prisoners simply beggars all descriptions. We entered into a cell which was occupied in 1910 by Vir Damodar Savarker for eleven years. The then jailor, one David Barrie, was extra-oridinarily infamous for his ruthless torture and supression of the prisoners. Mr. Savarker referred to this Barrie in his celebrated book, "The Story of My Transportation for life" as saying, "Listen, you prisoners! In the universe there is one God and he lives in heaven above; but in Port Blair there are two. One, the God of Heaven and the other, the God on Earth! Indeed, the God on Earth in Port Blair is myself. The God of Heaven will reward you when you go above. But this God of Port Blair will reward you here and now. You may complain to superiror against me, but my work shall prevail; I shall hold my own. Mind you well".

On the walls of the hectagonal brick-built structure of the second floor of the Central Tower of the Cellular Jail we found the names of 336 freedom fighters and revolutaionaries from all over the country who were incarcerated for their patriotic fervour. The Gallows, the oil ghanis, the flogging stands-all survive still today as relics of an ignoble past. In the Cellular Jail Museum, the photograph of the freedom fighters who were incarcerated were exhibited. Reports of

atrocities committed on the prisoners which were published in the news papers of the mainland have also been kept on display for the visitors. Some paintings on the barbarous treatment mated out to the prisoners, the utensils, vessles, uniforms they used and the tools, machines they were made to operate-all remind us of the heroic battle our freedom fighters had waged against the British Raj and the untold sufferings they had to undergo within the walls of the Jail.

Among the better known political prisoners were Barindra Kumar Ghosh, the younger brother of Maharshi Aurobinda Ghosh, Upendra Nath Banarjee, Hem Chandra Das, Ullashkar Dutta, Indubhushan Roy, Bibhuti Bhushan Sarkar, Hrishikesh Kanjilal, Sudhin Kr. Sarkar, Abinash Chandra Bhattacharyya and Birendra Kumar Sen. The Savarkar brothers-Ganesh and Damodar were of course there. I looked out for some neames from Assam and found the following names within the category of 1909-1921 deportees:

- 1. Shri Benoy Laskar
- 2. Sri Gopen Roy
- Sri Gauranga Mohan Das
- 4. Sri Matilal Roy
- 5. Sri Satyendra Roy

Among other famous freedom fighters who were incarcerated in the Jail were Vaman Joshi, Shambhunath Azad, Joydev Kapoor, Batukeswar Dutta, Sachindranth Sahgal, Pandit Paramanan Lok Nath Bal, Ganesh Ch. Ghosh and Trailokya Nath, Chakravarty who was known as 'Trailokya Maharaj'. While fighting against the tyranny of the jail authority, many like Bhai Mahavir, had to lay down their lives and many others had to go insane and some had to put an end to their lives by committing suicide rather than subjecting themselves to the indignities of the jail life.

Among the political prisoners brought to the Cellular Jail, mention must be made of the participants of the Moplla Rebellion of 1921 who were finally allowed to bring their families and settle down as agriculturists in the uninhabited islands of the Andamans.

Often the prisoners rebelled against the tyranny and inhuman treatment of the Imperial rule. At first ally public opinion mobilised heavily in favour of the

prisoners in the mainland. The Raj was compelled to take a softer stand on the demands of the prisoners who, among other things, wanted better treatment and repatriation to their respective states. Mass hunger-strikes were organised by the prisoners in 1937, 1938, and 1939. The last such hunger-strike was terminated in 1938 at the intervention of Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore as the demand for repatriation was accepted by the British administration who were mellowing down at the approach of World War II.

The Andaman Islands fell into Japanese hands from 23rd March, 1942 to 7th October, 1945. During this period, they also killed many educated Indian youths on suspicion of being British agents against the Japanese.

However, Netaji Subhash Chandra Bose visited Andaman on 29th December, 1943, as the Head of the Provisional Govt. of Azad Hind and hoisted the Indian Flag for the first time on the Indian soil. He also visited the Cellular Jail and stopped punishing prisoners without trial. There were no executions in the Cellular Jail after Netaji's visit.

In the evening we came back to the Jail premises again to witness a 'Son et Lumidere' (Sound and Light) show that brought out vividly all the harrowing tales of the prisoners with the help of a century old 'Peepal' tree that was standing a mute witness to all that happend within the jail campus.

Earlier during the day, we paid a visit to Raj Niwas and had a meeting with the Lieutenant Governor of Andaman and Nicobar Islands Mr. V. Purushuttam. We had elaborate exchange of views and informations regarding the past and present of the Islands as well as the future programmes for its all round development. In the Govt's list of priorities Tourism and Fisheries Development areas were the highest. Their catchword is 'Prosperity without Pollution'. To quote the Lt. Governor, "we want class tourists, not cheap tourists". They have attained a conspicious literacy percentage of 73.02. Their forest coverage is still 86% of the total area. They have a plan to bring more areas under agricultural cultivation by settling some people in phased manner on some of the uninhabited islands.

In the afternoon we cruised around Port Blair in a launch boat and paid a visit to the Viper Island. We

were shown the jetty where Sher Ali Pathan murdered Lord Mayo in the midst of tight security. On the way we saw a huge floating dock which is used for repairing ships in the mid-sea. On our return to Port Blair, we paid a visit to the famous Anthropological Museum. Many people in the mainland have got a wrong notion about the population pattern of the Andaman and Nicobar Islands. They think that only the aboriginal tribes inhabit the islands. This is far from reality. As regards population patterns, it is a miniature India. The Bengalees constitute the most numerous group, closely followed by the Tamils. People of all states of India can be found in the Island living in perfect harmony. In the matter of religion also, the island occupies a unique position. Hindus, Muslims, Christians and Shikhs live side by side in an ideal atmosphere of mutual understanding, respect and tolerance. There are various aboriginal tribes scattered over all the islands. Their total number is less than a thousand and collectively, they constitute even less than 0.5 percent of the total population. They are the Jarwas, the Great Andamanese, the Onges and the Sentinelese-belonging to the Negrito stock. To the Mongoloid stock belong the Shompens and the Nicobarese. The Jarwas with short stature, black skin and frizzy hair inhabit the West Coast of South and middle Andaman. Usually they live nude. Their number is estimated at two hundreds.

The great Andamanese settled in strait Island. Being estimated at about 5,000 people of Negrito stock. They once dominated the south Anamans. The establishment of Penal Settlement at Port Blair in 1858 brought them in direct confrontation with the British and almost all of them perished in the uneven 'Battle of Aberdeen' which took place on 17th May, 1859. At present only 36 souls of great Andamanese live. I was lucky to see one of them at Port Blair. The Onges are primarily a hunting, gathering and fishing community. Their present population is only 98. Their population also declined drastically during the British rule.

The Sentinelese are also a hostile tribe who live in complete isolation on the North Sentinel Island. Their number is 250. The administration is trying to contact them through some officials. The Shompens belong to the Mongoloid stock and they dwell in the interiors of the Great Nicobar Island. They are shy and still live a seminomadic life. Their number is about 200. The Nicobarese of Mongoloid origin live in different islands of Nicobar Group. They are fairly advanced. Their number is about 22,000.

From the depiction in the Museum, life of the primitive tribes, their habits, the tools and implements they use, we could know that their origin dates back to the Palaeolithic Era.

Next morning we visited Chatham Island. This is a small island connected with Port Blair by a bridge. We went round a big saw mill there. It is said to be the oldest and the biggest saw mill in Asia. A power house is also located in the island. There is a beautiful arrangement of delivery of raw timber and loading of sawn timber directly into the steamers.

Then we paid a visit to the historic Ross Island situated at a distance from Port Blair. It was the first head quarter of British regime in the territory. The tiny island once accomodated the residence of the Chief Commissioner, a church, a swiming pool, a Tennis Court, a club, a press, a cemetry, bakery, hos-

pital, the Farzand Ali Govt. Store, a distillery-but all in ruins now. At present the Island is in the hands of the Indian Navy who have established a museum called 'Smritika' depicting the history of the Island. Spotted deers and peacocks can be seen.

Among other places of interest we visited I would like to mention the Marine Museum, the Cottage Industries Emporium and the Corbyn's Cove Beach. The Marine Museum gives one an idea about the innumerable species of sea life and marine resources. It helps building up public awareness about the different aspects of oceanic environment. It also displays a wide variety of shells found in the waters of the Island.

At the Cottage Industries Emporium, I was particularly impressed by the quality of shell-craft and small articles made from mother pearls.

For paucity of time we could not visit the Nicobar group of Islands. In short, my brief journey to the Andamans seemed to me a brief sojourn into the history of our Independence struggle.

Whether there is filth or degradation, or ignorance, there I identify myself, I don't think any one can go far who hasn't faith in the people make every rise en masse.

— Swami Vivekananda

Fact or Fiction

Amit Kumar Das

The world is full of incredible, sensational, stunning, terrific and unbelievable events which seems to be beyond the limit of science. Sometimes these are called fictions of superstitious minds. But in course of time descriptions about the same event is described by several persons or solid proofs lead us to such a concept where we must think of a limit beyond which reasonable minds fail, only belief exists. In this essay I want to state some unbelievable facts which are widely believed as sufficient scientific explanations are lacking.

In search of an 'Eldorado':

Is there a golden land, a land where everything is of gold, trees of gold, chairs, tables of gold, people wear golden clothes? A scientist will easily answer 'No'. But still people of different parts of the world believe that there exists a golden land Eldorado in this world. The concept of an Eldorado evoked in 1535 when Sebastian de Belalcazar, founder of Quito, the capital of Equador met an Indian who told him of a far off king of a tribe who sprinkled his body with gold dust before swimming in a sacred mountain lake. After hearing this story, Belalcazar coined a name for the region Eldorado, land of gold which became very famous among the adventurers. In 1969 some farm Workers while working in a cave near Bogota in South America, accidently discovered a golden model of nan-a model of a king. This model is similar to the one taken from lake Siecha in the 19th century by the dventurers of Spain and Britian who were on their pission to discover an Eldorado. The first man to hink of searching the Eldorado was Gonzalo Jimnez e Quesada. He began his journey in 1536 with 900 den from Santa Marta. His journey was full of Oubles. He was constantly disturbed by various ani-

mals, diseases, hostile natives before they reached Chibehas. Quesada proceeded to Guatarita lake with an Indian guide. They reached the lake which was a deep, dark expanse of water set in the crater of an extinct valcano. Few huts were there but Quesada found no gold there. Quesada returned but started his search again in 1568 with 2,800 men. But their search went in vain and Quesada gave up the thought of finding it. Till 17th century several journeys were carried out by several persons but nobody was successful. So, there was a question in the human mind whether the concept of an Eldorado is true or false. In the early part of the 19th century Humboldt and Bonpland tried their best to discover the land but failed. But they strongly believed that a land like that exists. In 1912 'Contractors Ltd.', a British company arrived in Colombia with costly equipments to pump out lake Guatarita's water. After pumping out the entire water they found the ground was covered with thick black mud and a little gold which was not enough to pay their expenses. Thus the search for Eldorado- the golden land ended. But the belief is still alive that the golden land exists. Who can say that in the near future one can become successful to solve the mystery of Eldorado, the land of gold.

Was there a paradise — Atlantis:

It is believed that much before Summerian civilisation, a great civilisation existed in the Atlantic civilisation - Atlantis which was at its zenith but then a a volcano erupted and the entire civilisation was vanished. The story of Atlantis was first told by Plato-the great philosopher. According to Plato, Atlantis was a paradise. Plato described almost everything of Atlantis. According to Plato the disappearance of Atlantis by the eruption of a volcano took place 12,000 years ago

in the straits of Gibraltar. And from this point, starts the controversy of Atlantis. But a question arises whether Plato's story can be trusted?

Plato's story passed from generation to generation. Plato heard the story from his nephew Critias. Critias heard the story from his grand father Dropides and he heard it from Solan (640 B.C. - 558 B.C.) who was famous for his truthfulness. Solan himself claimed that the story was not original. He heared it from a priest in Egypt. Many scholars believed this story but Posidonius (135-50 B.C.) a great scholar of his time refused to believe it. Even after 23 centuries this question is frequently asked-whether this is true or false. Plato believed that Atlantis was in the Atlantic itself. This led to a serious scientific research. Gradually the interest in this mysterious island gave birth to a new branch of science - Atlantology, in the 19th century. In 1912, the controversy was again raised by Dr. Paul Schliemann, grandson of the discoverer of Troy. Dr. Paul showed the bronze vase where "This was the gift of Cronos, King of Atlantis" was written but nobody believed him. Again in 1968, Dr. Valentine discovered some walls which sparked the Atlantis controversy again. He linked this wall with the Atlantis. But till now there is no solid proof of the existence of Atlantis.

As the days are going, marine archeology is becoming more rich. So we can expect that one day this mystery will be solved and Atlantis will be unearthed if it exists.

Behind the lines of Nazca:

A region lies between the Pacific coast of southern Peru and the Andean foot hills, namely Nazca. This region has been drawing attention of astronomers and archeologists since 1941 for a special cause. The entire region is made up of some strange lines having shapes of geometrical figures, animals and birds. Till this day no satisfactory scientific explanation is offered. As a result it has given birth to innumerable theories. Some people believe that these lines are drawn by unknown extra-terrestrial beings while others believe that the Peruvian desert was being used as an astroport by spacecrafts thousands of years ago. Some limes could only be seen from an altitude of above 1000 ft. and some designs are so closely intermixed that they give a picture of science fiction novel.

Furthermore, the erosion on the slopes of Peru is quite similar to the space probes on Mars. To be scientific, the NASA has sent a team of scientists to study the erosion and the possibility of life on Mars. In 1941, Dr. Paul Kosok of Long Island University became the first man to examine those enigmatic limes and termed the unique area as "the largest astronomy book in the world." Maria Reiche who studied the area for more than 30 years proposed that, to draw limes they must have stretched strings from posts. These posts are still visible. The C-14 method has dated these posts back to 500 A.D. Some Peruvian archeologists are of the same view of Paul Kosok that Nazar drawings are astronomical drawings. But when astronomer G.S. Hawkins in 1960 used computer to check the astronomical interpretetion of the Nazca region, the computer totally negated the research of so many years. It showed that Nazca limes are not designed as a calender. Then what do they signify, what is the message lying behind them-these question are still unanswered. Everybody is looking for a man who will unfold its meaning, tell us about its origin, its designer. But we must wait until he comes.

The famous triangle of Bermuda:

The mystery of Bermuda triangle is the most well known mystery in the world that has been puzzling everybody for a few decades. This area lies between Florida, Bermuda and Puerto-Rico. In the beginning the sudden disappearances of the ships along with its passangers took place but it was considered as a coincidental matter. But gradually the number of victims increased at such a rate that everybody became curious to know the reason behind it. Till now many scientists have proposed innumerable theories but none of them can prove it. Some scientists opine that it may be due to the extreme gravitational and magnetic deviation that radios fail and compasses provide wrong readings. Others think that high-tech machinery of the lost Atlantic civilisation is still active and is operating in Bermuda triangle. Some others think that the triangle mysteries are done by the visitors from outer space. But no theory have ever satisfied curious minds. The history of this triangle came into notice when V.H. Gaddis wrote an article on it. After that it was included in Encyclopedia Britannica because at that time it became very popular and many writers started writing books on this including some best sellers like "Limbo of the Lost" by Wallace Spencer, "The Bermuda Triangle" by Charles Berlitz etc. and this mystery was given a new turn when Lawrence D. Kusche published a book of new look "The Bermuda Triangle mystery solved." Kusche tried to present every suspense, every question with a practical view. He carefully observed the reports of disappearances from 1800 and surprisingly declared that either disappearances never occured and if occured were purely explainable. He pointed that such accidents had occured in other oceans too. Kusche took many cases and showed with analysis that there was nothing objectionable in those disappearances. In the mean time, a

joint scientific research done by Russian and American scientists found that no unusual force is acting on that region. So, there should not be any controversy regarding the cases of disappearances in that region and no mystery should be there. But inspite of all these logics, a question is still unanswered by the scientists why did so many accidents occur at one point only? Nobody knows whether it will be answered or will remain as a mystery forever.

There is an endless list of such examples where science has not yet been able to solve the mystery conclusively. But it is sure that some day someone will solve the mystery.

[With the help of "World famous unsolved mysteries"]

Spend your wealth in charity
Whether you are prosperous or not.
And control your anger
And be for giving to others
For God loves those who do good

— The Quran Surah III: 134

Ozone Layer Depletion — A catastrophic concern

Vinay Kumar Barua

Curiosity and desire are two fundamental aspects of human nature. Curiosity leads to new investions and new technology and desire to development. We do not want destruction, but sustainable development and security of the future to come. I am not going to be concerned about social and economic problems as well, I am trying to realise and clear the concept of 'GLOBAL WARMING' which is the result of Ozone layer depletion. Let us come to the query of ozone layer and how it depletes and why. Before going further, we should borne in mind that ozone layer depletion is rather a greater threat on the scientific inventions and developmental work, which needs the top most priority.

What is ozone layer?

Ozone is a naturally occuring gas, chemically it is a combination of 3 oxygen atoms, found in the earth's atmosphere. Its maximum concentration is in the upper stratosphere i.e. at a height of 50 Km above the surface and in the form of a layer called ozone layer or ozonosphere. It prevents ultra violet radiation of the sun from reaching the earth's surface. U.V. rays are harmful for human being.

High dose of U.V. rays can damage the human eye, reduce rates of plant growth, upset the balances of ecosystem, by supressing the efficiency of body's immune system, increase the risk of diseases and cause melanoma or skin cancer which is the most harmful effect of ozone depletion. Moreover, it also harms property of substances in the sense that it acts as an oxidising agent and thus it is associated with decolouration and brittleness of plastics.

How ozone (O₃) is formed and prevents U-V-ray reaching the earth:

It is to be noted that O₃ is an unstable compound and for both its formation and destruction, it requires U.V. rays which is provided by the sun. The reaction

$$O + O_2 \xrightarrow{U. V. rays} O_3$$
 and $O_3 \xrightarrow{U. V. rays} O + O_2$

is always taking place and thus O₃ is said to be in dynamic equilibrium. While forming and breaking, the O₃ molecule converts a part of the harmful U.V. rays into infra red which are not very harmful for humans, which further prevents the escape of U.V. rays to the earth's surface. Thus U.V. rays get filtred by this layer and diseases caused by U.V. rays are being checked by ozone layer.

History of ozone layer depletion:

In 1974, SHERWOOD ROWLAND and MORIO MOLINA of the California University claimed that man-made certain chemicals known as chloro fluro carbons (CFC) were damaging the stratospheric ozone layer. Subsequent research corroborated the claim and now it is established that the stratospheric ozone layer is being destroyed by human activity.

Science of ozone layer:

Solar radiation breaks down many of the gases in stratosphere that contain chlorine and bromine, which break down ozone molecules and hence reduces

ozone content in the atmosphere. One atom of chlorine radical is sufficient to destroy one lakh molecules of ozone and set off a destructive chain reaction. Since this process in cyclic, the damage being caused is simply unimaginable. How this happens is given below.

$$CL + O_3 \rightarrow CLO + O_2$$
; $CLO \rightarrow CL + O$
Nascent Ozone Chlorine
Chlorine Monoxide

Ozone depleting substances in use:

The main ozone depleting substance in use today are choloro fluro carbons (CFC), Metheyl chloroform (CH₃CCl₃) and carbon tetrachloride (CCl₄) out of which CFC-113 (type of CFC's) has relatively high ozone depleting potential and contributed to an estimated 14% of ozone depletion to date.

Methyl chloroform which at one time was considered a likely substitute of CFC-113 is not acceptable as a long term substitute.

Carbon tetrachloride is no longer used as a solvent in most countries due to its carcinogenicity, but still it is used in some parts of the world.

Substitute solvents and technologies

There is no single use of CFC-113 and CH₃CCl₃. Every solvent has at least one or more available alternatives. Substitutes should have a low Ozone Depletion Potential (ODP), low Global Warming Potential (GWP) and low volatile organic content, they should not be toxic or carcinogenic and recovery should be possible. These are :- Chlorinated solvents, Alcoholdervied solvents, organic solvents, Perfluro carbons, Aliphatic hydrocarbons etc.

Ozone hole

Ozone hole means complete disappearance of O₃ layer over a part of the atmosphere. Ozone hole over Antarctica and later also over the North pole has been confirmed. The maximum damage has occured over Antarctica. Although at present, it is only a temporary phenomenon, it is showing its potentialities in

the form of increased skin-cancer among Australians and if no corrective steps taken, it can become a permanent phenomenon.

Global concern:

Increasing ozone-layer depletion is a matter of serious concern for today's world. Thus under the management of the United Nation Environment programme the 'Montreal Protocol' developed in 1987, came into force on 1st January, 1989. The Protocol defined the measures - the parties (Nations) must take to limit production and consumption of the damaging substances, originaly five CFC's and Halons. In early 1992, there were 76 parties which were signatories to the Protocol of which nearly 40 were developing countries. India and China refused to sign it.

Later on new scientific informations made it clear that the original Protocol would not protect the ozone layer adequately. A revision made in London known as London Agreement in June, 1990, adopted supplementary control measures, and provided for technical and financial assistance to be given to signatories from developing countries. India and China alongwith other developing countries had signed the latter rational agreement.

Abiding by this agreement many countries are now engaged to discover substitutes of CFC's.

Conclusion:

The rapid industrialisation and hence release of toxic gases and chemicals has led to incalculable damages to our surroundings whch has effeted several environmental imbalances. Now there is a growing concern among the people about indispensability of a pure environment and its conservation and they have come to realise that the environmental purity and stability is but essential for the survival of entire mankind.

The complete elimination of all ozone destroying chemicals, however, will not be a simple task. But the International Community has risen to deal with the most dangerous ones. If nations handle all environmental threats in a comparably unified way, the planet can become a lot healthier than it is now.

Earthquakes in India

Suken Ahmed

mong the terryfying natural phenomena which resulted in immese loss of life and property in India, earthquake is, perhaps, the most frequent one. A few earthquakes have taken place in the peninsular India. But the extra-peninsular regions too have recorded a good number of devastating earthquakes. The extra-peninsular region, belongs to the Himalayan ranges. It is not stable one and is, still now, experiencing slight endogenetic movement. The main causes responsible for earthquakes in India includefaulting, isostatic readjustment etc. Among earthquakes recorded in India from the Himalayan mountain ranges and great plains south to the belt, since last 200 years, at least 74 are worth mentioning. Let us be aquainted with the best known earthquakes recorded in the seismological history of India and world also.

The Assam Earthquakes: One of the most disastrous earthquakes of the World on record had shaken Assam and the surrounding areas on 12th June, 1897. The earthquake originated from a crust fault at a depth of 8 Km or less and the intensity was V-VI with a velocity of 3 Km per second. The quake laid west of Shillong, with the surrounding country of 380500 sq.km. All the communications were disrupted, buildings collapsed, fissures were developed, alongwith floods and landslides. The duration of the earthquake was less than one minute. It was so intense that small stones on the roads of Shillong were hurled up in the air just like peas on a beating drum. Extraordinary roarings were heard. Water and sand came out of the fissures up to 1 or 1-3 metres in the air. Drainage system was disturbed resulting in extensive flood. Beds of rivers, ponds, wells etc. rose from their normal level. Some structural changes like fractures, upliftment of hills etc. occured. The surface began to oscillate 200 times per minute.

The Kangra Earthquake: At the very beginning of the day on 4th April, 1905, the people of Kangra felt a severe and sudden shock after a few mild shocks. People were buried under the debris of their own houses and 20,000 of them were killed. The shock was not confined in its focus, but spread over the whole of India north of the Tapti valley. The linear tracts between Kangra and Kulu and between Mussoorie and Dehra Dun was subjected to great destruction and violence. Intensity was 11 on the Rossi-Forel scale. After the main shock hundreds of "after shocks" were felt for weeks and months.

Geological effects of this earthquake were less than that of the Assam Earthquake mentioned above, usual disturbances like local change of level, deviation of streams, landslides etc. took place. Dehra Dun and Siwalik hills rose about 30 cm. relatively to Mussoorie.

This earthquake was also due to tectonic cause faulting.

The Bihar Earthquake: A highly intensive earthquake took place on the after noon of 15th January, 1934, in North Bihar and Nepal killing about 12000 persons within 3 minutes. Monghyr (Bihar) and Bhatgoan (Nepal) were affected very destructively. Besides the above two towns, Patna, Kathmandu and Darjeeling were also affected. Majority of buildings of these cities were either tilted or collapsed. Some of them sank under the ground. The seismographs were broken down due to high intensity. Fissures developed on the Gangetic Basin from which water and sand came out. The area where intensity recorded II, was about 49,00,000 sq. km. Motihari-Madhubani, Kathmandu and Monghyr marked by intensity.

The cause of origin of the earthquake was due to the development of great strain beneath the Gangetic Basin where a folded and fractured zone as situated.

Baluchistan (Quetta) Earthquake: On the night of 31st May, 1935 an earthquake took place on the city of Quette killing 20,000 persons within a few seconds. Intensity was IV and V in 26,000 sq. m. Extensive rockfolds, cracks and common damage of property occured. The earthquake was also due to development of strain on rockfolds.

Mekran Coast Earthquake: A terrible earth quake accompanied with 12m high tidal waves and eruption of muds from submarine volcano shocked the coastal area of Mekran 260 Km North West of Karachi. It was so intense that, even at Bombay, 2 metre high tidal wave washed away many people and damaged the port. Mud eruptions from submarine volcano resulted in the formation of an island a few Kms away from the coast. This earthquake was due to faulting in the affected area of Mekran.

The North East Assam Earthquake: Another destructive earthquake shocked N.E. Assam on 15th August, 1950 which may be compared with the earthquake of 1897. The districts of Lakhimpur and Sibsagar and Sadiya were affected greatly with 39,000 sq. km. Less damaged area was 2,00,000 sq. km.

Geological effects of the earthquake were not negligible. Many hilltops were converted into depressions. Dams were created which disrupted the normal drainage system resulting great floods, causing more loss of life and property than the earthquake itself. Many lakes were formed due to landslides on the Dihang and Subansiri. Besides these many cracks and fissures also developed. Communications were disrupted while railway was' breached and telegraph poles were buried into the fissures.

Koyna Earthquake: This was the first recorded major tectonic earthquake in the Deccan peninsular sheild and took place on 11th December, 1967 at 320 km south of Bombay. The intensity was 6.5 on the Richter scale over 1,81,300 sq. km. Disruption of Malabar coast line and other usual destructive results, especially around the area of Koyna Hydro Electric project, were recorded. Koyna earthquake was probably the result of tectonic movement along a North-South axis of weakness in the basement below the Deccan trap.

Besides the above mentioned destructive earthquakes, many other well known ones are Delhi-1720; Calcutta 1737; Eastern Bengal and the Arahan coast 1762; Kutch 1819; Kashmir 1885; Bengal 1885 and most recently Maharastra 1993 etc. worth mentioning.

XX

A thing is right when it tends to preserve the integrity, stability and beauty of the biotic community. It is wrong when it tends to do otherwise.

— Aldo Leopold (1949)

The Hangman

Shahnawaz Ahmea

Hangman, Hangman!
Who is it, that you're going to hang today?
Is he a murderer,
Who's slain the devil?
Is he the tax evader,
Whose soul is ill?
Is he the pamperboy,
Who dared to love the king's daughter?
For which, you are going to slaughter.

Do you know your deed?
Or, you don't give it a heed.
Even the Guillotine rusts her blade sometimes,
Conspiring an excuse that
She can't slay for some crime.
Your soul they say is bloody.
Do you know what's mercy?
Do you have a heart that can bleed
Sick of your bloody deed?

When being asked what you have to say, They say they have heard you say:

I am the hangman
I carry the noose.
I don't know whose life I am taking
But I know I have to take it for him
Who's going to die,
That's not for me to decide.
It's the law
That sends the man
To the gallows.
That's where he's bound to go.

If you don't know me by now

Ranjit Roy

If you don't know me by now,
You will never know me, ooh
All the things that we'll thought about
You should understand those
As I understand you.

I knew the difference, Between right and wrong, I did nothing To break up our happy home.

Oh don't get excited When I come home a little late.

Silent Emotion

Jahanuddin Ahmed

What does a litte flower mean? I wonder when I do think;
Now and then about it
Comes up a deep-rooted doubt
Deep-rooted doubt in my mind,
Never a solution I could find.

What is this! a silent emotion
When the flower I took upon
Every one of this kind,
Emotion can we find;
More or less, implied or expressed
None but few might hav'been graced
Still a keen devotion is laid.

Your Helping Hand

Bastab Kumar

My heart is full of sorrow
But no one to hear,
There are tears in my eyes
But no one to wipe them,
My life is like a withered flower
Still wanting to bloom
I too have a dream
To fly high in the sky,
I am bound with chains of suffering
Lend me your helping hand,
And I will show you
The strength of a woman.

The useful plough

Arindam Singha

A country life is sweet
In moderate cold and heat,
To walk in the air, how pleasant and fair!
In every field of wheat
The fairest of flower adorning the bowers
And every meadow's brow;
So that, I say, no courtier may
Compare with them who clothe in grey.

They rise with the morning lark
And labour till almost dark,
Then folding their sheep, they go to sleep,
Next morning is ringing with birds that are singing
On each green tender lough
To follow useful plough.

The Elegant Autumn

Shyamal Das

How sweet the immaculate sky
And the lucid moon of the autumnal night,
How nice the dewy night-Jesmines
Make the surface white.

The dewy grassy field and the sun-shine Make golden the earth,

Every foggy morning reminds me Of a beautiful past.

Thank you autumn, for every gift To my native land,
That sweeten my day
And gladden my mind.

Oh! Life

Mofizuddin Ahmed

He came to meet me
On his Loving bicycle
With a smiling face
Wearing his velvet coat and bright shoes

He said
He'd come back again
Silently, invisibly
Wearing his black coat and blank shoes,
But he never came back again.

LOVE

Sultana Zesmina Rahaman

Love is the gift of God Love is patient and kind It is not jealous or proud Love is not ill mannered or selfish Love does not keep a record of wrongs Love is not happy with evil, But it is happy with truth Love is not a game A man without love Is like a body without soul True love is eternal Love is wonderful Love is great.....

a bird

M.S. Dilip

I saw a bird in a cage,
It looks pale
As though her heart's gone

Can one tell me why—
She's in such a state?
She has no freedom,
She is behind the bars
Oh! the unfortunate bird!

WOMAN

Bijay Sankar Rabha

She looks like a lily in the jar, Cool, in white and could have been growing in a field, but for the look of pain of bondage in the eyes, chained for even to drawing room sophistication, the daily nothings of life; Cup of tea, cucumbers, sandwiches, to men, she didn't know, didn't want to know, for deep inside, she wanted to keep the crystal white of her sarees, intact. But these ingratiating smiles, looks of blatant desires, She had learnt to counter impassively like Christ, dying on the crucifix. Lilies of the field, neither toil nor do they spin, but she, the white lily growing in a jar, Caught in the crevice of time, impaled on the walls of desires, Could it be, the lily neither withers nor dries, drivers on to live, by the sheer will-power of countless people?

Life And Death

Anamika Bhattacharya

Life! Really it is an unknown question.

Or! it is a stone polished with new things.

We only cut our colourful aims in this cruel stone.

And Death!

Death! Death! Truely it is our real friend.

It is also the last stage of our faded life.

A LETTER FROM DAD

It was raining cats and dogs. The weather seemed to mirror Tina's gloom as she curled up in her bed and opened the letter her father had left for her on the table.

"Dear daughter" It ran,

'I know it's a difficult time you are going through. It's not easy to adjust to the fact that your relationship with someone you care deeply is no longer what it was. I've heard you crying your heart out in bed. But time does heal. Believe me. Now I am going to tell you my own story.

That summer she had moved into our neighbourhood. She was a naughty little thing. Mischievous and very sweet.

I knew she liked me but didn't dare to hope. Still I'd have given the world to have her love. And wonder of wonders waited, she did and before long we were going steady. The days passed in a blur of colours. Being together made every ordinary thing seem special, she was so full of life. The days were magical....

But soon clouds appeared on the horizon to blot out the sun. She was devoted to her parents and worshipped the ground they walked on. And as luck would have it, they disapproved of our liasion. We belonged to different faiths and they made it clear that match was not probable. She refused to break away from her parents and we had to part. But now I know how her parents would have felt if she deserted them for if you were to leave us, it would surely kill your mum and me. You are everything we have in this world. I did not have a daughter then and I did not know, how it felt.

She blamed herself too as she felt that in someway she had betrayed me. And as she stood there, eyes begging for forgivness I wanted to hug her and drive away the misery from her eyes. It hurts me to see her torturing herself with guilt. But words failed me. And as she said goodbye she told me, "Don't ever be miserable for my sake, I don't want any one to pity us or show sympathy" she was so damn proud. But she walked away.

For a long time afterwards I felt lost and lonely with a dark future stretching ahead without her.

Whenever I saw her, I smiled at face and went away as if nothing had happened. I was angry at her callousness until a friend of hers told me how she used to cry every night. That was my girl proud and steady to the world. I hated myself for having doubted her. I never met her again.

Gradually as time passed, my hopelessness disappeared. Years rolled by and I found new interests in life.

I met your mum and I came and I saw you going through a stage of love sickness that I too had once I had forgotten all about my early years until I saw you going through a stage of love sickness that I too had once I met your mum and I came alive once more.

ea.
You will get over it with time. Don't be too miserable. It hurts us to see you so depressed and sad. We are always passed.

there to lend a shoulder should you need it.

All the best

Tina folded the letter and driving her tears, she curled up under the quilt and went to sleep.

Award on Literature (1996)

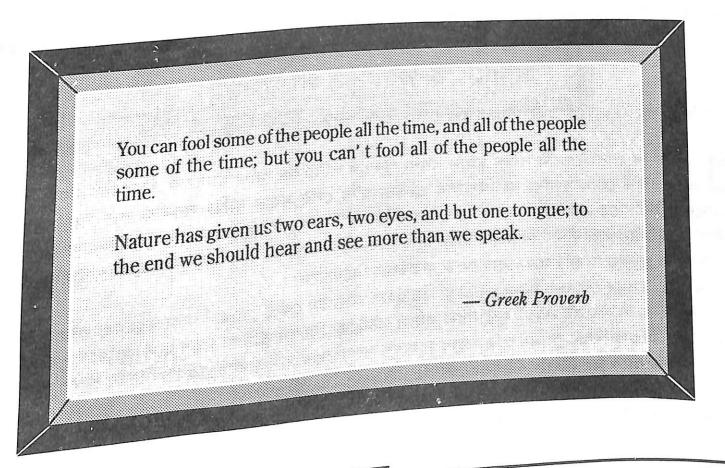
- Whitebread 'book of the year' award :—
 Kate Atkinson (of Scottland) for her first novel Behind the Scenes at Museum. £21,000.
- Author of the year, 1995 (Britian's Oscar of the literary world):—
 Salman Rushdie (The Moor's Last Sigh).
- Whitebread novel award :—
 Salman Rushdie (The Moor's Last Sigh) £21,000.
- 4. Rea Award (to American short story writers) :— Andre Dubus (Dancing After Hours) \$30,000.
- National Book Critics Circle Award, 1995 (USA):—
 Stanby Elkin for Mrs. Ted Bliss.
- International IMPAC Dublin Literary Award (Ireland):—
 David Malouf, Australian novelist (Remembering Babylon) \$ 150,000.
- NCR book award :—
 Eric Lomax's. The Railway Man £ 25,000.
- Leipzing book prize:—
 Aleksander Tisma (Serbian Writer), for creating European understanding with his work. Needs of Man, School of Ungodliness. 20,000 marks (\$13,800).
- 9. PEN-Faulkner Award for Fiction, 1996:— Richard Ford (Independence Day) \$ 15,000.
- Orange Prize for woman's fiction:—
 British author Helen Dunmore (A Spell of Winter) \$ 45,000.
- 11. Miguel de Cervantes Prize, 1995 (Spain's highest literary award):—Camilo Jose Cela.

- Truman Capote lifetime Achievement Award in Literary Criticism:—
 Alfred Kazin. \$ 100,000.
- 13. T.S. Eliot Prize (Britian's leading poetry award):—
 Mark Dofty (USA) £ 5,000.
- 14. Gabreiela Mistral Award (Cuban Govt.):— Prof. S. P. Ganguly.
- Erasmus Prize (Netherlands):—
 William McNeill, American historian, for his writings on the interaction between civilizations.
- 16. Gnyanpith Award 1995 :— M.T. Vasudevan Neir, renowned Malayalam writer for his contribution to the enrichment of Indian literature through his creative writing during 1975-94. Rs. 250,000.
- 17. Austrian State Prize for European literature: Aleksander Tisma. 43,000 Marks.
- 18. Ananda Kentish Commaraswamy Book Prize; 1996 (Association of Asian Studies, USA):— Dr. Bina Agarwal's FA Field of one's Own, Gender and Land Rights in South Asia. (The best English language non-fiction book on South Asia).
- 19. Lifetime Achievement Award in creative writing (Maharashtra Foundation):—
 Maltibai Bedekar, noted writer and educationist.
 Rs. 200,000.
- 20. Lifetime achievement Award in reflective writing :— Y.D. Phadke
- 21. Ramakrishna Dalmia Shreevani Nyas Alankaran Award, 1995:—
 Shridhar Vernekar. Rs. 200,000.
- 22. National Kabir Samman, 1994-95:—
 Nabakanta Barua, Assamese Poet.

- 23. Moortidevi Award (Bharatiya Gnyanpith) :— Shivaji Samant, Marathi Writer (Mrityunjaya).
- Vachaspati Puraskar, 1995 (K.K. Birla Foundation): Pandit Amir Chand Shastri, eminent Sanskrit scholar, for Nehru Charit Maha-Kavyan. Rs. 50,000.
- 25. Lalithambika Antharjanam Award:—
 Akkitham Achutan Namboodiri, Poet. Rs. 30,001.
- Yatra Award 1996 (N.D. Mehra Memorial Foundation, Delhi):—
 V. Abdullah, Rs. 50,000.

- 27. Muttathu Varkey Award 1996 :— Kakkandan (Ushnamekhala) Rs. 33,333.
- The Conch Republic Prize for Literature: —
 Russell Banks, novelist (author of Continental Drift and Searching for Survivors).
- 29. Milos Franklin Award (Australia's top literary prize): Christopher Koch (Highways to a War).

Collected by Imdadur Rahman Saikia



From the Secretariat: G.C.S.U

উপ–সভাপতিৰ প্ৰতিবেদৰ

১৯৫৫ চনত স্থাপন হোৱা গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ে স্বকীয় বৈশিষ্ট্যৰে অসমৰ শিক্ষাজগতত অগ্ৰণী ভূমিকা গ্ৰহণ কৰি আহিছে। প্ৰায় দুঁই হাজাৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক প্ৰতিনিধিত্ব কৰা গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰ সন্থাৰ উপসভাপতিৰ দায়িত্ব লৈ মই বিদ্যায়তনিক সুস্থ শৈক্ষিক পৰিৱেশ যাতে বিঘ্লিত নহয় তাৰ ওপৰত অধিক গুৰুত্ব দিছিলো।

সামগ্ৰিক দৃষ্টিকোণৰ পৰা চাবলৈ গ'লে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ শৈক্ষিক পৰিৱেশ উন্নত বুলি কব পাৰি। সকলো ক্ষেত্ৰতে পৰ্য্যাপ্ত সা–সুবিধা দিব পৰা নহ'লেও গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ–ছাত্ৰী পঢ়া শুনাৰ লগতে আন আন আনুষঙ্গিক বিষয়ত যথেষ্ট সচেতন। মাজে মাজে দুই–এটা স্বাৰ্থলোভী অপশক্তিয়ে আমাৰ মাজত খেলি–মেলিৰ সৃষ্টি কৰি আমাৰ গতি ৰুদ্ধ কৰিব বিচাৰলেও তেনে শক্তিৰ বিৰুদ্ধে পৰিয়ালটোৰে উপযুক্ত প্ৰত্যুত্তৰ দি আহিছে। মোৰ কাৰ্যকালত গোৰ্টেই পৰিয়ালটোক একতাৰ ডোলেৰে বান্ধি ৰখাৰ লগতে ছাত্ৰ–ছাত্ৰীৰ অভাৱ–অভিযোগ দূৰ কৰাত পাৰ্য্যমানে চেষ্টা কৰা হৈছিল। মহাবিদ্যালয়ৰ বিভিন্ন উন্নয়ণমূলক কামত কিমান দূৰ সফল হ'লো তাৰ বিচাৰ সুহৃদ বন্ধু–বান্ধৱীসকলৰ হাতত। শ্ৰদ্ধাৰে ——

''জয় আই অসম''

বিজু কলিতা উপ-সভাপতি, গোঃ মঃ ছাঃ সঃ

সাধাৰণ সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

তিবেদনৰ প্ৰাৰম্ভতে যি সকল মহান বৰণ্য পুৰুষৰ শাৰীৰিক আৰু মানসিক শ্ৰমৰ বিনিময়ত শিক্ষাৰ উচ্চ মন্দিৰ গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় প্ৰতিষ্ঠা হ'ল সেই মহান ব্যক্তি সকলক শত সহস্ৰ প্ৰণিপাত জনাইছোঁ। দ্বিতীয়তে যি সকল সহৃদয় "গোৱালপৰীয়ানৰ" সহযোগিতা তথা উৎসাহ উদ্দীপনাক শিৰোধাৰ্য্য কৰিয়েই মই গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰ সন্থাৰ সাধাৰণ সম্পাদকৰ দৰে দায়িত্বপূৰ্ণ পদবীত নিৰ্বাচিত হলো সেই সকলৰ প্ৰতিও আন্তৰিক ধন্যবাদ আৰু কৃতজ্ঞতা নিবেদিছোঁ।

সেই সম্প্ৰিম আত্ৰ বিদ্যালয় বিদ্যালয়; জ্ঞানচৰ্চাৰ আৰু ঐতিহ্যমণ্ডিত শিক্ষানুষ্ঠানৰ ছাত্ৰ সন্থাৰ সাধাৰণ সম্পাদকৰ দায়িত্ব ভাৰ গ্ৰহণ কৰি আহিছে। এনে মহান আমাৰ সাধ্যানুসাৰে মহাবিদ্যালয়ৰ সেৱা কৰিম বুলি।

আমাৰ সাধ্যানুশাৰে বৰ্ম মই সাধাৰণ সম্পাদকৰ দায়িত্ব ভাৰ গ্ৰহণ কৰাৰ পিছতে মহাবিদ্যালয়ৰ সমস্যা সমূহ বুজি লৈ মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰসন্থাৰ পৰামৰ্শ মতে, মাননীয় অধ্যক্ষ মহোদয়, অধ্যাপক/অধ্যাপিকা আৰু ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ সহযোগিতাৰে

মহাবিদ্যালয়ৰ বিভিন্ন দিশৰ উন্নয়নৰ বাবে প্ৰচেষ্টা চলাইছিলো। এইবোৰৰ ভিতৰত — মহাবিদ্যালয়ৰ শৈক্ষিক পৰিবেশ উন্নত কৰাৰ বাবে নানা ব্যৱস্থা লোৱা, ৰেগিং নামৰ অভিশপ্ত প্ৰক্ৰিয়াটো ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ সহায় সহযোগিতাত নিৰ্মূল কৰা, অন্যান্য পিচপৰা শ্ৰেণী, অনুসূচীত জাতিৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বাবে বৃত্তিমূলক সাহায্যৰ ব্যৱস্থা কৰা, মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰাবাস আৰু ছাত্ৰী নিবাসৰ বিভিন্ন অসুবিধা সমূহ দূৰ কৰা, "চাইকেল ষ্টেণ্ড''ৰ কাম আৰম্ভ কৰা, হোষ্টেল নিৰ্মাণৰ বাবে বিধায়কৰ পৃঁজিৰ পৰা দুঁই লাখ টকাৰ অনুদানৰ ব্যৱস্থা কৰা, ইত্যাদি ইত্যাদি। এই বোৰৰ উপৰিও আমাৰ কাৰ্য্য কালৰ সময়ছোৱাত মহাবিদ্যালয় সপ্তাহ, নৱাগত আদৰণি সভা, সৰস্বতী পূজা, ফাতেহা-ই-দোৱাজ-দহম, শ্ৰীমন্ত শংকৰ দেৱৰ তিথি, বিদায়ী সভা, মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰতিষ্ঠা দিৱস আদিও যথাবিহিত ভাবে পালন কৰা হয়।

উল্লেখযোগ্য যে অসম সাহিত্য সভাৰ প্ৰাক্তন সভাপতি মাননীয় হিতেশ ডেকা দেব, মহাবিদ্যালয় পৰিদৰ্শক মাননীয় ড° বনমালী নাথ, শিল্পী মাননীয় ৰাজেন পাম দেৱ, অজয় হাজৰিকা আদি বিভিন্ন ক্ষেত্ৰৰ বিশিষ্ট ব্যক্তি সকলে আমাৰ বছৰটোৰ কেতবোৰ কাৰ্য্যসূচীত যোগদান কৰি অনুষ্ঠানৰ সৌষ্ঠৱ বৃদ্ধি কৰিছিল। গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ লেখীয়া এক বৃহৎ অনুষ্ঠানৰ সমস্যা সমূহ আমাৰ মাত্ৰ এবছৰীয়া কাৰ্য্যকালত সমাধান কৰা সম্ভৱপৰ নহয়। অৱশ্যে সামূহিক দায়বদ্ধতা আৰু ব্যক্তিগত প্ৰচেষ্টাৰে আমাৰ ন্যস্ত দায়িত্ব পালনত আমি বিন্দু মাত্ৰ কৃপনালি কৰা নাছিলো। আমি আশা ৰাখিছোঁ আমাৰ পৰৱৰ্তী কাৰ্য্য নিৰ্বাহকে এই

প্ৰতিবেদনৰ শেষত, মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰসন্থাৰ সাধাৰণ সম্পাদক হিচাপে কাৰ্য্য পৰিচালনা কৰাৰ সময়ত সমস্যা সমূহ পূৰণত আগ ভাগ লব। যি সকলে বিভিন্ন পৰামৰ্শ তথা শাৰীৰিক আৰু মানসিক শ্ৰমেৰে আমাক সহায় সহযোগিতা আগবঢ়াইছে সেই অন্তৰিকতাক কেতিয়াও পৰিশোধ কৰিব নোৱাৰিম। মাত্ৰ সেই সকলৰ সহায় সহযোগিতাক শ্ৰদ্ধাৰে স্মৰণ অান্তাৰকতাক সোত্মতে । তি নিৰ্বাহাৰ নিবিড় সান্নিধ্য আৰু সহায় সহযোগিতাৰ বাবে অসম্ভৱকো কৰিছোঁ। ছাত্ৰসন্থাৰ যি সকল বিষয়-ববীয়াৰ নিবিড় সান্নিধ্য আৰু সহায় সহযোগিতাৰ বাবে অসম্ভৱকো সম্ভৱ কৰিবলৈ সক্ষম হৈছিলো তেওঁলোকলৈ মোৰ হিয়াভৰা কৃতজ্ঞতা জনাইছোঁ।

কাৰবলে সম্পাদকৰ গুৰু দায়িত্ব চলাই নিয়াৰ সময়ত গঠন মূলক পৰামৰ্শ দিয়া মাননীয় অধ্যক্ষ বীৰেন্দ্ৰ সাধাৰণ সম্পাদকৰ গুৰু দায়িত্ব চলাই নিয়াৰ সময়ত গঠন মূলক পৰামৰ্শ দিয়া মাননীয় অধ্যক্ষ বীৰেন্দ্ৰ সাধাৰণ প্ৰাণ্ডিৰ বিজ নাৰায়ন চীধুৰী, অধ্যাপক ৰমা বৰুৱা, ড° কমলেশ্বৰ গোস্থামী, অৰুন চন্দ্ৰ নাথ চীধুৰী, উপাধ্যক্ষ ড° ৰবীন্দ্ৰ নাৰায়ন চন্দ্ৰ শুক্তিৱা এ এচ আৰ অক্সেচ ক্ষ্তিক ক্ৰ নাথ চোধুৰা, ড্লাঘ্যমণ তুল্ব ৰহমান শইকীয়া, এ,এচ, আৰ অহমেদ, প্ৰদীপ চুটিয়া আদি মাননীয় শৰ্মা, গোবিন্দ কলিতা, আবেদুৰ ৰহমান আৰু ছাত্ৰী নিবাসৰ সমত জোৱাৰী শমা, গোবিন্দ কালতা, পাত্ৰিম বুন্দ, ছাত্ৰাবাস আৰু ছাত্ৰী নিবাসৰ সমূহ আবাসী, লগতে সমূহ ছাত্ৰ-ছাত্ৰী, শিক্ষক শিক্ষয়ত্ৰী, কৰ্মচাৰী বৃন্দ, ছাত্ৰাবাস অৰু ছাত্ৰী নিবাসৰ সমূহ আবাসী, লগতে সমূহ ছাত্ৰ-ছাত্ৰী,

নৱজ্যোতি আৰু ৰত্নদলৈ আন্তৰিক কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিছোঁ। জ্যাতি আৰু ৰত্নগালে সাভাষ্ম ব সদৌ শেষত গভীৰ আশা প্ৰকাশ কৰিছোঁ যাতে ঐতিহ্যমণ্ডিত এই মহাবিদ্যালয় খনে নতুন ৰূপত প্ৰসাৰিত

হৈ জ্ঞান গৰিমাৰে জ্বিলিকি উঠে।

প্ৰণৱ কুমাৰ ৰায় সাধাৰণ সম্পাদক, গোঃ মাঃ ছাত্ৰসন্থা

ભાર્જે શાદ્યાનગાના રહ્યાવૃત્પીના ભુતર્ભ (ચારાન્યઆના તજ્ઞાનુત્રીનાંત હ્યાનાસા

সহঃ সাধাৰণ সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

তিবেদনৰ আৰম্ভণিতে যুগে যুগে অসমী আইৰ স্বাৰ্থ তথা অস্তিত্ব ৰক্ষাৰ্থে প্ৰাণাহুতি দিয়া জ্ঞাত-অজ্ঞাত স্বদেশ প্ৰেমী বীৰ সকৰ্ললৈ মোৰ শত প্ৰণাম আৰু শ্ৰদ্ধা নিবেদিছোঁ।

যি সকল ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ সহযোগত মই গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সহকাৰী সাধাৰণ সম্পাদক হিচাপে নিৰ্বাচিত হৈ প্ৰায় দুই হেজাৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীক সেৱা কৰাৰ সুযোগ পাওঁ তেওঁলোকলৈমোৰ আন্তৰিক কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিছোঁ।

মই সহঃ সাঃ সম্পাদক হিচাপে কাৰ্য্যভাৰ গ্ৰহণ কৰাৰ কেইদিনমান পিছতেই মহাবিদ্যালয় সপ্তাহ আৰম্ভ হয়। মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ বিভিন্ন কাৰ্য্যসূচীসমূহ সুকলমে আৰু সুচাৰুৰূপে আগবঢ়াই নিয়াত বিভাগীয় সম্পাদক সকলৰ লগত ওতঃ প্ৰোতভাৱে জড়িত হৈ ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতাৰ পৰাই কব খুজিছো যে মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ প্ৰতি গৰিষ্ঠ সংখ্যক ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰে অনীহা দেখা যায়। এইবাৰ সন্ধিয়াৰ সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানত যাতে পূৰ্বৰ আন এবাৰৰ দৰে অপ্ৰীতিকৰ পৰিস্থিতিৰ সৃষ্টি নহয় তাৰবাবে বিশেষ চকু ৰখা হয়। মুঠতে ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা শিক্ষা গ্ৰহুসকলৰ সহযোগত মহাবিদ্যালয় সপ্তাহ সফলতাৰে উৎযাপিত হয়।

মোৰ কাৰ্যকালত ৩/১০/৯৬ ইং তাৰিখে আমাৰ মহাবিদ্যালয়ৰে অৱসৰ প্ৰাপ্ত অধ্যক্ষ শ্ৰীযুত খগেন্দ্ৰ প্ৰসাদ ডেকা আৰু অৰ্থনীতি বিভাগৰ প্ৰৱক্তা শ্ৰীযুত ভূপেন্দ্ৰ নাথ পাটগিৰি দেৱক আনুষ্ঠানিক ভাৱে বিদায় সম্বৰ্ধানা জনোৱা হয়। প্ৰায় সমূহ ছাত্ৰ-ছাত্ৰী আৰু শিক্ষাগুৰুসকলৰ উপস্থিতিত তেওঁলোকে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলক উদ্দেশ্যি চমু তথা মূল্যৱান ভাষণ আগবঢ়ায়।

আমাৰ কাৰ্যকালতে মহাবিদ্যালয়ত নতুনকৈ এটা চাইকেল ষ্টেণ্ড নিৰ্মাণৰ কাম আৰম্ভ কৰা হয়। সাঃ সম্পাদক, সহঃ সাধাৰণ সম্পাদক, উৎসৱ সম্পাদক সমন্বিতে এখন বিশেষ কমিটিক উক্ত দায়িত্ব অৰ্পণ কৰা হয়।

মহাবিদ্যালয়ৰ সহঃ সাধাৰণ সম্পাদকৰ দৰে দায়িত্বপূৰ্ণ পদবীত থাকি ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰতি সেৱা আগবঢ়োৱাত কিমান সফল অথবা বিফল হলো সেয়া ছাত্ৰ-ছাত্ৰী সকলৰ বিচাৰ্য। সেয়ে হলেও আমি পাৰ্যমানে যত্নৰ ক্ৰটি কৰা নাছিলো। আচলতে সহঃ সাঃ সম্পাদকৰ যথেষ্ঠ দায়িত্ব থাকিলেও নিজস্বভাবে তেনে কোনো কাম কৰিবলৈ সুযোগ নাই। তথাপি বিভাগীয় সম্পাদক সকলৰ পিছত ছাঁৰ দৰে লাগি থাকি প্ৰতি ক্ষেত্ৰতে চকু দিব লাগে।

সদৌ শেষত মোৰ প্ৰতিটো কাৰ্য্যক্ষেত্ৰতে অকুষ্ঠ সহায় সহযোগ আগবঢ়োৱা ৰত্নাকৰ দা, দিলীপদা, উত্তম, অকণ, মহাদেৱ, ত্ৰিদীপ, নৱজ্যোতি (জিতেন), দিপু, ৰাজেশ, উপাসনা, মামন, তুলিকা, সুসম্মতা, গীতা, মালা, সবিতা, ৰশ্মি, জ্বলি, বুলি, চুৰিয়া, গোপাল, গৌতম, শ্বামীম, দ্বিপেন, অনামিকা, অনিৰুদ্ধ, সংগীতালৈ আন্তৰিক ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিছোঁ।

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সৰ্বাঙ্গীন উন্নতি কামনাৰে প্ৰতিবেদন সামৰিছোঁ।

''জয় আই অসম''

বলভদ্ৰ পাঠক সহঃ সাধাৰণ সম্পাদক গোঃ অঃ ছাঃ মঃ

সাংস্কৃতিক সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

বিগত বছৰটোত জাতিৰ অস্তিত্ব ৰক্ষাৰ্থে যিসকল জ্ঞাত অজ্ঞাত ব্যক্তিয়ে প্ৰাণাহুতি দিলে মোৰ এই প্ৰতিবেদনৰ আৰম্ভণিতে তেওঁলোকলৈ অশ্ৰু অঞ্জলী যাচিলোঁ। সাংস্কৃতিক সম্পাদক হিচাপে ১৯৯৪-৯৫ চনৰ বাবে মোক নিৰ্বাচিত কৰাৰ বাবে মই গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সমূহ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীকেই ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিছোঁ।

সাংস্কৃতিক সম্পাদকৰ গধৃৰ দায়িত্বভাৰ বুজি লোৱাৰ পিছতেই মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ সশ্মুখীন হওঁ। মহাবিদ্যালয় সপ্তাহত সাংস্কৃতিক বিভাগৰ বিভিন্ন প্ৰতিযোগিতা সমূহ অনুষ্ঠিত কৰা হয়। গোৱালপাৰাৰ প্ৰখ্যাত শিল্পী শ্ৰীযুত অৱিনাশ নাথ দেৱে 'প্ৰতিযোগিতা মঞ্চ' মুকলি কৰে। নৱাগত আদৰণী সভা উপলক্ষেও এখন সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানৰ আয়োজন কৰা হয়। উক্ত অনুষ্ঠানত মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ উপৰিও স্থানীয় দুই এজন শিল্পীয়েও গীত-মাত পৰিৱেশন কৰে।

২৬ নৱেম্বৰৰ পৰা ৩০ নৱেম্বৰ '৯৬ লৈ গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয় যুৱ মহোৎসৱত গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সাংস্কৃতিক বিভাগৰ তৰফৰ পৰা ২১ জনীয়া প্ৰতিযোগী দল এটা লৈ যোৱা হৈছিল। যুৱ মহোবিদ্যালয়ৰ সাংস্কৃতিক বিভাগৰ দলটোৱে ২য় শ্ৰেষ্ঠ দল হিচাপে সন্মান লাভ কৰে। মহাবিদ্যালয়ৰে মহোৎসৱত গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ দলটোৱেও শ্ৰেষ্ঠ নৃত্যদল হিচাপে সন্মান লাভ কৰে। অমল মেধিয়ে শ্ৰেষ্ঠ কলাকাৰ আৰু নৃত্য দলটোৱেও শ্ৰেষ্ঠ নৃত্যদল হিচাপে সন্মান লাভ কৰে।

সদৌ শেষত মোৰ কাৰ্যকালত বিভিন্ন প্ৰকাৰে সহায়ৰ হাত আগবঢ়োৱা বন্ধুবৰ্গ-বিশেষকৈ জয়ন্ত, মানি, সদৌ শেষত মোৰ কাৰ্যকালত বিভিন্ন প্ৰকাৰে দিপুদা, বিক্ৰম, বুদ্বা, ববী, কন্ধনা, উপাসনা, পূজা, জুপি, ভৈৰৱ, পিংকু, ধৰণী, নৱজ্যোতি, জন্ধি, দীপক, দীপুদা, বিক্ৰম, বুদ্বা, ববী, কন্ধনা, উপাসনা, পূজা, জুপি, বৈৰৱ, পিংকু, ধৰণী, নৱজ্যোতি, জন্ধি, দীপক, দীপুদা, বিক্ৰম, বুদ্বাৰ, বয়ছাৰ, লৈ কৃতজ্ঞতা যাচিছোঁ। মোৰ বিদ্দুদা, অৰুনদা, উদয়দলৈ ধন্যবাদ আৰু শিক্ষাগুৰু ৰুমীছাৰ, ৰয়ছাৰ, লৈ কৃতজ্ঞতা যাচিছোঁ। মোৰ বিজ্ঞাতে কৰা ভুল-ক্ৰেটীৰ বাবে মাৰ্জনা বিচাৰি আৰু গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ উত্তৰোত্তৰ উন্নতি কামনা অঞ্জাতে কৰা ভুল-ক্ৰেটীৰ বাবে মাৰ্জনা বিচাৰি আৰু গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ উত্তৰোত্তৰ উন্নতি কামনা কৰি মোৰ এই প্ৰতিবেদন সামৰিছোঁ।

''জয়তু গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়''

শ্বপন কুমাৰ দাস সম্পাদক, তৰ্ক আৰু আলোচনা চক্ৰ বিভাগ সাংস্কৃতিক সম্পাদক, গোঃ মঃ ছাঃ সঃ

উৎসৱ বিভাগৰ সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

মোৰ প্ৰতিবেদনৰ পাতনিতে অসমৰ অস্তিত্ব ৰক্ষাৰ আন্দোলনত প্ৰাণ আহুতি দি দেশ প্ৰেমৰ চানেকী দি থৈ যোৱা শ্বহীদ সকললৈ মোৰ শ্ৰদ্ধা নিবেদিছোঁ।

যি সকল ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে মোক উৎসৱ সম্পাদক হিচাবে নিৰ্বাচিত কৰি তথা সমগ্ৰ মহাবিদ্যালয়খনৰে সেৱা কৰাৰ সুযোগ দিলে তেওঁলোকলৈ মই মোৰ আন্তৰিক কৃতজ্ঞতা জনাইছোঁ।

মহাবিদ্যালয় এখনত ধর্মীয় উৎসৱ সমূহ পালনৰ মূল উদ্দেশ্য হ'ল ছাত্র-ছাত্রী সকলৰ মাজত একতা আৰু মৈত্রীৰ বান্ধোন সৃদৃঢ় কৰি তোলা। গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ উৎসৱ সম্পাদকৰ ওপৰত তিনিটা উৎসৱ পালনৰ দায়িত্ব ন্যন্ত আছে। সেই তিনিটা হ'ল — সৰস্বতী পূজা, বিশ্বনবী দিৱস আৰু শংকৰদেৱৰ তিথি। মোৰ কাৰ্য্যকালত উদ্যাপিত উৎসৱ সমূহ নতুনত্বৰে আৰু সূচাৰু ৰূপে পৰিচালনা কৰিবলৈ মই যথাসাধ্য চেষ্টা কৰিছিলোঁ। আটাইকেইটা উৎসৱেই ছাত্র-ছাত্রীৰ বিপুল সঁহাৰিত সাফল্যমণ্ডিত হৈ উঠিছিল। 'পৱিত্র বিশ্বনবী দিৱস' উপলক্ষে ছাত্র-ছাত্রী সকলৰ মনত এখনি ৰচনা প্রতিযোগিতাৰ লগতে গজল আৰু কেৰাৎ প্রতিযোগিতা অনুস্থিত কৰা হয়। সেইদৰে 'শংকৰ দেৱৰ তিথি' উপলক্ষেও ছাত্র-ছাত্রী সকলৰ মাজত এখনি ৰচনা প্রতিযোগিতা অনুস্থিত কৰা হৈছিল। উক্ত প্রতিযোগিতা বোৰত ছাত্র-ছাত্রীৰ বিপুল যোগদানে মোক বাৰুকৈয়ে উৎসাহিত কৰিছিল।

মোৰ কাৰ্য্যকাল ছোৱাত মোক বিভিন্ন দিশত সহায় কৰা বাবে মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰ সন্থাৰ সমূহ সদস্য বৃন্দ, সমূহ শিক্ষাগুৰু তথা ছাত্ৰ-ছাত্ৰী নিবাসৰ সমূহ আবাসীলৈ মোৰ কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিলোঁ। তদুপৰি মোক বিশেষ ভাবে সহায় কৰা ৰত্নাকাৰ দা, ৰত্নদা, মুক্তাদা, ফাৰুকদা, চিমুলদা, তৰিৎদা, উৎপল, কিশোৰ, আব্দুল হাই, অলকেশ, নিতু, জিতু, মুনি, জিতুল, বিক্ৰম, নয়ন, বিজু, প্ৰণৱ, চন্দন তথা 'জেনিথ কালচাৰেল এণ্ড স্পোৰ্টচ অৰগেনাইজেচেন'ৰ সমূহ সদস্য বৃন্দৰ ওচৰত মই চিৰ কৃতজ্ঞ।

শেষত মোৰ অনিচ্ছা কৃত ভুল ক্ৰটিৰ মাৰ্জনা বিচৰাৰ লগতে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ উজ্বল ভৱিষ্যত কামনা কৰি মোৰ এই প্ৰতিবেদন ইমানতেই সামৰণি মাৰিছোঁ।

व्यय वारे व्यवस

জ্যোতিশ্বয় দাস সম্পাদক, উৎসৱ বিভাগ গোঃ মঃ ছাঃ সঃ

তুৰ্ক আৰু আলোচনা–চক্ৰ সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

প্ৰতিবেদনৰ আৰম্ভণিতে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰায় দুহেজাৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীলৈ তৰ্ক আৰু আলোচনা চক্ৰ সম্পাদক হিচাপে সেৱা আগবঢ়োৱাৰ সুযোগ দিয়াৰ বাবে সকলোলৈ আম্ভৰিক কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিছোঁ।

প্ৰতিবেদনত নিশ্চয় এৰি অহা কাৰ্যকালৰ সম্পূৰ্ণ খতিয়ান প্ৰকাশ কৰাটো বাঞ্ছনীয়। মোৰ কাৰ্যকালৰ খতিয়ান ছাত্ৰ-ছাত্ৰী বন্ধু-বান্ধৱী সকলৰ হাতত তুলি দিলো; সফলতা অথবা বিফলতাৰ বিচাৰ তেওঁলোকৰ ওপৰতে ন্যন্ত কৰিছোঁ।

মোৰ কাৰ্যকালছোৱাত সদৌ অসম আন্তঃ মহাবিদ্যালয় ভিত্তিত তৰ্ক প্ৰতিযোগিতা আমাৰ মহাবিদ্যালয়তো পাতিবলৈ যো-জা চলাইছিলো। কিন্তু দুৰ্ভাগ্যবশতঃ সময়ৰ অভাৱ আৰু আৰ্থিক বেমেজালিৰ বাবে ভবা কথা হৈ নুঠিল। শেষত যেনিবা জিলা ভিত্তিত এখন তৰ্ক প্ৰতিযোগিতা পাতিবলৈ স্থিৰ কৰা হৈছিল। কিন্তু ইয়াতো কেনা লাগিল। গুৱাহাটী বিশ্ববিদ্যালয় যুৱ মহোৎসৱৰ দিন চমু চাপি অহাৰ লগে লগে উক্ত কাৰ্যসূচীও মনৰ ভিতৰতে সাঙুৰি থব লগা হ'ল।

মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ কাৰ্যসূচীত এইবাৰ মোৰ বিভাগত Fine Arts ৰ কিছু প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ কাৰ্যসূচীত এইবাৰ মোৰ বিভাগত Fine Arts ৰ কিছু প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাৰ বাবে বিচাৰকসকল আহি প্ৰতিযোগী অহালৈ বাট চাই পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাও সাঙুৰি লোৱা হ'ল। কিছু প্ৰতিযোগী সকলৰ পৰা এই ক্ষেত্ৰত উৎসাহজনক সহাঁৰি পোৱা নগ'ল। আনকি কেতিয়াবা প্ৰতিযোগিতাৰ বাবে বিচাৰকসকল আহি প্ৰতিযোগী অহালৈ বাট চাই

দকৈ ভাবি চায়।
মই মোৰ কাৰ্যকালত থূলমূলভাৱে হলেও যি কেইখন প্ৰতিযোগিতা পাতিছিলো সেই কেইখন সুকলমে চলাবলৈ পাই সুখী হৈছোঁ।
মই মোৰ কাৰ্যকালত থূলমূলভাৱে হলেও যি কেইখন প্ৰতিযোগিতা পাতিছিলো সেই কেইখন সুকলমে চলাবলৈ পাই সুখী হৈছোঁ।
বিশেষকৈ সকলো সময়তে মোক আৱৰি ৰাখি সহায়ৰ হাত আগবঢ়োৱা ৰত্নাকৰ দা, ৰত্ন দা, দিলীপ দা, চিমূল দা, প্ৰণৱ, বিজু, জ্যোতিময়,
বিশেষকৈ সকলো সময়তে মোক আৱৰি ৰাখি সহায়ৰ হাত আগবঢ়োৱা ৰত্নাকৰ দা, ৰত্ন দা, দিপালী, চিম্পী, জুপিতা, মৌচুমী, চুৰিয়া, জেউতিলৈ
নৱজ্যোতি, অলকেশ, বিৰাজ, সঞ্জীৱ, ঋষিকেশ, অনামিকা, উপাসনা, সোনমা, দিপালী, চিম্পী, জুপিতা, মৌচুমী, চুৰিয়া, জেউতিলৈ
নৱজ্যোতি, অলকেশ, বিৰাজ, সঞ্জীৱ, ঋষিকেশ, অনামিকা শিক্ষাগুৰু শ্ৰী অমূল্য শৰ্মা চাৰলৈ আন্তৰিক কৃতজ্ঞনা জনাইছোঁ।
তেওঁলোকৰ সহায় সাহচৰ্য্যৰ বাবে ধন্যবাদ জনাইছোঁ। তত্নাবধায়ক শিক্ষাগুৰু শ্ৰী আমূল্য শৰ্মা চাৰলৈ গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ উত্তৰোজৰ

তেওঁলোকৰ সহায় সাহচয্যৰ বাবে খন্সমান ব্যাহিত হৈ যোৱা ভুল ক্ৰটিৰ বাবে ক্ষমা মাগিছোঁ, লগতে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ উত্তৰোত্তৰ সৰ্বশেষত বিগত কালছোৱাত মোৰ অজ্ঞাতে হৈ যোৱা ভুল ক্ৰটিৰ বাবে ক্ষমা মাগিছোঁ, লগতে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ উত্তৰোত্তৰ উন্নতি কামনা কৰি প্ৰতিবেদন ইয়াতে সামৰিলোঁ।

''জয় আই অসম''

শ্রদ্ধাৰে
চন্দন নাথ
সম্পাদক, তর্ক আৰু আলোচনা চক্র বিভাগ
গোঃ মঃ ছাঃ সঃ

Annual Report of Outdoor Games Secretary

At the outset of my secretarial report I, on behalf of the Students' Union of Goalpara College offer my salute and respect to the martyrs who sacrificed their lives for the cause of the nation. I also offer my heartful gratitudes to my friends who have kindly elected me in the last general election of the college to serve them as their secretary, outdoor games.

The college week started immediately after we had taken the oath of secrecy. In the outdoor games section, a good number of competitions had been organised. But to my utter surprise only a few students of about 3,000 students of the college participated in the games. I could not understand the reasons why they did not participate. We should know that game is also an essential part of education. I do hope, in the next college week there would be much more participants. This year, the Boys' Best Athelete was Hazir Ali Sarkar of B. Sc. 2nd year and the Girls, Best Athelete was Barnali Sarma of BA 3rd Year. I offer my cordial thanks to both of them.

I would also like to thank my respected teachers Sri Bhakti Medhi, Sri ASR Ahmed and Sri ATM Forhad Ali, besides my friends Rafi, Birbalda, Rinku, Daimada, Taimur, Tapanda, Hasina, Chandmia, Zakir, Rosy, Sarkar, Meena, Anwara, Mominur, Babita, Hazir Ali and so on. I may be excused for my ommissions and commissions.

Long Live AASU.

Abul Hussain Mondol Secy, Outdoor Games, Goalpara College, Goalpara.

Annual Report of Indoor Games Secretary

At the very outset of this report, I offer my heartiest thanks to the student community of Goalpara College for electing me to the office of Indoor Games Secretary for the session 1995-96.

Goalpara College is a prestigious educational institution of the district which attracts student not only from this district but also those from the undivided Goalpara district. After assuming the office, therefore, naturally I had a number of colourful schemes for the development of this field. However, in reality, I faced manifold obstacles in mobilising the prospective players, in organising training programmes, in providing necessary infrastructural facilities and, above all, to get adequate fund to my satisfaction. In spite of all these, a large number of boys and girls participated in various events under indoor games section which clearly reveals that if proper guidance is provided and regular practice is there, our student folks can also prove their worth in extra-curricular activities. I take the opportunity to congratulate each one of the competitors and urge upon them to work hand for betterment of their performance in the days to come. I also request the college authority to provide more and more opportunities to the students in the field of indoor games which will go a long way in bringing laurels to the college.

I shall fail in my duty if I do not offer my sincere gratitude to the Prof.-in-charge of my section as well as to my fellow frields who rendered help and co-operation for smooth conduct of my activities.

Long live Goalpara College.

Ranjit Sinha Ray Secy., Indoor Games, GCSU.

ফুটবল আৰু ভলীবল সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

বুকুৰ কেঁচা তেজেৰে আই মাতৃৰ চৰণ তিয়াই স্বৰ্গগামী হোৱা জ্ঞাত অজ্ঞাত বীৰসকললৈ সশ্ৰদ্ধ প্ৰণিপাত জনাই মোৰ প্ৰতিবেদনৰ পাতনি মেলিছোঁ। গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ ১৯৯৫-৯৬ বৰ্ষৰ ফুটবল সম্পাদকৰূপে নিৰ্বাচিত হৈ মোৰ হেঁপাহ আছিল গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ ফুটবল আৰু ভলীবল খেলৰ মান উন্নত কৰা। গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ ছাৰ্ত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে এই দুবিধ খেলত যাতে উন্নতি কৰিব পাৰে তাৰবাবে কিছুদিনৰ বাবে প্ৰশিক্ষণৰ ব্যৱস্থা কৰাৰ কথাও চিন্তা কৰা হৈছিল। কিন্তু ধনৰ অভাৱত সেয়া সম্ভৱপৰ হৈ নুঠিল। আনকি মহাবিদ্যালয় সপ্তাহত অকল ভলীবল প্ৰতিযোগিতাখনহে পাতিব পৰা গ'ল। ফুটবল প্ৰতিযোগিতা পতাৰ বাবে কৰ্তৃপক্ষৰ পৰা অনুমতি পোৱা নগ'ল। সেয়ে হলেও ভলীবল প্ৰতিযোগিতা খনত মুঠ ১২ টা দলৰ যোগদান আৰু উচ্চ মানদণ্ডৰ তীব্ৰ প্ৰতিদ্বন্দিতামূলক খেল কেইখনে আমাক উৎসাহিত কৰিছিল। চূড়ান্ত বিজয়ী হৈছিল ত্ৰিদিপ দাসৰ দল আৰু ত্ৰিদিপ দাসে শ্ৰেষ্ঠ ভলীবল খেলুৱৈৰ সন্মান লাভ কৰে। আনহাতে গুঃ বিঃ ৰ আইন মহাবিদ্যালয়ৰ উদ্যোগত অনুষ্ঠিত আন্তঃ মহাবিদ্যালয় ভলীবল প্ৰতিযোগিতাত আমাৰ মহাবিদ্যালয়ৰ তৰফৰ পৰা যোগদান কৰা হৈছিল। নানা খেলি-মেলি আৰু বাধা-বিঘিনিৰ মাজেৰে যোগদান কৰি উল্লেখযোগ্য সফলতা লাভৰ পৰা বঞ্চিত হওঁ।

সঁচা কথা ক'বলৈ গ'লে গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ত এই দুবিধ খেলত প্ৰতিভাবান ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ অভাৱ নাই-বিশেষকৈ গাওঁৰ পৰা অহা ছাত্ৰ-ছাত্ৰী কিছুমানৰ খেলৰ মানদণ্ড উন্নত বুলিবই পাৰি। কিন্তু উপযুক্ত প্ৰশিক্ষণ আৰু সা-সুবিধাৰ অভাৱত তেওঁলোকৰ প্ৰতিভা বিকশিত হ'ব খাল - খালা সম্প্ৰান কৰি স্থান কৰি বুৰ গৈ থকা মহাবিদ্যালয়খনত মাটি পেলাই ওখ কৰি খেলৰ উপযোগী কৰি গঢ়ি তোলা অতি প্ৰয়োজনীয় হৈ পৰিছে। সেয়া মোৰ কাৰ্যকালত সম্ভৱ হৈ নুঠিল। আশা ৰাখিছোঁ পৰৱৰ্ত্তী সম্পাদকে এই বিষয়ে চিন্তা কৰিব।

সদৌ শেষত মোৰ কাৰ্য্যকালত সহায় সহযোগ আগবঢ়োৱা সকলোলৈকে মোৰ শ্ৰদ্ধা নিবেদিছোঁ।

জয়তু গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়

তপন দাস সম্পাদক, ফুটবল আৰু ভলীবল

ক্ৰিকেট খেল বিভাগৰ সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

প্ৰতিবেদনৰ আৰম্ভণিতে অসমী আইৰ অস্তিত্ব ৰক্ষাৰ্থে প্ৰাণ আহুতি দিয়া স্বদেশ প্ৰেমী বীৰ সকললৈ মোৰ শত প্ৰণাম আৰু শ্ৰদ্ধা নিবেদিছোঁ; লগতে যিসকল ছাত্ৰ-ছাত্ৰী, বন্ধু-বান্ধৱীয়ে মোক ক্ৰিকেট সম্পাদক পদত নিৰ্বাচিত কৰি মহাবিদ্যালয়ৰ সেৱা কৰাৰ বাবে সুযোগ দিলে তেওঁলোকলৈ মোৰ আন্তৰিক ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিছোঁ।

মই ক্ৰিকেট সম্পাদক হিচাপে কাৰ্যভাৰ গ্ৰহণ কৰাৰ পাছতেই মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ সমূখীন হওঁ। মহাবিদ্যালয় সপ্তাহত 'গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় শিক্ষক সংস্থা' আৰু 'মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰ সন্থা'ৰ মাজত এখন প্ৰদৰ্শনীমূলক সীমিত অভাৰৰ খেল অনুষ্ঠিত কৰা হয়। উক্ত খেলখনত গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় শিক্ষক সংস্থৃহি জয়লাভ কৰে।

বছৰটোৰ শেষৰ পিনে গোৱালপাৰা ক্ৰীড়া সন্থাৰ দ্বাৰা আয়োজিত 'ক্ৰিকেট টুৰ্নামেন্ট' খনত অংশ গ্ৰহণ কৰি আমাৰ ক্ৰিকেট দলটোৱে সুন্দৰ খেল প্ৰদৰ্শন কৰি প্ৰশংসা লাভ কৰে।

মোৰ কাৰ্যকালছোৱাত ক্ৰিকেট খেলৰ বাবে কিছু সামগ্ৰী কিনা হয়। মই ভাবো ক্ৰিকেট খেলৰ বাবে প্ৰাথমিক প্ৰশিক্ষণৰ নিতান্তই আৱশ্যক। পৰৱৰ্ত্তী সম্পাদকে এই ক্ষেত্ৰত চিম্ভা কৰি চাব বুলি আশা ৰাখিলো।

শেষত মোক সততে সহায় সহযোগ আগবঢ়োৱা শ্ৰীযুত ভক্তি মেধি চাৰ, বন্ধু শান্তু, ৰূপম, কুলো, গোপী, উপাসনা, নৱ কিশোৰ, দিপু, অমিতাভ, জৱাহৰলাল আৰু ভাইটি প্ৰাঞ্জললৈ অন্তৰিক ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিছোঁ।

গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয়ৰ সৰ্বাঙ্গীন উন্নতি কামনাৰে —

''জয়তু গোৱালপাৰা মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰ সন্থা''

উত্তম কুমাৰ সিংহ সম্পাদক, ক্রিকেট বিভাগ গোঃ মঃ ছাঃ সঃ